भृगु पत्रिका

Pradeep

भृगु पत्रिका एक बृहत गणना एवं फलादेश का ज्योतिष मॉडल है। इसमें ज्योतिषीय गणनाएं, फलादेश व उपाय जैसे रत्न, रुद्राक्ष, मंत्र एवं दान आदि सहित 250 पेज से अधिक की रिपोर्ट तैयार होती है। साथ ही इसमें अंक ज्योतिष, लाल किताब फलादेश, एस्ट्रोग्राफ एवं योग भी दिये गए हैं। इसमें पाराशर, जैमिनी एवं कृष्णमूर्ति पद्धति की गणनाओं के साथ 5 प्रकार की दशा जैसे विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, योगिनी, कालचक्र, चर दशाएं एवं विंमशोत्तरी दशा का सूक्ष्म विवरण भी दिया गया है। इसमें पितृदोष, साढ़ेसाती एवं काल सर्प दोष का उपाय सहित विवरण है।

इसमें गोचर सहित 20 साल का फलादेश व 2 साल का मासिक फलादेश तथा महादशा एवं अन्तर्दशा का फल भी दिया गया है। इसके अतिरिक्त इसमें जीवनके महत्वपूर्ण पहलुओं जैसे स्वास्थ्य, वित्त, व्यवसाय, शिक्षा एवं परिवार आदि के फलादेश भी उपलब्ध हैं।

SrNo: 101-101-102-9911 / 911 Date: 02/08/2019

Pradeep

05 Mar 1987

07:15 AM

Jeypore

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती हैं। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

Pradeep

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**05/03/1987**
दिन	गुरुवार
जन्म समय	**07:15:00 घंटे**
इष्ट	02:26:11 घटी
स्थान	**Jeypore**
राज्य	Odisha
देश	India

अक्षांश	18:52:00 उत्तर
रेखांश	82:38:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	00:00:32 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	07:15:32 घंटे
वेलान्तर	-00:11:41 घंटे
साम्पातिक काल	18:04:40 घंटे
सूर्योदय	06:16:31 घंटे
सूर्यास्त	18:05:58 घंटे
दिनमान	11:49:27 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल)	दक्षिण
ऋतु	वसन्त
सूर्य के अंश	20:16:24 कुम्भ
लग्न के अंश	07:48:46 मीन

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति	मीन - गुरु
राशि-स्वामी	**मेष - मंगल**
नक्षत्र-चरण	**भरणी - 3**
नक्षत्र स्वामी	शुक्र
योग	ऐन्द्र
करण	कौलव
गण	मनुष्य
योनि	गज
नाड़ी	मध्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	चतुष्पाद
वर्ग	मृग
युँजा	पूर्व
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	ले-लेखपाल
पाया(राशि-नक्षत्र)	रजत - स्वर्ण
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	मीन

पंचांग

दादा का नाम _____:
पिता का नाम _____:
माता का नाम _____:
जाति _____:
गोत्र _____:

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1908	फाल्गुन	14
पंजाबी	संवत : 2043	फाल्गुन	22
बंगाली	सन् : 1393	फाल्गुन	20
तमिल	संवत : 2043	मासी	21
केरल	कोल्लम : 1162	कुंभम	21
नेपाली	संवत : 2043	फाल्गुन	21
चैत्रादि	संवत : 2043	फाल्गुन	शुक्ल 6
कार्तिकादि	संवत : 2043	फाल्गुन	शुक्ल 6

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____: 6
तिथि समाप्ति काल _____: 26:35:25
जन्म तिथि _____: 6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____: भरणी
नक्षत्र समाप्ति काल _____: 14:08:07 घंटे
जन्म योग _____: भरणी
सूर्योदय कालीन योग _____: ऐन्द्र
योग समाप्ति काल _____: 13:08:03 घंटे
जन्म योग _____: ऐन्द्र
सूर्योदय कालीन करण _____: कौलव
करण समाप्ति काल _____: 13:54:48 घंटे
जन्म करण _____: कौलव
भयात _____: 46:15:42
भभोग _____: 63:28:30
भोग्य दशा काल _____: शुक्र 5 वर्ष 4 मा 13 दि

घात चक्र

मास _____: कार्तिक
तिथि _____: 1-6-11
दिन _____: रविवार
नक्षत्र _____: मघा
योग _____: विष्कुम्भ
करण _____: बव
प्रहर _____: 1
वर्ग _____: सिंह
लग्न _____: मेष
सूर्य _____: कर्क
चन्द्र _____: मेष
मंगल _____: सिंह
बुध _____: वृष
गुरु _____: कन्या
शुक्र _____: तुला
शनि _____: मिथुन
राहु _____: वृश्चिक

जन्म कुण्डली

लग्न कुंडली

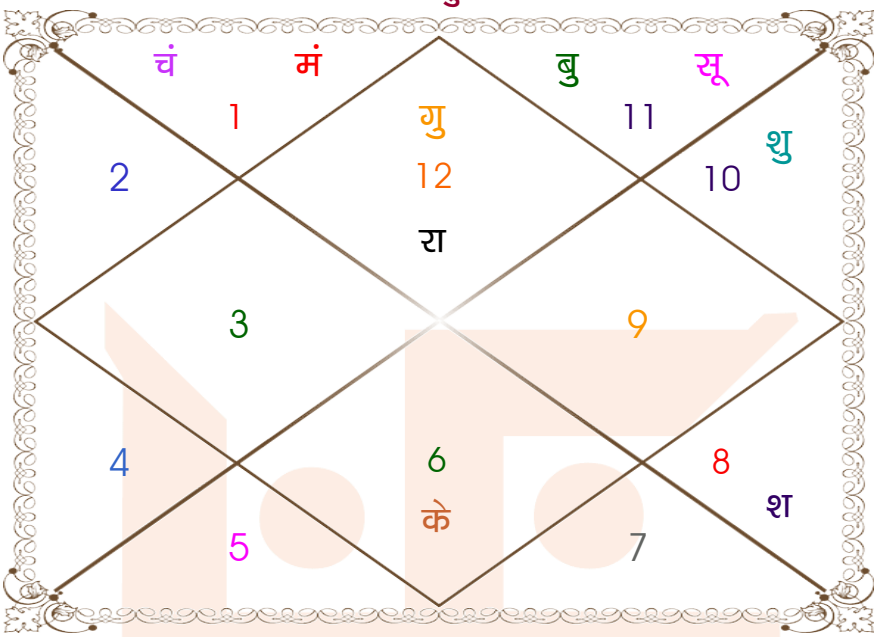

चन्द्र कुंडली

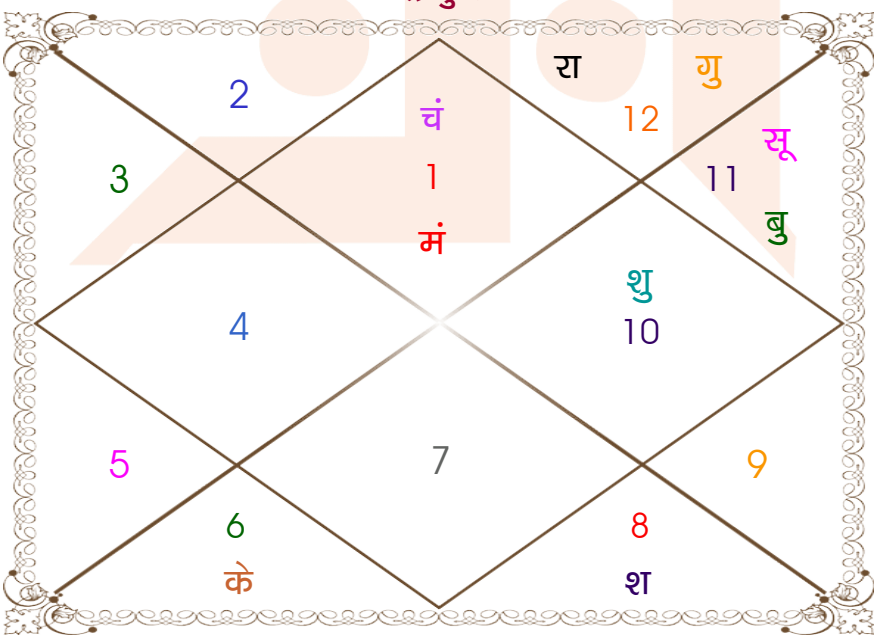

लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

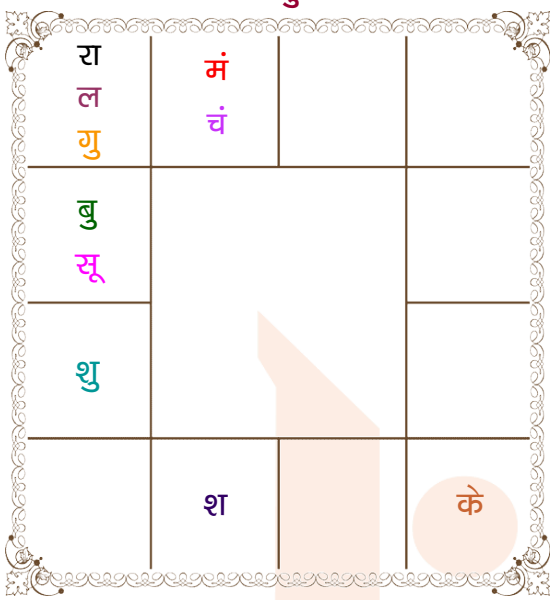

लग्न कुंडली

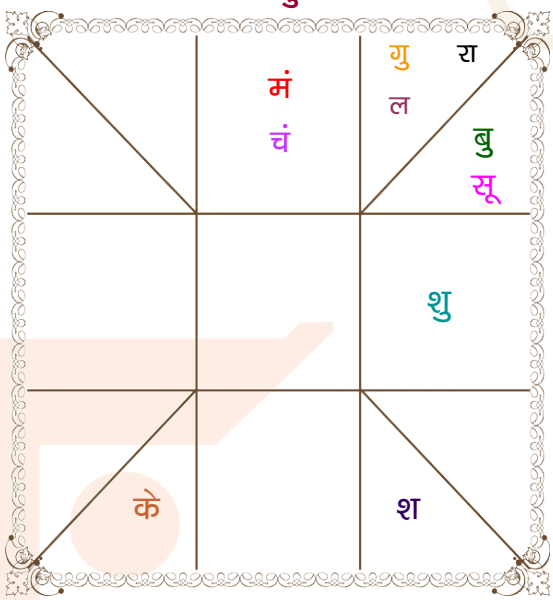

विंशोत्तरी
शुक्र 5वर्ष 4मा 13दि

शुक्र

05/03/1987

17/07/2092

शुक्र	17/07/1992
सूर्य	18/07/1998
चन्द्र	17/07/2008
मंगल	18/07/2015
राहु	17/07/2033
गुरु	17/07/2049
शनि	17/07/2068
बुध	17/07/2085
केतु	17/07/2092

योगिनी
भद्रिका 1वर्ष 4मा 3दि

भद्रिका

08/07/2019

07/07/2024

भद्रिका	18/03/2020
उल्का	16/01/2021
सिद्धा	06/01/2022
संकटा	16/02/2023
मंगला	08/04/2023
पिंगला	18/07/2023
धान्या	17/12/2023
भ्रामरी	07/07/2024

गणना

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग है।

गणनाएं किसी भी जन्मपत्री का सर्वाधिक महत्वपूर्ण और अभिन्न अंग होती हैं। इन गणनाओं में सभी आवश्यक और महत्वपूर्ण ज्योतिषीय गणनाएं जैसे ग्रहों के अंश, महत्वपूर्ण कुण्डलियां, ग्राफ और दशा गणना आदि शामिल हैं। प्रत्येक गणना के अपने सिद्धान्त व महत्व हैं। इन्हीं सटीक गणनाओं की सहायता से ही ज्योतिषी जातक के भूत, भविष्य व वर्तमान के बारे में सही अनुमान लगा पाता है।

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मीन	07:48:46	461:49:07	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	केतु	---
सूर्य			कुंभ	20:16:24	01:00:08	पू०भाद्रपद	1	25	शनि	गुरु	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			मेष	23:05:13	12:31:19	भरणी	3	2	मंगल	शुक्र	शनि	सम राशि
मंगल			मेष	14:53:27	00:41:07	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	शुक्र	स्वराशि
बुध	व	अ	कुंभ	09:35:27	00:50:10	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	सम राशि
गुरु			मीन	06:52:00	00:14:15	उ०भाद्रपद	2	26	गुरु	शनि	बुध	स्वराशि
शुक्र			मक	08:21:49	01:10:19	उत्तराषाढ़ा	4	21	शनि	सूर्य	शुक्र	मित्र राशि
शनि			वृश्चि	26:55:11	00:02:34	ज्येष्ठा	4	18	मंगल	बुध	गुरु	शत्रु राशि
राहु			मीन	18:06:07	00:01:49	रेवती	1	27	गुरु	बुध	बुध	सम राशि
केतु			कन्या	18:06:07	00:01:49	हस्त	3	13	बुध	चंद्र	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			धनु	02:43:48	00:01:24	मूल	1	19	गुरु	केतु	शुक्र	---
नेप			धनु	13:58:12	00:01:10	पूर्वाषाढ़ा	1	20	गुरु	शुक्र	शुक्र	---
प्लूटो	व		तुला	16:09:53	00:00:44	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	---
दशम भाव			धनु	07:23:28	--	मूल	--	19	गुरु	केतु	राहु	--

व - वक्री स - स्थिर

अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त

राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:37

लग्न-चलित

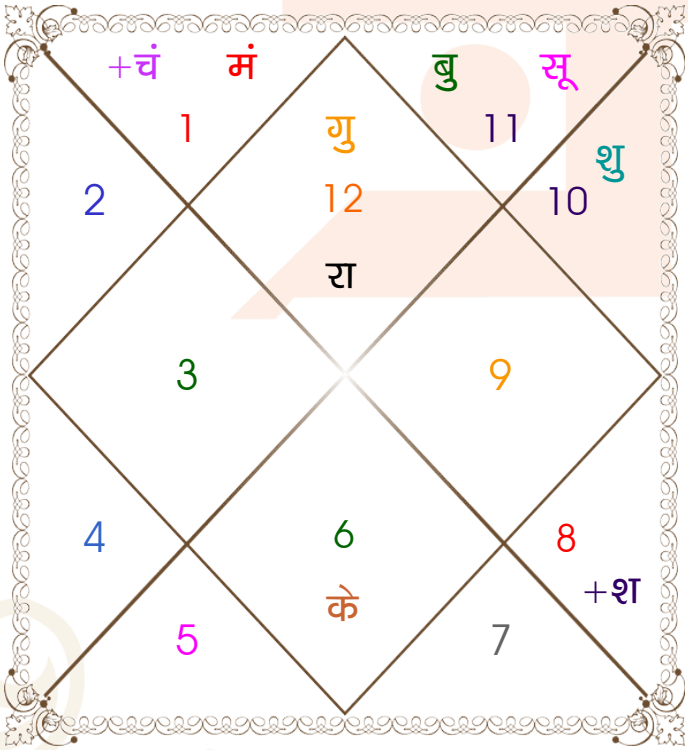

चन्द्र कुंडली

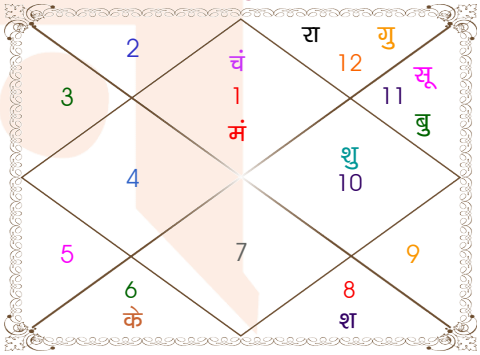

नवमांश कुंडली

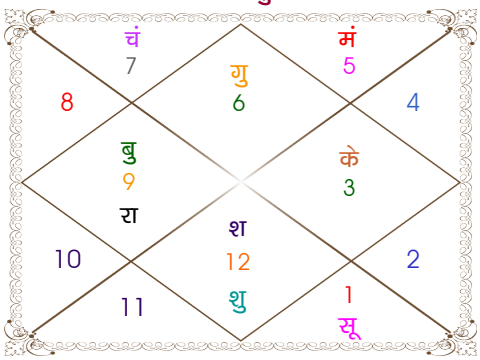

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	कुम्भ	22:44:33	मीन	07:48:46
2	मीन	22:44:33	मेष	07:40:20
3	मेष	22:36:07	वृष	07:31:54
4	वृष	22:27:41	मिथुन	07:23:28
5	मिथुन	22:27:41	कर्क	07:31:54
6	कर्क	22:36:07	सिंह	07:40:20
7	सिंह	22:44:33	कन्या	07:48:46
8	कन्या	22:44:33	तुला	07:40:20
9	तुला	22:36:07	वृश्चिक	07:31:54
10	वृश्चिक	22:27:41	धनु	07:23:28
11	धनु	22:27:41	मकर	07:31:54
12	मकर	22:36:07	कुम्भ	07:40:20

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मीन	07:48:46
2	मेष	13:01:13
3	वृष	11:56:26
4	मिथुन	07:23:28
5	कर्क	02:58:08
6	सिंह	02:14:50
7	कन्या	07:48:46
8	तुला	13:01:13
9	वृश्चिक	11:56:26
10	धनु	07:23:28
11	मकर	02:58:08
12	कुम्भ	02:14:50

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

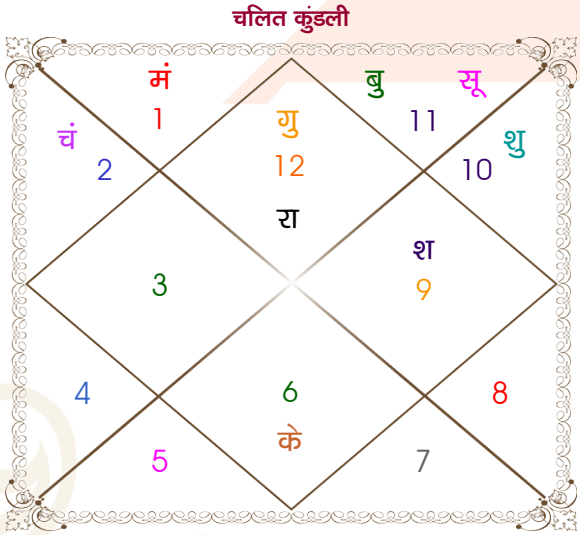

भाव कुंडली

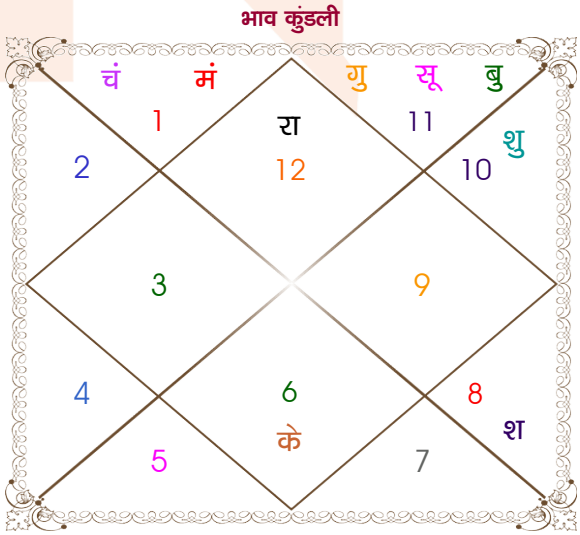

कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	------ कारक ------			------- अवस्था -------			
	चर	स्थिर	बालादि	दीप्तादि	शयनादि	रश्मि	ग्रह बल
सूर्य	भ्रातृ	पितृ	वृद्ध	खल	कौतुक	7.24	16 %
चंद्र	अमात्य	मातृ	वृद्ध	शान्त	आगम	4.25	73 %
मंगल	मातृ	भ्रातृ	युवा	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	4.30	49 %
बुध	पुत्र	ज्ञाति	कुमार	विकल	प्रकाश	0.00	36 %
गुरु	कलत्र	धन	वृद्ध	स्वस्थ	नृत्यलिप्सा	3.61	46 %
शुक्र	ज्ञाति	कलत्र	वृद्ध	मुदित	नृत्यलिप्सा	6.01	60 %
शनि	आत्मा	आयु	बाल	खल	नृत्यलिप्सा	1.59	42 %
राहु	---	ज्ञान	कुमार	निपीदित	प्रकाश	0.00	31 %
केतु	---	मोक्ष	कुमार	खल	नृत्यलिप्सा	0.00	31 %
कुल						**26.99**	

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा
पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल
पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी

चलित कुंडली

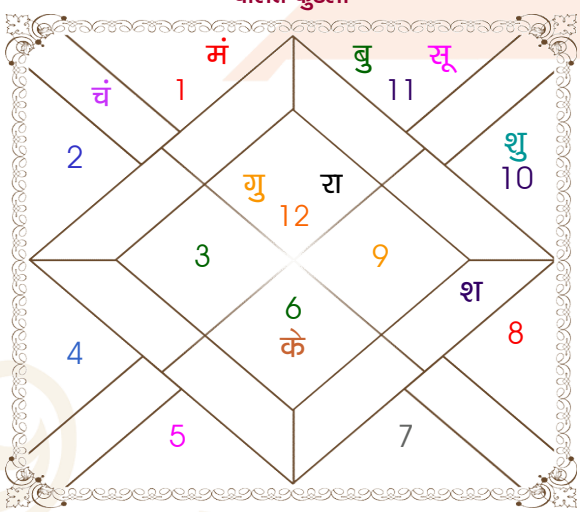

लग्न-चलित

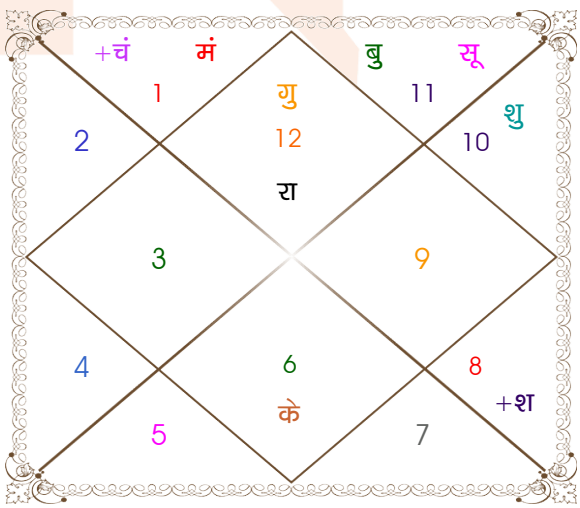

सुदर्शन चक्र

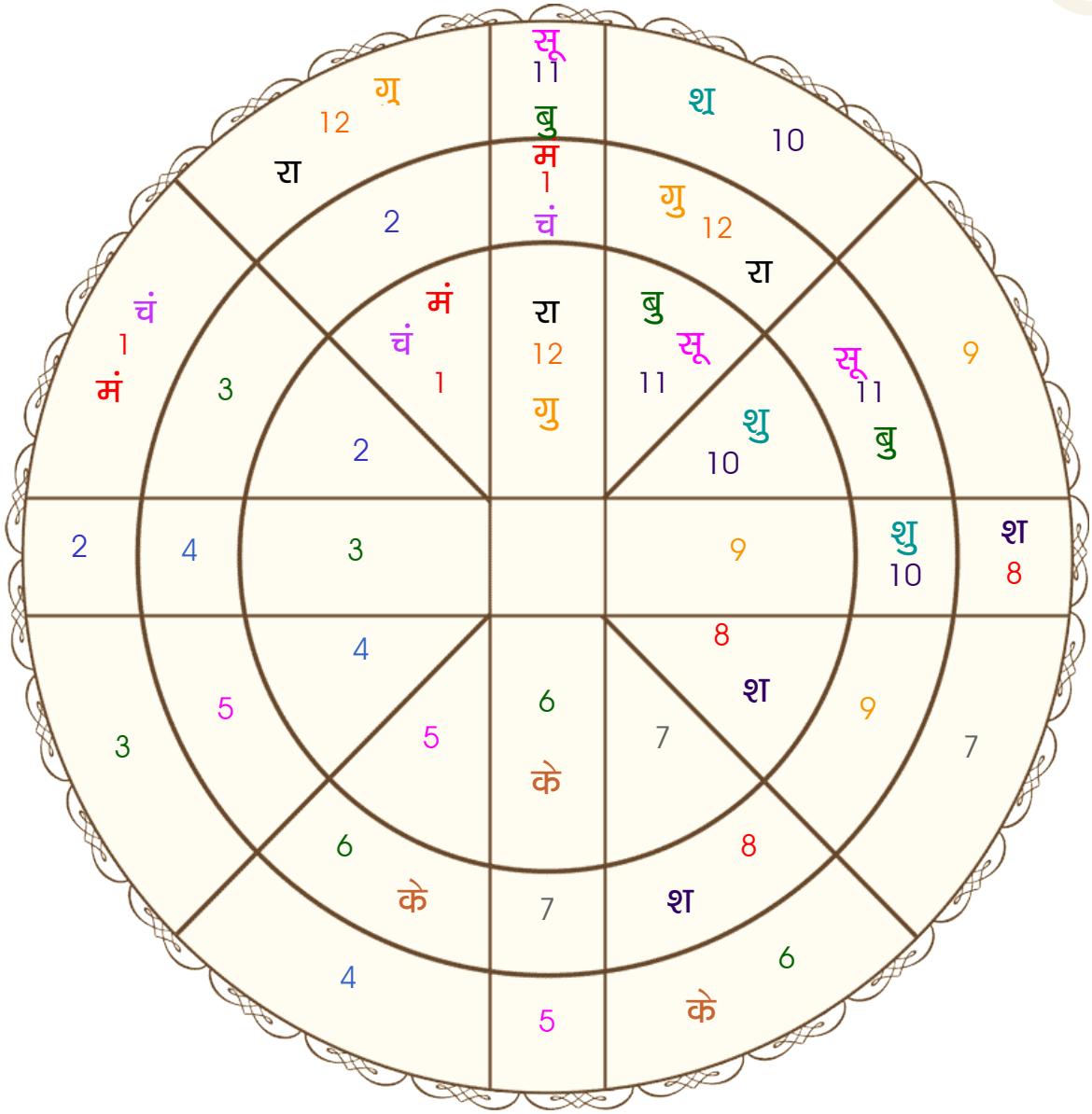

नोटः सुदर्शन चक्र कमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

कृष्णमूर्ति पद्धति

इन पृष्ठों में ज्योतिष की कृष्णमूर्ति पद्धति से संबंधित आपके सभी आवश्यक विवरण दिए गए हैं।

कृष्णमूर्ति पद्धति भारतीय ज्योतिष एवं पाश्चात्य ज्योतिष का मिश्रण है जिसमें ज्योतिष के सभी महत्वपूर्ण शाखाओं से महत्वपूर्ण सिद्धांत लिए गए हैं। वर्तमान समय में यह ज्योतिष की सर्वाधिक सटीक एवं विशुद्ध पद्धति मानी जाती है जिसे सीखना तथा लागू करना बेहद आसान है। हिंदू शास्त्रीय ज्योतिष के विपरीत कृष्णमूर्ति पद्धति क्रमबद्ध एवं अच्छी तरह से परिभाषित है। कृष्णमूर्ति पद्धति के लाभ हुइ समें इस पद्धति से संबंधित आंकड़े यथा कस्पल चार्ट, राशि स्वामी, नक्षत्र स्वामी, उप स्वामी, उप उप स्वामी सभी ग्रहों के दिए गए हैं साथ ही निरयण भाव, भावों के कारक, कारक ग्रह आदि भी सम्मिलित किए गए हैं। इतना ही नहीं, इसमें दृष्टि युति, भाव मध्य आदि भी शुद्ध गणना के साथ दिए गए हैं।

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 2 मास 18 दिन

ग्रह

ग्रह	व	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
सूर्य		कुंभ	20:22:32	शनि	गुरु	गुरु	शनि
चंद्र		मेष	23:11:21	मंगल	शुक्र	शनि	चंद्र
मंगल		मेष	14:59:35	मंगल	शुक्र	शुक्र	शनि
बुध	व	कुंभ	09:41:36	शनि	राहु	गुरु	शुक्र
गुरु		मीन	06:58:09	गुरु	शनि	बुध	गुरु
शुक्र		मक	08:27:57	शनि	सूर्य	शुक्र	मंगल
शनि		वृश्चि	27:01:19	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र
राहु		मीन	18:12:16	गुरु	बुध	बुध	गुरु
केतु		कन्या	18:12:16	बुध	चंद्र	बुध	शुक्र
हर्ष		धनु	02:49:56	गुरु	केतु	शुक्र	बुध
नेप		धनु	14:04:20	गुरु	शुक्र	शुक्र	मंगल
प्लूटो	व	तुला	16:16:02	शुक्र	राहु	शुक्र	राहु

निरयण भाव

भाव	राशि	अंश	रा	न	अं.	प्र.
1	मीन	07:54:54	गुरु	शनि	केतु	शनि
2	मेष	13:07:21	मंगल	केतु	बुध	शनि
3	वृष	12:02:34	शुक्र	चंद्र	राहु	राहु
4	मिथु	07:29:37	बुध	राहु	राहु	शनि
5	कर्क	03:04:17	चंद्र	गुरु	राहु	चंद्र
6	सिंह	02:20:59	सूर्य	केतु	शुक्र	शनि
7	कन्या	07:54:54	बुध	सूर्य	शुक्र	शुक्र
8	तुला	13:07:21	शुक्र	राहु	बुध	शुक्र
9	वृश्चि	12:02:34	मंगल	शनि	चंद्र	शुक्र
10	धनु	07:29:37	गुरु	केतु	राहु	मंगल
11	मक	03:04:17	शनि	सूर्य	शनि	शनि
12	कुंभ	02:20:59	शनि	मंगल	केतु	गुरु

के.पी. अयनांश : 23:34:29

फॉरच्युना : वृष 10:43:44

लग्न कुंडली

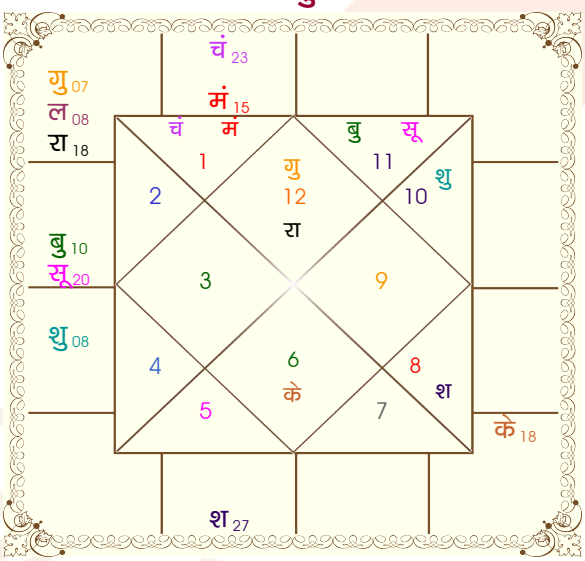

भाव कुंडली

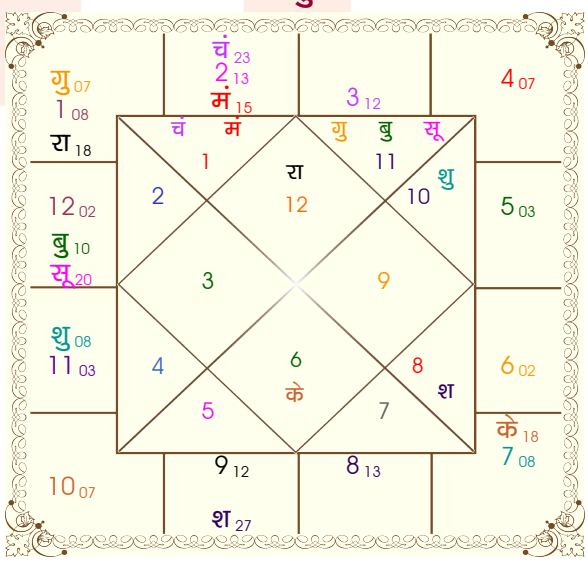

कारकत्व एवं स्वामित्व

भाव कारक

भाव	ग्रह
1	सूर्य- बुध, गुरु- राहु,
2	चंद्र, मंगल, केतु,
3	चंद्र- मंगल- शुक्र-
4	बुध- शनि- राहु-
5	चंद्र- केतु-
6	सूर्य- शुक्र-
7	बुध- शनि- राहु- केतु,
8	चंद्र- मंगल- शुक्र-
9	मंगल- गुरु, शनि,
10	सूर्य- गुरु-
11	चंद्र, मंगल, गुरु- शुक्र, शनि-
12	सूर्य+ बुध, गुरु+ शुक्र, शनि+ राहु,

ग्रह कारकत्व

ग्रह	भाव
सूर्य	1- 6- 10- 12+
चंद्र	2, 3- 5- 8- 11,
मंगल	2, 3- 8- 9- 11,
बुध	1, 4- 7- 12,
गुरु	1- 9, 10- 11- 12+
शुक्र	3- 6- 8- 11, 12,
शनि	4- 7- 9, 11- 12+
राहु	1, 4- 7- 12,
केतु	2, 5- 7,

स्वामित्व

लग्न नक्षत्र स्वामी	शनि
लग्न राशि स्वामी	गुरु
राशि नक्षत्र स्वामी	शुक्र
राशि स्वामी	मंगल
वार स्वामी	गुरु
लग्न अन्तर स्वामी	केतु
राशि अन्तर स्वामी	शनि

कारकत्व-सारिणी

भाव	स्थित ग्रह के नक्षत्र में	स्थित ग्रह	स्वामी के नक्षत्र में	स्वामी
1	बु	रा	सू	गु
2	के	चं मं	--	मं
3	--	--	चं मं	शु
4	--	--	श रा	बु
5	--	--	के	चं
6	--	--	शु	सू
7	--	के	श रा	बु
8	--	--	चं मं	शु
9	गु	श	--	मं
10	--	--	सू	गु
11	चं मं	शु	गु	श
12	सू शु श रा	सू बु गु	गु	श

ग्रह कारक सारिणी-1

ग्रह	भावाधिपति	नक्षत्राधिपति	स्थित	भाव
सूर्य	6	7,11	कुम्भ	12
चंद्र	5	3	मेष	2
मंगल	2,9	12	मेष	2
बुध	4,7	---	कुम्भ	12
गुरु	1,10	5	मीन	12
शुक्र	3,8	---	मकर	11
शनि	11,12	1,9	वृश्चिक	9
राहु	---	4,8	मीन	1
केतु	---	2,6,10	कन्या	7

ग्रह कारक सारिणी-2

ग्रह	भावाधि भाव	नक्षत्राधि भाव	स्थित भाव	स्वामित्व	अन्तर स्वामी	स्थित भाव
सूर्य	1,10	5	12	1,10	5	12
चंद्र	3,8	---	11	11,12	1,9	9
मंगल	3,8	---	11	3,8	---	11
बुध	---	4,8	1	1,10	5	12
गुरु	11,12	1,9	9	4,7	---	12
शुक्र	6	7,11	12	3,8	---	11
शनि	4,7	---	12	1,10	5	12
राहु	4,7	---	12	4,7	---	12
केतु	5	3	2	4,7	---	12

ग्रह दृष्टि विचार

दृष्य ग्रह

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु	हर्ष	नेप	प्लूटो
	320.27	23.09	14.89	309.59	336.87	278.36	236.92	348.10	168.10	242.73	253.97	196.16
सूर्य	--	तृती	तृती	युति	--	--	--	--	--	--	--	--
320.27	0.00	2.22	0.48	4.37	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	युति	--	--	--	--	--	--	--	--	सप्त
23.09	0.00	0.00	6.54	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.49
मंगल	--	युति	--	--	--	--	8वां	--	--	--	--	सप्त
14.89	0.00	6.54	0.00	0.00	0.00	0.00	3.06	0.00	0.00	0.00	0.00	9.91
बुध	युति	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--	--	--
309.59	4.37	0.00	0.55	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
गुरु	--	--	--	--	--	--	--	युति	सप्त	--	--	--
336.87	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	3.84	3.84	0.00	0.00	0.00
शुक्र	--	--	--	--	तृती	--	--	--	--	--	--	--
278.36	0.00	0.00	0.00	0.00	2.77	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
शनि	--	--	--	3रा	--	--	--	--	--	युति	--	--
236.92	0.00	0.00	0.00	2.41	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.21	0.00	0.00
राहु	--	--	--	--	युति	--	--	--	सप्त	--	--	--
348.10	0.00	0.00	0.00	0.00	3.84	0.00	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	0.00
केतु	--	--	--	--	सप्त	--	--	सप्त	--	--	चतु	--
168.10	0.00	0.00	0.00	0.00	3.84	0.00	0.00	10.00	0.00	0.00	1.41	0.00
हर्ष	--	--	--	--	चतु	--	युति	--	--	--	युति	--
242.73	0.00	0.00	0.00	0.00	1.41	0.00	8.21	0.00	0.00	0.00	3.84	0.00
नेप	--	--	पंच	तृती	--	--	--	चतु	--	युति	--	--
253.97	0.00	0.00	2.91	1.24	0.00	0.00	0.00	1.41	0.00	3.84	0.00	0.00
प्लूटो	पंच	सप्त	सप्त	--	--	--	नवां	--	--	--	तृती	--
196.16	1.43	7.49	9.91	0.00	0.00	0.00	0.38	0.00	0.00	0.00	2.52	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव मध्य दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
	337.81	7.67	37.53	67.39	97.53	127.67	157.81	187.67	217.53	247.39	277.53	307.67
सूर्य	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
320.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.49	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.49
चंद्र	--	--	युति	अष्ट	--	--	अष्टां	--	सप्त	--	--	--
23.09	0.00	0.00	0.58	0.46	0.00	0.00	0.91	0.00	0.58	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--
14.89	0.00	7.28	0.00	0.00	7.17	0.00	0.00	7.28	7.17	0.00	0.00	0.00
बुध	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
309.59	0.00	2.63	2.57	0.00	0.00	9.80	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.80
गुरु	युति	--	तृती	चतु	--	षष्ठ	सप्त	--	9वां	--	--	--
336.87	9.95	0.00	2.95	2.97	0.00	0.30	9.95	0.00	9.98	0.00	0.00	0.00
शुक्र	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
278.36	2.97	2.95	2.93	0.04	9.96	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.96	0.00
शनि	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	नवां	3रा
236.92	0.00	0.00	0.00	4.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.57	0.57	4.30
राहु	युति	--	--	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--
348.10	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	--
168.10	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
हर्ष	चतु	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	तृती
242.73	0.71	0.82	0.00	8.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.82
नेप	--	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
253.97	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
196.16	0.00	6.30	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	6.30	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

भाव दृष्टि विचार

दृष्य भाव

	1 337.81	2 13.02	3 41.94	4 67.39	5 92.97	6 122.25	7 157.81	8 193.02	9 221.94	10 247.39	11 272.97	12 302.25
सूर्य	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--	--
320.27	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
चंद्र	--	--	--	अष्ट	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--
23.09	0.00	0.00	0.00	0.46	0.00	0.00	0.91	4.94	0.00	0.00	0.00	0.00
मंगल	--	युति	--	--	4था	--	--	सप्त	8वां	--	--	--
14.89	0.00	9.81	0.00	0.00	3.17	0.00	0.00	9.81	9.53	0.00	0.00	0.00
बुध	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति
309.59	0.00	1.87	2.45	0.00	0.00	7.19	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.19
गुरु	युति	--	तृती	चतु	--	--	सप्त	--	9वां	--	--	--
336.87	9.95	0.00	0.72	2.97	0.00	0.00	9.95	0.00	8.62	0.00	0.00	0.00
शुक्र	तृती	चतु	पंच	षष्ठ	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--
278.36	2.97	1.03	1.78	0.04	8.45	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	8.45	0.00
शनि	--	--	सप्त	सप्त	--	--	--	--	युति	युति	--	3रा
236.92	0.00	0.00	0.02	4.57	0.00	0.00	0.00	0.00	0.02	4.57	0.00	8.48
राहु	युति	--	--	--	--	अष्टां	सप्त	--	--	--	--	--
348.10	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.23	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00
केतु	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--	अष्टां
168.10	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	4.74	0.00	0.00	0.00	0.00	0.23
हर्ष	चतु	--	--	सप्त	--	--	--	--	--	--	--	तृती
242.73	0.71	0.00	0.00	8.83	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	2.98
नेप	--	पंच	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--
253.97	0.00	2.91	0.00	7.72	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	7.72	0.00	0.00
प्लूटो	--	सप्त	--	--	--	--	--	युति	--	--	--	--
196.16	0.00	9.46	0.00	0.00	0.00	0.00	0.00	9.46	0.00	0.00	0.00	0.00

1. उपरोक्त गणना के लिए निम्नलिखित दृष्टियां एवं मान लिए गए हैं :

संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक	संक्षिप्त - दृष्टि	अंश	कालांश	अंक
युति - युति	0	15	10	सप्त - सप्तम	180	15	10
पंच - पंचम	120	6	3	चतु - चतुर्थ	90	6	3
तृती - तृतीय	60	6	3	अष्ट - अष्टमांश	45	1	1
नवां - नवमांश	40	1	1	पंचा - पंचमांश	72	1	1
अष्टां - अष्टचतुर्थांश	135	1	1	षष्ठ - षष्ठ	150	1	1

विशेष दृष्टियां - मंगल की चतुर्थ एवं अष्टम, बृहस्पति की पंचम एवं नवम तथा शनि की तृतीय एवं दशम दृष्टि के कालांश 15 तथा अंक 10 माने गये हैं।

2. उपरोक्त तालिका दृष्टि एवं अंक दर्शाती हैं। अंको की गणना ग्रह की दृष्टि बिंदु से दूरी को लेकर कोज्या सूत्र के आधार पर की गई है।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

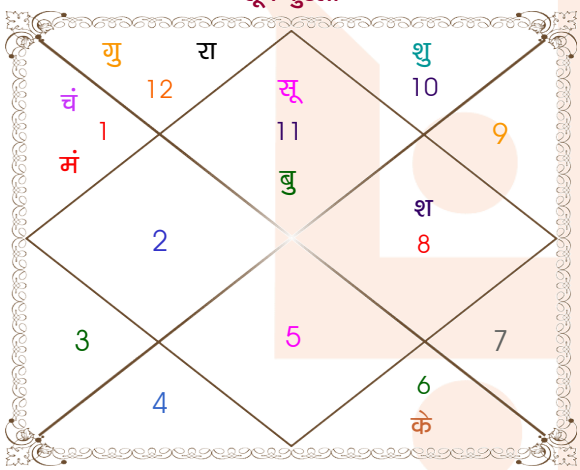

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

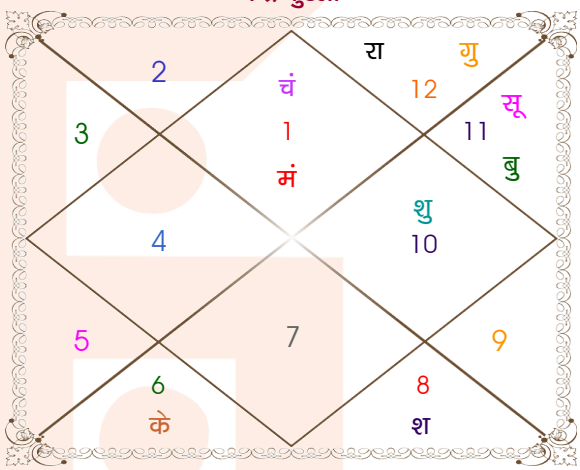

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

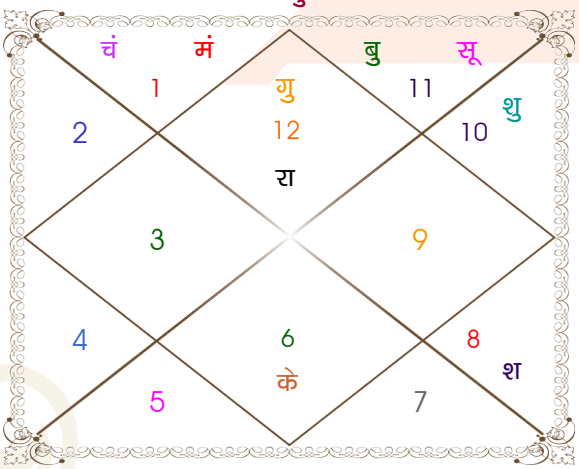

देह विचारः

होरा कुंडली

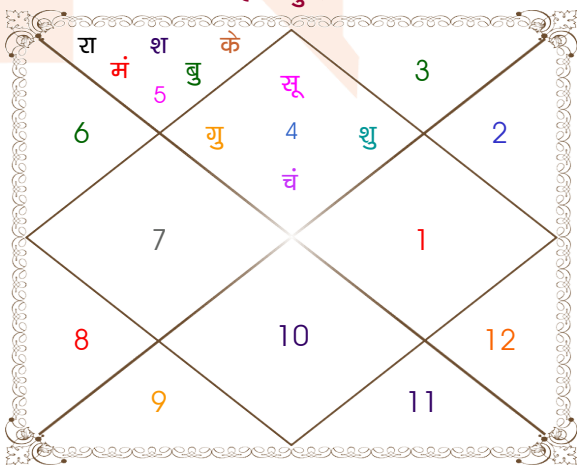

सम्पदाविचारः

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

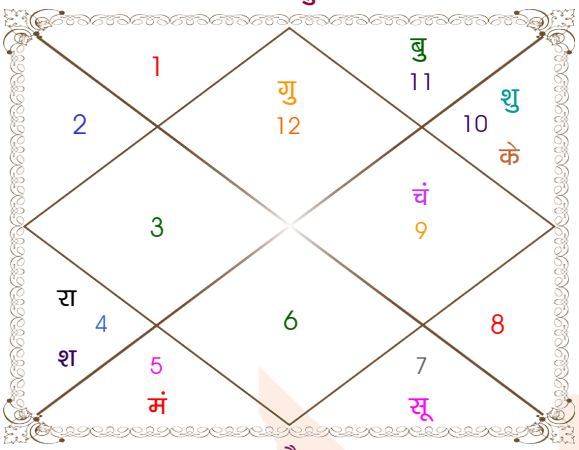

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

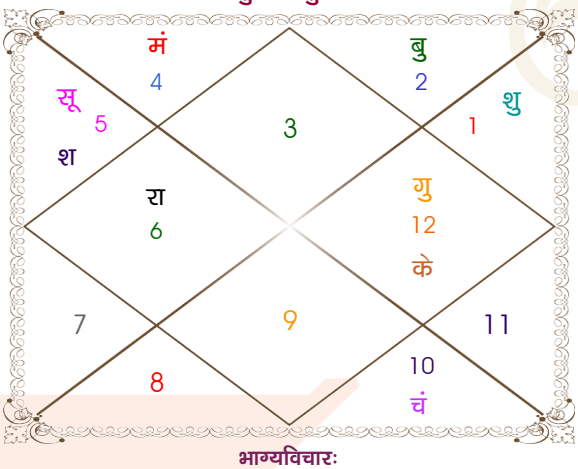

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

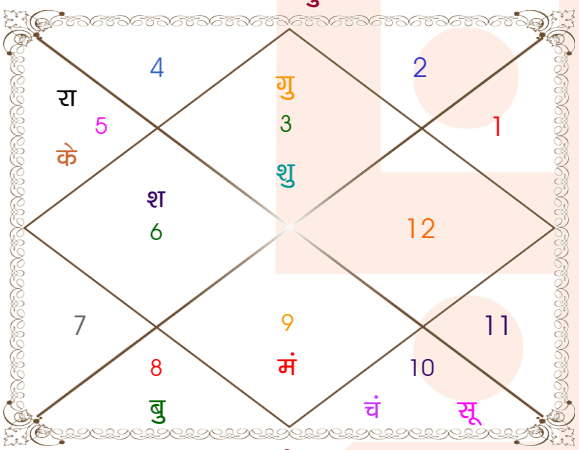

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

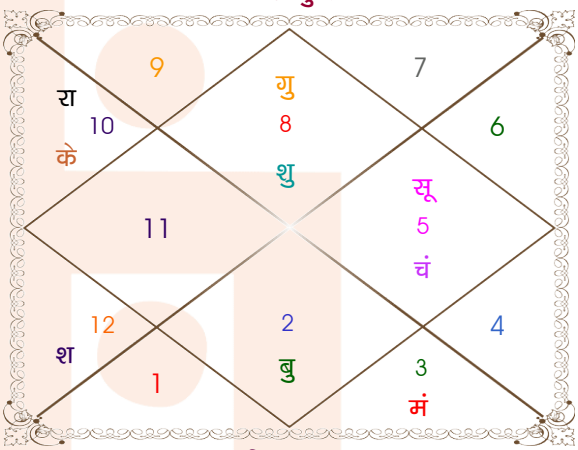

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

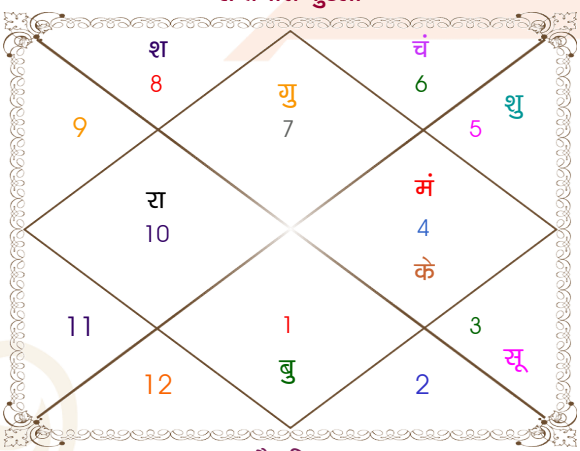

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

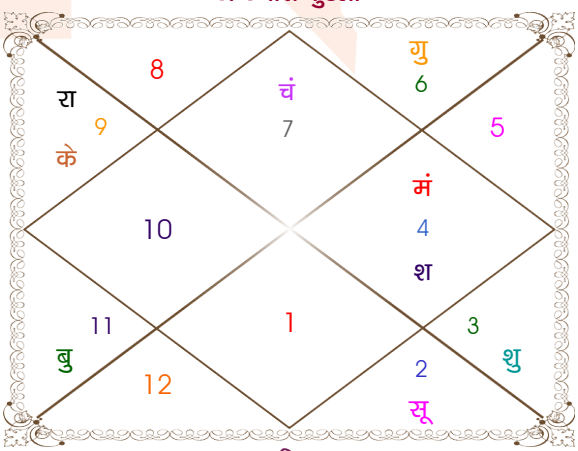

आयुविचारः

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

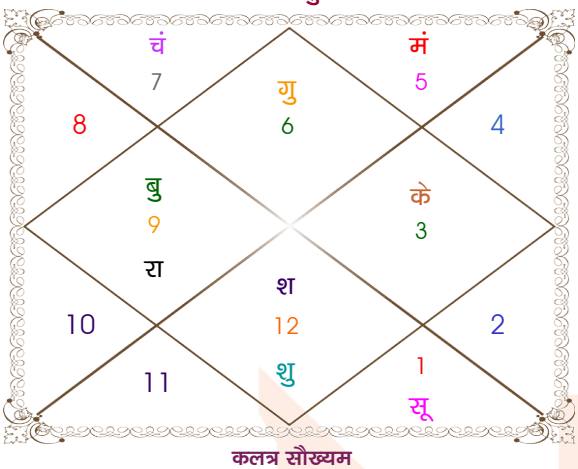

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

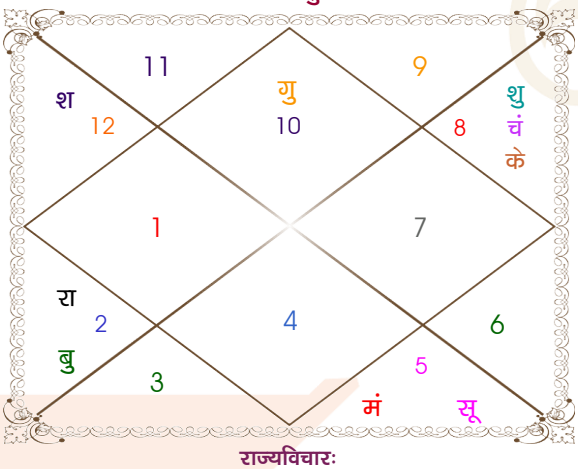

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

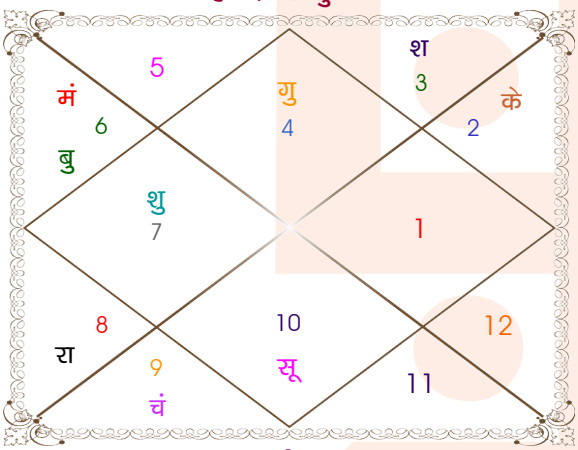

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

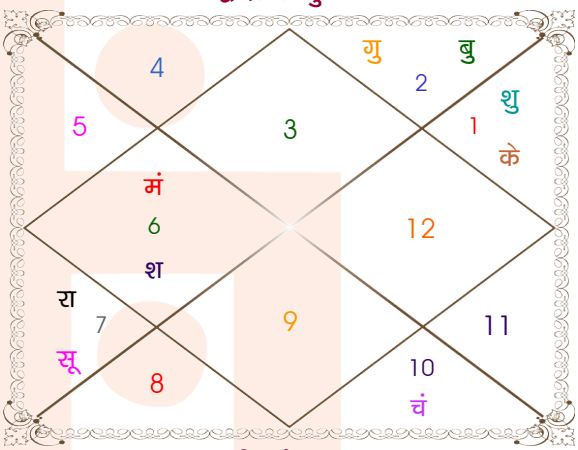

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

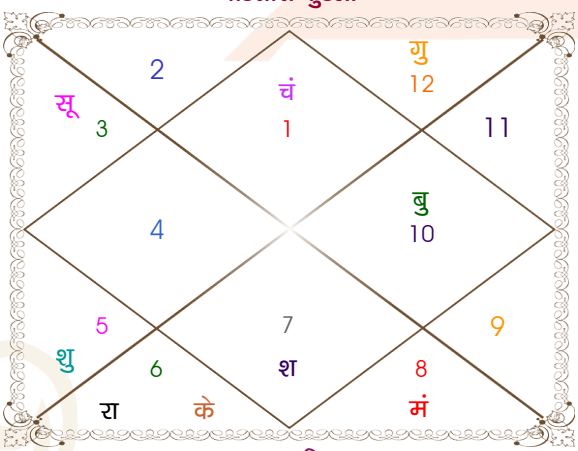

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

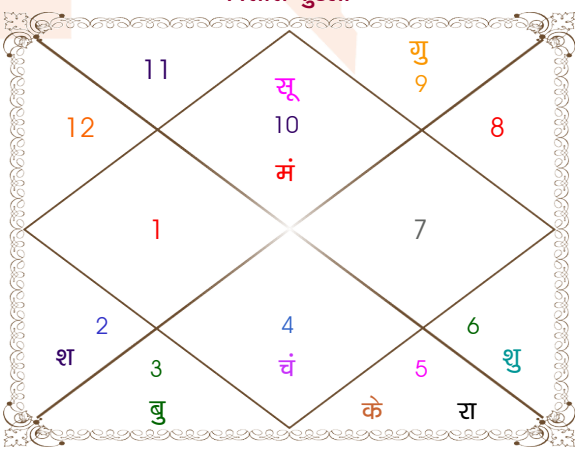

उपासनाज्ञानम्

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

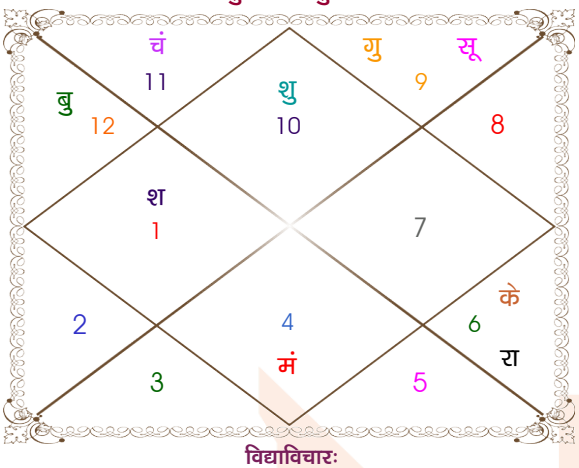

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

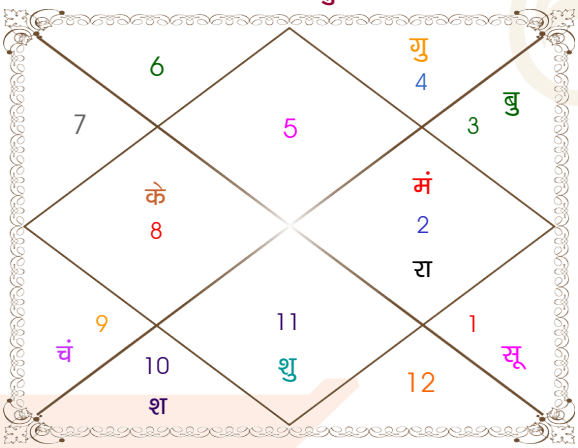

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

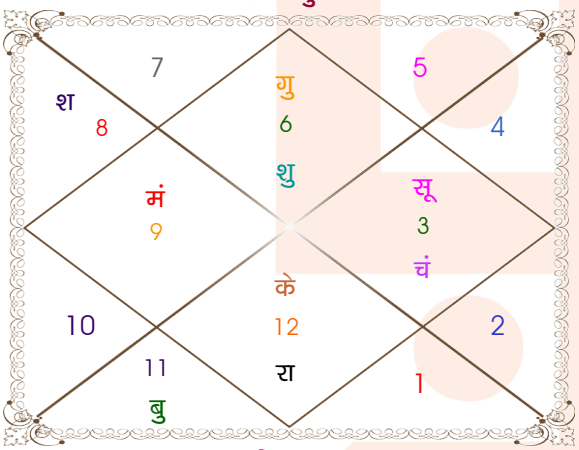

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

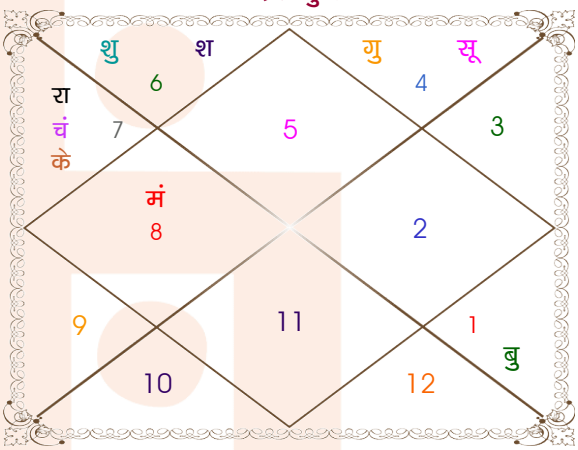

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

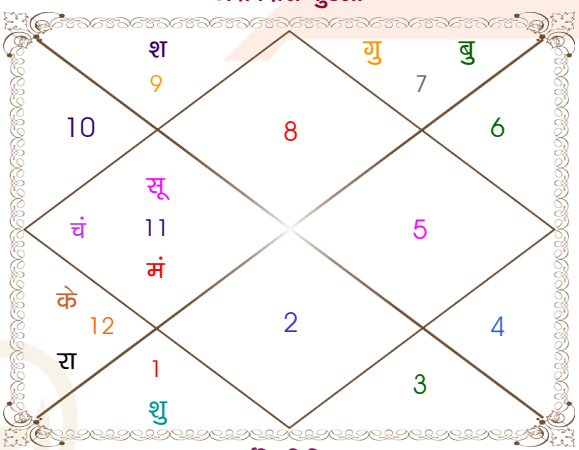

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

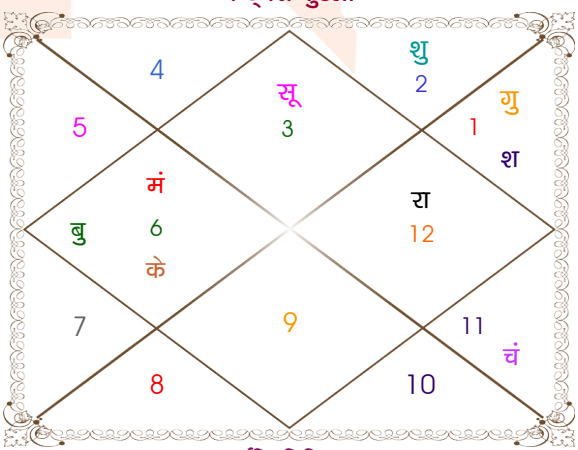

सर्वास्थितिविचारः

षोडशवर्ग सारणियाँ

षोडशवर्ग सारिणी

	लग्न	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
राशि	मीन	कुंभ	मेष	मेष	कुंभ	मीन	मक	वृश्चि	मीन	कन्या
होरा	कर्क	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	कर्क	कर्क	सिंह	सिंह	सिंह
द्रेष्काण	मीन	तुला	धनु	सिंह	कुंभ	मीन	मक	कर्क	कर्क	मक
चतुर्थांश	मिथु	सिंह	मक	कर्क	वृष	मीन	मेष	सिंह	कन्या	मीन
सप्तमांश	तुला	मिथु	कन्या	कर्क	मेष	तुला	सिंह	वृश्चि	मक	कर्क
नवमांश	कन्या	मेष	तुला	सिंह	धनु	कन्या	मीन	मीन	धनु	मिथु
दशमांश	मक	सिंह	वृश्चि	सिंह	वृष	मक	वृश्चि	मीन	वृष	वृश्चि
द्वादशांश	मिथु	तुला	मक	कन्या	वृष	वृष	मेष	कन्या	तुला	मेष
षोडशांश	मेष	मिथु	मेष	वृश्चि	मक	मीन	सिंह	तुला	कन्या	कन्या
विंशांश	मक	मक	कर्क	मक	मिथु	धनु	कन्या	वृष	सिंह	सिंह
चतुर्विंशांश	मक	धनु	कुंभ	कर्क	मीन	धनु	मक	मेष	कन्या	कन्या
सप्तविंशांश	सिंह	मेष	धनु	वृष	मिथु	कर्क	कुंभ	मक	वृष	वृश्चि
त्रिंशांश	कन्या	मिथु	मिथु	धनु	कुंभ	कन्या	कन्या	वृश्चि	मीन	मीन
खवेदांश	सिंह	कर्क	तुला	वृश्चि	मेष	कर्क	कन्या	कन्या	तुला	तुला
अक्षवेदांश	वृश्चि	कुंभ	कुंभ	कुंभ	तुला	तुला	मेष	धनु	मीन	मीन
षष्ट्यंश	मिथु	मिथु	कुंभ	कन्या	कन्या	मेष	वृष	मेष	मीन	कन्या

वर्ग भेद

	षडवर्ग	सप्तवर्ग	दशवर्ग	षोडशवर्ग
सूर्य	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
चन्द्र	1 ---	1 ---	1 ---	2 भेदक
मंगल	1 ---	1 ---	2 पारिजात	4 नागपुष्प
बुध	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
गुरु	3 व्यंजन	3 व्यंजन	4 गोपुर	9 पूर्णचन्द
शुक्र	1 ---	1 ---	2 पारिजात	2 भेदक
शनि	0 ---	0 ---	1 ---	2 भेदक
राहु	0 ---	0 ---	1 ---	3 कुसुम
केतु	1 ---	1 ---	1 ---	3 कुसुम

विंशोपक बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
षडवर्ग	12.65	12.45	17.80	14.80	15.80	16.15	7.30	9.00	7.70
सप्तवर्ग	12.08	13.23	16.70	14.80	14.80	15.23	7.25	9.23	7.30
दशवर्ग	10.53	10.83	15.25	16.33	15.38	16.03	7.63	9.93	7.38
षोडशवर्ग	11.58	10.80	15.58	16.30	16.33	16.25	8.42	9.75	7.25

मैत्री सारिणी

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	---	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	---	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	---	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	---	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	---

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
चंद्र	मित्र	---	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
मंगल	मित्र	शत्रु	---	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	---	मित्र	मित्र	शत्रु
शनि	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	मित्र	---	शत्रु	मित्र
राहु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र	शत्रु	---	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	---

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	---	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	सम	सम	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	---	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	सम	अधिशत्रु
मंगल	अतिमित्र	सम	---	सम	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	सम	सम
बुध	सम	सम	मित्र	---	मित्र	अतिमित्र	मित्र	मित्र	शत्रु
गुरु	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	सम	---	सम	शत्रु	शत्रु	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	मित्र	---	अतिमित्र	अतिमित्र	सम
शनि	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अतिमित्र	शत्रु	अतिमित्र	---	सम	सम
राहु	सम	सम	सम	मित्र	शत्रु	अतिमित्र	सम	---	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	सम	सम	अधिशत्रु	---

षड्बल और अष्टकवर्ग

जन्मकुंडली में ग्रहों एवं भावों के बिल्कुल सही बल को जानें।

किसी भी ग्रह के सही बल का निर्धारण भचक्र में उस ग्रह की स्थिति का विश्लेषण कर किया जाता है। ग्रहों की भिन्न-भिन्न स्थिति षड्बल के अलग-अलग शक्तियों को दर्शाते हैं। किसी ग्रह का बल अथवा उसकी कमजोरी का पता उसके षड्बल पर निर्भर करता है। षड्बल एवं भावबल सारणी को देखकर आप पता कर सकते हैं कि कौन सा ग्रह आपकी कुंडली में कितना मजबूत है। भावबल के द्वारा जन्मकुंडली के सभी 12 भावों के बल का ज्ञान होता है। इससे साफ निर्देश मिल जाता है कि जीवन के किस क्षेत्र में आप बलशाली हैं अथवा जीवन के किस पहलू में आपकी कमजोरी एवं असफलता छिपी हुई है।

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	43	57	34	12	21	34	48
सप्तवर्गज बल	75	113	150	105	113	113	41
ओजयुग्मक बल	30	0	30	30	0	30	0
केन्द्र बल	15	30	30	15	60	30	15
द्रेष्काण बल	0	15	0	0	15	0	0
कुल स्थान बल	163	214	244	162	208	206	104
कुल दिग्बल	36	45	18	51	60	10	34
नतोन्नत बल	35	25	25	60	35	35	25
पक्ष बल	39	78	39	39	21	21	39
त्रिभाग बल	0	0	0	60	60	0	0
अब्द बल	0	0	0	0	0	0	15
मास बल	0	0	0	30	0	0	0
वार बल	0	0	0	0	45	0	0
होरा बल	0	0	0	0	60	0	0
अयन बल	43	8	49	43	30	5	60
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	118	111	112	233	252	61	138
कुल चेष्टाबल	0	0	22	55	7	28	29
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	-20	-1	0	-20	-6	-12	-16
कुल षट्बल	357	421	414	506	554	337	297
रूप षट्बल	6.0	7.0	6.9	8.4	9.2	5.6	5.0
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.2	1.2	1.4	1.2	1.4	1.0	1.0
संबंधित पद	4	5	2	3	1	6	7

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	32.72	34.45	27.45	25.54	11.96	30.88	37.21
कष्ट फल	24.21	11.36	31.24	15.14	45.71	28.86	19.52

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	554	414	337	506	421	357	506	337	414	554	297	297
भावदिग्बल	30	20	10	30	50	20	0	10	40	30	50	50
भावदृष्टि बल	-6	19	53	49	46	33	81	52	45	-7	-12	-21
कुल भाव बल	578	452	400	584	517	410	586	399	499	577	336	327
रूप भाव बल	9.6	7.5	6.7	9.7	8.6	6.8	9.8	6.6	8.3	9.6	5.6	5.4
संबंधित पद	3	7	9	2	5	8	1	10	6	4	11	12

षट्बल ग्राफ

स्थान बल

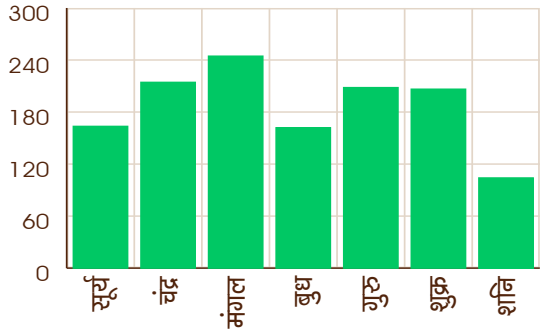

दिग्बल

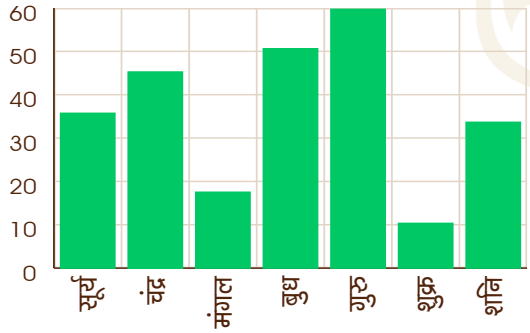

कालबल

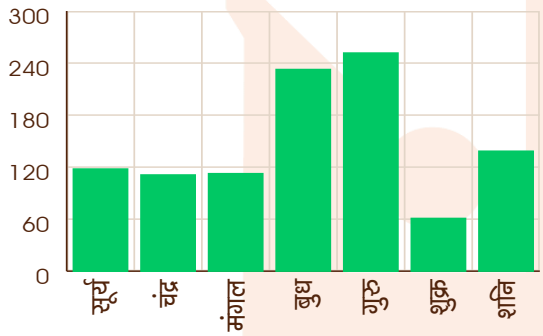

चेष्टाबल

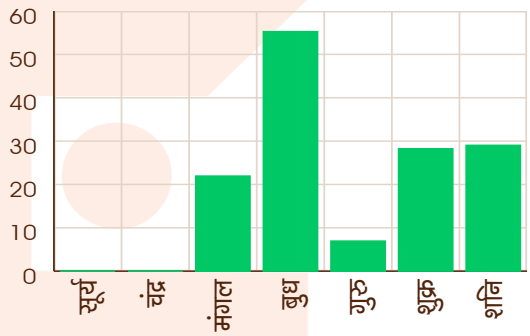

नैसर्गिक बल

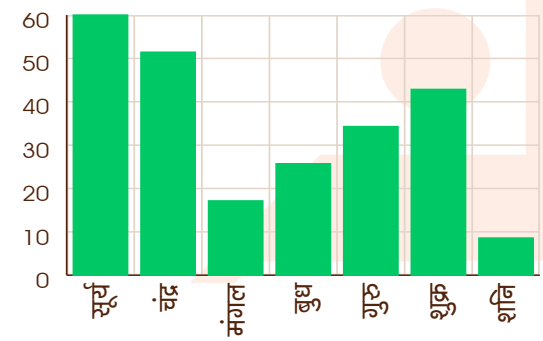

दृग्बल

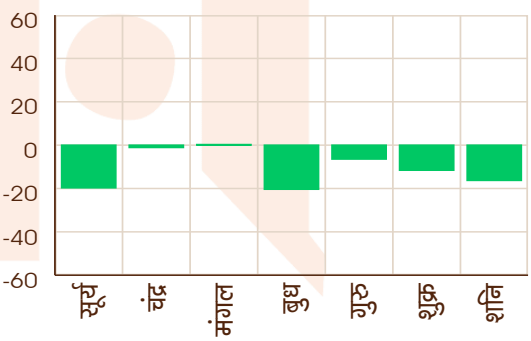

रूप षट्बल

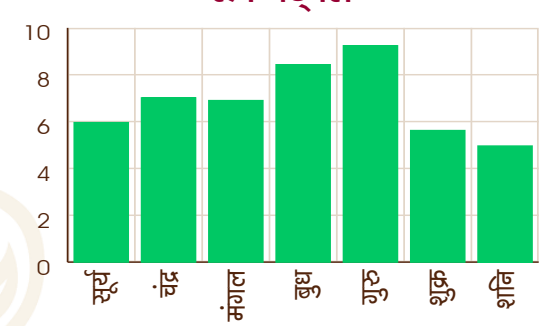

न्यूनतम षट्बल

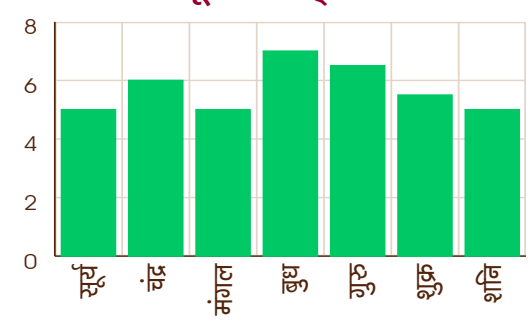

भाव बल ग्राफ

भावाधिपति बल

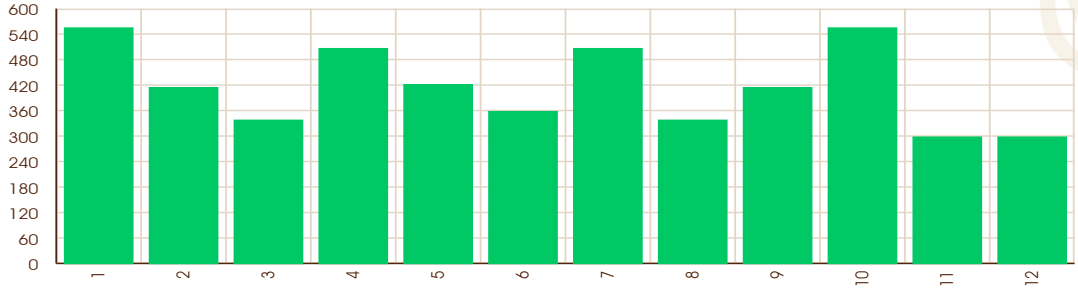

भावदिग्बल

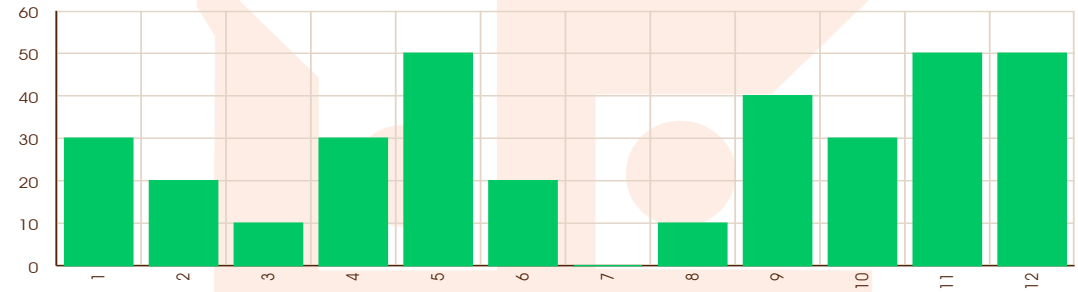

भावदृष्टि बल

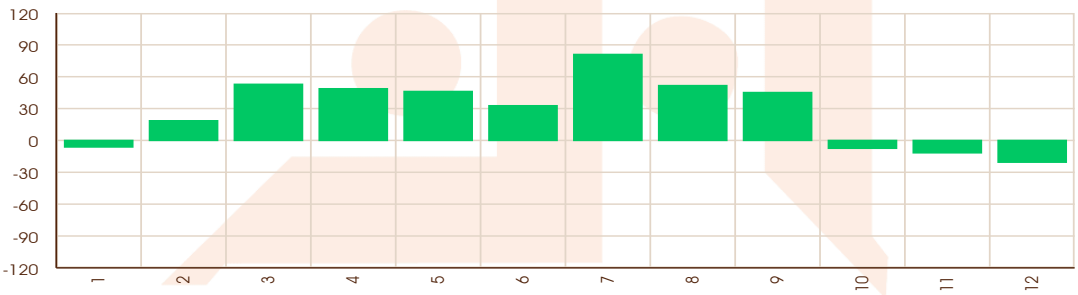

भाव बल

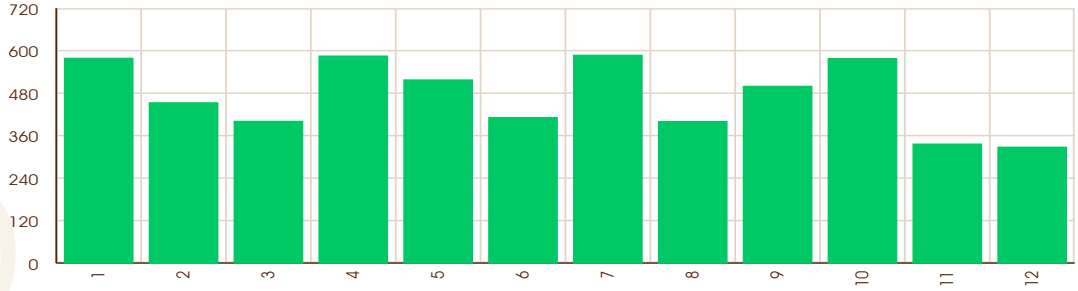

षट्बल तथा भावबल ग्राफ

रूप षट्बल

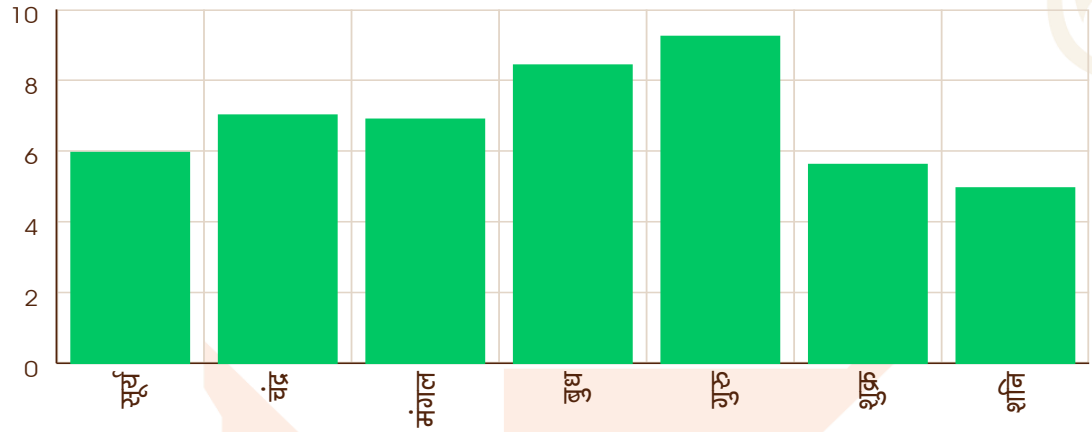

इष्ट - कष्ट फल

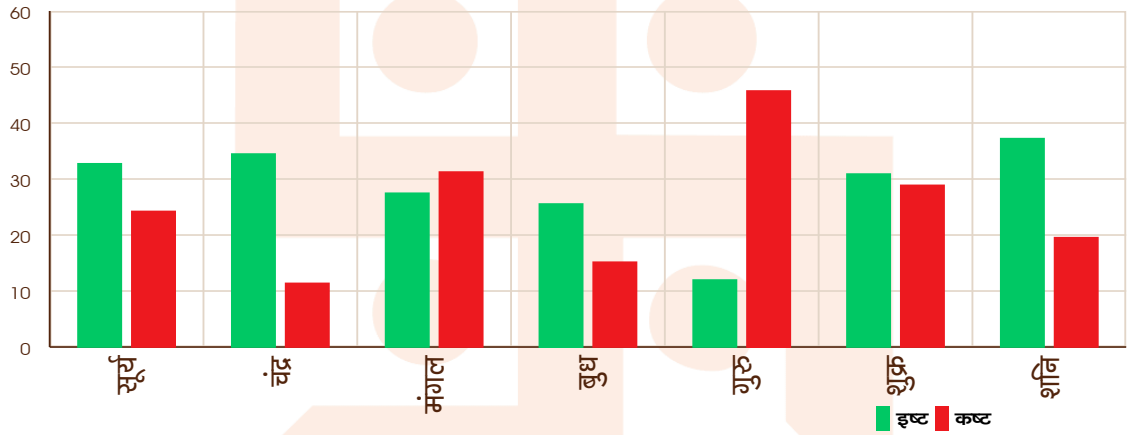

रूप भाव बल

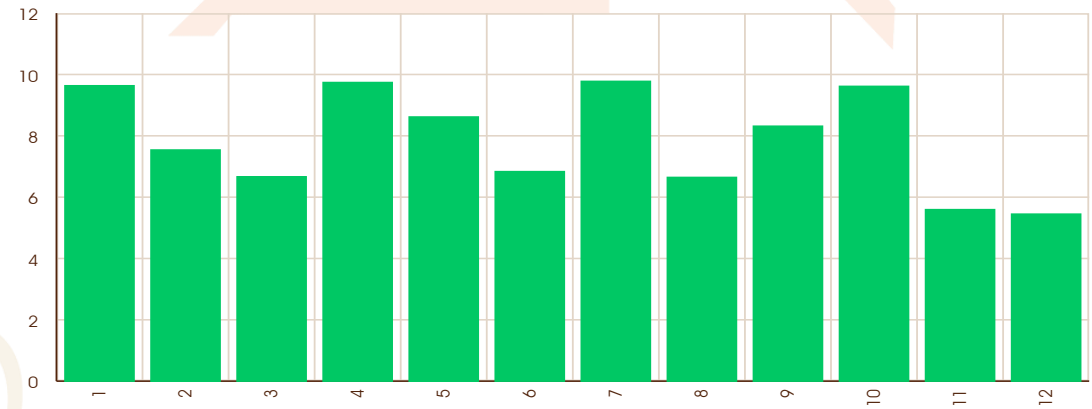

उपग्रह एवं आरूढ़

उपग्रह	संक्षि	राशि	अंश	उच्च	स्थिति	नक्षत्र	पद	नं.
लग्न	ल	मीन	07:48:46	--	--	उ०भाद्रपद	2	26
गुलिक	गु	वृष	09:15:36	--	--	कृतिका	4	3
काल	का	मिथु	00:43:33	--	--	मृगशिरा	3	5
मृत्यु	मृ	कर्क	10:55:26	--	--	पुष्य	3	8
यमघंटक	यम	मीन	17:28:05	--	--	रेवती	1	27
अर्द्धप्रहर	अर्द्ध	सिंह	00:48:02	--	--	मघा	1	10
धूम	धू	कर्क	03:36:24	--	--	पुष्य	1	8
व्यतिपात	व्य	धनु	26:23:36	--	--	पूर्वाषाढ़ा	4	20
परिवेश	परि	मिथु	26:23:36	उच्च	--	पुनर्वसु	2	7
इन्द्रचाप	इ	मक	03:36:24	--	--	उत्तराषाढ़ा	3	21
उपकेतु	उप	मक	20:16:24	--	--	श्रवण	4	22

प्राणपद	:	सिंह	12:39:17	कारकाँश लग्न	:	मीन	02:16:39
भाव लग्न	:	मीन	22:25:55	होरा लग्न	:	मेष	07:03:03
घटी लग्न	:	वृष	03:22:07	वर्णद लग्न	:	मेष	15:08:11

उपग्रह कुंडली

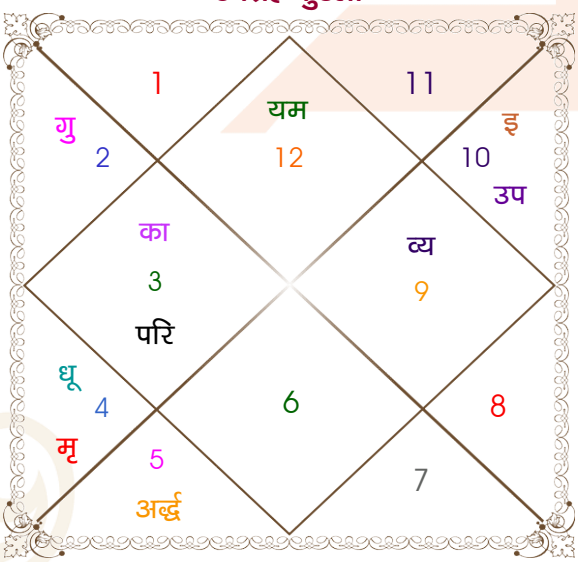

आरूढ़ कुंडली

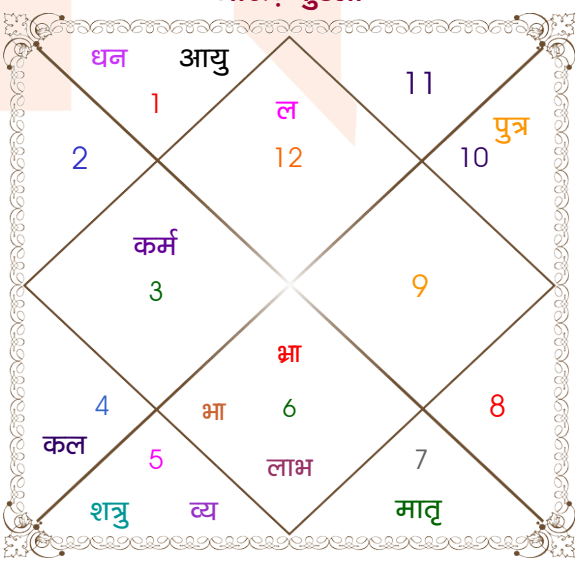

षन्नाडी चक्र

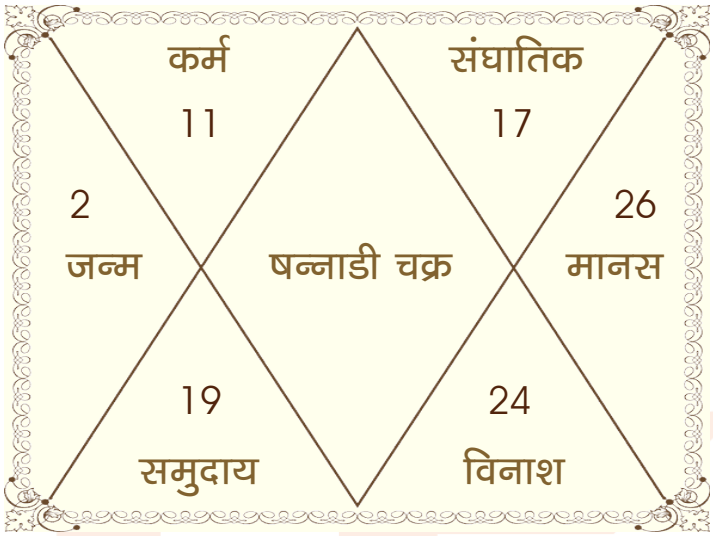

त्रिपाप चक्र

प्रथम चक्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
द्वितीय चक्र	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
तृतीय चक्र	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
केतु पताकी	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु

प्रथम चक्र	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
द्वितीय चक्र	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
तृतीय चक्र	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96
केतु पताकी	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु

प्रथम चक्र	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
द्वितीय चक्र	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72
तृतीय चक्र	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108
केतु पताकी	गुरु	राहु	केतु	शुक्र	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	शनि	गुरु	राहु	केतु
केतु कुंडली	केतु	बुध	मंगल	केतु	गुरु	चंद्र	केतु	शुक्र	राहु	केतु	शनि	सूर्य
गुरु कुंडली	सूर्य	मंगल	केतु	चंद्र	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	सूर्य	मंगल	केतु

प्रस्ताराष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	0	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	1	0	8
शुक्र	0	0	0	0	1	1	0	0	0	0	1	0	3
बुध	0	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	7
चंद्र	1	0	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	4
लग्न	1	0	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	6
कुल	**5**	**1**	**2**	**4**	**5**	**5**	**4**	**3**	**3**	**5**	**6**	**5**	**48**

चंद्र का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	0	0	0	0	1	0	0	0	1	0	1	4
गुरु	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	1	7
मंगल	0	1	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	6
सूर्य	1	0	0	1	1	1	0	1	1	0	0	0	6
शुक्र	1	1	0	1	0	1	1	1	0	0	0	1	7
बुध	1	1	1	0	1	1	0	1	1	0	1	0	8
चंद्र	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	1	0	7
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	0	4
कुल	**6**	**4**	**4**	**2**	**4**	**7**	**3**	**3**	**5**	**5**	**3**	**3**	**49**

मंगल का अष्टकवर्ग

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	1	1	1	1	1	0	1	0	0	1	0	7
गुरु	0	0	0	0	1	0	0	0	1	1	1	0	4
मंगल	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	0	7
सूर्य	1	0	1	1	0	0	0	1	1	0	0	0	5
शुक्र	0	0	1	0	1	0	0	1	1	0	0	0	4
बुध	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	0	0	4
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	0	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	1	5
कुल	**3**	**3**	**5**	**4**	**4**	**2**	**1**	**4**	**5**	**3**	**4**	**1**	**39**

बुध का अष्टकवर्ग

	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुल
शनि	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	1	0	8
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	1	0	0	1	4
मंगल	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	1	1	8
सूर्य	0	0	0	0	1	1	0	0	1	0	1	1	5
शुक्र	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	0	1	8
बुध	1	0	1	0	1	1	0	0	1	1	1	1	8
चंद्र	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	0	1	6
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	7
कुल	**6**	**2**	**4**	**4**	**4**	**5**	**4**	**3**	**5**	**5**	**5**	**7**	**54**

गुरु का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	0	4
गुरु	1	1	1	1	0	0	1	1	0	1	1	0	8
मंगल	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	1	1	7
सूर्य	1	1	1	0	0	1	1	1	1	1	0	1	9
शुक्र	0	0	1	1	0	0	1	1	1	0	0	1	6
बुध	1	0	1	1	1	0	0	1	1	1	0	1	8
चंद्र	0	0	1	0	0	1	0	1	0	1	0	1	5
लग्न	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
कुल	**5**	**5**	**6**	**4**	**3**	**3**	**4**	**7**	**5**	**5**	**4**	**5**	**56**

शुक्र का अष्टकवर्ग

	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	कुल
शनि	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	0	0	7
गुरु	1	0	0	0	0	0	1	0	0	1	1	1	5
मंगल	0	1	1	0	0	1	1	0	1	0	0	1	6
सूर्य	1	0	0	0	0	0	0	0	1	0	0	1	3
शुक्र	1	1	1	1	1	0	0	1	1	1	1	0	9
बुध	0	0	0	1	0	1	1	0	0	1	0	1	5
चंद्र	0	1	1	1	1	1	1	1	0	0	1	1	9
लग्न	1	0	1	1	1	1	1	0	0	1	1	0	8
कुल	**5**	**4**	**5**	**4**	**3**	**5**	**6**	**3**	**4**	**4**	**4**	**5**	**52**

शनि का अष्टकवर्ग

	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	कुल
शनि	0	0	1	0	1	1	0	0	0	0	1	0	4
गुरु	0	0	1	1	0	0	0	0	1	1	0	0	4
मंगल	0	0	1	1	1	0	0	1	0	1	1	0	6
सूर्य	1	1	0	1	1	0	1	0	0	1	1	0	7
शुक्र	1	1	0	0	0	0	0	1	0	0	0	0	3
बुध	1	1	1	0	0	0	0	0	1	0	1	1	6
चंद्र	0	0	0	1	0	0	0	1	0	0	1	0	3
लग्न	0	1	1	0	1	0	1	1	0	1	0	0	6
कुल	**3**	**4**	**5**	**4**	**4**	**1**	**2**	**4**	**2**	**4**	**5**	**1**	**39**

लग्न का अष्टकवर्ग

	मी	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	कुल
शनि	0	1	0	0	0	1	1	0	1	0	1	1	6
गुरु	1	1	0	1	1	1	1	0	1	1	1	0	9
मंगल	0	1	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
सूर्य	0	1	1	0	1	0	0	0	1	1	1	0	6
शुक्र	1	1	1	0	0	1	1	0	0	0	1	1	7
बुध	1	0	1	0	1	0	1	0	1	1	0	1	7
चंद्र	1	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	5
लग्न	0	0	1	0	0	1	0	0	0	1	1	0	4
कुल	**4**	**5**	**4**	**3**	**3**	**4**	**6**	**0**	**4**	**4**	**7**	**5**	**49**

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	1	2	4	2	4	5	1	3	4	5	4	4	39
गुरु	5	6	4	3	3	4	7	5	5	4	5	5	56
मंगल	3	3	5	4	4	2	1	4	5	3	4	1	39
सूर्य	2	4	5	5	4	3	3	5	6	5	5	1	48
शुक्र	4	3	5	6	3	4	4	4	5	5	4	5	52
बुध	4	4	4	5	4	3	5	5	5	7	6	2	54
चंद्र	6	4	4	2	4	7	3	3	5	5	3	3	49
बिन्दु	25	26	31	27	26	28	24	29	35	34	31	21	337
रेखा	31	30	25	29	30	28	32	27	21	22	25	35	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	3	0	3	3	0	1	3	3	3	2	21
गुरु	2	2	0	0	0	0	3	2	2	0	1	2	14
मंगल	0	1	4	3	1	0	0	3	2	1	3	0	18
सूर्य	0	1	2	4	2	0	0	4	4	2	2	0	21
शुक्र	1	0	1	2	0	1	0	0	2	2	0	1	10
बुध	0	1	0	3	0	0	1	3	1	4	2	0	15
चंद्र	2	0	1	0	0	3	0	1	1	1	0	1	10
रेखा	5	5	11	12	6	7	4	14	15	13	11	6	109

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	0	0	0	0	3	0	0	1	1	3	3	2	13
गुरु	2	2	0	0	0	0	1	2	0	0	1	2	10
मंगल	0	1	4	3	1	0	0	3	2	1	3	0	18
सूर्य	0	1	2	4	2	0	0	4	4	2	2	0	21
शुक्र	1	0	0	2	0	0	0	0	1	2	0	1	7
बुध	0	0	0	3	0	0	0	3	1	4	2	0	13
चंद्र	2	0	1	0	0	2	0	1	0	1	0	1	8
रेखा	5	4	7	12	6	2	1	14	9	13	11	6	90

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	162	57	144	87	92	46	119
ग्रह पिंड	54	48	52	63	66	37	76
शोध्य पिंड	216	105	196	150	158	83	195

अष्टकवर्ग सारिणी

सूर्य का अष्टकवर्ग

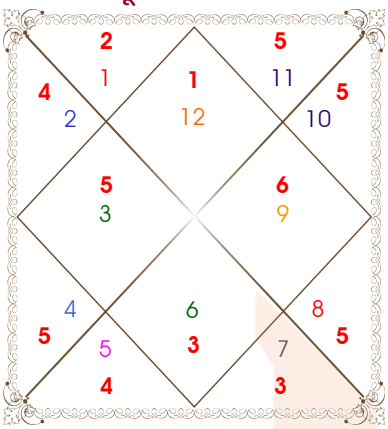

सर्वाष्टकवर्ग

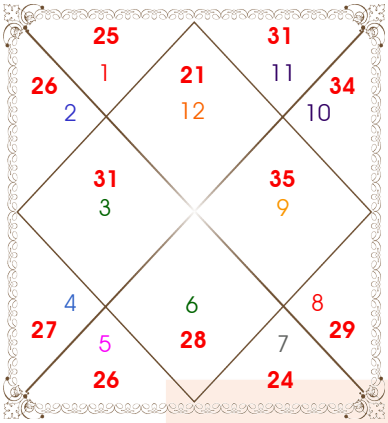

चंद्र का अष्टकवर्ग

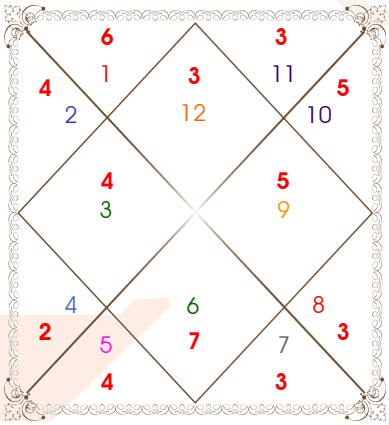

मंगल का अष्टकवर्ग

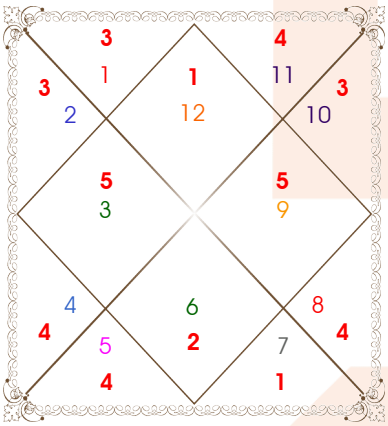

बुध का अष्टकवर्ग

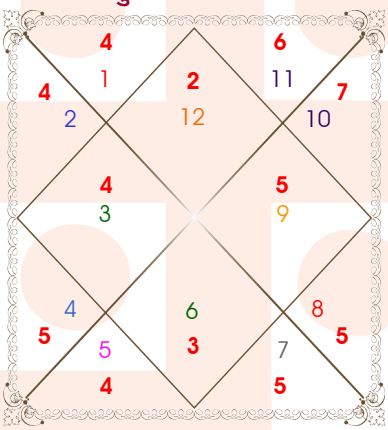

गुरु का अष्टकवर्ग

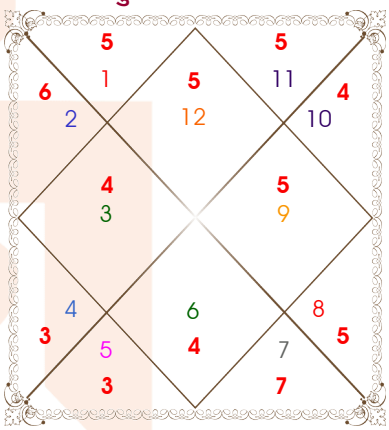

शुक्र का अष्टकवर्ग

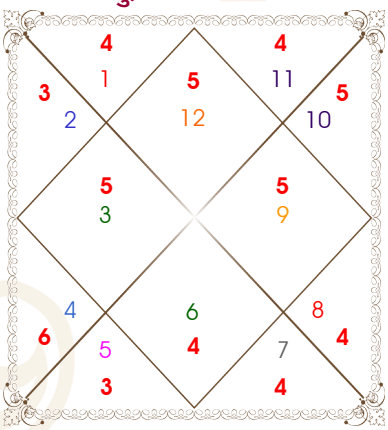

शनि का अष्टकवर्ग

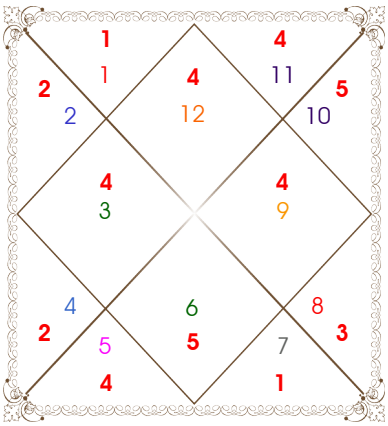

लग्न का अष्टकवर्ग

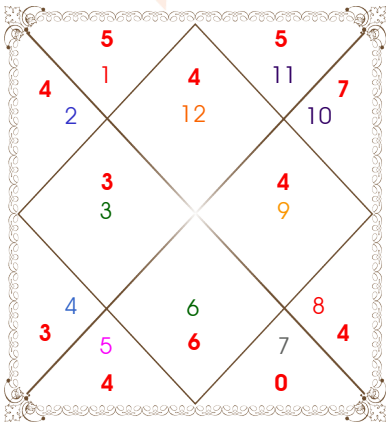

भिन्नाष्टक ग्राफ

सूर्य

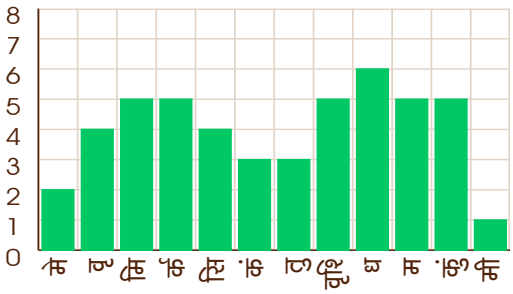

चन्द्र

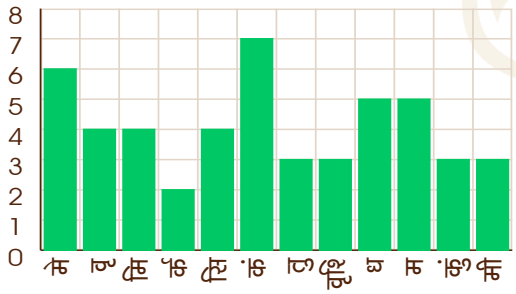

मंगल

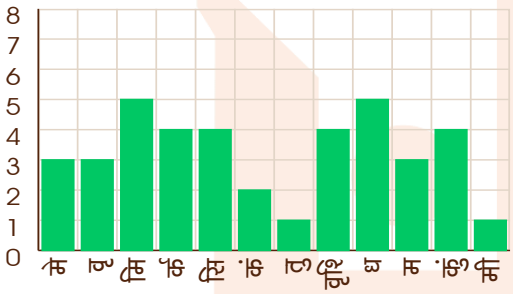

बुध

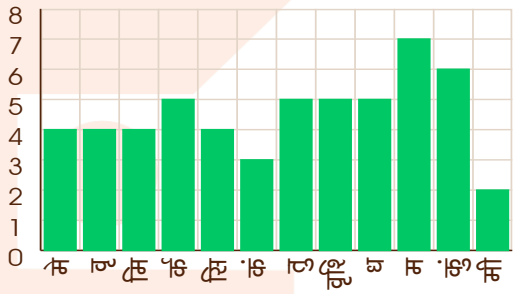

गुरु

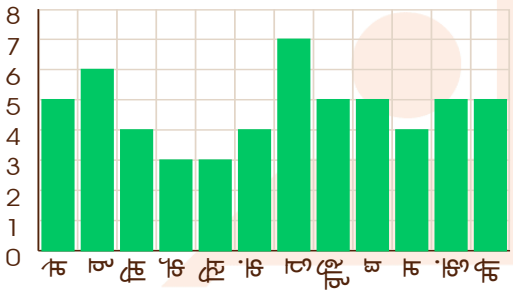

शुक्र

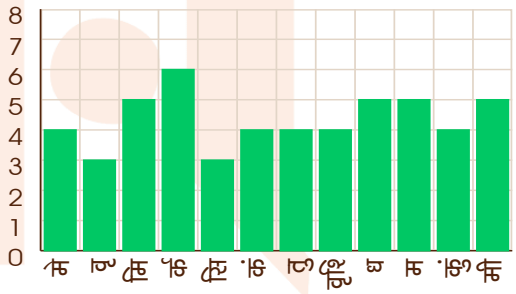

शनि

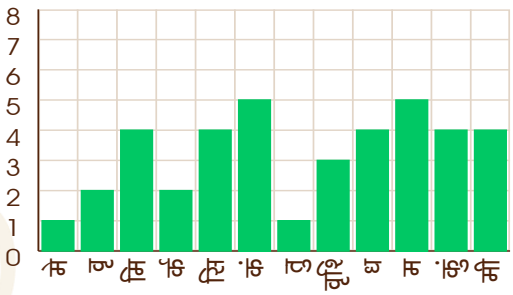

लग्न

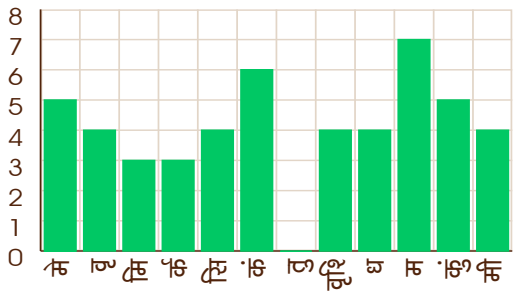

अष्टकवर्ग ग्राफ

सर्वाष्टकवर्ग

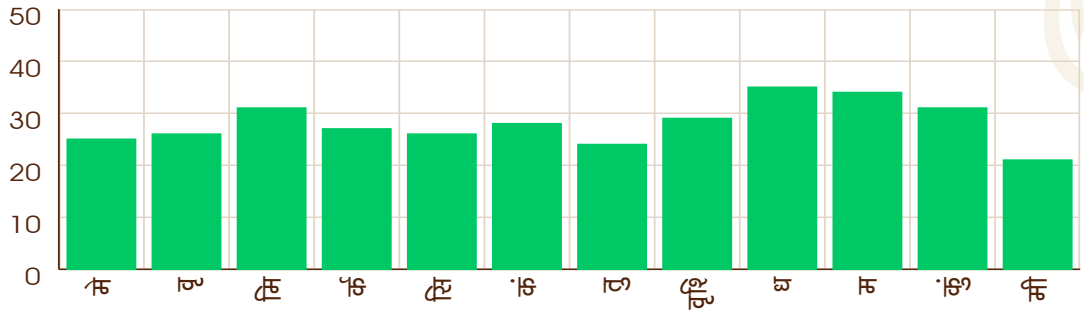

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

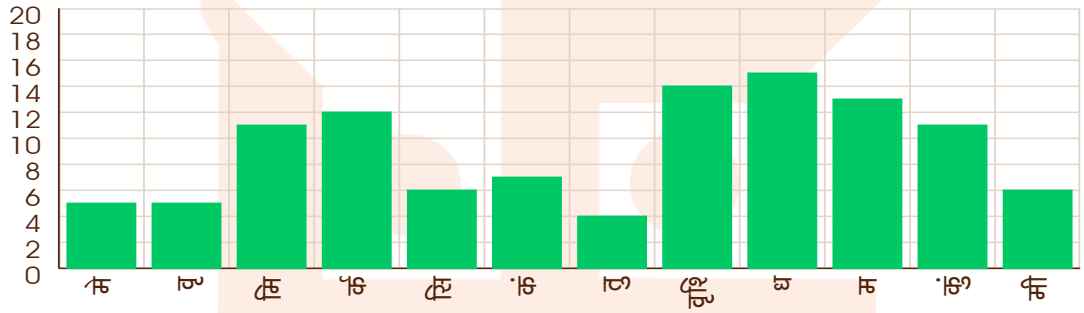

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग

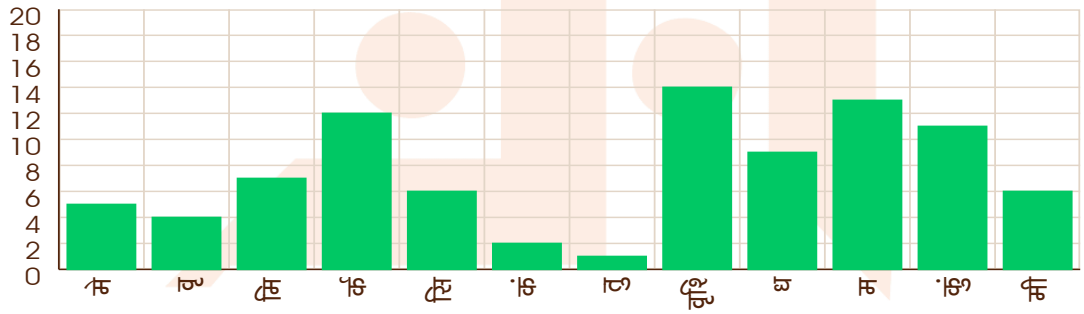

शोध्य पिंड

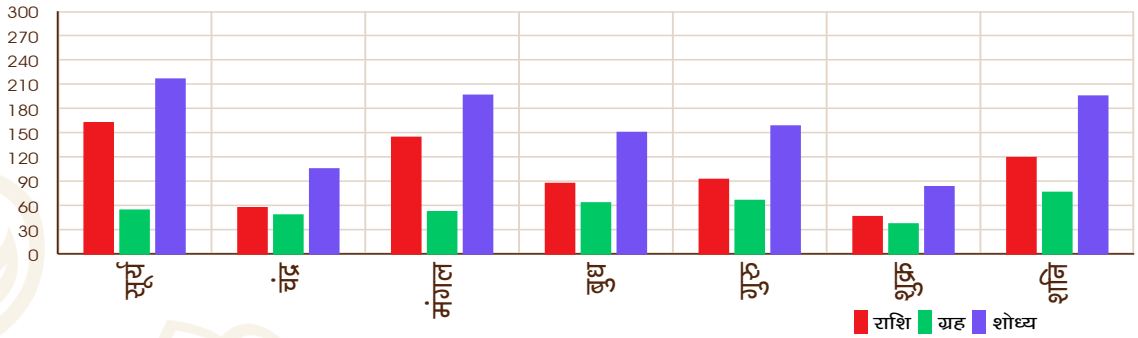

दशा

किसी जातक के अपरिवर्तनीय भूतकाल का परिणाम वर्तमान में चल रही अच्छी या बुरी दशाओं में प्रतिबिंबित होता है।

प्रत्येक जातक की कुंडली में उसके अच्छे-बुरे आने वाले कल का निर्देश होता है जिसका अनुभव आने वाले दशा-अन्तर्दशा काल में होता है। यदि किसी ग्रह की शुभ दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। इसके विपरीत यदि दशा अशुभ होती है तो अन्यान्य समस्याओं, पीड़ा जनित कष्ट, बाधा, असफलता आदि का सामना करना पड़ता है।

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 5 वर्ष 4 मास 13 दिन

शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष	
05/03/1987		17/07/1992		18/07/1998		17/07/2008		18/07/2015	
17/07/1992		18/07/1998		17/07/2008		18/07/2015		17/07/2033	
	00/00/0000	सूर्य	04/11/1992	चंद्र	18/05/1999	मंगल	13/12/2008	राहु	30/03/2018
	00/00/0000	चंद्र	05/05/1993	मंगल	17/12/1999	राहु	01/01/2010	गुरु	23/08/2020
	00/00/0000	मंगल	10/09/1993	राहु	17/06/2001	गुरु	08/12/2010	शनि	30/06/2023
	00/00/0000	राहु	05/08/1994	गुरु	17/10/2002	शनि	16/01/2012	बुध	16/01/2026
	00/00/0000	गुरु	24/05/1995	शनि	17/05/2004	बुध	13/01/2013	केतु	03/02/2027
	05/03/1987	शनि	05/05/1996	बुध	17/10/2005	केतु	11/06/2013	शुक्र	03/02/2030
शनि	17/07/1988	बुध	11/03/1997	केतु	18/05/2006	शुक्र	11/08/2014	सूर्य	29/12/2030
बुध	18/05/1991	केतु	17/07/1997	शुक्र	16/01/2008	सूर्य	17/12/2014	चंद्र	29/06/2032
केतु	17/07/1992	शुक्र	18/07/1998	सूर्य	17/07/2008	चंद्र	18/07/2015	मंगल	17/07/2033

गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष	
17/07/2033		17/07/2049		17/07/2068		17/07/2085		17/07/2092	
17/07/2049		17/07/2068		17/07/2085		17/07/2092		00/00/0000	
गुरु	04/09/2035	शनि	20/07/2052	बुध	14/12/2070	केतु	13/12/2085	शुक्र	17/11/2095
शनि	18/03/2038	बुध	30/03/2055	केतु	11/12/2071	शुक्र	13/02/2087	सूर्य	16/11/2096
बुध	23/06/2040	केतु	08/05/2056	शुक्र	11/10/2074	सूर्य	20/06/2087	चंद्र	18/07/2098
केतु	30/05/2041	शुक्र	09/07/2059	सूर्य	17/08/2075	चंद्र	19/01/2088	मंगल	17/09/2099
शुक्र	29/01/2044	सूर्य	20/06/2060	चंद्र	16/01/2077	मंगल	17/06/2088	राहु	17/09/2102
सूर्य	16/11/2044	चंद्र	19/01/2062	मंगल	13/01/2078	राहु	05/07/2089	गुरु	18/05/2105
चंद्र	18/03/2046	मंगल	28/02/2063	राहु	01/08/2080	गुरु	11/06/2090	शनि	06/03/2107
मंगल	22/02/2047	राहु	04/01/2066	गुरु	07/11/2082	शनि	21/07/2091		00/00/0000
राहु	17/07/2049	गुरु	17/07/2068	शनि	17/07/2085	बुध	17/07/2092		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शुक्र 5 वर्ष 5 मा 3 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि	
05/03/1987	
17/07/1988	
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	05/03/1987
सूर्य	13/03/1987
चंद्र	18/06/1987
मंगल	24/08/1987
राहु	14/02/1988
गुरु	17/07/1988

शुक्र - बुध	
17/07/1988	
18/05/1991	
बुध	11/12/1988
केतु	09/02/1989
शुक्र	31/07/1989
सूर्य	21/09/1989
चंद्र	16/12/1989
मंगल	15/02/1990
राहु	20/07/1990
गुरु	05/12/1990
शनि	18/05/1991

शुक्र - केतु	
18/05/1991	
17/07/1992	
केतु	12/06/1991
शुक्र	22/08/1991
सूर्य	12/09/1991
चंद्र	18/10/1991
मंगल	11/11/1991
राहु	14/01/1992
गुरु	11/03/1992
शनि	18/05/1992
बुध	17/07/1992

सूर्य - सूर्य	
17/07/1992	
04/11/1992	
सूर्य	22/07/1992
चंद्र	01/08/1992
मंगल	07/08/1992
राहु	23/08/1992
गुरु	07/09/1992
शनि	24/09/1992
बुध	10/10/1992
केतु	16/10/1992
शुक्र	04/11/1992

सूर्य - चंद्र	
04/11/1992	
05/05/1993	
चंद्र	19/11/1992
मंगल	29/11/1992
राहु	27/12/1992
गुरु	20/01/1993
शनि	18/02/1993
बुध	16/03/1993
केतु	27/03/1993
शुक्र	26/04/1993
सूर्य	05/05/1993

सूर्य - मंगल	
05/05/1993	
10/09/1993	
मंगल	13/05/1993
राहु	01/06/1993
गुरु	18/06/1993
शनि	08/07/1993
बुध	26/07/1993
केतु	03/08/1993
शुक्र	24/08/1993
सूर्य	30/08/1993
चंद्र	10/09/1993

सूर्य - राहु	
10/09/1993	
05/08/1994	
राहु	29/10/1993
गुरु	12/12/1993
शनि	02/02/1994
बुध	21/03/1994
केतु	09/04/1994
शुक्र	03/06/1994
सूर्य	19/06/1994
चंद्र	17/07/1994
मंगल	05/08/1994

सूर्य - गुरु	
05/08/1994	
24/05/1995	
गुरु	13/09/1994
शनि	29/10/1994
बुध	09/12/1994
केतु	26/12/1994
शुक्र	13/02/1995
सूर्य	28/02/1995
चंद्र	24/03/1995
मंगल	10/04/1995
राहु	24/05/1995

सूर्य - शनि	
24/05/1995	
05/05/1996	
शनि	18/07/1995
बुध	05/09/1995
केतु	25/09/1995
शुक्र	22/11/1995
सूर्य	10/12/1995
चंद्र	07/01/1996
मंगल	28/01/1996
राहु	20/03/1996
गुरु	05/05/1996

सूर्य - बुध	
05/05/1996	
11/03/1997	
बुध	18/06/1996
केतु	06/07/1996
शुक्र	27/08/1996
सूर्य	11/09/1996
चंद्र	07/10/1996
मंगल	25/10/1996
राहु	11/12/1996
गुरु	21/01/1997
शनि	11/03/1997

सूर्य - केतु	
11/03/1997	
17/07/1997	
केतु	19/03/1997
शुक्र	09/04/1997
सूर्य	16/04/1997
चंद्र	26/04/1997
मंगल	04/05/1997
राहु	23/05/1997
गुरु	09/06/1997
शनि	29/06/1997
बुध	17/07/1997

सूर्य - शुक्र	
17/07/1997	
18/07/1998	
शुक्र	16/09/1997
सूर्य	04/10/1997
चंद्र	04/11/1997
मंगल	25/11/1997
राहु	19/01/1998
गुरु	09/03/1998
शनि	05/05/1998
बुध	26/06/1998
केतु	18/07/1998

चंद्र - चंद्र	
18/07/1998	
18/05/1999	
चंद्र	12/08/1998
मंगल	30/08/1998
राहु	14/10/1998
गुरु	24/11/1998
शनि	11/01/1999
बुध	23/02/1999
केतु	13/03/1999
शुक्र	03/05/1999
सूर्य	18/05/1999

चंद्र - मंगल	
18/05/1999	
17/12/1999	
मंगल	30/05/1999
राहु	01/07/1999
गुरु	30/07/1999
शनि	01/09/1999
बुध	02/10/1999
केतु	14/10/1999
शुक्र	19/11/1999
सूर्य	29/11/1999
चंद्र	17/12/1999

चंद्र - राहु	
17/12/1999	
17/06/2001	
राहु	08/03/2000
गुरु	20/05/2000
शनि	15/08/2000
बुध	01/11/2000
केतु	03/12/2000
शुक्र	04/03/2001
सूर्य	31/03/2001
चंद्र	16/05/2001
मंगल	17/06/2001

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
17/06/2001		17/10/2002		17/05/2004		17/10/2005		18/05/2006	
17/10/2002		17/05/2004		17/10/2005		18/05/2006		16/01/2008	
गुरु	21/08/2001	शनि	16/01/2003	बुध	29/07/2004	केतु	29/10/2005	शुक्र	27/08/2006
शनि	06/11/2001	बुध	08/04/2003	केतु	29/08/2004	शुक्र	04/12/2005	सूर्य	27/09/2006
बुध	14/01/2002	केतु	12/05/2003	शुक्र	23/11/2004	सूर्य	14/12/2005	चंद्र	16/11/2006
केतु	11/02/2002	शुक्र	16/08/2003	सूर्य	19/12/2004	चंद्र	01/01/2006	मंगल	22/12/2006
शुक्र	03/05/2002	सूर्य	14/09/2003	चंद्र	31/01/2005	मंगल	13/01/2006	राहु	23/03/2007
सूर्य	28/05/2002	चंद्र	02/11/2003	मंगल	02/03/2005	राहु	14/02/2006	गुरु	12/06/2007
चंद्र	07/07/2002	मंगल	05/12/2003	राहु	19/05/2005	गुरु	15/03/2006	शनि	17/09/2007
मंगल	05/08/2002	राहु	01/03/2004	गुरु	27/07/2005	शनि	17/04/2006	बुध	12/12/2007
राहु	17/10/2002	गुरु	17/05/2004	शनि	17/10/2005	बुध	18/05/2006	केतु	16/01/2008

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
16/01/2008		17/07/2008		13/12/2008		01/01/2010		08/12/2010	
17/07/2008		13/12/2008		01/01/2010		08/12/2010		16/01/2012	
सूर्य	26/01/2008	मंगल	26/07/2008	राहु	09/02/2009	गुरु	15/02/2010	शनि	10/02/2011
चंद्र	10/02/2008	राहु	17/08/2008	गुरु	01/04/2009	शनि	10/04/2010	बुध	08/04/2011
मंगल	20/02/2008	गुरु	06/09/2008	शनि	01/06/2009	बुध	28/05/2010	केतु	02/05/2011
राहु	19/03/2008	शनि	30/09/2008	बुध	25/07/2009	केतु	17/06/2010	शुक्र	08/07/2011
गुरु	12/04/2008	बुध	21/10/2008	केतु	16/08/2009	शुक्र	13/08/2010	सूर्य	28/07/2011
शनि	11/05/2008	केतु	29/10/2008	शुक्र	19/10/2009	सूर्य	30/08/2010	चंद्र	31/08/2011
बुध	06/06/2008	शुक्र	23/11/2008	सूर्य	07/11/2009	चंद्र	28/09/2010	मंगल	24/09/2011
केतु	17/06/2008	सूर्य	01/12/2008	चंद्र	09/12/2009	मंगल	17/10/2010	राहु	23/11/2011
शुक्र	17/07/2008	चंद्र	13/12/2008	मंगल	01/01/2010	राहु	08/12/2010	गुरु	16/01/2012

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
16/01/2012		13/01/2013		11/06/2013		11/08/2014		17/12/2014	
13/01/2013		11/06/2013		11/08/2014		17/12/2014		18/07/2015	
बुध	08/03/2012	केतु	21/01/2013	शुक्र	21/08/2013	सूर्य	17/08/2014	चंद्र	03/01/2015
केतु	29/03/2012	शुक्र	15/02/2013	सूर्य	11/09/2013	चंद्र	28/08/2014	मंगल	16/01/2015
शुक्र	28/05/2012	सूर्य	23/02/2013	चंद्र	17/10/2013	मंगल	04/09/2014	राहु	17/02/2015
सूर्य	15/06/2012	चंद्र	07/03/2013	मंगल	10/11/2013	राहु	24/09/2014	गुरु	17/03/2015
चंद्र	15/07/2012	मंगल	16/03/2013	राहु	13/01/2014	गुरु	11/10/2014	शनि	20/04/2015
मंगल	06/08/2012	राहु	07/04/2013	गुरु	11/03/2014	शनि	31/10/2014	बुध	20/05/2015
राहु	29/09/2012	गुरु	27/04/2013	शनि	18/05/2014	बुध	18/11/2014	केतु	02/06/2015
गुरु	16/11/2012	शनि	21/05/2013	बुध	17/07/2014	केतु	25/11/2014	शुक्र	07/07/2015
शनि	13/01/2013	बुध	11/06/2013	केतु	11/08/2014	शुक्र	17/12/2014	सूर्य	18/07/2015

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु	
18/07/2015	
30/03/2018	
राहु	13/12/2015
गुरु	22/04/2016
शनि	25/09/2016
बुध	12/02/2017
केतु	11/04/2017
शुक्र	22/09/2017
सूर्य	10/11/2017
चंद्र	31/01/2018
मंगल	30/03/2018

राहु - गुरु	
30/03/2018	
23/08/2020	
गुरु	25/07/2018
शनि	11/12/2018
बुध	14/04/2019
केतु	04/06/2019
शुक्र	28/10/2019
सूर्य	11/12/2019
चंद्र	22/02/2020
मंगल	13/04/2020
राहु	23/08/2020

राहु - शनि	
23/08/2020	
30/06/2023	
शनि	03/02/2021
बुध	01/07/2021
केतु	31/08/2021
शुक्र	20/02/2022
सूर्य	13/04/2022
चंद्र	09/07/2022
मंगल	08/09/2022
राहु	11/02/2023
गुरु	30/06/2023

राहु - बुध	
30/06/2023	
16/01/2026	
बुध	08/11/2023
केतु	02/01/2024
शुक्र	05/06/2024
सूर्य	22/07/2024
चंद्र	07/10/2024
मंगल	01/12/2024
राहु	19/04/2025
गुरु	21/08/2025
शनि	16/01/2026

राहु - केतु	
16/01/2026	
03/02/2027	
केतु	07/02/2026
शुक्र	12/04/2026
सूर्य	01/05/2026
चंद्र	02/06/2026
मंगल	25/06/2026
राहु	21/08/2026
गुरु	11/10/2026
शनि	11/12/2026
बुध	03/02/2027

राहु - शुक्र	
03/02/2027	
03/02/2030	
शुक्र	05/08/2027
सूर्य	29/09/2027
चंद्र	29/12/2027
मंगल	02/03/2028
राहु	13/08/2028
गुरु	07/01/2029
शनि	29/06/2029
बुध	01/12/2029
केतु	03/02/2030

राहु - सूर्य	
03/02/2030	
29/12/2030	
सूर्य	20/02/2030
चंद्र	19/03/2030
मंगल	07/04/2030
राहु	26/05/2030
गुरु	09/07/2030
शनि	30/08/2030
बुध	16/10/2030
केतु	04/11/2030
शुक्र	29/12/2030

राहु - चंद्र	
29/12/2030	
29/06/2032	
चंद्र	13/02/2031
मंगल	16/03/2031
राहु	07/06/2031
गुरु	19/08/2031
शनि	13/11/2031
बुध	30/01/2032
केतु	02/03/2032
शुक्र	01/06/2032
सूर्य	29/06/2032

राहु - मंगल	
29/06/2032	
17/07/2033	
मंगल	21/07/2032
राहु	17/09/2032
गुरु	07/11/2032
शनि	07/01/2033
बुध	02/03/2033
केतु	24/03/2033
शुक्र	27/05/2033
सूर्य	15/06/2033
चंद्र	17/07/2033

गुरु - गुरु	
17/07/2033	
04/09/2035	
गुरु	29/10/2033
शनि	02/03/2034
बुध	20/06/2034
केतु	04/08/2034
शुक्र	12/12/2034
सूर्य	20/01/2035
चंद्र	26/03/2035
मंगल	11/05/2035
राहु	04/09/2035

गुरु - शनि	
04/09/2035	
18/03/2038	
शनि	29/01/2036
बुध	08/06/2036
केतु	01/08/2036
शुक्र	02/01/2037
सूर्य	18/02/2037
चंद्र	06/05/2037
मंगल	29/06/2037
राहु	14/11/2037
गुरु	18/03/2038

गुरु - बुध	
18/03/2038	
23/06/2040	
बुध	13/07/2038
केतु	30/08/2038
शुक्र	15/01/2039
सूर्य	26/02/2039
चंद्र	06/05/2039
मंगल	23/06/2039
राहु	25/10/2039
गुरु	13/02/2040
शनि	23/06/2040

गुरु - केतु	
23/06/2040	
30/05/2041	
केतु	13/07/2040
शुक्र	07/09/2040
सूर्य	24/09/2040
चंद्र	23/10/2040
मंगल	12/11/2040
राहु	02/01/2041
गुरु	16/02/2041
शनि	11/04/2041
बुध	30/05/2041

गुरु - शुक्र	
30/05/2041	
29/01/2044	
शुक्र	08/11/2041
सूर्य	27/12/2041
चंद्र	18/03/2042
मंगल	14/05/2042
राहु	07/10/2042
गुरु	14/02/2043
शनि	18/07/2043
बुध	03/12/2043
केतु	29/01/2044

गुरु - सूर्य	
29/01/2044	
16/11/2044	
सूर्य	12/02/2044
चंद्र	08/03/2044
मंगल	25/03/2044
राहु	07/05/2044
गुरु	15/06/2044
शनि	01/08/2044
बुध	11/09/2044
केतु	28/09/2044
शुक्र	16/11/2044

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
16/11/2044		18/03/2046		22/02/2047		17/07/2049		20/07/2052	
18/03/2046		22/02/2047		17/07/2049		20/07/2052		30/03/2055	
चंद्र	26/12/2044	मंगल	07/04/2046	राहु	03/07/2047	शनि	07/01/2050	बुध	06/12/2052
मंगल	24/01/2045	राहु	28/05/2046	गुरु	28/10/2047	बुध	12/06/2050	केतु	02/02/2053
राहु	07/04/2045	गुरु	12/07/2046	शनि	15/03/2048	केतु	15/08/2050	शुक्र	16/07/2053
गुरु	11/06/2045	शनि	04/09/2046	बुध	17/07/2048	शुक्र	14/02/2051	सूर्य	03/09/2053
शनि	27/08/2045	बुध	23/10/2046	केतु	06/09/2048	सूर्य	10/04/2051	चंद्र	24/11/2053
बुध	04/11/2045	केतु	11/11/2046	शुक्र	30/01/2049	चंद्र	11/07/2051	मंगल	20/01/2054
केतु	02/12/2045	शुक्र	07/01/2047	सूर्य	15/03/2049	मंगल	13/09/2051	राहु	16/06/2054
शुक्र	21/02/2046	सूर्य	24/01/2047	चंद्र	27/05/2049	राहु	25/02/2052	गुरु	26/10/2054
सूर्य	18/03/2046	चंद्र	22/02/2047	मंगल	17/07/2049	गुरु	20/07/2052	शनि	30/03/2055

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
30/03/2055		08/05/2056		09/07/2059		20/06/2060		19/01/2062	
08/05/2056		09/07/2059		20/06/2060		19/01/2062		28/02/2063	
केतु	23/04/2055	शुक्र	17/11/2056	सूर्य	26/07/2059	चंद्र	07/08/2060	मंगल	12/02/2062
शुक्र	29/06/2055	सूर्य	14/01/2057	चंद्र	24/08/2059	मंगल	10/09/2060	राहु	13/04/2062
सूर्य	20/07/2055	चंद्र	20/04/2057	मंगल	13/09/2059	राहु	05/12/2060	गुरु	06/06/2062
चंद्र	22/08/2055	मंगल	26/06/2057	राहु	04/11/2059	गुरु	20/02/2061	शनि	09/08/2062
मंगल	15/09/2055	राहु	17/12/2057	गुरु	20/12/2059	शनि	23/05/2061	बुध	06/10/2062
राहु	15/11/2055	गुरु	20/05/2058	शनि	13/02/2060	बुध	13/08/2061	केतु	29/10/2062
गुरु	08/01/2056	शनि	19/11/2058	बुध	03/04/2060	केतु	16/09/2061	शुक्र	05/01/2063
शनि	12/03/2056	बुध	02/05/2059	केतु	23/04/2060	शुक्र	21/12/2061	सूर्य	25/01/2063
बुध	08/05/2056	केतु	09/07/2059	शुक्र	20/06/2060	सूर्य	19/01/2062	चंद्र	28/02/2063

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
28/02/2063		04/01/2066		17/07/2068		14/12/2070		11/12/2071	
04/01/2066		17/07/2068		14/12/2070		11/12/2071		11/10/2074	
राहु	03/08/2063	गुरु	07/05/2066	बुध	19/11/2068	केतु	04/01/2071	शुक्र	31/05/2072
गुरु	20/12/2063	शनि	01/10/2066	केतु	09/01/2069	शुक्र	05/03/2071	सूर्य	22/07/2072
शनि	02/06/2064	बुध	09/02/2067	शुक्र	05/06/2069	सूर्य	23/03/2071	चंद्र	16/10/2072
बुध	27/10/2064	केतु	04/04/2067	सूर्य	19/07/2069	चंद्र	22/04/2071	मंगल	16/12/2072
केतु	27/12/2064	शुक्र	05/09/2067	चंद्र	30/09/2069	मंगल	14/05/2071	राहु	20/05/2073
शुक्र	18/06/2065	सूर्य	21/10/2067	मंगल	20/11/2069	राहु	07/07/2071	गुरु	05/10/2073
सूर्य	09/08/2065	चंद्र	06/01/2068	राहु	01/04/2070	गुरु	24/08/2071	शनि	18/03/2074
चंद्र	04/11/2065	मंगल	29/02/2068	गुरु	27/07/2070	शनि	21/10/2071	बुध	11/08/2074
मंगल	04/01/2066	राहु	17/07/2068	शनि	14/12/2070	बुध	11/12/2071	केतु	11/10/2074

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
11/10/2074		17/08/2075		16/01/2077		13/01/2078		01/08/2080	
17/08/2075		16/01/2077		13/01/2078		01/08/2080		07/11/2082	
सूर्य	26/10/2074	चंद्र	29/09/2075	मंगल	06/02/2077	राहु	02/06/2078	गुरु	20/11/2080
चंद्र	21/11/2074	मंगल	30/10/2075	राहु	01/04/2077	गुरु	04/10/2078	शनि	31/03/2081
मंगल	09/12/2074	राहु	15/01/2076	गुरु	19/05/2077	शनि	28/02/2079	बुध	26/07/2081
राहु	25/01/2075	गुरु	24/03/2076	शनि	16/07/2077	बुध	10/07/2079	केतु	12/09/2081
गुरु	07/03/2075	शनि	14/06/2076	बुध	05/09/2077	केतु	02/09/2079	शुक्र	28/01/2082
शनि	25/04/2075	बुध	26/08/2076	केतु	26/09/2077	शुक्र	05/02/2080	सूर्य	11/03/2082
बुध	08/06/2075	केतु	26/09/2076	शुक्र	26/11/2077	सूर्य	22/03/2080	चंद्र	19/05/2082
केतु	26/06/2075	शुक्र	21/12/2076	सूर्य	14/12/2077	चंद्र	08/06/2080	मंगल	06/07/2082
शुक्र	17/08/2075	सूर्य	16/01/2077	चंद्र	13/01/2078	मंगल	01/08/2080	राहु	07/11/2082

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
07/11/2082		17/07/2085		13/12/2085		13/02/2087		20/06/2087	
17/07/2085		13/12/2085		13/02/2087		20/06/2087		19/01/2088	
शनि	12/04/2083	केतु	26/07/2085	शुक्र	22/02/2086	सूर्य	19/02/2087	चंद्र	08/07/2087
बुध	29/08/2083	शुक्र	20/08/2085	सूर्य	16/03/2086	चंद्र	02/03/2087	मंगल	21/07/2087
केतु	25/10/2083	सूर्य	27/08/2085	चंद्र	20/04/2086	मंगल	09/03/2087	राहु	22/08/2087
शुक्र	06/04/2084	चंद्र	09/09/2085	मंगल	15/05/2086	राहु	28/03/2087	गुरु	19/09/2087
सूर्य	25/05/2084	मंगल	17/09/2085	राहु	18/07/2086	गुरु	14/04/2087	शनि	23/10/2087
चंद्र	15/08/2084	राहु	10/10/2085	गुरु	13/09/2086	शनि	05/05/2087	बुध	22/11/2087
मंगल	12/10/2084	गुरु	30/10/2085	शनि	19/11/2086	बुध	23/05/2087	केतु	04/12/2087
राहु	08/03/2085	शनि	22/11/2085	बुध	19/01/2087	केतु	30/05/2087	शुक्र	09/01/2088
गुरु	17/07/2085	बुध	13/12/2085	केतु	13/02/2087	शुक्र	20/06/2087	सूर्य	19/01/2088

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
19/01/2088		17/06/2088		05/07/2089		11/06/2090		21/07/2091	
17/06/2088		05/07/2089		11/06/2090		21/07/2091		17/07/2092	
मंगल	28/01/2088	राहु	13/08/2088	गुरु	20/08/2089	शनि	14/08/2090	बुध	10/09/2091
राहु	20/02/2088	गुरु	03/10/2088	शनि	13/10/2089	बुध	10/10/2090	केतु	01/10/2091
गुरु	10/03/2088	शनि	03/12/2088	बुध	30/11/2089	केतु	03/11/2090	शुक्र	01/12/2091
शनि	03/04/2088	बुध	26/01/2089	केतु	20/12/2089	शुक्र	10/01/2091	सूर्य	19/12/2091
बुध	24/04/2088	केतु	18/02/2089	शुक्र	15/02/2090	सूर्य	30/01/2091	चंद्र	18/01/2092
केतु	03/05/2088	शुक्र	23/04/2089	सूर्य	04/03/2090	चंद्र	05/03/2091	मंगल	08/02/2092
शुक्र	28/05/2088	सूर्य	12/05/2089	चंद्र	01/04/2090	मंगल	28/03/2091	राहु	02/04/2092
सूर्य	04/06/2088	चंद्र	13/06/2089	मंगल	21/04/2090	राहु	28/05/2091	गुरु	21/05/2092
चंद्र	17/06/2088	मंगल	05/07/2089	राहु	11/06/2090	गुरु	21/07/2091	शनि	17/07/2092

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - गुरु - शुक्र	
04/06/2019 10:34	
28/10/2019 12:58	
शुक्र	28/06/2019 18:58
सूर्य	06/07/2019 02:17
चंद्र	18/07/2019 06:29
मंगल	26/07/2019 19:01
राहु	17/08/2019 16:59
गुरु	06/09/2019 04:30
शनि	29/09/2019 07:41
बुध	20/10/2019 00:25
केतु	28/10/2019 12:58

राहु - गुरु - सूर्य	
28/10/2019 12:58	
11/12/2019 08:53	
सूर्य	30/10/2019 17:33
चंद्र	03/11/2019 09:13
मंगल	05/11/2019 22:35
राहु	12/11/2019 12:22
गुरु	18/11/2019 08:37
शनि	25/11/2019 07:11
बुध	01/12/2019 12:12
केतु	04/12/2019 01:34
शुक्र	11/12/2019 08:53

राहु - गुरु - चंद्र	
11/12/2019 08:53	
22/02/2020 10:05	
चंद्र	17/12/2019 10:59
मंगल	21/12/2019 17:15
राहु	01/01/2020 16:14
गुरु	11/01/2020 09:59
शनि	22/01/2020 23:35
बुध	02/02/2020 07:57
केतु	06/02/2020 14:13
शुक्र	18/02/2020 18:25
सूर्य	22/02/2020 10:05

राहु - गुरु - मंगल	
22/02/2020 10:05	
13/04/2020 13:19	
मंगल	25/02/2020 09:40
राहु	04/03/2020 01:45
गुरु	10/03/2020 21:23
शनि	18/03/2020 23:42
बुध	26/03/2020 05:33
केतु	29/03/2020 05:09
शुक्र	06/04/2020 17:41
सूर्य	09/04/2020 07:03
चंद्र	13/04/2020 13:19

राहु - गुरु - राहु	
13/04/2020 13:19	
23/08/2020 01:05	
राहु	03/05/2020 06:41
गुरु	20/05/2020 19:27
शनि	10/06/2020 15:07
बुध	29/06/2020 06:11
केतु	06/07/2020 22:16
शुक्र	28/07/2020 20:14
सूर्य	04/08/2020 10:01
चंद्र	15/08/2020 09:00
मंगल	23/08/2020 01:05

राहु - शनि - शनि	
23/08/2020 01:05	
03/02/2021 20:44	
शनि	18/09/2020 03:23
बुध	11/10/2020 11:47
केतु	21/10/2020 02:31
शुक्र	17/11/2020 13:48
सूर्य	25/11/2020 19:35
चंद्र	09/12/2020 13:13
मंगल	19/12/2020 03:58
राहु	12/01/2021 21:19
गुरु	03/02/2021 20:44

राहु - शनि - बुध	
03/02/2021 20:44	
01/07/2021 08:01	
बुध	24/02/2021 18:08
केतु	05/03/2021 08:35
शुक्र	29/03/2021 22:28
सूर्य	06/04/2021 07:26
चंद्र	18/04/2021 14:22
मंगल	27/04/2021 04:50
राहु	19/05/2021 07:43
गुरु	07/06/2021 23:37
शनि	01/07/2021 08:01

राहु - शनि - केतु	
01/07/2021 08:01	
31/08/2021 01:21	
केतु	04/07/2021 21:01
शुक्र	14/07/2021 23:55
सूर्य	18/07/2021 00:47
चंद्र	23/07/2021 02:14
मंगल	26/07/2021 15:14
राहु	04/08/2021 17:50
गुरु	12/08/2021 20:09
शनि	22/08/2021 10:54
बुध	31/08/2021 01:21

राहु - शनि - शुक्र	
31/08/2021 01:21	
20/02/2022 13:12	
शुक्र	28/09/2021 23:20
सूर्य	07/10/2021 15:31
चंद्र	22/10/2021 02:31
मंगल	01/11/2021 05:24
राहु	27/11/2021 05:59
गुरु	20/12/2021 09:10
शनि	16/01/2022 20:26
बुध	10/02/2022 10:19
केतु	20/02/2022 13:12

राहु - शनि - सूर्य	
20/02/2022 13:12	
13/04/2022 14:22	
सूर्य	23/02/2022 03:40
चंद्र	27/02/2022 11:46
मंगल	02/03/2022 12:38
राहु	10/03/2022 08:00
गुरु	17/03/2022 06:33
शनि	25/03/2022 12:20
बुध	01/04/2022 21:18
केतु	04/04/2022 22:10
शुक्र	13/04/2022 14:22

राहु - शनि - चंद्र	
13/04/2022 14:22	
09/07/2022 08:17	
चंद्र	20/04/2022 19:51
मंगल	25/04/2022 21:18
राहु	08/05/2022 21:35
गुरु	20/05/2022 11:11
शनि	03/06/2022 04:49
बुध	15/06/2022 11:45
केतु	20/06/2022 13:12
शुक्र	05/07/2022 00:11
सूर्य	09/07/2022 08:17

राहु - शनि - मंगल	
09/07/2022 08:17	
08/09/2022 01:38	
मंगल	12/07/2022 21:18
राहु	21/07/2022 23:54
गुरु	30/07/2022 02:13
शनि	08/08/2022 16:58
बुध	17/08/2022 07:25
केतु	20/08/2022 20:26
शुक्र	30/08/2022 23:19
सूर्य	03/09/2022 00:11
चंद्र	08/09/2022 01:38

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - शनि - राहु		राहु - शनि - गुरु		राहु - बुध - बुध		राहु - बुध - केतु	
08/09/2022 01:38		11/02/2023 05:06		30/06/2023 00:11		08/11/2023 22:54	
11/02/2023 05:06		30/06/2023 00:11		08/11/2023 22:54		02/01/2024 06:50	
राहु	01/10/2022 11:45	गुरु	01/03/2023 17:15	बुध	18/07/2023 16:48	केतु	12/11/2023 02:58
गुरु	22/10/2022 07:25	शनि	23/03/2023 16:40	केतु	26/07/2023 09:31	शुक्र	21/11/2023 04:17
शनि	16/11/2022 00:46	बुध	12/04/2023 08:34	शुक्र	17/08/2023 09:19	सूर्य	23/11/2023 21:29
बुध	08/12/2022 03:39	केतु	20/04/2023 10:53	सूर्य	23/08/2023 23:39	चंद्र	28/11/2023 10:09
केतु	17/12/2022 06:15	शुक्र	13/05/2023 14:04	चंद्र	03/09/2023 23:32	मंगल	01/12/2023 14:12
शुक्र	12/01/2023 06:50	सूर्य	20/05/2023 12:37	मंगल	11/09/2023 16:16	राहु	09/12/2023 17:48
सूर्य	20/01/2023 02:12	चंद्र	01/06/2023 02:12	राहु	01/10/2023 11:16	गुरु	16/12/2023 23:39
चंद्र	02/02/2023 02:30	मंगल	09/06/2023 04:31	गुरु	19/10/2023 01:30	शनि	25/12/2023 14:07
मंगल	11/02/2023 05:06	राहु	30/06/2023 00:11	शनि	08/11/2023 22:54	बुध	02/01/2024 06:50

राहु - बुध - शुक्र		राहु - बुध - सूर्य		राहु - बुध - चंद्र		राहु - बुध - मंगल	
02/01/2024 06:50		05/06/2024 12:23		22/07/2024 02:03		07/10/2024 16:50	
05/06/2024 12:23		22/07/2024 02:03		07/10/2024 16:50		01/12/2024 00:46	
शुक्र	28/01/2024 03:46	सूर्य	07/06/2024 20:16	चंद्र	28/07/2024 13:17	मंगल	10/10/2024 20:54
सूर्य	04/02/2024 22:03	चंद्र	11/06/2024 17:25	मंगल	02/08/2024 01:57	राहु	19/10/2024 00:29
चंद्र	17/02/2024 20:30	मंगल	14/06/2024 10:36	राहु	13/08/2024 17:22	गुरु	26/10/2024 06:21
मंगल	26/02/2024 21:50	राहु	21/06/2024 10:15	गुरु	24/08/2024 01:44	शनि	03/11/2024 20:48
राहु	21/03/2024 04:40	गुरु	27/06/2024 15:17	शनि	05/09/2024 08:40	बुध	11/11/2024 13:32
गुरु	10/04/2024 21:24	शनि	05/07/2024 00:15	बुध	16/09/2024 08:34	केतु	14/11/2024 17:35
शनि	05/05/2024 11:17	बुध	11/07/2024 14:35	केतु	20/09/2024 21:14	शुक्र	23/11/2024 18:55
बुध	27/05/2024 11:04	केतु	14/07/2024 07:47	शुक्र	03/10/2024 19:41	सूर्य	26/11/2024 12:07
केतु	05/06/2024 12:23	शुक्र	22/07/2024 02:03	सूर्य	07/10/2024 16:50	चंद्र	01/12/2024 00:46

राहु - बुध - राहु		राहु - बुध - गुरु		राहु - बुध - शनि		राहु - केतु - केतु	
01/12/2024 00:46		19/04/2025 17:46		21/08/2025 22:12		16/01/2026 09:29	
19/04/2025 17:46		21/08/2025 22:12		16/01/2026 09:29		07/02/2026 18:24	
राहु	21/12/2024 23:43	गुरु	06/05/2025 07:10	शनि	14/09/2025 06:35	केतु	17/01/2026 16:48
गुरु	09/01/2025 14:47	शनि	25/05/2025 23:04	बुध	05/10/2025 03:59	शुक्र	21/01/2026 10:17
शनि	31/01/2025 17:41	बुध	12/06/2025 13:17	केतु	13/10/2025 18:27	सूर्य	22/01/2026 13:08
बुध	20/02/2025 12:41	केतु	19/06/2025 19:09	शुक्र	07/11/2025 08:19	चंद्र	24/01/2026 09:52
केतु	28/02/2025 16:17	शुक्र	10/07/2025 11:53	सूर्य	14/11/2025 17:17	मंगल	25/01/2026 17:12
शुक्र	23/03/2025 23:07	सूर्य	16/07/2025 16:55	चंद्र	27/11/2025 00:14	राहु	29/01/2026 01:44
सूर्य	30/03/2025 22:46	चंद्र	27/07/2025 01:17	मंगल	05/12/2025 14:41	गुरु	01/02/2026 01:19
चंद्र	11/04/2025 14:11	मंगल	03/08/2025 07:08	राहु	27/12/2025 17:35	शनि	04/02/2026 14:20
मंगल	19/04/2025 17:46	राहु	21/08/2025 22:12	गुरु	16/01/2026 09:29	बुध	07/02/2026 18:24

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - केतु - शुक्र		राहु - केतु - सूर्य		राहु - केतु - चंद्र		राहु - केतु - मंगल	
07/02/2026 18:24		12/04/2026 16:27		01/05/2026 20:40		02/06/2026 19:41	
12/04/2026 16:27		01/05/2026 20:40		02/06/2026 19:41		25/06/2026 04:36	
शुक्र	18/02/2026 10:04	सूर्य	13/04/2026 15:27	चंद्र	04/05/2026 12:35	मंगल	04/06/2026 03:00
सूर्य	21/02/2026 14:46	चंद्र	15/04/2026 05:49	मंगल	06/05/2026 09:19	राहु	07/06/2026 11:33
चंद्र	26/02/2026 22:37	मंगल	16/04/2026 08:39	राहु	11/05/2026 04:23	गुरु	10/06/2026 11:08
मंगल	02/03/2026 16:06	राहु	19/04/2026 05:41	गुरु	15/05/2026 10:39	शनि	14/06/2026 00:09
राहु	12/03/2026 06:12	गुरु	21/04/2026 19:03	शनि	20/05/2026 12:06	बुध	17/06/2026 04:13
गुरु	20/03/2026 18:45	शनि	24/04/2026 19:55	बुध	25/05/2026 00:45	केतु	18/06/2026 11:32
शनि	30/03/2026 21:38	बुध	27/04/2026 13:07	केतु	26/05/2026 21:30	शुक्र	22/06/2026 05:01
बुध	08/04/2026 22:58	केतु	28/04/2026 15:58	शुक्र	01/06/2026 05:20	सूर्य	23/06/2026 07:52
केतु	12/04/2026 16:27	शुक्र	01/05/2026 20:40	सूर्य	02/06/2026 19:41	चंद्र	25/06/2026 04:36

राहु - केतु - राहु		राहु - केतु - गुरु		राहु - केतु - शनि		राहु - केतु - बुध	
25/06/2026 04:36		21/08/2026 17:15		11/10/2026 20:29		11/12/2026 13:50	
21/08/2026 17:15		11/10/2026 20:29		11/12/2026 13:50		03/02/2027 21:47	
राहु	03/07/2026 19:42	गुरु	28/08/2026 12:53	शनि	21/10/2026 11:14	बुध	19/12/2026 06:34
गुरु	11/07/2026 11:47	शनि	05/09/2026 15:12	बुध	30/10/2026 01:42	केतु	22/12/2026 10:38
शनि	20/07/2026 14:23	बुध	12/09/2026 21:03	केतु	02/11/2026 14:42	शुक्र	31/12/2026 11:57
बुध	28/07/2026 17:59	केतु	15/09/2026 20:39	शुक्र	12/11/2026 17:36	सूर्य	03/01/2027 05:09
केतु	01/08/2026 02:31	शुक्र	24/09/2026 09:11	सूर्य	15/11/2026 18:28	चंद्र	07/01/2027 17:48
शुक्र	10/08/2026 16:38	सूर्य	26/09/2026 22:33	चंद्र	20/11/2026 19:55	मंगल	10/01/2027 21:52
सूर्य	13/08/2026 13:39	चंद्र	01/10/2026 04:49	मंगल	24/11/2026 08:55	राहु	19/01/2027 01:28
चंद्र	18/08/2026 08:43	मंगल	04/10/2026 04:24	राहु	03/12/2026 11:31	गुरु	26/01/2027 07:19
मंगल	21/08/2026 17:15	राहु	11/10/2026 20:29	गुरु	11/12/2026 13:50	शनि	03/02/2027 21:47

राहु - शुक्र - शुक्र		राहु - शुक्र - सूर्य		राहु - शुक्र - चंद्र		राहु - शुक्र - मंगल	
03/02/2027 21:47		05/08/2027 12:47		29/09/2027 07:41		29/12/2027 15:11	
05/08/2027 12:47		29/09/2027 07:41		29/12/2027 15:11		02/03/2028 13:14	
शुक्र	06/03/2027 08:17	सूर्य	08/08/2027 06:31	चंद्र	06/10/2027 22:18	मंगल	02/01/2028 08:40
सूर्य	15/03/2027 11:26	चंद्र	12/08/2027 20:06	मंगल	12/10/2027 06:09	राहु	11/01/2028 22:46
चंद्र	30/03/2027 16:41	मंगल	16/08/2027 00:48	राहु	25/10/2027 22:52	गुरु	20/01/2028 11:19
मंगल	10/04/2027 08:21	राहु	24/08/2027 06:02	गुरु	07/11/2027 03:04	शनि	30/01/2028 14:12
राहु	07/05/2027 17:48	गुरु	31/08/2027 13:21	शनि	21/11/2027 14:03	बुध	08/02/2028 15:32
गुरु	01/06/2027 02:12	शनि	09/09/2027 05:33	बुध	04/12/2027 12:31	केतु	12/02/2028 09:01
शनि	30/06/2027 00:11	बुध	16/09/2027 23:50	केतु	09/12/2027 20:21	शुक्र	23/02/2028 00:41
बुध	25/07/2027 21:06	केतु	20/09/2027 04:32	शुक्र	25/12/2027 01:36	सूर्य	26/02/2028 05:24
केतु	05/08/2027 12:47	शुक्र	29/09/2027 07:41	सूर्य	29/12/2027 15:11	चंद्र	02/03/2028 13:14

विंशोत्तरी दशा - सूक्ष्म

राहु - शुक्र - राहु	
02/03/2028 13:14	
13/08/2028 21:56	
राहु	27/03/2028 04:56
गुरु	18/04/2028 02:54
शनि	14/05/2028 03:28
बुध	06/06/2028 10:18
केतु	16/06/2028 00:25
शुक्र	13/07/2028 09:52
सूर्य	21/07/2028 15:06
चंद्र	04/08/2028 07:49
मंगल	13/08/2028 21:56

राहु - शुक्र - गुरु	
13/08/2028 21:56	
07/01/2029 00:20	
गुरु	02/09/2028 09:27
शनि	25/09/2028 12:38
बुध	16/10/2028 05:22
केतु	24/10/2028 17:55
शुक्र	18/11/2028 02:19
सूर्य	25/11/2028 09:38
चंद्र	07/12/2028 13:50
मंगल	16/12/2028 02:22
राहु	07/01/2029 00:20

राहु - शुक्र - शनि	
07/01/2029 00:20	
29/06/2029 12:11	
शनि	03/02/2029 11:36
बुध	28/02/2029 01:29
केतु	10/03/2029 04:23
शुक्र	08/04/2029 02:21
सूर्य	16/04/2029 18:33
चंद्र	01/05/2029 05:32
मंगल	11/05/2029 08:25
राहु	06/06/2029 09:00
गुरु	29/06/2029 12:11

राहु - शुक्र - बुध	
29/06/2029 12:11	
01/12/2029 17:44	
बुध	21/07/2029 11:58
केतु	30/07/2029 13:17
शुक्र	25/08/2029 10:13
सूर्य	02/09/2029 04:30
चंद्र	15/09/2029 02:57
मंगल	24/09/2029 04:17
राहु	17/10/2029 11:07
गुरु	07/11/2029 03:51
शनि	01/12/2029 17:44

राहु - शुक्र - केतु	
01/12/2029 17:44	
03/02/2030 15:47	
केतु	05/12/2029 11:13
शुक्र	16/12/2029 02:53
सूर्य	19/12/2029 07:36
चंद्र	24/12/2029 15:26
मंगल	28/12/2029 08:55
राहु	06/01/2030 23:01
गुरु	15/01/2030 11:34
शनि	25/01/2030 14:27
बुध	03/02/2030 15:47

राहु - सूर्य - सूर्य	
03/02/2030 15:47	
20/02/2030 02:15	
सूर्य	04/02/2030 11:30
चंद्र	05/02/2030 20:23
मंगल	06/02/2030 19:23
राहु	09/02/2030 06:33
गुरु	11/02/2030 11:09
शनि	14/02/2030 01:37
बुध	16/02/2030 09:30
केतु	17/02/2030 08:30
शुक्र	20/02/2030 02:15

राहु - सूर्य - चंद्र	
20/02/2030 02:15	
19/03/2030 11:42	
चंद्र	22/02/2030 09:02
मंगल	23/02/2030 23:23
राहु	28/02/2030 02:00
गुरु	03/03/2030 17:40
शनि	08/03/2030 01:46
बुध	11/03/2030 22:54
केतु	13/03/2030 13:15
शुक्र	18/03/2030 02:50
सूर्य	19/03/2030 11:42

राहु - सूर्य - मंगल	
19/03/2030 11:42	
07/04/2030 15:55	
मंगल	20/03/2030 14:33
राहु	23/03/2030 11:35
गुरु	26/03/2030 00:56
शनि	29/03/2030 01:48
बुध	31/03/2030 19:00
केतु	01/04/2030 21:51
शुक्र	05/04/2030 02:33
सूर्य	06/04/2030 01:34
चंद्र	07/04/2030 15:55

राहु - सूर्य - राहु	
07/04/2030 15:55	
26/05/2030 23:19	
राहु	15/04/2030 01:26
गुरु	21/04/2030 15:13
शनि	29/04/2030 10:35
बुध	06/05/2030 10:14
केतु	09/05/2030 07:16
शुक्र	17/05/2030 12:30
सूर्य	19/05/2030 23:40
चंद्र	24/05/2030 02:18
मंगल	26/05/2030 23:19

राहु - सूर्य - गुरु	
26/05/2030 23:19	
09/07/2030 19:15	
गुरु	01/06/2030 19:35
शनि	08/06/2030 18:08
बुध	14/06/2030 23:09
केतु	17/06/2030 12:31
शुक्र	24/06/2030 19:50
सूर्य	27/06/2030 00:26
चंद्र	30/06/2030 16:06
मंगल	03/07/2030 05:27
राहु	09/07/2030 19:15

राहु - सूर्य - शनि	
09/07/2030 19:15	
30/08/2030 20:24	
शनि	18/07/2030 01:02
बुध	25/07/2030 09:59
केतु	28/07/2030 10:51
शुक्र	06/08/2030 03:03
सूर्य	08/08/2030 17:30
चंद्र	13/08/2030 01:36
मंगल	16/08/2030 02:28
राहु	23/08/2030 21:51
गुरु	30/08/2030 20:24

राहु - सूर्य - बुध	
30/08/2030 20:24	
16/10/2030 10:04	
बुध	06/09/2030 10:44
केतु	09/09/2030 03:56
शुक्र	16/09/2030 22:13
सूर्य	19/09/2030 06:06
चंद्र	23/09/2030 03:14
मंगल	25/09/2030 20:26
राहु	02/10/2030 20:05
गुरु	09/10/2030 01:06
शनि	16/10/2030 10:04

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - गुरु - शुक्र - राहु	
26/07/2019 19:01	
17/08/2019 16:59	
राहु	30/07/2019 01:55
गुरु	02/08/2019 00:02
शनि	05/08/2019 11:19
बुध	08/08/2019 13:50
केतु	09/08/2019 20:31
शुक्र	13/08/2019 12:10
सूर्य	14/08/2019 14:28
चंद्र	16/08/2019 10:18
मंगल	17/08/2019 16:59

राहु - गुरु - शुक्र - गुरु	
17/08/2019 16:59	
06/09/2019 04:30	
गुरु	20/08/2019 07:19
शनि	23/08/2019 09:20
बुध	26/08/2019 03:34
केतु	27/08/2019 06:51
शुक्र	30/08/2019 12:46
सूर्य	31/08/2019 12:08
चंद्र	02/09/2019 03:06
मंगल	03/09/2019 06:22
राहु	06/09/2019 04:30

राहु - गुरु - शुक्र - शनि	
06/09/2019 04:30	
29/09/2019 07:41	
शनि	09/09/2019 20:24
बुध	13/09/2019 03:03
केतु	14/09/2019 11:26
शुक्र	18/09/2019 07:58
सूर्य	19/09/2019 11:44
चंद्र	21/09/2019 10:00
मंगल	22/09/2019 18:23
राहु	26/09/2019 05:39
गुरु	29/09/2019 07:41

राहु - गुरु - शुक्र - बुध	
29/09/2019 07:41	
20/10/2019 00:25	
बुध	02/10/2019 06:03
केतु	03/10/2019 11:02
शुक्र	06/10/2019 21:49
सूर्य	07/10/2019 22:39
चंद्र	09/10/2019 16:03
मंगल	10/10/2019 21:02
राहु	13/10/2019 23:32
गुरु	16/10/2019 17:46
शनि	20/10/2019 00:25

राहु - गुरु - शुक्र - केतु	
20/10/2019 00:25	
28/10/2019 12:58	
केतु	20/10/2019 12:21
शुक्र	21/10/2019 22:26
सूर्य	22/10/2019 08:40
चंद्र	23/10/2019 01:43
मंगल	23/10/2019 13:39
राहु	24/10/2019 20:20
गुरु	25/10/2019 23:36
शनि	27/10/2019 07:59
बुध	28/10/2019 12:58

राहु - गुरु - सूर्य - सूर्य	
28/10/2019 12:58	
30/10/2019 17:33	
सूर्य	28/10/2019 15:35
चंद्र	28/10/2019 19:58
मंगल	28/10/2019 23:02
राहु	29/10/2019 06:56
गुरु	29/10/2019 13:57
शनि	29/10/2019 22:16
बुध	30/10/2019 05:43
केतु	30/10/2019 08:47
शुक्र	30/10/2019 17:33

राहु - गुरु - सूर्य - चंद्र	
30/10/2019 17:33	
03/11/2019 09:13	
चंद्र	31/10/2019 00:52
मंगल	31/10/2019 05:58
राहु	31/10/2019 19:07
गुरु	01/11/2019 06:49
शनि	01/11/2019 20:41
बुध	02/11/2019 09:07
केतु	02/11/2019 14:13
शुक्र	03/11/2019 04:50
सूर्य	03/11/2019 09:13

राहु - गुरु - सूर्य - मंगल	
03/11/2019 09:13	
05/11/2019 22:35	
मंगल	03/11/2019 12:48
राहु	03/11/2019 22:00
गुरु	04/11/2019 06:11
शनि	04/11/2019 15:54
बुध	05/11/2019 00:35
केतु	05/11/2019 04:10
शुक्र	05/11/2019 14:24
सूर्य	05/11/2019 17:28
चंद्र	05/11/2019 22:35

राहु - गुरु - सूर्य - राहु	
05/11/2019 22:35	
12/11/2019 12:22	
राहु	06/11/2019 22:15
गुरु	07/11/2019 19:17
शनि	08/11/2019 20:16
बुध	09/11/2019 18:37
केतु	10/11/2019 03:49
शुक्र	11/11/2019 06:07
सूर्य	11/11/2019 14:01
चंद्र	12/11/2019 03:10
मंगल	12/11/2019 12:22

राहु - गुरु - सूर्य - गुरु	
12/11/2019 12:22	
18/11/2019 08:37	
गुरु	13/11/2019 07:04
शनि	14/11/2019 05:16
बुध	15/11/2019 01:09
केतु	15/11/2019 09:19
शुक्र	16/11/2019 08:42
सूर्य	16/11/2019 15:43
चंद्र	17/11/2019 03:24
मंगल	17/11/2019 11:35
राहु	18/11/2019 08:37

राहु - गुरु - सूर्य - शनि	
18/11/2019 08:37	
25/11/2019 07:11	
शनि	19/11/2019 11:00
बुध	20/11/2019 10:35
केतु	20/11/2019 20:18
शुक्र	22/11/2019 00:04
सूर्य	22/11/2019 08:23
चंद्र	22/11/2019 22:16
मंगल	23/11/2019 07:59
राहु	24/11/2019 08:58
गुरु	25/11/2019 07:11

राहु - गुरु - सूर्य - बुध	
25/11/2019 07:11	
01/12/2019 12:12	
बुध	26/11/2019 04:17
केतु	26/11/2019 12:59
शुक्र	27/11/2019 13:49
सूर्य	27/11/2019 21:16
चंद्र	28/11/2019 09:41
मंगल	28/11/2019 18:23
राहु	29/11/2019 16:44
गुरु	30/11/2019 12:36
शनि	01/12/2019 12:12

विंशोत्तरी दशा - प्राण

राहु - गुरु - सूर्य - केतु	
01/12/2019 12:12	
04/12/2019 01:34	
केतु	01/12/2019 15:47
शुक्र	02/12/2019 02:00
सूर्य	02/12/2019 05:04
चंद्र	02/12/2019 10:11
मंगल	02/12/2019 13:46
राहु	02/12/2019 22:58
गुरु	03/12/2019 07:09
शनि	03/12/2019 16:52
बुध	04/12/2019 01:34

राहु - गुरु - सूर्य - शुक्र	
04/12/2019 01:34	
11/12/2019 08:53	
शुक्र	05/12/2019 06:47
सूर्य	05/12/2019 15:33
चंद्र	06/12/2019 06:09
मंगल	06/12/2019 16:23
राहु	07/12/2019 18:41
गुरु	08/12/2019 18:03
शनि	09/12/2019 21:49
बुध	10/12/2019 22:39
केतु	11/12/2019 08:53

राहु - गुरु - चंद्र - चंद्र	
11/12/2019 08:53	
17/12/2019 10:59	
चंद्र	11/12/2019 21:03
मंगल	12/12/2019 05:35
राहु	13/12/2019 03:30
गुरु	13/12/2019 22:58
शनि	14/12/2019 22:06
बुध	15/12/2019 18:48
केतु	16/12/2019 03:19
शुक्र	17/12/2019 03:40
सूर्य	17/12/2019 10:59

राहु - गुरु - चंद्र - मंगल	
17/12/2019 10:59	
21/12/2019 17:15	
मंगल	17/12/2019 16:57
राहु	18/12/2019 08:17
गुरु	18/12/2019 21:55
शनि	19/12/2019 14:07
बुध	20/12/2019 04:36
केतु	20/12/2019 10:34
शुक्र	21/12/2019 03:37
सूर्य	21/12/2019 08:44
चंद्र	21/12/2019 17:15

राहु - गुरु - चंद्र - राहु	
21/12/2019 17:15	
01/01/2020 16:14	
राहु	23/12/2019 08:42
गुरु	24/12/2019 19:46
शनि	26/12/2019 13:24
बुध	28/12/2019 02:39
केतु	28/12/2019 18:00
शुक्र	30/12/2019 13:49
सूर्य	31/12/2019 02:58
चंद्र	01/01/2020 00:53
मंगल	01/01/2020 16:14

राहु - गुरु - चंद्र - गुरु	
01/01/2020 16:14	
11/01/2020 09:59	
गुरु	02/01/2020 23:24
शनि	04/01/2020 12:25
बुध	05/01/2020 21:32
केतु	06/01/2020 11:10
शुक्र	08/01/2020 02:07
सूर्य	08/01/2020 13:49
चंद्र	09/01/2020 09:17
मंगल	09/01/2020 22:56
राहु	11/01/2020 09:59

राहु - गुरु - चंद्र - शनि	
11/01/2020 09:59	
22/01/2020 23:35	
शनि	13/01/2020 05:56
बुध	14/01/2020 21:16
केतु	15/01/2020 13:28
शुक्र	17/01/2020 11:43
सूर्य	18/01/2020 01:36
चंद्र	19/01/2020 00:44
मंगल	19/01/2020 16:56
राहु	21/01/2020 10:34
गुरु	22/01/2020 23:35

राहु - गुरु - चंद्र - बुध	
22/01/2020 23:35	
02/02/2020 07:57	
बुध	24/01/2020 10:46
केतु	25/01/2020 01:15
शुक्र	26/01/2020 18:39
सूर्य	27/01/2020 07:04
चंद्र	28/01/2020 03:46
मंगल	28/01/2020 18:15
राहु	30/01/2020 07:30
गुरु	31/01/2020 16:37
शनि	02/02/2020 07:57

राहु - गुरु - चंद्र - केतु	
02/02/2020 07:57	
06/02/2020 14:13	
केतु	02/02/2020 13:55
शुक्र	03/02/2020 06:58
सूर्य	03/02/2020 12:04
चंद्र	03/02/2020 20:36
मंगल	04/02/2020 02:34
राहु	04/02/2020 17:54
गुरु	05/02/2020 07:32
शनि	05/02/2020 23:44
बुध	06/02/2020 14:13

राहु - गुरु - चंद्र - शुक्र	
06/02/2020 14:13	
18/02/2020 18:25	
शुक्र	08/02/2020 14:55
सूर्य	09/02/2020 05:32
चंद्र	10/02/2020 05:53
मंगल	10/02/2020 22:55
राहु	12/02/2020 18:45
गुरु	14/02/2020 09:43
शनि	16/02/2020 07:59
बुध	18/02/2020 01:22
केतु	18/02/2020 18:25

राहु - गुरु - चंद्र - सूर्य	
18/02/2020 18:25	
22/02/2020 10:05	
सूर्य	18/02/2020 22:48
चंद्र	19/02/2020 06:06
मंगल	19/02/2020 11:13
राहु	20/02/2020 00:22
गुरु	20/02/2020 12:03
शनि	21/02/2020 01:56
बुध	21/02/2020 14:21
केतु	21/02/2020 19:28
शुक्र	22/02/2020 10:05

राहु - गुरु - मंगल - मंगल	
22/02/2020 10:05	
25/02/2020 09:40	
मंगल	22/02/2020 14:15
राहु	23/02/2020 01:00
गुरु	23/02/2020 10:32
शनि	23/02/2020 21:52
बुध	24/02/2020 08:01
केतु	24/02/2020 12:11
शुक्र	25/02/2020 00:07
सूर्य	25/02/2020 03:42
चंद्र	25/02/2020 09:40

षोडशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 3 वर्ष 5 मास 26 दिन

गुरु 13 वर्ष		शनि 14 वर्ष		केतु 15 वर्ष		चंद्र 16 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
05/03/1987		31/08/1990		30/08/2004		31/08/2019		31/08/2035	
31/08/1990		30/08/2004		31/08/2019		31/08/2035		30/08/2052	
	00/00/0000	शनि	09/05/1992	केतु	09/08/2006	चंद्र	14/11/2021	बुध	26/02/2038
	00/00/0000	केतु	01/03/1994	चंद्र	02/09/2008	बुध	19/03/2024	शुक्र	16/10/2040
	00/00/0000	चंद्र	04/02/1996	बुध	14/11/2010	शुक्र	12/09/2026	सूर्य	28/05/2042
	00/00/0000	बुध	23/02/1998	शुक्र	13/03/2013	सूर्य	19/03/2028	मंगल	29/02/2044
	05/03/1987	शुक्र	26/04/2000	सूर्य	15/08/2014	मंगल	14/11/2029	गुरु	25/01/2046
शुक्र	01/02/1988	सूर्य	24/08/2001	मंगल	04/03/2016	गुरु	31/08/2031	शनि	14/02/2048
सूर्य	26/04/1989	मंगल	04/02/2003	गुरु	08/11/2017	शनि	05/08/2033	केतु	27/04/2050
मंगल	31/08/1990	गुरु	30/08/2004	शनि	31/08/2019	केतु	31/08/2035	चंद्र	30/08/2052

शुक्र 18 वर्ष		सूर्य 11 वर्ष		मंगल 12 वर्ष		गुरु 13 वर्ष	
30/08/2052		31/08/2070		30/08/2081		30/08/2093	
31/08/2070		30/08/2081		30/08/2093		00/00/0000	
शुक्र	16/06/2055	सूर्य	16/09/2071	मंगल	27/11/2082	गुरु	13/02/2095
सूर्य	01/03/2057	मंगल	04/11/2072	गुरु	01/04/2084	शनि	09/09/2096
मंगल	10/01/2059	गुरु	28/01/2074	शनि	12/09/2085	केतु	16/05/2098
गुरु	16/01/2061	शनि	28/05/2075	केतु	02/04/2087	चंद्र	01/03/2100
शनि	20/03/2063	केतु	29/10/2076	चंद्र	26/11/2088	बुध	26/01/2102
केतु	17/07/2065	चंद्र	06/05/2078	बुध	31/08/2090	शुक्र	06/03/2103
चंद्र	10/01/2068	बुध	16/12/2079	शुक्र	11/07/2092		00/00/0000
बुध	31/08/2070	शुक्र	30/08/2081	सूर्य	30/08/2093		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
षोडशोत्तरी दशा पूरे 116 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य		गुरु - मंगल		शनि - शनि		शनि - केतु	
05/03/1987		01/02/1988		26/04/1989		31/08/1990		09/05/1992	
01/02/1988		26/04/1989		31/08/1990		09/05/1992		01/03/1994	
	00/00/0000	सूर्य	15/03/1988	मंगल	16/06/1989	शनि	13/11/1990	केतु	02/08/1992
	00/00/0000	मंगल	30/04/1988	गुरु	10/08/1989	केतु	01/02/1991	चंद्र	01/11/1992
	00/00/0000	गुरु	20/06/1988	शनि	09/10/1989	चंद्र	27/04/1991	बुध	06/02/1993
	05/03/1987	शनि	13/08/1988	केतु	11/12/1989	बुध	26/07/1991	शुक्र	20/05/1993
शनि	02/04/1987	केतु	10/10/1988	चंद्र	17/02/1990	शुक्र	30/10/1991	सूर्य	22/07/1993
केतु	07/07/1987	चंद्र	12/12/1988	बुध	30/04/1990	सूर्य	28/12/1991	मंगल	28/09/1993
चंद्र	16/10/1987	बुध	16/02/1989	शुक्र	15/07/1990	मंगल	01/03/1992	गुरु	11/12/1993
बुध	01/02/1988	शुक्र	26/04/1989	सूर्य	31/08/1990	गुरु	09/05/1992	शनि	01/03/1994

शनि - चंद्र		शनि - बुध		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - मंगल	
01/03/1994		04/02/1996		23/02/1998		26/04/2000		24/08/2001	
04/02/1996		23/02/1998		26/04/2000		24/08/2001		04/02/2003	
चंद्र	06/06/1994	बुध	24/05/1996	शुक्र	26/06/1998	सूर्य	11/06/2000	मंगल	18/10/2001
बुध	18/09/1994	शुक्र	17/09/1996	सूर्य	09/09/1998	मंगल	31/07/2000	गुरु	16/12/2001
शुक्र	05/01/1995	सूर्य	27/11/1996	मंगल	30/11/1998	गुरु	24/09/2000	शनि	18/02/2002
सूर्य	13/03/1995	मंगल	13/02/1997	गुरु	27/02/1999	शनि	21/11/2000	केतु	27/04/2002
मंगल	25/05/1995	गुरु	08/05/1997	शनि	03/06/1999	केतु	23/01/2001	चंद्र	09/07/2002
गुरु	12/08/1995	शनि	06/08/1997	केतु	13/09/1999	चंद्र	31/03/2001	बुध	25/09/2002
शनि	05/11/1995	केतु	11/11/1997	चंद्र	01/01/2000	बुध	10/06/2001	शुक्र	16/12/2002
केतु	04/02/1996	चंद्र	23/02/1998	बुध	26/04/2000	शुक्र	24/08/2001	सूर्य	04/02/2003

शनि - गुरु		केतु - केतु		केतु - चंद्र		केतु - बुध		केतु - शुक्र	
04/02/2003		30/08/2004		09/08/2006		02/09/2008		14/11/2010	
30/08/2004		09/08/2006		02/09/2008		14/11/2010		13/03/2013	
गुरु	09/04/2003	केतु	30/11/2004	चंद्र	21/11/2006	बुध	29/12/2008	शुक्र	26/03/2011
शनि	17/06/2003	चंद्र	07/03/2005	बुध	12/03/2007	शुक्र	03/05/2009	सूर्य	15/06/2011
केतु	31/08/2003	बुध	19/06/2005	शुक्र	07/07/2007	सूर्य	18/07/2009	मंगल	11/09/2011
चंद्र	18/11/2003	शुक्र	07/10/2005	सूर्य	16/09/2007	मंगल	09/10/2009	गुरु	15/12/2011
बुध	10/02/2004	सूर्य	13/12/2005	मंगल	04/12/2007	गुरु	07/01/2010	शनि	27/03/2012
शुक्र	08/05/2004	मंगल	25/02/2006	गुरु	26/02/2008	शनि	14/04/2010	केतु	14/07/2012
सूर्य	02/07/2004	गुरु	15/05/2006	शनि	28/05/2008	केतु	26/07/2010	चंद्र	09/11/2012
मंगल	30/08/2004	शनि	09/08/2006	केतु	02/09/2008	चंद्र	14/11/2010	बुध	13/03/2013

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - सूर्य	
13/03/2013	
15/08/2014	
सूर्य	02/05/2013
मंगल	24/06/2013
गुरु	22/08/2013
शनि	23/10/2013
केतु	29/12/2013
चंद्र	11/03/2014
बुध	26/05/2014
शुक्र	15/08/2014

केतु - मंगल	
15/08/2014	
04/03/2016	
मंगल	12/10/2014
गुरु	15/12/2014
शनि	21/02/2015
केतु	06/05/2015
चंद्र	23/07/2015
बुध	14/10/2015
शुक्र	10/01/2016
सूर्य	04/03/2016

केतु - गुरु	
04/03/2016	
08/11/2017	
गुरु	11/05/2016
शनि	25/07/2016
केतु	12/10/2016
चंद्र	05/01/2017
बुध	05/04/2017
शुक्र	09/07/2017
सूर्य	05/09/2017
मंगल	08/11/2017

केतु - शनि	
08/11/2017	
31/08/2019	
शनि	26/01/2018
केतु	22/04/2018
चंद्र	22/07/2018
बुध	27/10/2018
शुक्र	07/02/2019
सूर्य	10/04/2019
मंगल	18/06/2019
गुरु	31/08/2019

चंद्र - चंद्र	
31/08/2019	
14/11/2021	
चंद्र	20/12/2019
बुध	16/04/2020
शुक्र	19/08/2020
सूर्य	04/11/2020
मंगल	26/01/2021
गुरु	26/04/2021
शनि	02/08/2021
केतु	14/11/2021

चंद्र - बुध	
14/11/2021	
19/03/2024	
बुध	19/03/2022
शुक्र	30/07/2022
सूर्य	20/10/2022
मंगल	16/01/2023
गुरु	22/04/2023
शनि	03/08/2023
केतु	22/11/2023
चंद्र	19/03/2024

चंद्र - शुक्र	
19/03/2024	
12/09/2026	
शुक्र	07/08/2024
सूर्य	01/11/2024
मंगल	03/02/2025
गुरु	16/05/2025
शनि	02/09/2025
केतु	28/12/2025
चंद्र	02/05/2026
बुध	12/09/2026

चंद्र - सूर्य	
12/09/2026	
19/03/2028	
सूर्य	04/11/2026
मंगल	31/12/2026
गुरु	03/03/2027
शनि	09/05/2027
केतु	20/07/2027
चंद्र	04/10/2027
बुध	24/12/2027
शुक्र	19/03/2028

चंद्र - मंगल	
19/03/2028	
14/11/2029	
मंगल	21/05/2028
गुरु	28/07/2028
शनि	09/10/2028
केतु	26/12/2028
चंद्र	19/03/2029
बुध	16/06/2029
शुक्र	18/09/2029
सूर्य	14/11/2029

चंद्र - गुरु	
14/11/2029	
31/08/2031	
गुरु	26/01/2030
शनि	15/04/2030
केतु	09/07/2030
चंद्र	07/10/2030
बुध	11/01/2031
शुक्र	23/04/2031
सूर्य	24/06/2031
मंगल	31/08/2031

चंद्र - शनि	
31/08/2031	
05/08/2033	
शनि	24/11/2031
केतु	23/02/2032
चंद्र	30/05/2032
बुध	11/09/2032
शुक्र	29/12/2032
सूर्य	06/03/2033
मंगल	18/05/2033
गुरु	05/08/2033

चंद्र - केतु	
05/08/2033	
31/08/2035	
केतु	11/11/2033
चंद्र	23/02/2034
बुध	14/06/2034
शुक्र	09/10/2034
सूर्य	20/12/2034
मंगल	08/03/2035
गुरु	01/06/2035
शनि	31/08/2035

बुध - बुध	
31/08/2035	
26/02/2038	
बुध	11/01/2036
शुक्र	31/05/2036
सूर्य	26/08/2036
मंगल	28/11/2036
गुरु	10/03/2037
शनि	28/06/2037
केतु	23/10/2037
चंद्र	26/02/2038

बुध - शुक्र	
26/02/2038	
16/10/2040	
शुक्र	25/07/2038
सूर्य	25/10/2038
मंगल	01/02/2039
गुरु	20/05/2039
शनि	14/09/2039
केतु	16/01/2040
चंद्र	28/05/2040
बुध	16/10/2040

बुध - सूर्य	
16/10/2040	
28/05/2042	
सूर्य	11/12/2040
मंगल	10/02/2041
गुरु	17/04/2041
शनि	27/06/2041
केतु	11/09/2041
चंद्र	01/12/2041
बुध	26/02/2042
शुक्र	28/05/2042

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - मंगल		बुध - गुरु		बुध - शनि		बुध - केतु		बुध - चंद्र	
28/05/2042		29/02/2044		25/01/2046		14/02/2048		27/04/2050	
29/02/2044		25/01/2046		14/02/2048		27/04/2050		30/08/2052	
मंगल	03/08/2042	गुरु	17/05/2044	शनि	26/04/2046	केतु	28/05/2048	चंद्र	23/08/2050
गुरु	14/10/2042	शनि	09/08/2044	केतु	01/08/2046	चंद्र	15/09/2048	बुध	26/12/2050
शनि	30/12/2042	केतु	07/11/2044	चंद्र	12/11/2046	बुध	11/01/2049	शुक्र	08/05/2051
केतु	23/03/2043	चंद्र	11/02/2045	बुध	02/03/2047	शुक्र	16/05/2049	सूर्य	28/07/2051
चंद्र	20/06/2043	बुध	24/05/2045	शुक्र	26/06/2047	सूर्य	31/07/2049	मंगल	25/10/2051
बुध	22/09/2043	शुक्र	09/09/2045	सूर्य	05/09/2047	मंगल	22/10/2049	गुरु	29/01/2052
शुक्र	31/12/2043	सूर्य	14/11/2045	मंगल	22/11/2047	गुरु	20/01/2050	शनि	11/05/2052
सूर्य	29/02/2044	मंगल	25/01/2046	गुरु	14/02/2048	शनि	27/04/2050	केतु	30/08/2052

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - मंगल		शुक्र - गुरु		शुक्र - शनि	
30/08/2052		16/06/2055		01/03/2057		10/01/2059		16/01/2061	
16/06/2055		01/03/2057		10/01/2059		16/01/2061		20/03/2063	
शुक्र	04/02/2053	सूर्य	14/08/2055	मंगल	10/05/2057	गुरु	02/04/2059	शनि	21/04/2061
सूर्य	12/05/2053	मंगल	18/10/2055	गुरु	25/07/2057	शनि	30/06/2059	केतु	02/08/2061
मंगल	26/08/2053	गुरु	27/12/2055	शनि	15/10/2057	केतु	04/10/2059	चंद्र	19/11/2061
गुरु	18/12/2053	शनि	11/03/2056	केतु	11/01/2058	चंद्र	13/01/2060	बुध	16/03/2062
शनि	20/04/2054	केतु	31/05/2056	चंद्र	15/04/2058	बुध	30/04/2060	शुक्र	17/07/2062
केतु	30/08/2054	चंद्र	25/08/2056	बुध	24/07/2058	शुक्र	23/08/2060	सूर्य	30/09/2062
चंद्र	18/01/2055	बुध	24/11/2056	शुक्र	06/11/2058	सूर्य	31/10/2060	मंगल	21/12/2062
बुध	16/06/2055	शुक्र	01/03/2057	सूर्य	10/01/2059	मंगल	16/01/2061	गुरु	20/03/2063

शुक्र - केतु		शुक्र - चंद्र		शुक्र - बुध		सूर्य - सूर्य		सूर्य - मंगल	
20/03/2063		17/07/2065		10/01/2068		31/08/2070		16/09/2071	
17/07/2065		10/01/2068		31/08/2070		16/09/2071		04/11/2072	
केतु	08/07/2063	चंद्र	19/11/2065	बुध	30/05/2068	सूर्य	06/10/2070	मंगल	29/10/2071
चंद्र	02/11/2063	बुध	01/04/2066	शुक्र	27/10/2068	मंगल	14/11/2070	गुरु	14/12/2071
बुध	06/03/2064	शुक्र	20/08/2066	सूर्य	26/01/2069	गुरु	27/12/2070	शनि	02/02/2072
शुक्र	16/07/2064	सूर्य	14/11/2066	मंगल	06/05/2069	शनि	11/02/2071	केतु	27/03/2072
सूर्य	04/10/2064	मंगल	16/02/2067	गुरु	22/08/2069	केतु	01/04/2071	चंद्र	23/05/2072
मंगल	31/12/2064	गुरु	28/05/2067	शनि	16/12/2069	चंद्र	24/05/2071	बुध	23/07/2072
गुरु	06/04/2065	शनि	15/09/2067	केतु	20/04/2070	बुध	18/07/2071	शुक्र	26/09/2072
शनि	17/07/2065	केतु	10/01/2068	चंद्र	31/08/2070	शुक्र	16/09/2071	सूर्य	04/11/2072

षोडशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - केतु		सूर्य - चंद्र		सूर्य - बुध	
04/11/2072		28/01/2074		28/05/2075		29/10/2076		06/05/2078	
28/01/2074		28/05/2075		29/10/2076		06/05/2078		16/12/2079	
गुरु	25/12/2072	शनि	28/03/2074	केतु	04/08/2075	चंद्र	13/01/2077	बुध	31/07/2078
शनि	17/02/2073	केतु	30/05/2074	चंद्र	14/10/2075	बुध	05/04/2077	शुक्र	31/10/2078
केतु	16/04/2073	चंद्र	05/08/2074	बुध	29/12/2075	शुक्र	30/06/2077	सूर्य	26/12/2078
चंद्र	17/06/2073	बुध	15/10/2074	शुक्र	19/03/2076	सूर्य	21/08/2077	मंगल	24/02/2079
बुध	22/08/2073	शुक्र	29/12/2074	सूर्य	07/05/2076	मंगल	17/10/2077	गुरु	01/05/2079
शुक्र	31/10/2073	सूर्य	13/02/2075	मंगल	30/06/2076	गुरु	19/12/2077	शनि	12/07/2079
सूर्य	13/12/2073	मंगल	04/04/2075	गुरु	27/08/2076	शनि	23/02/2078	केतु	26/09/2079
मंगल	28/01/2074	गुरु	28/05/2075	शनि	29/10/2076	केतु	06/05/2078	चंद्र	16/12/2079

सूर्य - शुक्र		मंगल - मंगल		मंगल - गुरु		मंगल - शनि		मंगल - केतु	
16/12/2079		30/08/2081		27/11/2082		01/04/2084		12/09/2085	
30/08/2081		27/11/2082		01/04/2084		12/09/2085		02/04/2087	
शुक्र	22/03/2080	मंगल	16/10/2081	गुरु	21/01/2083	शनि	04/06/2084	केतु	24/11/2085
सूर्य	20/05/2080	गुरु	06/12/2081	शनि	21/03/2083	केतु	11/08/2084	चंद्र	10/02/2086
मंगल	23/07/2080	शनि	30/01/2082	केतु	24/05/2083	चंद्र	23/10/2084	बुध	04/05/2086
गुरु	01/10/2080	केतु	29/03/2082	चंद्र	30/07/2083	बुध	09/01/2085	शुक्र	31/07/2086
शनि	15/12/2080	चंद्र	31/05/2082	बुध	10/10/2083	शुक्र	01/04/2085	सूर्य	23/09/2086
केतु	06/03/2081	बुध	05/08/2082	शुक्र	26/12/2083	सूर्य	21/05/2085	मंगल	21/11/2086
चंद्र	31/05/2081	शुक्र	15/10/2082	सूर्य	10/02/2084	मंगल	15/07/2085	गुरु	23/01/2087
बुध	30/08/2081	सूर्य	27/11/2082	मंगल	01/04/2084	गुरु	12/09/2085	शनि	02/04/2087

मंगल - चंद्र		मंगल - बुध		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		गुरु - गुरु	
02/04/2087		26/11/2088		31/08/2090		11/07/2092		30/08/2093	
26/11/2088		31/08/2090		11/07/2092		30/08/2093		13/02/2095	
चंद्र	24/06/2087	बुध	28/02/2089	शुक्र	14/12/2090	सूर्य	19/08/2092	गुरु	29/10/2093
बुध	21/09/2087	शुक्र	08/06/2089	सूर्य	17/02/2091	मंगल	01/10/2092	शनि	01/01/2094
शुक्र	23/12/2087	सूर्य	08/08/2089	मंगल	28/04/2091	गुरु	17/11/2092	केतु	11/03/2094
सूर्य	19/02/2088	मंगल	13/10/2089	गुरु	13/07/2091	शनि	06/01/2093	चंद्र	23/05/2094
मंगल	21/04/2088	गुरु	24/12/2089	शनि	03/10/2091	केतु	01/03/2093	बुध	09/08/2094
गुरु	28/06/2088	शनि	12/03/2090	केतु	30/12/2091	चंद्र	27/04/2093	शुक्र	31/10/2094
शनि	09/09/2088	केतु	03/06/2090	चंद्र	02/04/2092	बुध	27/06/2093	सूर्य	20/12/2094
केतु	26/11/2088	चंद्र	31/08/2090	बुध	11/07/2092	शुक्र	30/08/2093	मंगल	13/02/2095

त्रिभगी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 3 वर्ष 6 मास 29 दिन

शुक्र 13 वर्ष		सूर्य 4 वर्ष		चंद्र 7 वर्ष		मंगल 5 वर्ष		राहु 12 वर्ष	
05/03/1987		02/10/1990		02/10/1994		02/06/2001		01/02/2006	
02/10/1990		02/10/1994		02/06/2001		01/02/2006		01/02/2018	
	00/00/0000	सूर्य	14/12/1990	चंद्र	23/04/1995	मंगल	10/09/2001	राहु	20/11/2007
	00/00/0000	चंद्र	15/04/1991	मंगल	12/09/1995	राहु	23/05/2002	गुरु	27/06/2009
	00/00/0000	मंगल	09/07/1991	राहु	11/09/1996	गुरु	06/01/2003	शनि	22/05/2011
	00/00/0000	राहु	13/02/1992	गुरु	02/08/1997	शनि	03/10/2003	बुध	01/02/2013
	00/00/0000	गुरु	26/08/1992	शनि	23/08/1998	बुध	31/05/2004	केतु	14/10/2013
	05/03/1987	शनि	15/04/1993	बुध	03/08/1999	केतु	07/09/2004	शुक्र	15/10/2015
शनि	01/02/1988	बुध	08/11/1993	केतु	23/12/1999	शुक्र	19/06/2005	सूर्य	21/05/2016
बुध	22/12/1989	केतु	01/02/1994	शुक्र	01/02/2001	सूर्य	12/09/2005	चंद्र	21/05/2017
केतु	02/10/1990	शुक्र	02/10/1994	सूर्य	02/06/2001	चंद्र	01/02/2006	मंगल	01/02/2018

गुरु 11 वर्ष		शनि 13 वर्ष		बुध 11 वर्ष		केतु 5 वर्ष		शुक्र 13 वर्ष	
01/02/2018		02/10/2028		02/06/2041		02/10/2052		02/06/2057	
02/10/2028		02/06/2041		02/10/2052		02/06/2057		00/00/0000	
गुरु	05/07/2019	शनि	04/10/2030	बुध	10/01/2043	केतु	09/01/2053	शुक्र	23/08/2059
शनि	13/03/2021	बुध	21/07/2032	केतु	08/09/2043	शुक्र	20/10/2053	सूर्य	22/04/2060
बुध	16/09/2022	केतु	17/04/2033	शुक्र	29/07/2045	सूर्य	14/01/2054	चंद्र	02/06/2061
केतु	01/05/2023	शुक्र	28/05/2035	सूर्य	21/02/2046	चंद्र	05/06/2054	मंगल	13/03/2062
शुक्र	09/02/2025	सूर्य	14/01/2036	चंद्र	01/02/2047	मंगल	12/09/2054	राहु	13/03/2064
सूर्य	22/08/2025	चंद्र	03/02/2037	मंगल	01/10/2047	राहु	26/05/2055	गुरु	22/12/2065
चंद्र	13/07/2026	मंगल	30/10/2037	राहु	12/06/2049	गुरु	08/01/2056	शनि	05/03/2067
मंगल	25/02/2027	राहु	24/09/2039	गुरु	16/12/2050	शनि	04/10/2056		00/00/0000
राहु	02/10/2028	गुरु	02/06/2041	शनि	02/10/2052	बुध	02/06/2057		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
त्रिभगी दशा पूरे 80 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि		शुक्र - बुध		शुक्र - केतु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
05/03/1987		01/02/1988		22/12/1989		02/10/1990		14/12/1990	
01/02/1988		22/12/1989		02/10/1990		14/12/1990		15/04/1991	
	00/00/0000	बुध	09/05/1988	केतु	08/01/1990	सूर्य	06/10/1990	चंद्र	24/12/1990
	00/00/0000	केतु	18/06/1988	शुक्र	24/02/1990	चंद्र	12/10/1990	मंगल	01/01/1991
	00/00/0000	शुक्र	11/10/1988	सूर्य	10/03/1990	मंगल	16/10/1990	राहु	19/01/1991
	05/03/1987	सूर्य	15/11/1988	चंद्र	03/04/1990	राहु	27/10/1990	गुरु	04/02/1991
सूर्य	11/03/1987	चंद्र	11/01/1989	मंगल	20/04/1990	गुरु	06/11/1990	शनि	23/02/1991
चंद्र	14/05/1987	मंगल	20/02/1989	राहु	01/06/1990	शनि	18/11/1990	बुध	13/03/1991
मंगल	28/06/1987	राहु	04/06/1989	गुरु	09/07/1990	बुध	28/11/1990	केतु	20/03/1991
राहु	21/10/1987	गुरु	04/09/1989	शनि	23/08/1990	केतु	02/12/1990	शुक्र	09/04/1991
गुरु	01/02/1988	शनि	22/12/1989	बुध	02/10/1990	शुक्र	14/12/1990	सूर्य	15/04/1991

सूर्य - मंगल		सूर्य - राहु		सूर्य - गुरु		सूर्य - शनि		सूर्य - बुध	
15/04/1991		09/07/1991		13/02/1992		26/08/1992		15/04/1993	
09/07/1991		13/02/1992		26/08/1992		15/04/1993		08/11/1993	
मंगल	20/04/1991	राहु	11/08/1991	गुरु	10/03/1992	शनि	02/10/1992	बुध	14/05/1993
राहु	03/05/1991	गुरु	09/09/1991	शनि	10/04/1992	बुध	04/11/1992	केतु	26/05/1993
गुरु	14/05/1991	शनि	14/10/1991	बुध	08/05/1992	केतु	17/11/1992	शुक्र	29/06/1993
शनि	28/05/1991	बुध	14/11/1991	केतु	19/05/1992	शुक्र	26/12/1992	सूर्य	10/07/1993
बुध	09/06/1991	केतु	27/11/1991	शुक्र	21/06/1992	सूर्य	06/01/1993	चंद्र	27/07/1993
केतु	14/06/1991	शुक्र	02/01/1992	सूर्य	30/06/1992	चंद्र	26/01/1993	मंगल	08/08/1993
शुक्र	28/06/1991	सूर्य	13/01/1992	चंद्र	17/07/1992	मंगल	08/02/1993	राहु	08/09/1993
सूर्य	02/07/1991	चंद्र	01/02/1992	मंगल	28/07/1992	राहु	15/03/1993	गुरु	06/10/1993
चंद्र	09/07/1991	मंगल	13/02/1992	राहु	26/08/1992	गुरु	15/04/1993	शनि	08/11/1993

सूर्य - केतु		सूर्य - शुक्र		चंद्र - चंद्र		चंद्र - मंगल		चंद्र - राहु	
08/11/1993		01/02/1994		02/10/1994		23/04/1995		12/09/1995	
01/02/1994		02/10/1994		23/04/1995		12/09/1995		11/09/1996	
केतु	13/11/1993	शुक्र	13/03/1994	चंद्र	19/10/1994	मंगल	01/05/1995	राहु	06/11/1995
शुक्र	27/11/1993	सूर्य	26/03/1994	मंगल	31/10/1994	राहु	23/05/1995	गुरु	25/12/1995
सूर्य	01/12/1993	चंद्र	15/04/1994	राहु	30/11/1994	गुरु	11/06/1995	शनि	21/02/1996
चंद्र	08/12/1993	मंगल	29/04/1994	गुरु	28/12/1994	शनि	03/07/1995	बुध	12/04/1996
मंगल	13/12/1993	राहु	05/06/1994	शनि	29/01/1995	बुध	23/07/1995	केतु	04/05/1996
राहु	26/12/1993	गुरु	07/07/1994	बुध	26/02/1995	केतु	01/08/1995	शुक्र	03/07/1996
गुरु	06/01/1994	शनि	15/08/1994	केतु	10/03/1995	शुक्र	24/08/1995	सूर्य	22/07/1996
शनि	20/01/1994	बुध	18/09/1994	शुक्र	13/04/1995	सूर्य	31/08/1995	चंद्र	21/08/1996
बुध	01/02/1994	केतु	02/10/1994	सूर्य	23/04/1995	चंद्र	12/09/1995	मंगल	11/09/1996

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु		चंद्र - शनि		चंद्र - बुध		चंद्र - केतु		चंद्र - शुक्र	
11/09/1996		02/08/1997		23/08/1998		03/08/1999		23/12/1999	
02/08/1997		23/08/1998		03/08/1999		23/12/1999		01/02/2001	
गुरु	25/10/1996	शनि	02/10/1997	बुध	11/10/1998	केतु	11/08/1999	शुक्र	28/02/2000
शनि	15/12/1996	बुध	26/11/1997	केतु	31/10/1998	शुक्र	04/09/1999	सूर्य	20/03/2000
बुध	30/01/1997	केतु	18/12/1997	शुक्र	27/12/1998	सूर्य	11/09/1999	चंद्र	22/04/2000
केतु	18/02/1997	शुक्र	21/02/1998	सूर्य	13/01/1999	चंद्र	23/09/1999	मंगल	16/05/2000
शुक्र	13/04/1997	सूर्य	12/03/1998	चंद्र	11/02/1999	मंगल	01/10/1999	राहु	16/07/2000
सूर्य	29/04/1997	चंद्र	13/04/1998	मंगल	03/03/1999	राहु	22/10/1999	गुरु	08/09/2000
चंद्र	27/05/1997	मंगल	05/05/1998	राहु	24/04/1999	गुरु	10/11/1999	शनि	11/11/2000
मंगल	14/06/1997	राहु	02/07/1998	गुरु	09/06/1999	शनि	03/12/1999	बुध	08/01/2001
राहु	02/08/1997	गुरु	23/08/1998	शनि	03/08/1999	बुध	23/12/1999	केतु	01/02/2001

चंद्र - सूर्य		मंगल - मंगल		मंगल - राहु		मंगल - गुरु		मंगल - शनि	
01/02/2001		02/06/2001		10/09/2001		23/05/2002		06/01/2003	
02/06/2001		10/09/2001		23/05/2002		06/01/2003		03/10/2003	
सूर्य	07/02/2001	मंगल	08/06/2001	राहु	18/10/2001	गुरु	23/06/2002	शनि	17/02/2003
चंद्र	17/02/2001	राहु	23/06/2001	गुरु	21/11/2001	शनि	29/07/2002	बुध	28/03/2003
मंगल	24/02/2001	गुरु	06/07/2001	शनि	01/01/2002	बुध	30/08/2002	केतु	12/04/2003
राहु	14/03/2001	शनि	22/07/2001	बुध	06/02/2002	केतु	12/09/2002	शुक्र	27/05/2003
गुरु	30/03/2001	बुध	05/08/2001	केतु	21/02/2002	शुक्र	20/10/2002	सूर्य	10/06/2003
शनि	19/04/2001	केतु	11/08/2001	शुक्र	04/04/2002	सूर्य	31/10/2002	चंद्र	02/07/2003
बुध	06/05/2001	शुक्र	27/08/2001	सूर्य	17/04/2002	चंद्र	19/11/2002	मंगल	18/07/2003
केतु	13/05/2001	सूर्य	01/09/2001	चंद्र	08/05/2002	मंगल	03/12/2002	राहु	28/08/2003
शुक्र	02/06/2001	चंद्र	10/09/2001	मंगल	23/05/2002	राहु	06/01/2003	गुरु	03/10/2003

मंगल - बुध		मंगल - केतु		मंगल - शुक्र		मंगल - सूर्य		मंगल - चंद्र	
03/10/2003		31/05/2004		07/09/2004		19/06/2005		12/09/2005	
31/05/2004		07/09/2004		19/06/2005		12/09/2005		01/02/2006	
बुध	06/11/2003	केतु	06/06/2004	शुक्र	25/10/2004	सूर्य	23/06/2005	चंद्र	24/09/2005
केतु	20/11/2003	शुक्र	22/06/2004	सूर्य	08/11/2004	चंद्र	30/06/2005	मंगल	02/10/2005
शुक्र	30/12/2003	सूर्य	27/06/2004	चंद्र	02/12/2004	मंगल	05/07/2005	राहु	23/10/2005
सूर्य	11/01/2004	चंद्र	06/07/2004	मंगल	18/12/2004	राहु	18/07/2005	गुरु	11/11/2005
चंद्र	31/01/2004	मंगल	11/07/2004	राहु	30/01/2005	गुरु	29/07/2005	शनि	04/12/2005
मंगल	14/02/2004	राहु	26/07/2004	गुरु	09/03/2005	शनि	11/08/2005	बुध	24/12/2005
राहु	22/03/2004	गुरु	09/08/2004	शनि	23/04/2005	बुध	24/08/2005	केतु	01/01/2006
गुरु	23/04/2004	शनि	24/08/2004	बुध	02/06/2005	केतु	29/08/2005	शुक्र	25/01/2006
शनि	31/05/2004	बुध	07/09/2004	केतु	19/06/2005	शुक्र	12/09/2005	सूर्य	01/02/2006

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
01/02/2006		20/11/2007		27/06/2009		22/05/2011		01/02/2013	
20/11/2007		27/06/2009		22/05/2011		01/02/2013		14/10/2013	
राहु	10/05/2006	गुरु	06/02/2008	शनि	15/10/2009	बुध	18/08/2011	केतु	15/02/2013
गुरु	06/08/2006	शनि	09/05/2008	बुध	21/01/2010	केतु	23/09/2011	शुक्र	30/03/2013
शनि	18/11/2006	बुध	30/07/2008	केतु	02/03/2010	शुक्र	04/01/2012	सूर्य	12/04/2013
बुध	19/02/2007	केतु	03/09/2008	शुक्र	26/06/2010	सूर्य	04/02/2012	चंद्र	03/05/2013
केतु	30/03/2007	शुक्र	09/12/2008	सूर्य	31/07/2010	चंद्र	27/03/2012	मंगल	18/05/2013
शुक्र	17/07/2007	सूर्य	07/01/2009	चंद्र	26/09/2010	मंगल	02/05/2012	राहु	25/06/2013
सूर्य	19/08/2007	चंद्र	25/02/2009	मंगल	06/11/2010	राहु	03/08/2012	गुरु	30/07/2013
चंद्र	13/10/2007	मंगल	31/03/2009	राहु	18/02/2011	गुरु	25/10/2012	शनि	08/09/2013
मंगल	20/11/2007	राहु	27/06/2009	गुरु	22/05/2011	शनि	01/02/2013	बुध	14/10/2013

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
14/10/2013		15/10/2015		21/05/2016		21/05/2017		01/02/2018	
15/10/2015		21/05/2016		21/05/2017		01/02/2018		05/07/2019	
शुक्र	13/02/2014	सूर्य	26/10/2015	चंद्र	20/06/2016	मंगल	05/06/2017	गुरु	11/04/2018
सूर्य	21/03/2014	चंद्र	13/11/2015	मंगल	12/07/2016	राहु	13/07/2017	शनि	02/07/2018
चंद्र	21/05/2014	मंगल	26/11/2015	राहु	04/09/2016	गुरु	16/08/2017	बुध	14/09/2018
मंगल	03/07/2014	राहु	29/12/2015	गुरु	23/10/2016	शनि	26/09/2017	केतु	14/10/2018
राहु	21/10/2014	गुरु	27/01/2016	शनि	20/12/2016	बुध	01/11/2017	शुक्र	09/01/2019
गुरु	26/01/2015	शनि	02/03/2016	बुध	10/02/2017	केतु	16/11/2017	सूर्य	04/02/2019
शनि	22/05/2015	बुध	02/04/2016	केतु	03/03/2017	शुक्र	29/12/2017	चंद्र	19/03/2019
बुध	02/09/2015	केतु	14/04/2016	शुक्र	03/05/2017	सूर्य	10/01/2018	मंगल	18/04/2019
केतु	15/10/2015	शुक्र	21/05/2016	सूर्य	21/05/2017	चंद्र	01/02/2018	राहु	05/07/2019

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
05/07/2019		13/03/2021		16/09/2022		01/05/2023		09/02/2025	
13/03/2021		16/09/2022		01/05/2023		09/02/2025		22/08/2025	
शनि	11/10/2019	बुध	30/05/2021	केतु	29/09/2022	शुक्र	18/08/2023	सूर्य	18/02/2025
बुध	06/01/2020	केतु	02/07/2021	शुक्र	06/11/2022	सूर्य	19/09/2023	चंद्र	07/03/2025
केतु	11/02/2020	शुक्र	01/10/2021	सूर्य	18/11/2022	चंद्र	12/11/2023	मंगल	18/03/2025
शुक्र	24/05/2020	सूर्य	29/10/2021	चंद्र	06/12/2022	मंगल	20/12/2023	राहु	16/04/2025
सूर्य	24/06/2020	चंद्र	14/12/2021	मंगल	20/12/2022	राहु	26/03/2024	गुरु	12/05/2025
चंद्र	14/08/2020	मंगल	15/01/2022	राहु	23/01/2023	गुरु	21/06/2024	शनि	12/06/2025
मंगल	19/09/2020	राहु	08/04/2022	गुरु	22/02/2023	शनि	02/10/2024	बुध	10/07/2025
राहु	21/12/2020	गुरु	21/06/2022	शनि	30/03/2023	बुध	02/01/2025	केतु	21/07/2025
गुरु	13/03/2021	शनि	16/09/2022	बुध	01/05/2023	केतु	09/02/2025	शुक्र	22/08/2025

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

गुरु - चंद्र		गुरु - मंगल		गुरु - राहु		शनि - शनि		शनि - बुध	
22/08/2025		13/07/2026		25/02/2027		02/10/2028		04/10/2030	
13/07/2026		25/02/2027		02/10/2028		04/10/2030		21/07/2032	
चंद्र	19/09/2025	मंगल	26/07/2026	राहु	24/05/2027	शनि	26/01/2029	बुध	05/01/2031
मंगल	07/10/2025	राहु	29/08/2026	गुरु	10/08/2027	बुध	10/05/2029	केतु	12/02/2031
राहु	25/11/2025	गुरु	29/09/2026	शनि	10/11/2027	केतु	21/06/2029	शुक्र	02/06/2031
गुरु	07/01/2026	शनि	04/11/2026	बुध	01/02/2028	शुक्र	21/10/2029	सूर्य	04/07/2031
शनि	28/02/2026	बुध	06/12/2026	केतु	06/03/2028	सूर्य	27/11/2029	चंद्र	28/08/2031
बुध	15/04/2026	केतु	19/12/2026	शुक्र	12/06/2028	चंद्र	27/01/2030	मंगल	05/10/2031
केतु	04/05/2026	शुक्र	26/01/2027	सूर्य	11/07/2028	मंगल	11/03/2030	राहु	12/01/2032
शुक्र	27/06/2026	सूर्य	06/02/2027	चंद्र	29/08/2028	राहु	29/06/2030	गुरु	08/04/2032
सूर्य	13/07/2026	चंद्र	25/02/2027	मंगल	02/10/2028	गुरु	04/10/2030	शनि	21/07/2032

शनि - केतु		शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल	
21/07/2032		17/04/2033		28/05/2035		14/01/2036		03/02/2037	
17/04/2033		28/05/2035		14/01/2036		03/02/2037		30/10/2037	
केतु	05/08/2032	शुक्र	23/08/2033	सूर्य	08/06/2035	चंद्र	15/02/2036	मंगल	18/02/2037
शुक्र	19/09/2032	सूर्य	01/10/2033	चंद्र	28/06/2035	मंगल	09/03/2036	राहु	31/03/2037
सूर्य	03/10/2032	चंद्र	04/12/2033	मंगल	11/07/2035	राहु	05/05/2036	गुरु	06/05/2037
चंद्र	25/10/2032	मंगल	18/01/2034	राहु	15/08/2035	गुरु	26/06/2036	शनि	17/06/2037
मंगल	10/11/2032	राहु	14/05/2034	गुरु	15/09/2035	शनि	26/08/2036	बुध	26/07/2037
राहु	21/12/2032	गुरु	24/08/2034	शनि	21/10/2035	बुध	20/10/2036	केतु	10/08/2037
गुरु	26/01/2033	शनि	24/12/2034	बुध	23/11/2035	केतु	11/11/2036	शुक्र	24/09/2037
शनि	09/03/2033	बुध	13/04/2035	केतु	06/12/2035	शुक्र	14/01/2037	सूर्य	08/10/2037
बुध	17/04/2033	केतु	28/05/2035	शुक्र	14/01/2036	सूर्य	03/02/2037	चंद्र	30/10/2037

शनि - राहु		शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र	
30/10/2037		24/09/2039		02/06/2041		10/01/2043		08/09/2043	
24/09/2039		02/06/2041		10/01/2043		08/09/2043		29/07/2045	
राहु	12/02/2038	गुरु	16/12/2039	बुध	24/08/2041	केतु	24/01/2043	शुक्र	01/01/2044
गुरु	15/05/2038	शनि	22/03/2040	केतु	28/09/2041	शुक्र	05/03/2043	सूर्य	05/02/2044
शनि	02/09/2038	बुध	18/06/2040	शुक्र	03/01/2042	सूर्य	17/03/2043	चंद्र	02/04/2044
बुध	09/12/2038	केतु	24/07/2040	सूर्य	02/02/2042	चंद्र	06/04/2043	मंगल	12/05/2044
केतु	19/01/2039	शुक्र	04/11/2040	चंद्र	22/03/2042	मंगल	20/04/2043	राहु	24/08/2044
शुक्र	14/05/2039	सूर्य	04/12/2040	मंगल	26/04/2042	राहु	27/05/2043	गुरु	24/11/2044
सूर्य	18/06/2039	चंद्र	25/01/2041	राहु	23/07/2042	गुरु	28/06/2043	शनि	13/03/2045
चंद्र	15/08/2039	मंगल	02/03/2041	गुरु	09/10/2042	शनि	05/08/2043	बुध	19/06/2045
मंगल	24/09/2039	राहु	02/06/2041	शनि	10/01/2043	बुध	08/09/2043	केतु	29/07/2045

त्रिभगी दशा - प्रत्यन्तर

बुध - सूर्य		बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु	
29/07/2045		21/02/2046		01/02/2047		01/10/2047		12/06/2049	
21/02/2046		01/02/2047		01/10/2047		12/06/2049		16/12/2050	
सूर्य	08/08/2045	चंद्र	22/03/2046	मंगल	15/02/2047	राहु	02/01/2048	गुरु	25/08/2049
चंद्र	26/08/2045	मंगल	11/04/2046	राहु	23/03/2047	गुरु	24/03/2048	शनि	20/11/2049
मंगल	07/09/2045	राहु	02/06/2046	गुरु	25/04/2047	शनि	01/07/2048	बुध	07/02/2050
राहु	08/10/2045	गुरु	18/07/2046	शनि	02/06/2047	बुध	27/09/2048	केतु	11/03/2050
गुरु	04/11/2045	शनि	10/09/2046	बुध	06/07/2047	केतु	02/11/2048	शुक्र	11/06/2050
शनि	07/12/2045	बुध	29/10/2046	केतु	20/07/2047	शुक्र	13/02/2049	सूर्य	08/07/2050
बुध	06/01/2046	केतु	18/11/2046	शुक्र	29/08/2047	सूर्य	16/03/2049	चंद्र	23/08/2050
केतु	18/01/2046	शुक्र	15/01/2047	सूर्य	10/09/2047	चंद्र	07/05/2049	मंगल	25/09/2050
शुक्र	21/02/2046	सूर्य	01/02/2047	चंद्र	01/10/2047	मंगल	12/06/2049	राहु	16/12/2050

बुध - शनि		केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र	
16/12/2050		02/10/2052		09/01/2053		20/10/2053		14/01/2054	
02/10/2052		09/01/2053		20/10/2053		14/01/2054		05/06/2054	
शनि	30/03/2051	केतु	08/10/2052	शुक्र	26/02/2053	सूर्य	25/10/2053	चंद्र	25/01/2054
बुध	01/07/2051	शुक्र	24/10/2052	सूर्य	12/03/2053	चंद्र	01/11/2053	मंगल	03/02/2054
केतु	08/08/2051	सूर्य	29/10/2052	चंद्र	04/04/2053	मंगल	06/11/2053	राहु	24/02/2054
शुक्र	25/11/2051	चंद्र	06/11/2052	मंगल	21/04/2053	राहु	18/11/2053	गुरु	15/03/2054
सूर्य	28/12/2051	मंगल	12/11/2052	राहु	03/06/2053	गुरु	30/11/2053	शनि	06/04/2054
चंद्र	21/02/2052	राहु	27/11/2052	गुरु	10/07/2053	शनि	13/12/2053	बुध	26/04/2054
मंगल	30/03/2052	गुरु	10/12/2052	शनि	24/08/2053	बुध	25/12/2053	केतु	05/05/2054
राहु	06/07/2052	शनि	26/12/2052	बुध	04/10/2053	केतु	30/12/2053	शुक्र	28/05/2054
गुरु	02/10/2052	बुध	09/01/2053	केतु	20/10/2053	शुक्र	14/01/2054	सूर्य	05/06/2054

केतु - मंगल		केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध	
05/06/2054		12/09/2054		26/05/2055		08/01/2056		04/10/2056	
12/09/2054		26/05/2055		08/01/2056		04/10/2056		02/06/2057	
मंगल	10/06/2054	राहु	20/10/2054	गुरु	25/06/2055	शनि	20/02/2056	बुध	07/11/2056
राहु	25/06/2054	गुरु	23/11/2054	शनि	31/07/2055	बुध	29/03/2056	केतु	21/11/2056
गुरु	09/07/2054	शनि	03/01/2055	बुध	01/09/2055	केतु	14/04/2056	शुक्र	31/12/2056
शनि	24/07/2054	बुध	08/02/2055	केतु	14/09/2055	शुक्र	29/05/2056	सूर्य	12/01/2057
बुध	07/08/2054	केतु	23/02/2055	शुक्र	22/10/2055	सूर्य	11/06/2056	चंद्र	02/02/2057
केतु	13/08/2054	शुक्र	07/04/2055	सूर्य	03/11/2055	चंद्र	04/07/2056	मंगल	16/02/2057
शुक्र	30/08/2054	सूर्य	19/04/2055	चंद्र	22/11/2055	मंगल	19/07/2056	राहु	24/03/2057
सूर्य	04/09/2054	चंद्र	11/05/2055	मंगल	05/12/2055	राहु	29/08/2056	गुरु	25/04/2057
चंद्र	12/09/2054	मंगल	26/05/2055	राहु	08/01/2056	गुरु	04/10/2056	शनि	02/06/2057

अष्टोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शुक्र 17 वर्ष 1 मास 27 दिन

शुक्र 21 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष		चंद्र 15 वर्ष		मंगल 8 वर्ष		बुध 17 वर्ष	
05/03/1987		01/05/2004		02/05/2010		02/05/2025		02/05/2033	
01/05/2004		02/05/2010		02/05/2025		02/05/2033		02/05/2050	
शुक्र	01/06/1987	सूर्य	31/08/2004	चंद्र	01/06/2012	मंगल	04/12/2025	बुध	04/01/2036
सूर्य	01/08/1988	चंद्र	01/07/2005	मंगल	12/07/2013	बुध	09/03/2027	शनि	01/08/2037
चंद्र	02/07/1991	मंगल	11/12/2005	बुध	21/11/2015	शनि	05/12/2027	गुरु	28/07/2040
मंगल	20/01/1993	बुध	21/11/2006	शनि	11/04/2017	गुरु	02/05/2029	राहु	18/06/2042
बुध	11/05/1996	शनि	12/06/2007	गुरु	01/12/2019	राहु	22/03/2030	शुक्र	08/10/2045
शनि	22/04/1998	गुरु	01/07/2008	राहु	01/08/2021	शुक्र	11/10/2031	सूर्य	17/09/2046
गुरु	31/12/2001	राहु	02/03/2009	शुक्र	01/07/2024	सूर्य	22/03/2032	चंद्र	27/01/2049
राहु	01/05/2004	शुक्र	02/05/2010	सूर्य	02/05/2025	चंद्र	02/05/2033	मंगल	02/05/2050

शनि 10 वर्ष		गुरु 19 वर्ष		राहु 12 वर्ष		शुक्र 21 वर्ष	
02/05/2050		01/05/2060		02/05/2079		02/05/2091	
01/05/2060		02/05/2079		02/05/2091		00/00/0000	
शनि	05/04/2051	गुरु	04/09/2063	राहु	31/08/2080	शुक्र	05/03/2095
गुरु	07/01/2053	राहु	14/10/2065	शुक्र	31/12/2082		00/00/0000
राहु	16/02/2054	शुक्र	25/06/2069	सूर्य	01/09/2083		00/00/0000
शुक्र	28/01/2056	सूर्य	15/07/2070	चंद्र	02/05/2085		00/00/0000
सूर्य	18/08/2056	चंद्र	05/03/2073	मंगल	22/03/2086		00/00/0000
चंद्र	07/01/2058	मंगल	01/08/2074	बुध	10/02/2088		00/00/0000
मंगल	04/10/2058	बुध	28/07/2077	शनि	22/03/2089		00/00/0000
बुध	01/05/2060	शनि	02/05/2079	गुरु	02/05/2091		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
अष्टोत्तरी दशा पूरे 108 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शुक्र		शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - बुध	
05/03/1987		01/06/1987		01/08/1988		02/07/1991		20/01/1993	
01/06/1987		01/08/1988		02/07/1991		20/01/1993		11/05/1996	
	00/00/0000	सूर्य	25/06/1987	चंद्र	27/12/1988	मंगल	13/08/1991	बुध	29/07/1993
	00/00/0000	चंद्र	23/08/1987	मंगल	15/03/1989	बुध	10/11/1991	शनि	18/11/1993
	00/00/0000	मंगल	24/09/1987	बुध	30/08/1989	शनि	02/01/1992	गुरु	18/06/1994
	00/00/0000	बुध	30/11/1987	शनि	07/12/1989	गुरु	11/04/1992	राहु	30/10/1994
	00/00/0000	शनि	08/01/1988	गुरु	12/06/1990	राहु	13/06/1992	शुक्र	22/06/1995
	00/00/0000	गुरु	23/03/1988	राहु	09/10/1990	शुक्र	02/10/1992	सूर्य	28/08/1995
	05/03/1987	राहु	10/05/1988	शुक्र	04/05/1991	सूर्य	02/11/1992	चंद्र	12/02/1996
राहु	01/06/1987	शुक्र	01/08/1988	सूर्य	02/07/1991	चंद्र	20/01/1993	मंगल	11/05/1996

शुक्र - शनि		शुक्र - गुरु		शुक्र - राहु		सूर्य - सूर्य		सूर्य - चंद्र	
11/05/1996		22/04/1998		31/12/2001		01/05/2004		31/08/2004	
22/04/1998		31/12/2001		01/05/2004		31/08/2004		01/07/2005	
शनि	16/07/1996	गुरु	15/12/1998	राहु	05/04/2002	सूर्य	08/05/2004	चंद्र	12/10/2004
गुरु	18/11/1996	राहु	14/05/1999	शुक्र	17/09/2002	चंद्र	25/05/2004	मंगल	04/11/2004
राहु	05/02/1997	शुक्र	31/01/2000	सूर्य	04/11/2002	मंगल	03/06/2004	बुध	22/12/2004
शुक्र	23/06/1997	सूर्य	15/04/2000	चंद्र	02/03/2003	बुध	22/06/2004	शनि	19/01/2005
सूर्य	02/08/1997	चंद्र	20/10/2000	मंगल	04/05/2003	शनि	03/07/2004	गुरु	14/03/2005
चंद्र	08/11/1997	मंगल	28/01/2001	बुध	15/09/2003	गुरु	25/07/2004	राहु	16/04/2005
मंगल	31/12/1997	बुध	28/08/2001	शनि	03/12/2003	राहु	07/08/2004	शुक्र	15/06/2005
बुध	22/04/1998	शनि	31/12/2001	गुरु	01/05/2004	शुक्र	31/08/2004	सूर्य	01/07/2005

सूर्य - मंगल		सूर्य - बुध		सूर्य - शनि		सूर्य - गुरु		सूर्य - राहु	
01/07/2005		11/12/2005		21/11/2006		12/06/2007		01/07/2008	
11/12/2005		21/11/2006		12/06/2007		01/07/2008		02/03/2009	
मंगल	13/07/2005	बुध	03/02/2006	शनि	10/12/2006	गुरु	18/08/2007	राहु	28/07/2008
बुध	08/08/2005	शनि	07/03/2006	गुरु	14/01/2007	राहु	30/09/2007	शुक्र	14/09/2008
शनि	23/08/2005	गुरु	07/05/2006	राहु	06/02/2007	शुक्र	14/12/2007	सूर्य	27/09/2008
गुरु	21/09/2005	राहु	14/06/2006	शुक्र	17/03/2007	सूर्य	05/01/2008	चंद्र	31/10/2008
राहु	09/10/2005	शुक्र	20/08/2006	सूर्य	28/03/2007	चंद्र	27/02/2008	मंगल	18/11/2008
शुक्र	09/11/2005	सूर्य	08/09/2006	चंद्र	26/04/2007	मंगल	27/03/2008	बुध	26/12/2008
सूर्य	18/11/2005	चंद्र	26/10/2006	मंगल	11/05/2007	बुध	26/05/2008	शनि	18/01/2009
चंद्र	11/12/2005	मंगल	21/11/2006	बुध	12/06/2007	शनि	01/07/2008	गुरु	02/03/2009

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - शुक्र	
02/03/2009	
02/05/2010	
शुक्र	24/05/2009
सूर्य	16/06/2009
चंद्र	14/08/2009
मंगल	15/09/2009
बुध	21/11/2009
शनि	30/12/2009
गुरु	15/03/2010
राहु	02/05/2010

चंद्र - चंद्र	
02/05/2010	
01/06/2012	
चंद्र	15/08/2010
मंगल	11/10/2010
बुध	08/02/2011
शनि	19/04/2011
गुरु	31/08/2011
राहु	24/11/2011
शुक्र	19/04/2012
सूर्य	01/06/2012

चंद्र - मंगल	
01/06/2012	
12/07/2013	
मंगल	01/07/2012
बुध	03/09/2012
शनि	10/10/2012
गुरु	21/12/2012
राहु	04/02/2013
शुक्र	24/04/2013
सूर्य	16/05/2013
चंद्र	12/07/2013

चंद्र - बुध	
12/07/2013	
21/11/2015	
बुध	24/11/2013
शनि	12/02/2014
गुरु	14/07/2014
राहु	18/10/2014
शुक्र	03/04/2015
सूर्य	21/05/2015
चंद्र	18/09/2015
मंगल	21/11/2015

चंद्र - शनि	
21/11/2015	
11/04/2017	
शनि	07/01/2016
गुरु	05/04/2016
राहु	01/06/2016
शुक्र	07/09/2016
सूर्य	05/10/2016
चंद्र	15/12/2016
मंगल	21/01/2017
बुध	11/04/2017

चंद्र - गुरु	
11/04/2017	
01/12/2019	
गुरु	28/09/2017
राहु	13/01/2018
शुक्र	19/07/2018
सूर्य	11/09/2018
चंद्र	23/01/2019
मंगल	04/04/2019
बुध	03/09/2019
शनि	01/12/2019

चंद्र - राहु	
01/12/2019	
01/08/2021	
राहु	07/02/2020
शुक्र	04/06/2020
सूर्य	08/07/2020
चंद्र	30/09/2020
मंगल	15/11/2020
बुध	18/02/2021
शनि	16/04/2021
गुरु	01/08/2021

चंद्र - शुक्र	
01/08/2021	
01/07/2024	
शुक्र	24/02/2022
सूर्य	24/04/2022
चंद्र	19/09/2022
मंगल	07/12/2022
बुध	24/05/2023
शनि	30/08/2023
गुरु	05/03/2024
राहु	01/07/2024

चंद्र - सूर्य	
01/07/2024	
02/05/2025	
सूर्य	18/07/2024
चंद्र	29/08/2024
मंगल	21/09/2024
बुध	08/11/2024
शनि	06/12/2024
गुरु	29/01/2025
राहु	03/03/2025
शुक्र	02/05/2025

मंगल - मंगल	
02/05/2025	
04/12/2025	
मंगल	18/05/2025
बुध	21/06/2025
शनि	11/07/2025
गुरु	18/08/2025
राहु	11/09/2025
शुक्र	23/10/2025
सूर्य	04/11/2025
चंद्र	04/12/2025

मंगल - बुध	
04/12/2025	
09/03/2027	
बुध	14/02/2026
शनि	29/03/2026
गुरु	18/06/2026
राहु	08/08/2026
शुक्र	05/11/2026
सूर्य	01/12/2026
चंद्र	03/02/2027
मंगल	09/03/2027

मंगल - शनि	
09/03/2027	
05/12/2027	
शनि	03/04/2027
गुरु	21/05/2027
राहु	20/06/2027
शुक्र	11/08/2027
सूर्य	26/08/2027
चंद्र	03/10/2027
मंगल	23/10/2027
बुध	05/12/2027

मंगल - गुरु	
05/12/2027	
02/05/2029	
गुरु	04/03/2028
राहु	30/04/2028
शुक्र	08/08/2028
सूर्य	06/09/2028
चंद्र	16/11/2028
मंगल	24/12/2028
बुध	15/03/2029
शनि	02/05/2029

मंगल - राहु	
02/05/2029	
22/03/2030	
राहु	07/06/2029
शुक्र	09/08/2029
सूर्य	27/08/2029
चंद्र	11/10/2029
मंगल	04/11/2029
बुध	25/12/2029
शनि	24/01/2030
गुरु	22/03/2030

मंगल - शुक्र	
22/03/2030	
11/10/2031	
शुक्र	11/07/2030
सूर्य	11/08/2030
चंद्र	29/10/2030
मंगल	10/12/2030
बुध	10/03/2031
शनि	01/05/2031
गुरु	09/08/2031
राहु	11/10/2031

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - सूर्य	
11/10/2031	
22/03/2032	
सूर्य	20/10/2031
चंद्र	12/11/2031
मंगल	24/11/2031
बुध	20/12/2031
शनि	04/01/2032
गुरु	01/02/2032
राहु	19/02/2032
शुक्र	22/03/2032

मंगल - चंद्र	
22/03/2032	
02/05/2033	
चंद्र	17/05/2032
मंगल	16/06/2032
बुध	19/08/2032
शनि	26/09/2032
गुरु	06/12/2032
राहु	20/01/2033
शुक्र	09/04/2033
सूर्य	02/05/2033

बुध - बुध	
02/05/2033	
04/01/2036	
बुध	02/10/2033
शनि	01/01/2034
गुरु	22/06/2034
राहु	08/10/2034
शुक्र	16/04/2035
सूर्य	10/06/2035
चंद्र	24/10/2035
मंगल	04/01/2036

बुध - शनि	
04/01/2036	
01/08/2037	
शनि	26/02/2036
गुरु	06/06/2036
राहु	09/08/2036
शुक्र	29/11/2036
सूर्य	31/12/2036
चंद्र	21/03/2037
मंगल	02/05/2037
बुध	01/08/2037

बुध - गुरु	
01/08/2037	
28/07/2040	
गुरु	09/02/2038
राहु	10/06/2038
शुक्र	09/01/2039
सूर्य	11/03/2039
चंद्र	09/08/2039
मंगल	29/10/2039
बुध	18/04/2040
शनि	28/07/2040

बुध - राहु	
28/07/2040	
18/06/2042	
राहु	13/10/2040
शुक्र	24/02/2041
सूर्य	03/04/2041
चंद्र	08/07/2041
मंगल	28/08/2041
बुध	15/12/2041
शनि	17/02/2042
गुरु	18/06/2042

बुध - शुक्र	
18/06/2042	
08/10/2045	
शुक्र	08/02/2043
सूर्य	16/04/2043
चंद्र	01/10/2043
मंगल	29/12/2043
बुध	06/07/2044
शनि	26/10/2044
गुरु	26/05/2045
राहु	08/10/2045

बुध - सूर्य	
08/10/2045	
17/09/2046	
सूर्य	27/10/2045
चंद्र	14/12/2045
मंगल	08/01/2046
बुध	03/03/2046
शनि	04/04/2046
गुरु	04/06/2046
राहु	12/07/2046
शुक्र	17/09/2046

बुध - चंद्र	
17/09/2046	
27/01/2049	
चंद्र	15/01/2047
मंगल	20/03/2047
बुध	03/08/2047
शनि	22/10/2047
गुरु	21/03/2048
राहु	25/06/2048
शुक्र	10/12/2048
सूर्य	27/01/2049

बुध - मंगल	
27/01/2049	
02/05/2050	
मंगल	02/03/2049
बुध	13/05/2049
शनि	25/06/2049
गुरु	14/09/2049
राहु	04/11/2049
शुक्र	01/02/2050
सूर्य	27/02/2050
चंद्र	02/05/2050

शनि - शनि	
02/05/2050	
05/04/2051	
शनि	02/06/2050
गुरु	01/08/2050
राहु	07/09/2050
शुक्र	12/11/2050
सूर्य	01/12/2050
चंद्र	17/01/2051
मंगल	11/02/2051
बुध	05/04/2051

शनि - गुरु	
05/04/2051	
07/01/2053	
गुरु	27/07/2051
राहु	06/10/2051
शुक्र	08/02/2052
सूर्य	15/03/2052
चंद्र	12/06/2052
मंगल	30/07/2052
बुध	08/11/2052
शनि	07/01/2053

शनि - राहु	
07/01/2053	
16/02/2054	
राहु	21/02/2053
शुक्र	11/05/2053
सूर्य	02/06/2053
चंद्र	28/07/2053
मंगल	28/08/2053
बुध	30/10/2053
शनि	07/12/2053
गुरु	16/02/2054

शनि - शुक्र	
16/02/2054	
28/01/2056	
शुक्र	05/07/2054
सूर्य	13/08/2054
चंद्र	20/11/2054
मंगल	11/01/2055
बुध	03/05/2055
शनि	08/07/2055
गुरु	10/11/2055
राहु	28/01/2056

शनि - सूर्य	
28/01/2056	
18/08/2056	
सूर्य	08/02/2056
चंद्र	07/03/2056
मंगल	22/03/2056
बुध	23/04/2056
शनि	12/05/2056
गुरु	17/06/2056
राहु	09/07/2056
शुक्र	18/08/2056

अष्टोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - चंद्र	
18/08/2056	
07/01/2058	
चंद्र	27/10/2056
मंगल	04/12/2056
बुध	21/02/2057
शनि	09/04/2057
गुरु	08/07/2057
राहु	02/09/2057
शुक्र	10/12/2057
सूर्य	07/01/2058

शनि - मंगल	
07/01/2058	
04/10/2058	
मंगल	27/01/2058
बुध	10/03/2058
शनि	05/04/2058
गुरु	22/05/2058
राहु	21/06/2058
शुक्र	13/08/2058
सूर्य	28/08/2058
चंद्र	04/10/2058

शनि - बुध	
04/10/2058	
01/05/2060	
बुध	03/01/2059
शनि	25/02/2059
गुरु	06/06/2059
राहु	09/08/2059
शुक्र	29/11/2059
सूर्य	31/12/2059
चंद्र	20/03/2060
मंगल	01/05/2060

गुरु - गुरु	
01/05/2060	
04/09/2063	
गुरु	02/12/2060
राहु	17/04/2061
शुक्र	10/12/2061
सूर्य	16/02/2062
चंद्र	05/08/2062
मंगल	03/11/2062
बुध	14/05/2063
शनि	04/09/2063

गुरु - राहु	
04/09/2063	
14/10/2065	
राहु	29/11/2063
शुक्र	27/04/2064
सूर्य	09/06/2064
चंद्र	24/09/2064
मंगल	20/11/2064
बुध	21/03/2065
शनि	01/06/2065
गुरु	14/10/2065

गुरु - शुक्र	
14/10/2065	
25/06/2069	
शुक्र	04/07/2066
सूर्य	17/09/2066
चंद्र	23/03/2067
मंगल	01/07/2067
बुध	29/01/2068
शनि	02/06/2068
गुरु	26/01/2069
राहु	25/06/2069

गुरु - सूर्य	
25/06/2069	
15/07/2070	
सूर्य	16/07/2069
चंद्र	08/09/2069
मंगल	06/10/2069
बुध	06/12/2069
शनि	11/01/2070
गुरु	19/03/2070
राहु	01/05/2070
शुक्र	15/07/2070

गुरु - चंद्र	
15/07/2070	
05/03/2073	
चंद्र	26/11/2070
मंगल	05/02/2071
बुध	07/07/2071
शनि	04/10/2071
गुरु	22/03/2072
राहु	07/07/2072
शुक्र	11/01/2073
सूर्य	05/03/2073

गुरु - मंगल	
05/03/2073	
01/08/2074	
मंगल	12/04/2073
बुध	02/07/2073
शनि	19/08/2073
गुरु	17/11/2073
राहु	13/01/2074
शुक्र	23/04/2074
सूर्य	22/05/2074
चंद्र	01/08/2074

गुरु - बुध	
01/08/2074	
28/07/2077	
बुध	20/01/2075
शनि	01/05/2075
गुरु	09/11/2075
राहु	10/03/2076
शुक्र	08/10/2076
सूर्य	08/12/2076
चंद्र	09/05/2077
मंगल	28/07/2077

गुरु - शनि	
28/07/2077	
02/05/2079	
शनि	26/09/2077
गुरु	17/01/2078
राहु	29/03/2078
शुक्र	01/08/2078
सूर्य	06/09/2078
चंद्र	04/12/2078
मंगल	21/01/2079
बुध	02/05/2079

राहु - राहु	
02/05/2079	
31/08/2080	
राहु	25/06/2079
शुक्र	28/09/2079
सूर्य	25/10/2079
चंद्र	01/01/2080
मंगल	06/02/2080
बुध	22/04/2080
शनि	06/06/2080
गुरु	31/08/2080

राहु - शुक्र	
31/08/2080	
31/12/2082	
शुक्र	13/02/2081
सूर्य	01/04/2081
चंद्र	28/07/2081
मंगल	30/09/2081
बुध	11/02/2082
शनि	01/05/2082
गुरु	28/09/2082
राहु	31/12/2082

राहु - सूर्य	
31/12/2082	
01/09/2083	
सूर्य	14/01/2083
चंद्र	17/02/2083
मंगल	07/03/2083
बुध	14/04/2083
शनि	07/05/2083
गुरु	18/06/2083
राहु	15/07/2083
शुक्र	01/09/2083

राहु - चंद्र	
01/09/2083	
02/05/2085	
चंद्र	24/11/2083
मंगल	08/01/2084
बुध	13/04/2084
शनि	09/06/2084
गुरु	24/09/2084
राहु	30/11/2084
शुक्र	29/03/2085
सूर्य	02/05/2085

योगिनी दशा

भोग्य दशा काल : भद्रिका 1 वर्ष 4 मास 3 दिन

भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष	
05/03/1987		07/07/1988		08/07/1994		07/07/2001		07/07/2009	
07/07/1988		08/07/1994		07/07/2001		07/07/2009		08/07/2010	
	00/00/0000	उल्क	07/07/1989	सिद्ध	17/11/1995	संक	18/04/2003	मंग	18/07/2009
	00/00/0000	सिद्ध	06/09/1990	संक	07/06/1997	मंग	08/07/2003	पिंग	07/08/2009
	00/00/0000	संक	06/01/1992	मंग	17/08/1997	पिंग	17/12/2003	धांय	06/09/2009
	05/03/1987	मंग	07/03/1992	पिंग	06/01/1998	धांय	17/08/2004	भ्राम	17/10/2009
मंग	08/04/1987	पिंग	07/07/1992	धांय	07/08/1998	भ्राम	07/07/2005	भद्रि	07/12/2009
पिंग	18/07/1987	धांय	06/01/1993	भ्राम	18/05/1999	भद्रि	17/08/2006	उल्क	05/02/2010
धांय	17/12/1987	भ्राम	06/09/1993	भद्रि	07/05/2000	उल्क	17/12/2007	सिद्ध	17/04/2010
भ्राम	07/07/1988	भद्रि	08/07/1994	उल्क	07/07/2001	सिद्ध	07/07/2009	संक	08/07/2010

पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष	
08/07/2010		07/07/2012		08/07/2015		08/07/2019		07/07/2024	
07/07/2012		08/07/2015		08/07/2019		07/07/2024		08/07/2030	
पिंग	17/08/2010	धांय	06/10/2012	भ्राम	17/12/2015	भद्रि	18/03/2020	उल्क	07/07/2025
धांय	17/10/2010	भ्राम	05/02/2013	भद्रि	07/07/2016	उल्क	16/01/2021	सिद्ध	06/09/2026
भ्राम	06/01/2011	भद्रि	07/07/2013	उल्क	08/03/2017	सिद्ध	06/01/2022	संक	06/01/2028
भद्रि	18/04/2011	उल्क	06/01/2014	सिद्ध	17/12/2017	संक	16/02/2023	मंग	07/03/2028
उल्क	17/08/2011	सिद्ध	07/08/2014	संक	06/11/2018	मंग	08/04/2023	पिंग	07/07/2028
सिद्ध	06/01/2012	संक	08/04/2015	मंग	17/12/2018	पिंग	18/07/2023	धांय	06/01/2029
संक	17/06/2012	मंग	08/05/2015	पिंग	08/03/2019	धांय	17/12/2023	भ्राम	06/09/2029
मंग	07/07/2012	पिंग	08/07/2015	धांय	08/07/2019	भ्राम	07/07/2024	भद्रि	08/07/2030

नोट :- योगनियों के स्वामी नीचे दिए गए हैं :-

मंगला	: चन्द्र	पिंगला	: सूर्य	धान्या	: गुरु	भ्रामरी	: मंगल
भद्रिका	: बुध	उल्का	: शनि	सिद्धा	: शुक्र	संकटा	: राहु/केतु

उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।
योगिनी दशा 36 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

योगिनी दशा

सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष		मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष	
08/07/2030		07/07/2037		07/07/2045		08/07/2046		07/07/2048	
07/07/2037		07/07/2045		08/07/2046		07/07/2048		08/07/2051	
सिद्ध	17/11/2031	संक	18/04/2039	मंग	18/07/2045	पिंग	17/08/2046	धांय	06/10/2048
संक	07/06/2033	मंग	08/07/2039	पिंग	07/08/2045	धांय	17/10/2046	भ्राम	05/02/2049
मंग	17/08/2033	पिंग	17/12/2039	धांय	06/09/2045	भ्राम	06/01/2047	भद्रि	07/07/2049
पिंग	06/01/2034	धांय	17/08/2040	भ्राम	17/10/2045	भद्रि	18/04/2047	उल्क	06/01/2050
धांय	07/08/2034	भ्राम	07/07/2041	भद्रि	07/12/2045	उल्क	17/08/2047	सिद्ध	07/08/2050
भ्राम	18/05/2035	भद्रि	17/08/2042	उल्क	05/02/2046	सिद्ध	06/01/2048	संक	08/04/2051
भद्रि	07/05/2036	उल्क	17/12/2043	सिद्ध	17/04/2046	संक	17/06/2048	मंग	08/05/2051
उल्क	07/07/2037	सिद्ध	07/07/2045	संक	08/07/2046	मंग	07/07/2048	पिंग	08/07/2051

भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष		उल्का 6 वर्ष		सिद्धा 7 वर्ष		संकटा 8 वर्ष	
08/07/2051		08/07/2055		07/07/2060		08/07/2066		07/07/2073	
08/07/2055		07/07/2060		08/07/2066		07/07/2073		07/07/2081	
भ्राम	17/12/2051	भद्रि	18/03/2056	उल्क	07/07/2061	सिद्ध	17/11/2067	संक	18/04/2075
भद्रि	07/07/2052	उल्क	16/01/2057	सिद्ध	06/09/2062	संक	07/06/2069	मंग	08/07/2075
उल्क	08/03/2053	सिद्ध	06/01/2058	संक	06/01/2064	मंग	17/08/2069	पिंग	17/12/2075
सिद्ध	17/12/2053	संक	16/02/2059	मंग	07/03/2064	पिंग	06/01/2070	धांय	17/08/2076
संक	06/11/2054	मंग	08/04/2059	पिंग	07/07/2064	धांय	07/08/2070	भ्राम	07/07/2077
मंग	17/12/2054	पिंग	18/07/2059	धांय	06/01/2065	भ्राम	18/05/2071	भद्रि	17/08/2078
पिंग	08/03/2055	धांय	17/12/2059	भ्राम	06/09/2065	भद्रि	07/05/2072	उल्क	17/12/2079
धांय	08/07/2055	भ्राम	07/07/2060	भद्रि	08/07/2066	उल्क	07/07/2073	सिद्ध	07/07/2081

मंगला 1 वर्ष		पिंगला 2 वर्ष		धान्या 3 वर्ष		भ्रामरी 4 वर्ष		भद्रिका 5 वर्ष	
07/07/2081		08/07/2082		07/07/2084		08/07/2087		08/07/2091	
08/07/2082		07/07/2084		08/07/2087		08/07/2091		00/00/0000	
मंग	18/07/2081	पिंग	17/08/2082	धांय	06/10/2084	भ्राम	17/12/2087	भद्रि	18/03/2092
पिंग	07/08/2081	धांय	17/10/2082	भ्राम	05/02/2085	भद्रि	07/07/2088	उल्क	16/01/2093
धांय	06/09/2081	भ्राम	06/01/2083	भद्रि	07/07/2085	उल्क	08/03/2089	सिद्ध	06/01/2094
भ्राम	17/10/2081	भद्रि	18/04/2083	उल्क	06/01/2086	सिद्ध	17/12/2089	संक	16/02/2095
भद्रि	07/12/2081	उल्क	17/08/2083	सिद्ध	07/08/2086	संक	06/11/2090	मंग	05/03/2095
उल्क	05/02/2082	सिद्ध	06/01/2084	संक	08/04/2087	मंग	17/12/2090		00/00/0000
सिद्ध	17/04/2082	संक	17/06/2084	मंग	08/05/2087	पिंग	08/03/2091		00/00/0000
संक	08/07/2082	मंग	07/07/2084	पिंग	08/07/2087	धांय	08/07/2091		00/00/0000

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

भद्रि - भद्रि		भद्रि - उल्क		भद्रि - सिद्ध		भद्रि - संक		भद्रि - मंग	
08/07/2019		18/03/2020		16/01/2021		06/01/2022		16/02/2023	
18/03/2020		16/01/2021		06/01/2022		16/02/2023		08/04/2023	
भद्रि	12/08/2019	उल्क	07/05/2020	सिद्ध	26/03/2021	संक	06/04/2022	मंग	17/02/2023
उल्क	23/09/2019	सिद्ध	05/07/2020	संक	13/06/2021	मंग	17/04/2022	पिंग	20/02/2023
सिद्ध	12/11/2019	संक	11/09/2020	मंग	23/06/2021	पिंग	10/05/2022	धांय	24/02/2023
संक	07/01/2020	मंग	20/09/2020	पिंग	12/07/2021	धांय	13/06/2022	भ्राम	02/03/2023
मंग	14/01/2020	पिंग	06/10/2020	धांय	11/08/2021	भ्राम	28/07/2022	भद्रि	09/03/2023
पिंग	28/01/2020	धांय	01/11/2020	भ्राम	19/09/2021	भद्रि	22/09/2022	उल्क	17/03/2023
धांय	18/02/2020	भ्राम	05/12/2020	भद्रि	08/11/2021	उल्क	29/11/2022	सिद्ध	27/03/2023
भ्राम	18/03/2020	भद्रि	16/01/2021	उल्क	06/01/2022	सिद्ध	16/02/2023	संक	08/04/2023

भद्रि - पिंग		भद्रि - धांय		भद्रि - भ्राम		उल्क - उल्क		उल्क - सिद्ध	
08/04/2023		18/07/2023		17/12/2023		07/07/2024		07/07/2025	
18/07/2023		17/12/2023		07/07/2024		07/07/2025		06/09/2026	
पिंग	13/04/2023	धांय	31/07/2023	भ्राम	09/01/2024	उल्क	06/09/2024	सिद्ध	28/09/2025
धांय	22/04/2023	भ्राम	17/08/2023	भद्रि	06/02/2024	सिद्ध	16/11/2024	संक	01/01/2026
भ्राम	03/05/2023	भद्रि	07/09/2023	उल्क	11/03/2024	संक	05/02/2025	मंग	13/01/2026
भद्रि	17/05/2023	उल्क	02/10/2023	सिद्ध	19/04/2024	मंग	15/02/2025	पिंग	05/02/2026
उल्क	03/06/2023	सिद्ध	01/11/2023	संक	03/06/2024	पिंग	08/03/2025	धांय	13/03/2026
सिद्ध	23/06/2023	संक	05/12/2023	मंग	09/06/2024	धांय	07/04/2025	भ्राम	29/04/2026
संक	15/07/2023	मंग	09/12/2023	पिंग	20/06/2024	भ्राम	18/05/2025	भद्रि	27/06/2026
मंग	18/07/2023	पिंग	17/12/2023	धांय	07/07/2024	भद्रि	07/07/2025	उल्क	06/09/2026

उल्क - संक		उल्क - मंग		उल्क - पिंग		उल्क - धांय		उल्क - भ्राम	
06/09/2026		06/01/2028		07/03/2028		07/07/2028		06/01/2029	
06/01/2028		07/03/2028		07/07/2028		06/01/2029		06/09/2029	
संक	24/12/2026	मंग	08/01/2028	पिंग	14/03/2028	धांय	22/07/2028	भ्राम	02/02/2029
मंग	06/01/2027	पिंग	12/01/2028	धांय	24/03/2028	भ्राम	12/08/2028	भद्रि	08/03/2029
पिंग	02/02/2027	धांय	17/01/2028	भ्राम	07/04/2028	भद्रि	06/09/2028	उल्क	17/04/2029
धांय	15/03/2027	भ्राम	23/01/2028	भद्रि	24/04/2028	उल्क	06/10/2028	सिद्ध	04/06/2029
भ्राम	08/05/2027	भद्रि	01/02/2028	उल्क	14/05/2028	सिद्ध	11/11/2028	संक	28/07/2029
भद्रि	15/07/2027	उल्क	11/02/2028	सिद्ध	07/06/2028	संक	22/12/2028	मंग	03/08/2029
उल्क	04/10/2027	सिद्ध	23/02/2028	संक	04/07/2028	मंग	27/12/2028	पिंग	17/08/2029
सिद्ध	06/01/2028	संक	07/03/2028	मंग	07/07/2028	पिंग	06/01/2029	धांय	06/09/2029

योगिनी दशा - प्रत्यन्तर

उल्क - भद्रि		सिद्ध - सिद्ध		सिद्ध - संक		सिद्ध - मंग		सिद्ध - पिंग	
06/09/2029		08/07/2030		17/11/2031		07/06/2033		17/08/2033	
08/07/2030		17/11/2031		07/06/2033		17/08/2033		06/01/2034	
भद्रि	19/10/2029	सिद्ध	12/10/2030	संक	22/03/2032	मंग	09/06/2033	पिंग	25/08/2033
उल्क	08/12/2029	संक	31/01/2031	मंग	07/04/2032	पिंग	13/06/2033	धांय	06/09/2033
सिद्ध	05/02/2030	मंग	14/02/2031	पिंग	08/05/2032	धांय	19/06/2033	भ्राम	21/09/2033
संक	14/04/2030	पिंग	13/03/2031	धांय	25/06/2032	भ्राम	27/06/2033	भद्रि	11/10/2033
मंग	23/04/2030	धांय	24/04/2031	भ्राम	27/08/2032	भद्रि	07/07/2033	उल्क	04/11/2033
पिंग	09/05/2030	भ्राम	18/06/2031	भद्रि	14/11/2032	उल्क	18/07/2033	सिद्ध	01/12/2033
धांय	04/06/2030	भद्रि	26/08/2031	उल्क	16/02/2033	सिद्ध	01/08/2033	संक	02/01/2034
भ्राम	08/07/2030	उल्क	17/11/2031	सिद्ध	07/06/2033	संक	17/08/2033	मंग	06/01/2034

सिद्ध - धांय		सिद्ध - भ्राम		सिद्ध - भद्रि		सिद्ध - उल्क		संक - संक	
06/01/2034		07/08/2034		18/05/2035		07/05/2036		07/07/2037	
07/08/2034		18/05/2035		07/05/2036		07/07/2037		18/04/2039	
धांय	24/01/2034	भ्राम	08/09/2034	भद्रि	06/07/2035	उल्क	17/07/2036	संक	29/11/2037
भ्राम	16/02/2034	भद्रि	17/10/2034	उल्क	04/09/2035	सिद्ध	08/10/2036	मंग	17/12/2037
भद्रि	18/03/2034	उल्क	03/12/2034	सिद्ध	12/11/2035	संक	11/01/2037	पिंग	22/01/2038
उल्क	23/04/2034	सिद्ध	28/01/2035	संक	30/01/2036	मंग	23/01/2037	धांय	17/03/2038
सिद्ध	03/06/2034	संक	01/04/2035	मंग	08/02/2036	पिंग	15/02/2037	भ्राम	28/05/2038
संक	20/07/2034	मंग	09/04/2035	पिंग	28/02/2036	धांय	23/03/2037	भद्रि	26/08/2038
मंग	26/07/2034	पिंग	24/04/2035	धांय	29/03/2036	भ्राम	09/05/2037	उल्क	12/12/2038
पिंग	07/08/2034	धांय	18/05/2035	भ्राम	07/05/2036	भद्रि	07/07/2037	सिद्ध	18/04/2039

संक - मंग		संक - पिंग		संक - धांय		संक - भ्राम		संक - भद्रि	
18/04/2039		08/07/2039		17/12/2039		17/08/2040		07/07/2041	
08/07/2039		17/12/2039		17/08/2040		07/07/2041		17/08/2042	
मंग	20/04/2039	पिंग	17/07/2039	धांय	06/01/2040	भ्राम	22/09/2040	भद्रि	02/09/2041
पिंग	24/04/2039	धांय	30/07/2039	भ्राम	03/02/2040	भद्रि	06/11/2040	उल्क	08/11/2041
धांय	01/05/2039	भ्राम	17/08/2039	भद्रि	07/03/2040	उल्क	30/12/2040	सिद्ध	26/01/2042
भ्राम	10/05/2039	भद्रि	09/09/2039	उल्क	17/04/2040	सिद्ध	03/03/2041	संक	26/04/2042
भद्रि	22/05/2039	उल्क	06/10/2039	सिद्ध	03/06/2040	संक	14/05/2041	मंग	08/05/2042
उल्क	04/06/2039	सिद्ध	07/11/2039	संक	27/07/2040	मंग	23/05/2041	पिंग	30/05/2042
सिद्ध	20/06/2039	संक	13/12/2039	मंग	03/08/2040	पिंग	10/06/2041	धांय	03/07/2042
संक	08/07/2039	मंग	17/12/2039	पिंग	17/08/2040	धांय	07/07/2041	भ्राम	17/08/2042

कालचक्र दशा

भोग्य दशा काल : कन्या 6 वर्ष 1 मास 18 दिन
कुल दशाकाल : 83 वर्ष
तिथि : भरणी - 3 सव्य
देह : वृष जीव : मिथुन

कन्या 9 वर्ष		तुला 16 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		धनु 10 वर्ष		मकर 4 वर्ष	
05/03/1987		22/04/1993		22/04/2009		22/04/2016		23/04/2026	
22/04/1993		22/04/2009		22/04/2016		23/04/2026		23/04/2030	
	00/00/0000	तुला	23/05/1996	वृश्चि	24/11/2009	धनु	06/07/2017	मक	02/07/2026
	05/03/1987	वृश्चि	28/09/1997	धनु	28/09/2010	मक	29/12/2017	कुंभ	10/09/2026
वृश्चि	11/10/1987	धनु	02/09/1999	मक	29/01/2011	कुंभ	23/06/2018	मीन	05/03/2027
धनु	10/11/1988	मक	09/06/2000	कुंभ	01/06/2011	मीन	06/09/2019	वृश्चि	07/07/2027
मक	18/04/1989	कुंभ	18/03/2001	मीन	04/04/2012	वृश्चि	10/07/2020	तुला	13/04/2028
कुंभ	23/09/1989	मीन	20/02/2003	वृश्चि	06/11/2012	तुला	14/06/2022	कन्या	19/09/2028
मीन	24/10/1990	वृश्चि	27/06/2004	तुला	14/03/2014	कन्या	15/07/2023	तुला	27/06/2029
वृश्चि	29/07/1991	तुला	29/07/2007	कन्या	16/12/2014	तुला	18/06/2025	वृश्चि	28/10/2029
तुला	22/04/1993	कन्या	22/04/2009	तुला	22/04/2016	वृश्चि	23/04/2026	धनु	23/04/2030

कुम्भ 4 वर्ष		मीन 10 वर्ष		वृश्चिक 7 वर्ष		तुला 16 वर्ष		कन्या 9 वर्ष	
23/04/2030		23/04/2034		22/04/2044		23/04/2051		23/04/2067	
23/04/2034		22/04/2044		23/04/2051		23/04/2067		00/00/0000	
कुंभ	02/07/2030	मीन	07/07/2035	वृश्चि	24/11/2044	तुला	23/05/2054	कन्या	13/04/2068
मीन	25/12/2030	वृश्चि	10/05/2036	तुला	01/04/2046	कन्या	16/02/2056	तुला	07/01/2070
वृश्चि	27/04/2031	तुला	14/04/2038	कन्या	03/01/2047	तुला	19/03/2059	वृश्चि	05/03/2070
तुला	03/02/2032	कन्या	15/05/2039	तुला	10/05/2048	वृश्चि	23/07/2060		00/00/0000
कन्या	10/07/2032	तुला	18/04/2041	वृश्चि	11/12/2048	धनु	28/06/2062		00/00/0000
तुला	18/04/2033	वृश्चि	20/02/2042	धनु	15/10/2049	मक	05/04/2063		00/00/0000
वृश्चि	19/08/2033	धनु	06/05/2043	मक	16/02/2050	कुंभ	12/01/2064		00/00/0000
धनु	11/02/2034	मक	29/10/2043	कुंभ	19/06/2050	मीन	16/12/2065		00/00/0000
मक	23/04/2034	कुंभ	22/04/2044	मीन	23/04/2051	वृश्चि	23/04/2067		00/00/0000

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

धनु - मीन	
23/06/2018	
06/09/2019	
मीन	15/08/2018
वृश्चि	21/09/2018
तुला	15/12/2018
कन्या	01/02/2019
तुला	27/04/2019
वृश्चि	03/06/2019
धनु	26/07/2019
मक	16/08/2019
कुंभ	06/09/2019

धनु - वृश्चि	
06/09/2019	
10/07/2020	
वृश्चि	02/10/2019
तुला	01/12/2019
कन्या	03/01/2020
तुला	02/03/2020
वृश्चि	28/03/2020
धनु	04/05/2020
मक	19/05/2020
कुंभ	03/06/2020
मीन	10/07/2020

धनु - तुला	
10/07/2020	
14/06/2022	
तुला	23/11/2020
कन्या	07/02/2021
तुला	23/06/2021
वृश्चि	21/08/2021
धनु	14/11/2021
मक	18/12/2021
कुंभ	21/01/2022
मीन	16/04/2022
वृश्चि	14/06/2022

धनु - कन्या	
14/06/2022	
15/07/2023	
कन्या	27/07/2022
तुला	12/10/2022
वृश्चि	14/11/2022
धनु	01/01/2023
मक	20/01/2023
कुंभ	08/02/2023
मीन	28/03/2023
वृश्चि	30/04/2023
तुला	15/07/2023

धनु - तुला	
15/07/2023	
18/06/2025	
तुला	28/11/2023
वृश्चि	26/01/2024
धनु	20/04/2024
मक	24/05/2024
कुंभ	27/06/2024
मीन	20/09/2024
वृश्चि	18/11/2024
तुला	03/04/2025
कन्या	18/06/2025

धनु - वृश्चि	
18/06/2025	
23/04/2026	
वृश्चि	14/07/2025
धनु	21/08/2025
मक	04/09/2025
कुंभ	19/09/2025
मीन	26/10/2025
वृश्चि	21/11/2025
तुला	20/01/2026
कन्या	22/02/2026
तुला	23/04/2026

मक - मक	
23/04/2026	
02/07/2026	
मक	26/04/2026
कुंभ	29/04/2026
मीन	08/05/2026
वृश्चि	14/05/2026
तुला	27/05/2026
कन्या	04/06/2026
तुला	18/06/2026
वृश्चि	23/06/2026
धनु	02/07/2026

मक - कुंभ	
02/07/2026	
10/09/2026	
कुंभ	05/07/2026
मीन	14/07/2026
वृश्चि	20/07/2026
तुला	02/08/2026
कन्या	10/08/2026
तुला	24/08/2026
वृश्चि	29/08/2026
धनु	07/09/2026
मक	10/09/2026

मक - मीन	
10/09/2026	
05/03/2027	
मीन	02/10/2026
वृश्चि	16/10/2026
तुला	19/11/2026
कन्या	08/12/2026
तुला	11/01/2027
वृश्चि	26/01/2027
धनु	16/02/2027
मक	25/02/2027
कुंभ	05/03/2027

मक - वृश्चि	
05/03/2027	
07/07/2027	
वृश्चि	16/03/2027
तुला	09/04/2027
कन्या	22/04/2027
तुला	16/05/2027
वृश्चि	26/05/2027
धनु	10/06/2027
मक	16/06/2027
कुंभ	22/06/2027
मीन	07/07/2027

मक - तुला	
07/07/2027	
13/04/2028	
तुला	30/08/2027
कन्या	29/09/2027
तुला	23/11/2027
वृश्चि	16/12/2027
धनु	19/01/2028
मक	02/02/2028
कुंभ	16/02/2028
मीन	20/03/2028
वृश्चि	13/04/2028

मक - कन्या	
13/04/2028	
19/09/2028	
कन्या	30/04/2028
तुला	31/05/2028
वृश्चि	13/06/2028
धनु	02/07/2028
मक	10/07/2028
कुंभ	18/07/2028
मीन	06/08/2028
वृश्चि	19/08/2028
तुला	19/09/2028

मक - तुला	
19/09/2028	
27/06/2029	
तुला	12/11/2028
वृश्चि	06/12/2028
धनु	09/01/2029
मक	22/01/2029
कुंभ	05/02/2029
मीन	11/03/2029
वृश्चि	03/04/2029
तुला	28/05/2029
कन्या	27/06/2029

मक - वृश्चि	
27/06/2029	
28/10/2029	
वृश्चि	08/07/2029
धनु	23/07/2029
मक	28/07/2029
कुंभ	03/08/2029
मीन	18/08/2029
वृश्चि	29/08/2029
तुला	21/09/2029
कन्या	05/10/2029
तुला	28/10/2029

मक - धनु	
28/10/2029	
23/04/2030	
धनु	19/11/2029
मक	27/11/2029
कुंभ	06/12/2029
मीन	27/12/2029
वृश्चि	11/01/2030
तुला	14/02/2030
कन्या	05/03/2030
तुला	08/04/2030
वृश्चि	23/04/2030

कालचक्र दशा - प्रत्यन्तर

कुंभ - कुंभ		कुंभ - मीन		कुंभ - वृश्चि		कुंभ - तुला		कुंभ - कन्या	
23/04/2030		02/07/2030		25/12/2030		27/04/2031		03/02/2032	
02/07/2030		25/12/2030		27/04/2031		03/02/2032		10/07/2032	
कुंभ	26/04/2030	मीन	23/07/2030	वृश्चि	04/01/2031	तुला	20/06/2031	कन्या	20/02/2032
मीन	04/05/2030	वृश्चि	07/08/2030	तुला	28/01/2031	कन्या	21/07/2031	तुला	22/03/2032
वृश्चि	10/05/2030	तुला	10/09/2030	कन्या	10/02/2031	तुला	13/09/2031	वृश्चि	04/04/2032
तुला	24/05/2030	कन्या	29/09/2030	तुला	06/03/2031	वृश्चि	07/10/2031	धनु	23/04/2032
कन्या	01/06/2030	तुला	02/11/2030	वृश्चि	17/03/2031	धनु	10/11/2031	मक	01/05/2032
तुला	14/06/2030	वृश्चि	17/11/2030	धनु	31/03/2031	मक	24/11/2031	कुंभ	08/05/2032
वृश्चि	20/06/2030	धनु	08/12/2030	मक	06/04/2031	कुंभ	07/12/2031	मीन	27/05/2032
धनु	29/06/2030	मक	16/12/2030	कुंभ	12/04/2031	मीन	10/01/2032	वृश्चि	10/06/2032
मक	02/07/2030	कुंभ	25/12/2030	मीन	27/04/2031	वृश्चि	03/02/2032	तुला	10/07/2032

कुंभ - तुला		कुंभ - वृश्चि		कुंभ - धनु		कुंभ - मक		मीन - मीन	
10/07/2032		18/04/2033		19/08/2033		11/02/2034		23/04/2034	
18/04/2033		19/08/2033		11/02/2034		23/04/2034		07/07/2035	
तुला	03/09/2032	वृश्चि	28/04/2033	धनु	09/09/2033	मक	15/02/2034	मीन	15/06/2034
वृश्चि	26/09/2032	धनु	13/05/2033	मक	18/09/2033	कुंभ	18/02/2034	वृश्चि	22/07/2034
धनु	30/10/2032	मक	19/05/2033	कुंभ	26/09/2033	मीन	26/02/2034	तुला	14/10/2034
मक	13/11/2032	कुंभ	25/05/2033	मीन	17/10/2033	वृश्चि	04/03/2034	कन्या	01/12/2034
कुंभ	26/11/2032	मीन	09/06/2033	वृश्चि	01/11/2033	तुला	18/03/2034	तुला	24/02/2035
मीन	30/12/2032	वृश्चि	19/06/2033	तुला	05/12/2033	कन्या	26/03/2034	वृश्चि	02/04/2035
वृश्चि	23/01/2033	तुला	13/07/2033	कन्या	24/12/2033	तुला	08/04/2034	धनु	25/05/2035
तुला	18/03/2033	कन्या	26/07/2033	तुला	27/01/2034	वृश्चि	14/04/2034	मक	15/06/2035
कन्या	18/04/2033	तुला	19/08/2033	वृश्चि	11/02/2034	धनु	23/04/2034	कुंभ	07/07/2035

मीन - वृश्चि		मीन - तुला		मीन - कन्या		मीन - तुला		मीन - वृश्चि	
07/07/2035		10/05/2036		14/04/2038		15/05/2039		18/04/2041	
10/05/2036		14/04/2038		15/05/2039		18/04/2041		20/02/2042	
वृश्चि	02/08/2035	तुला	22/09/2036	कन्या	27/05/2038	तुला	28/09/2039	वृश्चि	14/05/2041
तुला	30/09/2035	कन्या	08/12/2036	तुला	11/08/2038	वृश्चि	26/11/2039	धनु	20/06/2041
कन्या	02/11/2035	तुला	22/04/2037	वृश्चि	13/09/2038	धनु	19/02/2040	मक	05/07/2041
तुला	01/01/2036	वृश्चि	21/06/2037	धनु	31/10/2038	मक	24/03/2040	कुंभ	20/07/2041
वृश्चि	27/01/2036	धनु	14/09/2037	मक	19/11/2038	कुंभ	27/04/2040	मीन	26/08/2041
धनु	04/03/2036	मक	18/10/2037	कुंभ	08/12/2038	मीन	20/07/2040	वृश्चि	21/09/2041
मक	19/03/2036	कुंभ	21/11/2037	मीन	25/01/2039	वृश्चि	18/09/2040	तुला	19/11/2041
कुंभ	03/04/2036	मीन	13/02/2038	वृश्चि	27/02/2039	तुला	01/02/2041	कन्या	23/12/2041
मीन	10/05/2036	वृश्चि	14/04/2038	तुला	15/05/2039	कन्या	18/04/2041	तुला	20/02/2042

चर दशा

भोग्य दशा काल : मीन 12 वर्ष 0 मास 0 दिन

मीन 12 वर्ष	
05/03/1987	
05/03/1999	
मेष	04/03/1988
वृष	04/03/1989
मिथु	05/03/1990
कर्क	05/03/1991
सिंह	04/03/1992
कन्या	04/03/1993
तुला	05/03/1994
वृश्चि	05/03/1995
धनु	04/03/1996
मक	04/03/1997
कुंभ	05/03/1998
मीन	05/03/1999

मेष 12 वर्ष	
05/03/1999	
05/03/2011	
वृष	04/03/2000
मिथु	04/03/2001
कर्क	05/03/2002
सिंह	05/03/2003
कन्या	04/03/2004
तुला	04/03/2005
वृश्चि	05/03/2006
धनु	05/03/2007
मक	04/03/2008
कुंभ	04/03/2009
मीन	05/03/2010
मेष	05/03/2011

वृष 8 वर्ष	
05/03/2011	
05/03/2019	
मेष	03/11/2011
मीन	04/07/2012
कुंभ	04/03/2013
मक	03/11/2013
धनु	04/07/2014
वृश्चि	05/03/2015
तुला	03/11/2015
कन्या	04/07/2016
सिंह	04/03/2017
कर्क	03/11/2017
मिथु	04/07/2018
वृष	05/03/2019

मिथुन 8 वर्ष	
05/03/2019	
05/03/2027	
वृष	03/11/2019
मेष	04/07/2020
मीन	04/03/2021
कुंभ	03/11/2021
मक	04/07/2022
धनु	05/03/2023
वृश्चि	03/11/2023
तुला	04/07/2024
कन्या	04/03/2025
सिंह	03/11/2025
कर्क	04/07/2026
मिथु	05/03/2027

कर्क 3 वर्ष	
05/03/2027	
05/03/2030	
मिथु	04/06/2027
वृष	03/09/2027
मेष	04/12/2027
मीन	04/03/2028
कुंभ	03/06/2028
मक	03/09/2028
धनु	03/12/2028
वृश्चि	04/03/2029
तुला	04/06/2029
कन्या	03/09/2029
सिंह	03/12/2029
कर्क	05/03/2030

सिंह 6 वर्ष	
05/03/2030	
04/03/2036	
कन्या	03/09/2030
तुला	05/03/2031
वृश्चि	03/09/2031
धनु	04/03/2032
मक	03/09/2032
कुंभ	04/03/2033
मीन	03/09/2033
मेष	05/03/2034
वृष	03/09/2034
मिथु	05/03/2035
कर्क	03/09/2035
सिंह	04/03/2036

कन्या 7 वर्ष	
04/03/2036	
05/03/2043	
तुला	03/10/2036
वृश्चि	04/05/2037
धनु	03/12/2037
मक	04/07/2038
कुंभ	02/02/2039
मीन	03/09/2039
मेष	03/04/2040
वृष	03/11/2040
मिथु	04/06/2041
कर्क	03/01/2042
सिंह	04/08/2042
कन्या	05/03/2043

तुला 3 वर्ष	
05/03/2043	
05/03/2046	
वृश्चि	04/06/2043
धनु	03/09/2043
मक	04/12/2043
कुंभ	04/03/2044
मीन	03/06/2044
मेष	03/09/2044
वृष	03/12/2044
मिथु	04/03/2045
कर्क	04/06/2045
सिंह	03/09/2045
कन्या	03/12/2045
तुला	05/03/2046

वृश्चिक 5 वर्ष	
05/03/2046	
05/03/2051	
तुला	04/08/2046
कन्या	03/01/2047
सिंह	04/06/2047
कर्क	03/11/2047
मिथु	03/04/2048
वृष	03/09/2048
मेष	02/02/2049
मीन	04/07/2049
कुंभ	03/12/2049
मक	04/05/2050
धनु	04/10/2050
वृश्चि	05/03/2051

धनु 3 वर्ष	
05/03/2051	
05/03/2054	
वृश्चि	04/06/2051
तुला	03/09/2051
कन्या	04/12/2051
सिंह	04/03/2052
कर्क	03/06/2052
मिथु	03/09/2052
वृष	03/12/2052
मेष	04/03/2053
मीन	04/06/2053
कुंभ	03/09/2053
मक	03/12/2053
धनु	05/03/2054

मकर 2 वर्ष	
05/03/2054	
04/03/2056	
धनु	04/05/2054
वृश्चि	04/07/2054
तुला	03/09/2054
कन्या	03/11/2054
सिंह	03/01/2055
कर्क	05/03/2055
मिथु	05/05/2055
वृष	05/07/2055
मेष	03/09/2055
मीन	03/11/2055
कुंभ	03/01/2056
मक	04/03/2056

कुम्भ 11 वर्ष	
04/03/2056	
05/03/2067	
मीन	02/02/2057
मेष	03/01/2058
वृष	03/12/2058
मिथु	03/11/2059
कर्क	03/10/2060
सिंह	03/09/2061
कन्या	04/08/2062
तुला	05/07/2063
वृश्चि	03/06/2064
धनु	04/05/2065
मक	04/04/2066
कुंभ	05/03/2067

नोट : उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं।

चर दशा - प्रत्यन्तर

मिथु - वृष		मिथु - मेष		मिथु - मीन		मिथु - कुंभ		मिथु - मक	
05/03/2019		03/11/2019		04/07/2020		04/03/2021		03/11/2021	
03/11/2019		04/07/2020		04/03/2021		03/11/2021		04/07/2022	
मेष	25/03/2019	वृष	24/11/2019	मेष	24/07/2020	मीन	25/03/2021	धनु	23/11/2021
मीन	14/04/2019	मिथु	14/12/2019	वृष	13/08/2020	मेष	14/04/2021	वृश्चि	13/12/2021
कुंभ	05/05/2019	कर्क	03/01/2020	मिथु	03/09/2020	वृष	04/05/2021	तुला	03/01/2022
मक	25/05/2019	सिंह	23/01/2020	कर्क	23/09/2020	मिथु	24/05/2021	कन्या	23/01/2022
धनु	14/06/2019	कन्या	13/02/2020	सिंह	13/10/2020	कर्क	14/06/2021	सिंह	12/02/2022
वृश्चि	05/07/2019	तुला	04/03/2020	कन्या	03/11/2020	सिंह	04/07/2021	कर्क	05/03/2022
तुला	25/07/2019	वृश्चि	24/03/2020	तुला	23/11/2020	कन्या	24/07/2021	मिथु	25/03/2022
कन्या	14/08/2019	धनु	14/04/2020	वृश्चि	13/12/2020	तुला	14/08/2021	वृष	14/04/2022
सिंह	03/09/2019	मक	04/05/2020	धनु	02/01/2021	वृश्चि	03/09/2021	मेष	04/05/2022
कर्क	24/09/2019	कुंभ	24/05/2020	मक	23/01/2021	धनु	23/09/2021	मीन	25/05/2022
मिथु	14/10/2019	मीन	14/06/2020	कुंभ	12/02/2021	मक	14/10/2021	कुंभ	14/06/2022
वृष	03/11/2019	मेष	04/07/2020	मीन	04/03/2021	कुंभ	03/11/2021	मक	04/07/2022

मिथु - धनु		मिथु - वृश्चि		मिथु - तुला		मिथु - कन्या		मिथु - सिंह	
04/07/2022		05/03/2023		03/11/2023		04/07/2024		04/03/2025	
05/03/2023		03/11/2023		04/07/2024		04/03/2025		03/11/2025	
वृश्चि	25/07/2022	तुला	25/03/2023	वृश्चि	24/11/2023	तुला	24/07/2024	कन्या	25/03/2025
तुला	14/08/2022	कन्या	14/04/2023	धनु	14/12/2023	वृश्चि	13/08/2024	तुला	14/04/2025
कन्या	03/09/2022	सिंह	05/05/2023	मक	03/01/2024	धनु	03/09/2024	वृश्चि	04/05/2025
सिंह	23/09/2022	कर्क	25/05/2023	कुंभ	23/01/2024	मक	23/09/2024	धनु	24/05/2025
कर्क	14/10/2022	मिथु	14/06/2023	मीन	13/02/2024	कुंभ	13/10/2024	मक	14/06/2025
मिथु	03/11/2022	वृष	05/07/2023	मेष	04/03/2024	मीन	03/11/2024	कुंभ	04/07/2025
वृष	23/11/2022	मेष	25/07/2023	वृष	24/03/2024	मेष	23/11/2024	मीन	24/07/2025
मेष	14/12/2022	मीन	14/08/2023	मिथु	14/04/2024	वृष	13/12/2024	मेष	14/08/2025
मीन	03/01/2023	कुंभ	03/09/2023	कर्क	04/05/2024	मिथु	02/01/2025	वृष	03/09/2025
कुंभ	23/01/2023	मक	24/09/2023	सिंह	24/05/2024	कर्क	23/01/2025	मिथु	23/09/2025
मक	13/02/2023	धनु	14/10/2023	कन्या	14/06/2024	सिंह	12/02/2025	कर्क	14/10/2025
धनु	05/03/2023	वृश्चि	03/11/2023	तुला	04/07/2024	कन्या	04/03/2025	सिंह	03/11/2025

मिथु - कर्क		मिथु - मिथु		कर्क - मिथु		कर्क - वृष		कर्क - मेष	
03/11/2025		04/07/2026		05/03/2027		04/06/2027		03/09/2027	
04/07/2026		05/03/2027		04/06/2027		03/09/2027		04/12/2027	
मिथु	23/11/2025	वृष	25/07/2026	वृष	12/03/2027	मेष	12/06/2027	वृष	11/09/2027
वृष	13/12/2025	मेष	14/08/2026	मेष	20/03/2027	मीन	19/06/2027	मिथु	19/09/2027
मेष	03/01/2026	मीन	03/09/2026	मीन	28/03/2027	कुंभ	27/06/2027	कर्क	26/09/2027
मीन	23/01/2026	कुंभ	23/09/2026	कुंभ	04/04/2027	मक	05/07/2027	सिंह	04/10/2027
कुंभ	12/02/2026	मक	14/10/2026	मक	12/04/2027	धनु	12/07/2027	कन्या	11/10/2027
मक	05/03/2026	धनु	03/11/2026	धनु	19/04/2027	वृश्चि	20/07/2027	तुला	19/10/2027
धनु	25/03/2026	वृश्चि	23/11/2026	वृश्चि	27/04/2027	तुला	27/07/2027	वृश्चि	27/10/2027
वृश्चि	14/04/2026	तुला	14/12/2026	तुला	05/05/2027	कन्या	04/08/2027	धनु	03/11/2027
तुला	04/05/2026	कन्या	03/01/2027	कन्या	12/05/2027	सिंह	12/08/2027	मक	11/11/2027
कन्या	25/05/2026	सिंह	23/01/2027	सिंह	20/05/2027	कर्क	19/08/2027	कुंभ	19/11/2027
सिंह	14/06/2026	कर्क	13/02/2027	कर्क	28/05/2027	मिथु	27/08/2027	मीन	26/11/2027
कर्क	04/07/2026	मिथु	05/03/2027	मिथु	04/06/2027	वृष	03/09/2027	मेष	04/12/2027

चर दशा - प्रत्यन्तर

कर्क - मीन	
04/12/2027	
04/03/2028	
मेष	11/12/2027
वृष	19/12/2027
मिथु	27/12/2027
कर्क	03/01/2028
सिंह	11/01/2028
कन्या	18/01/2028
तुला	26/01/2028
वृश्चि	03/02/2028
धनु	10/02/2028
मक	18/02/2028
कुंभ	25/02/2028
मीन	04/03/2028

कर्क - कुंभ	
04/03/2028	
03/06/2028	
मीन	12/03/2028
मेष	19/03/2028
वृष	27/03/2028
मिथु	03/04/2028
कर्क	11/04/2028
सिंह	19/04/2028
कन्या	26/04/2028
तुला	04/05/2028
वृश्चि	12/05/2028
धनु	19/05/2028
मक	27/05/2028
कुंभ	03/06/2028

कर्क - मक	
03/06/2028	
03/09/2028	
धनु	11/06/2028
वृश्चि	19/06/2028
तुला	26/06/2028
कन्या	04/07/2028
सिंह	11/07/2028
कर्क	19/07/2028
मिथु	27/07/2028
वृष	03/08/2028
मेष	11/08/2028
मीन	18/08/2028
कुंभ	26/08/2028
मक	03/09/2028

कर्क - धनु	
03/09/2028	
03/12/2028	
वृश्चि	10/09/2028
तुला	18/09/2028
कन्या	26/09/2028
सिंह	03/10/2028
कर्क	11/10/2028
मिथु	18/10/2028
वृष	26/10/2028
मेष	03/11/2028
मीन	10/11/2028
कुंभ	18/11/2028
मक	25/11/2028
धनु	03/12/2028

कर्क - वृश्चि	
03/12/2028	
04/03/2029	
तुला	11/12/2028
कन्या	18/12/2028
सिंह	26/12/2028
कर्क	02/01/2029
मिथु	10/01/2029
वृष	18/01/2029
मेष	25/01/2029
मीन	02/02/2029
कुंभ	09/02/2029
मक	17/02/2029
धनु	25/02/2029
वृश्चि	04/03/2029

कर्क - तुला	
04/03/2029	
04/06/2029	
वृश्चि	12/03/2029
धनु	20/03/2029
मक	27/03/2029
कुंभ	04/04/2029
मीन	11/04/2029
मेष	19/04/2029
वृष	27/04/2029
मिथु	04/05/2029
कर्क	12/05/2029
सिंह	19/05/2029
कन्या	27/05/2029
तुला	04/06/2029

कर्क - कन्या	
04/06/2029	
03/09/2029	
तुला	11/06/2029
वृश्चि	19/06/2029
धनु	26/06/2029
मक	04/07/2029
कुंभ	12/07/2029
मीन	19/07/2029
मेष	27/07/2029
वृष	03/08/2029
मिथु	11/08/2029
कर्क	19/08/2029
सिंह	26/08/2029
कन्या	03/09/2029

कर्क - सिंह	
03/09/2029	
03/12/2029	
कन्या	11/09/2029
तुला	18/09/2029
वृश्चि	26/09/2029
धनु	03/10/2029
मक	11/10/2029
कुंभ	19/10/2029
मीन	26/10/2029
मेष	03/11/2029
वृष	10/11/2029
मिथु	18/11/2029
कर्क	26/11/2029
सिंह	03/12/2029

कर्क - कर्क	
03/12/2029	
05/03/2030	
मिथु	11/12/2029
वृष	18/12/2029
मेष	26/12/2029
मीन	03/01/2030
कुंभ	10/01/2030
मक	18/01/2030
धनु	26/01/2030
वृश्चि	02/02/2030
तुला	10/02/2030
कन्या	17/02/2030
सिंह	25/02/2030
कर्क	05/03/2030

सिंह - कन्या	
05/03/2030	
03/09/2030	
तुला	20/03/2030
वृश्चि	04/04/2030
धनु	19/04/2030
मक	04/05/2030
कुंभ	20/05/2030
मीन	04/06/2030
मेष	19/06/2030
वृष	04/07/2030
मिथु	20/07/2030
कर्क	04/08/2030
सिंह	19/08/2030
कन्या	03/09/2030

सिंह - तुला	
03/09/2030	
05/03/2031	
वृश्चि	18/09/2030
धनु	04/10/2030
मक	19/10/2030
कुंभ	03/11/2030
मीन	18/11/2030
मेष	03/12/2030
वृष	19/12/2030
मिथु	03/01/2031
कर्क	18/01/2031
सिंह	02/02/2031
कन्या	18/02/2031
तुला	05/03/2031

सिंह - वृश्चि	
05/03/2031	
03/09/2031	
तुला	20/03/2031
कन्या	04/04/2031
सिंह	19/04/2031
कर्क	05/05/2031
मिथु	20/05/2031
वृष	04/06/2031
मेष	19/06/2031
मीन	05/07/2031
कुंभ	20/07/2031
मक	04/08/2031
धनु	19/08/2031
वृश्चि	03/09/2031

सिंह - धनु	
03/09/2031	
04/03/2032	
वृश्चि	19/09/2031
तुला	04/10/2031
कन्या	19/10/2031
सिंह	03/11/2031
कर्क	19/11/2031
मिथु	04/12/2031
वृष	19/12/2031
मेष	03/01/2032
मीन	18/01/2032
कुंभ	03/02/2032
मक	18/02/2032
धनु	04/03/2032

सिंह - मक	
04/03/2032	
03/09/2032	
धनु	19/03/2032
वृश्चि	03/04/2032
तुला	19/04/2032
कन्या	04/05/2032
सिंह	19/05/2032
कर्क	03/06/2032
मिथु	19/06/2032
वृष	04/07/2032
मेष	19/07/2032
मीन	03/08/2032
कुंभ	18/08/2032
मक	03/09/2032

सिंह - कुंभ	
03/09/2032	
04/03/2033	
मीन	18/09/2032
मेष	03/10/2032
वृष	18/10/2032
मिथु	03/11/2032
कर्क	18/11/2032
सिंह	03/12/2032
कन्या	18/12/2032
तुला	02/01/2033
वृश्चि	18/01/2033
धनु	02/02/2033
मक	17/02/2033
कुंभ	04/03/2033

उपाय

जिस प्रकार से बीमारी के अनुरूप दवाई की आवश्यकता होती है उसी प्रकार से प्रत्येक व्यक्ति को उसकी जन्मकुण्डली के अनुरूप उपाय करने से ही कष्टों का निवारण होता है। सटीक उपाय कष्ट निवारण शीघ्र करते हैं।

इस खण्ड में समस्याओं से निजात पाने हेतु अनेक प्रकार के उपाय बतलाए गए हैं जिसमें अंकशास्त्र एवं ज्योतिष के सिद्धांतों के अनुरूप भाग्यशाली अंक, भाग्यशाली रंग, भाग्यशाली रत्न, भाग्यशाली दिवस, ग्रहों के शांति हेतु मंत्र, साढ़े साती के उपाय, मांगलिक विचार, कालसर्प दोष आदि के उपायों की सरल एवं विशद व्याख्या की गई है।

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	5
भाग्यांक	6
मित्र अंक	3, 5, 9, 6
शत्रु अंक	2, 4, 8
शुभ वर्ष	23,32,41,50,59
शुभ दिन	सोम, मंगल, गुरु
शुभ ग्रह	चन्द्र, मंगल, गुरु
मित्र राशि	कर्क, धनु
मित्र लग्न	मिथुन, वृश्चिक, मकर
अनुकूल देवता	हनुमान
शुभ रत्न	पुखराज
शुभ उपरत्न	सुनहला, पीला हकीक
भाग्य रत्न	मूंगा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	पीत
शुभ दिशा	पूर्वोत्तर
शुभ समय	संध्या
दान पदार्थ	हल्दी, पुस्तक, पीत पुष्प
दान अन्न	दाल चना
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पुखराज	गुरु	100%	स्वास्थ्य, व्यावसायिक उन्नति
मूंगा	मंगल	97%	धन, भाग्योदय
मोती	चंद्र	81%	धन, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	81%	स्वास्थ्य
नीलम	शनि	56%	भाग्योदय, धनार्जन, कम खर्च
लहसुनिया	केतु	31%	दाम्पत्य कष्ट, व्यय
पन्ना	बुध	22%	व्यय, ग्रह कलेश, दाम्पत्य कष्ट
माणिक्य	सूर्य	0%	व्यय, शत्रु व रोग
हीरा	शुक्र	0%	हानि, पराक्रम हानि, दुर्घटना

रत्न की शुभता

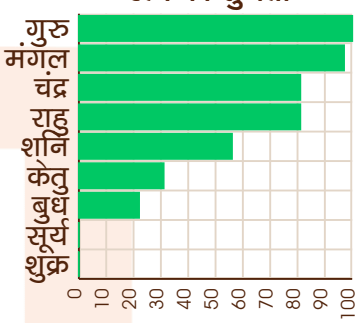

दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
शुक्र	17/07/1992	0%	69%	97%	34%	100%	22%	62%	88%	44%
सूर्य	18/07/1998	22%	88%	100%	22%	100%	0%	38%	69%	6%
चंद्र	17/07/2008	9%	94%	97%	34%	100%	0%	56%	69%	6%
मंगल	18/07/2015	9%	88%	100%	0%	100%	0%	56%	69%	44%
राहु	17/07/2033	0%	69%	84%	22%	100%	9%	62%	94%	6%
गुरु	17/07/2049	9%	88%	100%	0%	100%	0%	56%	81%	31%
शनि	17/07/2068	0%	69%	84%	34%	100%	9%	69%	88%	6%
बुध	17/07/2085	9%	69%	97%	47%	100%	9%	56%	81%	31%
केतु	17/07/2092	0%	69%	100%	22%	100%	9%	38%	69%	53%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते है। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते है। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ है तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते है अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते है।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा

सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुडंली और रत्न

आपके लिए पुखराज, मूंगा, मोती व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पुखराज आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

मूंगा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मोती व गोमेद रत्न आपके कारक रत्न हैं। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए नीलम शुभ रत्न है। इसकी शुभता स्व-दशा या मित्र दशाओं में बढ़ जाती है। अतः इस रत्न को इसकी शत्रु दशा में न पहनकर मित्रादि की दशा में पहनकर इसके शुभ फलों का लाभ प्राप्त किया जा सकता है। इसकी शत्रु दशा में आप रुद्राक्ष पहनकर या दान, मंत्र जाप आदि से लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परिक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

पन्ना, माणिक्य व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण

निम्न प्रकार से है :-

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु लग्न भाव में स्थित है। गुरु रत्न पुखराज धारण करने से आपकी विद्वता, ज्ञान अर्जन योग्यता, विनम्रता भाव का विकास होगा। पुखराज रत्न आपके लिए जीवन रत्न है। शुभ कार्य निर्विघ्न पूर्ण होंगे। लग्नस्थ गुरु पंचम, सप्तम एवं नवम भाव को देखता है। अतः यह पुखराज रत्न संतान सुख को प्रबल करेगा। धार्मिक कार्यों में अभिरूचि देगा। पुखराज रत्न आपके लिए सुख, धन व यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। पुखराज रत्न आपके वैवाहिक जीवन को स्थिरता देगा। संतान स्वास्थ्य वृद्धि कर संतान सुख को बढ़ाएगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में गुरु लग्नेश एवं दसमेश है। आप गुरु रत्न पुखराज रत्न धारण कर सकते है। पुखराज रत्न धारण से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि हो सकती है। रत्न शुभता से आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली हो सकता है। माता-पिता सुख में बढ़ोतरी करने में पुखराज रत्न की शुभता प्राप्त हो सकती है। इसके अतिरिक्त पुखराज रत्न आपकी आरोग्यता को बढ़ाएगा। पारिवारिक सुख प्राप्ति के लिए भी पुखराज रत्न की शुभता आपके लिए बनी हुई है। पुखराज रत्न दशमेश का रत्न होने के कारण आपके आजीविका क्षेत्र को शुभ रख आपको उन्नति और सफलता के प्रर्याप्त अव्सर दे सकता है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ऊँ बृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरुरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार है- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर 8 रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है। मंगल के शुभफल प्राप्ति के लिए आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण कर आप सहनशीलता का परिचय देंगे। वाकशक्ति का चातुर्य के साथ प्रयोग करेंगे। धन का प्रवाह तीव्र होगा। पराक्रम के कार्यों में आपकी अभिरुचि जागृत होगी। मूंगा रत्न आपके जोश और ऊर्जा शक्ति का भी विस्तार करेगा। इस रत्न को धारण करने के बाद आप जीवन की बाधाओं का साहस के साथ सामना करने लगेंगे। पहल क्षमता भी आपकी पहले से अधिक बढ़ जायेगी।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में मंगल द्वितीयेश एवं नवमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण कर आप मंगल की पूर्ण शुभता प्राप्त कर सकते है। मूंगा रत्न प्रभाव से आपकी धन वृद्धि हो सकती

है। इसकी शुभता से आपकी पारिवारिक वृद्धि हो सकती है। माता-पिता का सुख सहयोग आपको प्राप्त होगा। मूंगा रत्न भूमि-भवन संपति का सुख आपको दे सकता है। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाये रखने में सहयोगी सिद्ध हो सकता है। यह रत्न आपको आय के उत्तम साधन उपलब्ध करा सकता है। भाग्य भाव का रत्न होने के कारण यह रत्न आपके भाग्योदय का रत्न सिद्ध हो सकता है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ऊँ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते है। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र द्वितीय भाव में स्थित है। इसलिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना चाहिए। मोती रत्न आपके लिए शुभ रत्न है इससे आप मधुरभाषी, सहनशील एवं शांति प्रिय व्यक्तित्व के स्वामी होंगे। पारिवारिक स्नेह को सुखद बनाये रखने में मोती अहम भूमिका निभा सकता है। मोती रत्न से धन-धान्य और परिवार में सम्मान की प्राप्ति होगी। मोती रत्न आपकी त्याग भावना, बुद्धिमानी, चंचलता और यश को बढ़ायेगा। चंद्र की शुभता प्राप्ति के लिए आपका मोती रत्न धारण करना शुभ रहेगा। इस रत्न की शुभता से परिवार में धन आगमन बना रहेगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में चंद्र पंचमेश है। पंचमेश चंद्र का मोती रत्न धारण कर आप चंद्र की शुभता वृद्धि कर सकते है। यह रत्न आपको मन की शांति देगा तथा आपकी मानसिक चिंताओं को दूर करेगा। मोती रत्न की शुभता से आपके यश एवं प्रतिष्ठा में बढ़ोतरी हो सकती है। मोती रत्न धारण कर आप मधुरभाषी, उच्च मनोबल, दूरदशी एवं योग्य व्यक्ति बन सकते है। इस रत्न की शुभता से अनेक विद्याओं का धनी बना सकती है। मोती शुभ रत्न होकर आपके संतान पक्ष को प्रबल रख सकता है। रत्न प्रभाव से जीवन साथी के प्रति आपकी स्नेह वृद्धि हो सकती है।

मोती रत्न चांदी की अंगूठी में जड़वाकर, कनिष्ठिका अंगूली में, सोमवार को प्रातःकाल में धारण करना शुभ है। प्रातः काल की सभी क्रियाओं को करने के बाद इस रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर शुद्ध कर लें। तत्पश्चात इसकी धूप, दीप, फूल से पूजा करने के बाद इसे धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने के पश्चात चंद्र मंत्र ऊँ सौं सौमाय नमः का एक माला जाप रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। तदुपरांत चंद्र वस्तुओं जैसे- चावल, चीनी, चांदी, श्वेत वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मोती रत्न कम से कम ४ रत्ती से १० रत्ती का धारण करना शुभफलकारी होता है।

मोती रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न धारण करने से बचना चाहिए। मोती रत्न अंगूठी रूप के अलावा लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते है। विशेष आवश्यकता होने पर आप मोती रत्न के उपरत्न जैसे - सफेद मूल स्टोन, सफेद हकीक एवं २ मुखी रुद्राक्ष आदि भी धारण कर सकते है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्त होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे है जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु प्रथम भाव में स्थित है। अतः गोमेद धारण करने से आप शत्रुओं के बल को नष्ट कर उन पर विजय प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको अत्यन्त साहसी और विपुल पराक्रमी बनाएगा तथा रत्न शुभता आपको अपने कुल में मुख्य प्रतापी बनाएगी। आप भूमि का संचय करेंगे। स्वास्थ्य सुख को यह रत्न बेहतर करेगा। जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए आपके द्वारा गलत तरीकों का प्रयोग हो सकता है। यह रत्न आपको दृढ़-निश्चयी एवं अधिक बोलने वाला बनाएगा। रत्न शुभता आपकी चातुर्य शक्ति को बढ़ा रही है। इसे धारण करने पर आपका दांपत्य जीवन सुखद होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ऊँ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्ती और अधिकतम 8-10 रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि नवम भाव में स्थित है। आप शनि रत्न नीलम धारण करें। नीलम रत्न की शुभता से आपको भ्रमणशील और धर्मात्मा के गुणों से ओत प्रोत करेगा। रत्न शुभता से आप मृदुभाषी बनेंगे। तीर्थयात्राओं में भी आपकी अच्छी रुचि बनेगी। रत्न प्रभाव से आप आध्यात्म की ओर उन्मुख होंगे। यह रत्न आपके भाग्य में वृद्धि करेगा। नीलम रत्न शुभता आपको तीर्थयात्राओं से सुख देगी। यह रत्न आपको बड़ी प्रसिद्धि देगा। नीलम रत्न आपको शिक्षक, वकील या ज्योतिषी के रूप में विख्यात कर सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शनि एकादशेश एवं द्वादशेश है। आप शनि रत्न नीलम धारण कर सकते है। नीलम रत्न शुभ होकर आपको उत्तम लाभ, मोक्ष, विदेश यात्रा एवं ऐश्वर्य प्राप्ति में शुभ हो सकता है। यह रत्न आपके आय मार्ग की बाधाओं को दूर कर सकता है। व्ययों पर नियंत्रण रखने में शनि रत्न लाभकारी सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न शुभता से आपको बाहरी मामलों का प्रतिनिधित्व करने के अवसर प्राप्त हो सकते है। आय बढ़ने और व्ययों पर नियंत्रण होने से संचित धन भी स्वतः ही बढ़ेगा। मेहनत, निष्ठा बढ़ सकती है और मानसिक चिंताओं में कमी हो सकती है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ऊँ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपका व्यापारिक क्षेत्र में धन अधिक खर्च हो सकता है। कई बार आपका धन नष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक चिंताएं दे सकता है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपके द्वारा पिता का संचित धन भी नष्ट हो सकता है। यह रत्न वैवाहिक सुख कम कर सकता है। मित्रों से आपको कष्ट दिला सकता है। रत्न धारण करने के बाद यात्राएं कष्टकारी या असफल हो सकती है। केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपको शत्रुओं का भय हो सकता है। मित्रों से कष्ट मिल सकते है। कुसंगति के मित्र मिल सकते है। साथ ही यह रत्न वैवाहिक सुख में भी कमी कर सकता है।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती हैं। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आपको जीवन के कुछ सुनहरे अवसरों को

खोना पड सकता है। बौद्धिक योग्यता की कमी का अनुभव आपको समय समय पर हो सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा किए गये नियोजन कार्य असफल हो सकते है। समझ बूझ की कमी भी आपको अवगत हो सकती है। पन्ना रत्न पहनने पर आपको शेयर बाजार से जुड़े क्षेत्रों में हानि का सामना करना पड़ सकता है। आपके द्वारा संचित धन आपके काम न आकर दूसरों के काम ज्यादा आ सकता है। बुध रत्न पन्ना आपमें व्यवहारिकता की भी कमी कर सकता है। पिता के स्नेह में कमी की स्थितियां भी यह रत्न आपमें बना सकता है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में बुध चतुर्थेश एवं सप्तमेश है। बुध रत्न पन्ना आपकी शिक्षा में रुकावटें देने के बाद पूर्ण कर सकता है। रत्न प्रभाव से विलम्ब के बाद आपको सरकारी नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। पन्ना रत्न आपके मातृ पक्ष, हर प्रकार की संपत्ति और घर गृहस्थी के सुखों में कमी कर सकता है। पन्ना रत्न आपके दांपत्य के वातावरण को कष्टमय बना सकता है। साझेदारी कार्यो में भी रत्न प्रभाव से प्रतिकूल फल प्राप्त हो सकते है। रत्न प्रभाव से आपके माता से वैचारिक मतभेद हो सकते है। पन्ना रत्न कीर्ति, धन एवं दुष्ट संगति में आ सकते है। पन्ना रत्न पहनने पर आप अपव्ययी हो सकते है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यो में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते है। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यो पर हो सकते है। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यो पर भी अधिक हो सकते है। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते है। आपको चश्में का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में सूर्य षष्ठेश है। सूर्य रत्न माणिक्य आपकी शिक्षा को अपूर्ण कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपके व्यक्तित्व के गुणों में कमी हो सकती है। समस्याओं का समाधान निकालने की जगह समस्याओं से भागने की प्रवृति यह रत्न आपमें विकसित कर सकता है। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपको सरकारी क्षेत्रों में नौकरी प्राप्ति में संघर्षों का सामना करना पड़ सकता है। रत्न प्रभाव से कोर्ट कचहरी के मामलों में आपको समझौते करने के लिए आप बाध्य हो सकते है। इसके अलावा माणिक्य रत्न रोग, ऋण एवं शत्रु पक्ष की चिंताओं में समय समय पर वृद्धि करता रहेगा। आत्मविश्वास की कमी आपकी उन्नति के विकास को बाधित कर सकती है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा धारण करने पर आय क्षेत्रों की सफलता प्रभावित हो सकती है। बुद्धि चातुर्य के असहयोग के कारण आपको विरोधियों पर विजय प्राप्त करने में संघर्ष का सामना करना पड़ सकता है। वाकचातुर्य के कारण प्रसिद्धि में कमी हो सकती है। इस रत्न से आपके नियमित रूप से धनागमन बाधित हो सकता है। दिनों दिन धनवृद्धि में अस्थिरता आ सकती है।

आपके घर में सभी प्रकार की समृद्धि और सम्पन्नता के पक्ष से भी हीरा रत्न अनुकूल फलदायक नहीं होगा। अधिक से अधिक धन पाने के लिए आप सत्य से विमुख हो सकते है। इमारतें बनवाने का कार्य आपको हानि दे सकता है। विवाह के माध्यम से आपको धनहानि हो सकती है।

आपकी मीन लग्न की कुंडली में शुक्र तृतीयेश एवं अष्टमेश है। शुक्र रत्न हीरा आपके व्यक्तित्व के तेज में कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके कार्यों की निपुणता में न्यूनता देगा। यह रत्न साहस और पराक्रम दोनों का सहयोग आपको प्राप्त नहीं होने देगा। विषयों को सूक्ष्मता से समझने का गुण यह रत्न आपको दे सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आपकी माता को कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको वात रोग दे सकता है। वैवाहिक जीवन के सुख भी रत्न प्रभाव से बाधित हो सकते है। इस रत्न को धारण करने के बाद आपकी जीवनशैली घूमने फिरने की अधिक हो सकती है। हीरा रत्न जीवन के विशेष विषयों में आपको परिवर्तन करना सुखद लग सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

राहु
(18/07/2015 - 17/07/2033)

राहु की दशा में आपका पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, हीरा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(17/07/2033 - 17/07/2049)

गुरु की दशा में आपका मूंगा, पुखराज, मोती व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य, पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(17/07/2049 - 17/07/2068)

शनि की दशा में आपका पुखराज, गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा, लहसुनिया व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(17/07/2068 - 17/07/2085)

बुध की दशा में आपका पुखराज, मूंगा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व लहसुनिया रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(17/07/2085 - 17/07/2092)

केतु की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

मोती, गोमेद व लहसुनिया रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम रत्न नेष्ट हैं और पन्ना, हीरा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते है। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते है, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापो का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है ।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यो में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुडंली और रूद्राक्ष

आपकी कुंडली मीन लग्न की है। आपका व्यक्तित्व गुरु के समान है। आप थोड़े से जिद्दी, धार्मिक और संयमी स्वभाव के है। गुरु के समान आदर और सम्मान प्राप्त कर सकते हैं। बहुत जल्दी लोगों के बीच में अपनी जगह बना लेते है। आपके चहरे पर एक तेज होता हैं। आप अच्छे वक्ता, गुरु और सलाहकार साबित हो सकते हैं। साथ ही आप थोड़े से पारंपरिक भी हैं, अतः आसानी से अपनी जड़ों से दूर नहीं जा पाते। आपको आसानी से गुस्सा नहीं आता परन्तु जब आता है तो अत्यधिक आता है।

आपकी प्रकृति गंभीर है, और आप सभी बातें भूल सकते है। परन्तु अपनी परम्परा और सिद्धांतों को नहीं भूल सकते। धर्म का पालन करना आपके जीवन का अभिन्न अंग है। आप महत्वकांशी है, आपको स्वतन्त्र रहना पसंद है, बड़ो की बातों पर अमल करते है। आत्मविश्वासी है, और अपने कार्यो में आपको दक्षता प्राप्त हैं। साथ ही आपने दृढ निश्चय का गुण होता है। इसी कारण कार्यो को समय पर पूरा करा लेते हैं। आपकी कार्यप्रणाली साही और सरल होती है परन्तु आप लोक अक्सर ज्ञान बाँटते हुए दिखाई देते हैं। आप गलती करने पर सजा भी देते हैं और कभी-कभी नम्र और कभी-कभी कठोर भी बन जाते हैं।

कुंडली में षष्ट भाव का पीड़ित होना या इस भाव में अन्य ग्रहों का स्थित होना उपरोक्त सभी वस्तुओं में अशुभता लाता हैं। अष्टम भाव से आयु, बिना कमाया हुआ धन, मृत्यु का कारण व समय, अवनति तथा राज्यभंग की जानकारी प्राप्त होती हैं। अष्टम भाव की तरह द्वादश भाव में भी सभी ग्रह अनिष्ट करते है। द्वादश भाव भी त्रिक भाव है। यह भाव आपकी निद्रा, धन का निवेश, विवाह में विलम्ब, अधिकार का नाश, कैद, शरीर विकार तथा हानियों की जानकारी देता है।

6, 8, 12 भावों के स्वामियों और इन भावों में स्थित ग्रहों में अशुभता का अंश पाया जाता हैं। जिसके फलस्वरूप ये आपके जीवन को समय समय पर बाधित करते रहते हैं। व 6, 8, 12 भाव के स्वामी तथा इन भावों में स्थित ग्रह अपनी महादशा-अन्तर्दशा में अनिष्ट तथा अशुभ फल देते है।

आपके लग्न के लिए सूर्य षष्टेश, शुक्र अष्टमेश व तृतीयेश, मंगल द्वादशेश तथा नवमेश हैं। षष्ठ, अष्टम व द्वादश भाव दुष्ट व अशुभ स्थान हैं। अपनी कुंडली की शुभता में वृद्धि करने के लिए आपको छः, आठ व बारहवें भाव- भावेश को शुभता प्रदान करनी होगी। कुंडली के ये भाव आपको रोग, ऋण, शत्रु, बाधाएं, देने के साथ साथ दैहिक, सामाजिक, मानसिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्ट दे सकते हैं। इन सभी विषयों के साथ साथ षष्ट भाव प्रतियोगिता, संघर्ष तथा सौतेली माता का भी भाव है।

सूर्य आपके द्वादश भाव में शत्रुओं की बहुलता, परन्तु शत्रुओं पर विजय, धन-धान्य से युक्त, कुशल राजनीतिज्ञ, उतम प्रशासक, नेत्र प्रकाश में कमी, मामा को कष्ट, और वाहनों से शारीरिक कष्ट की संभावना उत्पन्न करता है।

बुध द्वादश भाव में स्थित है, आप शत्रुओं पर बुद्धि-चतुरता से विजय प्राप्त करने में सफल रहेंगे। आपको आलस्य भाव से बचना चाहिए, साथ ही कठोर वचन बोलना भी मित्र वर्ग में आपके संबंधों की मधुरता में कमी कर सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 4, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	05/03/1987-17/12/1987	----------	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	02/06/1995-10/08/1995	16/02/1996-17/04/1998	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	17/04/1998-07/06/2000	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	07/06/2000-23/07/2002	08/01/2003-07/04/2003	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007

द्वितीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	29/03/2025-03/06/2027	03/06/2027-23/02/2028	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	03/06/2027-03/06/2027	23/02/2028-08/08/2029	05/10/2029-17/04/2030
साढेसाती तृतीय ढैया	08/08/2029-05/10/2029	17/04/2030-31/05/2032	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	13/07/2034-27/08/2036	----------	----------

तृतीय चक्रः

अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	----------
साढेसाती प्रथम ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	07/04/2057-27/05/2059	----------	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	27/05/2059-11/07/2061	13/02/2062-07/03/2062	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
अष्टम स्थानस्थ ढैया	सम	बदनामी
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	स्वास्थ्य
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	धन
साढेसाती तृतीय ढैया	शुभ	पराक्रम
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	सम	सन्तति कष्ट

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपके जन्म समय में मंगल चन्द्रमा के साथ जन्म कुंडली में स्थित है। अतः आप चन्द्र कुण्डली से मांगलिक हैं। परन्तु मंगल का योग चन्द्रमा से होने पर आपका मांगलिक दोष समाप्त हो जाता है। ऐसा मंगल आपको अशुभ फलों की अपेक्षा शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्रदान करेगा। इसके शुभ प्रभाव से आप मानसिक तथा शारीरिक रूप से पूर्ण स्वस्थ रहेंगे। परन्तु स्वभाव में यदा कदा उग्रता का भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में थोड़ा विलम्ब होगा परन्तु विवाह अत्यन्त ही सुखद एवं शान्त वातावरण में सम्पन्न होगा। किसी भी प्रकार से अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना नहीं करना पड़ेगा। आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा जिससे आप प्रसन्नता पूर्वक दाम्पत्य सुख का उपभोग कर सकेंगे।

चन्द्रमा के साथ मंगल की युति होने से आप एक स्वस्थ पुरुष होंगे तथा मानसिक रूप से भी कभी विचलित नहीं रहेंगे। चन्द्रमा से चतुर्थ भाव पर मंगल की दृष्टि होने से सुख संसाधनों से आप सर्वदा युक्त रहेंगे। जीवन में सुखपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप चल या अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को भी प्राप्त कर सकेंगे। सप्तम भाव पर मंगल की दृष्टि से आपकी पत्नी का शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा वे स्वभाव से क्रोध के भाव को प्रदर्शित करेंगी। इससे दाम्पत्य जीवन पर कोई दुष्प्रभाव नहीं पड़ेगा। अष्टम भाव पर मंगल की दृष्टि से शारीरिक कुशलता बनी रहेगी तथा अधिकांश शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी यथा समय सिद्ध होते रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से शान्ति प्राप्त करेंगे। इस प्रकार आपका दाम्पत्य जीवन सुख एवं शान्ति से व्यतीत होगा।

अपने दापम्पत्य जीवन को अधिक सुखमय बनाने के लिए आपको किसी गैरमांगलिक या ऐसी कन्या से विवाह करना चाहिए जिसकी कुंडली में मांगलिक दोष उचित नियमानुसार भंग हो रहा हो। यदि आप इस प्रकार से अपना दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करेंगे तो आप अत्यन्त ही भाग्यशाली पुरुष सिद्ध होंगे। आप भौतिक सुख संसाधनों से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक जीवन यापन करेंगे। साथ ही समाज में भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा तथा यश प्राप्त करने में भी सफल

रहेंगे। आपकी पत्नी भी एक सौभाग्यशाली महिला होंगी तथा आपके परस्पर संबंध भी हमेशा मधुर रहेंगे एवं अनावश्यक तनाव तथा कटुता से आप मुक्त ही रहेंगे।

इसके अतिरिक्त कुंडली मिलान के समय समान भाव में मंगल की यदि आवश्यक न हो तो उपेक्षा ही करें क्योंकि समान भावों में मंगल के रहने से दाम्पत्य जीवन में अनावश्यक बाधाएं तथा समस्याएं उत्पन्न होती हैं जिससे यदा कदा आपसी संबंधों में तनाव उत्पन्न होता है। अन्य भावों में स्थित मंगल शुभ रहेगा एवं दाम्पत्य जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा। अतः सोच समझ कर इस विषय में अन्तिम निर्णय लेना चाहिए।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियां अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।
7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।

8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।
11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ऊँ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च।
नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए।
13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें। मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें। यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव में शनि स्थित है एवं राहु से दृष्ट है।

आपकी कुडली में शनि के कारण पितृदोष है।

आपकी कुंडली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है। इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें। पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें। शम्मी की समिधा से हवन करें। बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें। गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह त्र्यंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों

के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

अंक शास्त्र

अपने मूलांक और भाग्यांक ज्ञात कर अंकों की रहस्यमय शक्ति एवं तरंगों का अनुभव अपने जीवन में करें।

अंकशास्त्र आपके वर्तमान एवं भविष्य को आपके जन्मांक एवं नाम में मौजूद अक्षरों की सहायता से बताने एवं सजाने-संवारने की कला है। प्रत्येक अक्षर का एक अंकिक मान निर्धारित है जो खास खगोलीय स्पन्दन से संबद्ध है। आपके जन्मांक में मौजूद अंक एवं नाम के अक्षरों में निहित अंकों के मान अंतसंबंधित होते हैं। इन अंकों से आपके चरित्र, जीवन के उद्देश्य, प्रेरक तत्वों एवं योग्यता का पता चलता है। इससे आपको मुहूर्त, साझेदारी, प्रेम, विवाह, स्वास्थ्य, व्यवसाय, शुभ रंग, शुभ वाहन नंबर आदि का आपके अपने अंकों के अनुकूल निर्धारण करने में सहायता मिलती है।

अंक ज्योतिष फल

आपका जन्म दिनांक पाँच होने से अंक ज्योतिष के आधार पर आपका मूलांक पाँच होता है। इसका स्वामी बुध ग्रह है। मूलांक पाँच के प्रभाववश आप रोजगार के क्षेत्र में नौकरी की अपेक्षा व्यापार के मार्ग की ओर अधिक आकृष्ट रहेंगे। यदि आप नौकरी का मार्ग चुनते हैं तो ऐसा रोजगार आपको अधिक पसन्द आयेगा। जहाँ लेन-देन, लेखा, यांत्रिकी, वाणिज्य, इत्यादि का कार्य होता हो। कम्पनी, फैक्ट्री, उच्च व्यापार जगत आपको रास आयेगा।

बुधग्रह के प्रभाववश आपके अन्दर वाक्पटुता, तर्कशक्ति अच्छी रहेगी एवं सामने वाले व्यक्ति को आप अपनी बातों से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। आप हर कार्य को जल्दी समाप्त करना पसन्द करेंगे एवं ऐसे रोजगार की ओर उन्मुख होंगे जिसमें शीघ्र सफलता कम मेहनत तथा अधिक लाभ पर प्राप्त होती रहे। आप थोड़े जल्दबाज एवं फुर्तीले भी रहेंगे। जल्दबाजी के चक्कर में आप कभी-कभी हानियों का भी सामना करेंगे।

आपकी मानसिक स्थिति चंचल होने से आपको शीघ्र क्रोध आ जाया करेगा एवं कभी-कभी चिड़चिड़ाहट भी रहा करेगी। आप अधिकांशतः बुद्धि जनित कार्यों में रुचि लेंगे। इस कारण आपकी दिमागी ताकत अधिक खर्च होने से अधिक आयु में आपको स्नायुवेग द्वारा उत्पन्न रोगों का भी सामना करना पड़ेगा।

मूलांक पाँच का स्वामी बुध ग्रह होने से कमोवेश बुध के गुण-अवगुण आपके अन्दर आयेंगे। विद्याध्यन लेखन-पठन की ओर आपकी विशेष रुचि रहेगी।

भाग्यांक 6 के स्वामी शुक्र ग्रह के प्रभाव से आपका भाग्योदय चौंसठ कलाओ के अन्दर ही होगा। शुक्र कला का दाता है। अतः आपके अन्दर ललित कलाओं में से कुछ कलाओं का समावेश होगा। आप कला के क्षेत्र में, कला के द्वारा जीवन यापन करेंगे। कलात्मक वस्तुएं आपको लाभ प्रदान करेंगी। आप विपरीत योनि के प्रति सहज आकर्षण के अवगुण वश तन-मन एवं धन का व्यय करेंगे। सौन्दर्य की ओर आकर्षण आपकी कमजोरी रहेगा।

आपके कार्य करने के स्थान तथा रहने के स्थान की साज-सजावट बनाये रखने में आपको हमेशा धन व्यय करते रहना होगा। क्योंकि सुसज्जित परिवेश में रहना आपके मनोनुकूल है। आप वस्त्र आभूषण के शौकीन रहेंगे। धन स्थिति आपकी ठीक रहेगी। शान-शौकत बनी रहेगी। सामने वाले व्यक्ति आपको हमेशा धनी समझते रहेंगे, भले ही आप यदा-कदा कड़की के दिनों में चल रहे हों। किसी भी कला के क्षेत्र को आप अपना रोजगार का क्षेत्र चुनते हैं, तो आपकी उन्नति निश्चित ही होगी।

आपका मूलांक 5 है तथा आपका भाग्यांक 6 है। मूलांक 5 का स्वामी बुध है तथा भाग्यांक 6 का स्वामी शुक्र है। मूलांक 5 और भाग्यांक 6 के बीच सम संबंध है। इसके प्रभाववश आपको मूलांक-भाग्यांक का मिलाजुला फल प्राप्त होगा। आप चौंसठ कलाओं में से किसी एकाधिक कला के द्वारा अपना रोजगार-व्यापार चलाएंगे। आपको विभिन्न कलाओं में सफलाएं प्राप्त होंगी तथा आप इनके माध्यम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। स्वभाव से आप कोमल हृदय के व्यक्ति रहेंगे

तथा समाज में शीघ्र घुलने-मिलने की कला में निपुण रहेंगे। धन संग्रह की अपेक्षा आप भौतिक सुख-साधन जोड़ने पर अधिक ध्यान देंगे, हालांकि आपके पास संपत्ति अच्छी एकत्रित होगी एवं अपने कार्य के द्वारा काफी महत्वपूर्ण उपलब्धियों को आप प्राप्त करेंगे। जीवन के मध्य अवस्था से आपकी आर्थिक स्थिति काफी मजबूत होती चली जाएगी, जो अंतिम अवस्था तक स्थायी रहेगी। समाज में आपको पर्याप्त मात्रा में मान-सम्मान प्राप्त होगा एवं लोग आपको समयोचित आदर प्रदान करेंगे।

आपका भाग्योदय 24 वर्ष की अवस्था से प्रारंभ हो कर 33 वर्ष की अवस्था पर आपको विशेष उन्नति प्राप्त होगी तथा 42 वर्ष की आयु पर आपका पूर्ण भाग्योदय होगा।

मूलांक 5 की मित्रता 3 और 9 से है तथा भाग्यांक 6 की मित्रता 3 एवं 9 से है। अतः आपके जीवन में 3, 5, 6, 9 के अंक विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे। इनमें आपके जीवन की कुछ विशेष घटनाएं घटित होंगी।

आपके मूलांक का आपके भाग्यांक से सम संबंध होने से मूलांक-भाग्यांक के प्रभाव न्यूनाधिक मात्रा में, आपके अनुरूप जाएंगे। आपके जीवन की प्रमुख घटनाएं इन्हीं अंकों की तारीखों मास, ईस्वी सन् या आयु के वर्षों में घटित होंगी। जब कभी इन्हीं अंकों की तारीख, मास वर्ष के साथ आपके लिए निर्धारित शुभ वार का भी मेल होता हो, तो ऐसा दिन आपके लिए विशेष फलदायी तथा किसी भी कार्य को प्रारंभ करने, पत्र लेखन, या उच्च अधिकारी/व्यक्ति से मिलने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगा। आप अपने विगत जीवन में घटित घटनाओं का अवलोकन करेंगे, तो पाएंगे कि काफी घटनाएं इन्ही अंकों के मास, वर्ष या दिन को घटित हुई होंगी।

अपने विगत जीवन में उपर्युक्त सभी अंकों का विश्लेषण करने के बाद जो अंक आपके अधिक अनुकूल जा रहे हों, उन्ही अंकों के आधार पर भावी योजनाएं बनाना आपके लिए अधिक लाभप्रद रहेगा।

आपके लिए मार्च, मई, जून, सितंबर के माह विशेष घटनाक्रम वाले होंगे तथा आप कोई भी नया कार्य ऐसे ही दिन प्रारंभ करें, जब दिन, तारीख, मास तथा वर्ष आपके मूलांक तथा भाग्यांक के अंक से मेल स्थापित करे तथा एक ही समय पर सभी शुभ रहें।

मूलांक 5 एवं भाग्यांक 6 के प्रभाववश ईस्वी सन्, जिनका योग 3, 5, 6, 9 होता है, आपके लिए विशेष घटनाक्रम वाले रहेंगे।

इसी प्रकार आपकी अवस्था के ऐसे वर्ष, जिनका योग 3, 5 ,6, 9 होता है, आपके लिए शुभ फलदायक रहेंगे।

3 . 12, 21, 30, 39, 48, 57, 66, 75
5 . 14, 23, 32, 41, 50, 59, 68
6 . 15, 24, 33, 42, 51, 60, 69
9 . 18, 27, 36, 45, 54, 63, 72

उपर्युक्त वर्ष आपके जीवन में परिवर्तनशाली रहेंगे। इन वर्षों में कुछ प्रमुख घटनाएं घटित होंगी, जो आपके जीवन की दशा बदलेंगी तथा कुछ घटनाएं यादगार बन जाएंगी।

अंक ज्योतिष उपाय विचार

अनुकूल समय

बुध दिनांक 22 मई से 21 जून एवं 24 अगस्त से 23 सितंबर तक, पाश्चात्य मत से, सूर्य मिथुन एवं कन्या राशि में रहता है तथा भारतीय मतानुसार 15 जून से 15 जुलाई तक एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर तक सूर्य मिथुन तथा कन्या राशि में रहता है। मिथुन बुध की स्वराशि तथा कन्या उच्च राशि है। अतः उपर्युक्त समय मूलांक पांच के लिए कोई भी नया या महत्वपूर्ण कार्य करने के लिए अधिक उपयुक्त रहता है।

अनुकूल दिवस

बुधवार, गुरुवार एवं शुक्रवार के दिन आप अपना कोई भी महत्वपूर्ण कार्य या रोजगार व्यापार संबंधी कार्य प्रारंभ करें तो यह आपके लिए अच्छा रहेगा। इन दिवसो में अनुकूल तारीखें भी हों तो आपके लिए श्रेष्ठ फलदायक सिद्ध होगा।

शुभ तारीखें

अंग्रेजी के किसी भी माह की 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखें आपके लिए कोई कार्य करने हेतु अधिक उपयुक्त रहेगी। इन तारीखों में आपके लिए अपना कोई भी नया कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, उच्च अधिकारी या किसी विशिष्ट व्यक्ति से मिलना, पत्र लेखन इत्यादि विशेष लाभप्रद रहेगा।

अशुभ तारीखें

अंग्रेजी माह की 2, 4, 11, 13, 20, 22, 29 एवं 31 तारीखों में किसी भी प्रकार का व्यापार संबंधी कार्य, महत्वपूर्ण कार्य, अथवा पत्र व्यवहार संबंधी कार्य करना आपके लिए प्रतिकूल है। अतः आप इन तिथियों में कोई भी शुभ कार्य संपन्न न करें।

मित्रता या साझेदारी

जिन व्यक्तियों का जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 तारीखों अथवा 15 जून से 15 जुलाई एवं 17 सितंबर से 16 अक्तूबर के मध्य हुआ है, ऐसे व्यक्तियों से आपकी मित्रता अच्छी रहेगी तथा ये लोग रोजगार-व्यवसाय के क्षेत्र में भी आपके सफल मित्र साबित होंगे।

प्रेम संबंध एवं विवाह

कोई भी महिला जिसका मूलांक 3, 5, 9 होता है तथा जिसका जन्म 3, 5, 9, 12, 14, 18, 21, 23, 27 एवं 30 दिनांको में हुआ हो वे आपके लिए विशेष शुभ फलदायक रहेंगी तथा इन महिलाओं से आप स्नेहपूर्ण संबंध रख सकते हैं।

अनुकूल रंग

मूलांक के अनुसार आपके लिए हल्का खाकी, सफेद चमकीला उज्जवल रंग उत्तम रहेंगे। अतः ये आपके स्वास्थ्य आदि के लिए ठीक रहेंगे। हो सके तो आप इन रंगों का रुमाल हर समय अपने साथ रखें और यदि आप अपने ड्राइंग रूम के पर्दे, चादर, तकिये, बिछावन आदि इसी रंग का पसंद करेंगे तो और भी अच्छा रहेगा।

वास्तु एवं निवास

आपके लिए उपयुक्त दिशा उत्तर है। इसलिए आपके लिए ऐसा मकान या फ्लैट शुभ रहेगा जिसका मूलांक तथा नामांक 5 हो। उत्तर दिशा आपके लिए हमेशा शुभ रहेगी। आप अपने घर की बैठक उत्तर दिशा में ही करें एवं घर के फर्नीचर आदि का रंग खाकी, सफेद चमकीला होना चाहिए, जो आपके लिए अच्छे फल देने वाले होंगे।

शुभ वाहन नं

अगर आप स्वयं का वाहन खरीदना चाहते हैं तो उसके लिए आपको पहले अपने मूलांक तथा मूलांक के मित्र अंक से मेल स्थापित करने वाले अंकों के अनुसार पंजीकरण क्रमांक लेना हितकर रहेगा। आपका मूलांक 5 है एवं मित्रांक 3 एवं 9 हैं। अतः आपके लिए शुभ पंजीकरण क्रमांक 5234 = 5 आदि होना चाहिए। आपके वाहन का नंबर 104 = 5 इत्यादि हो तभी आपके लिए यह शुभ फलदायक रहेगा।

स्वास्थ्य तथा रोग

जब भी आपके जीवन में रोग की स्थिति आती है तथा आप चर्म रोग, स्नायु निर्बलता, मानसिक चिंता, दुर्बलता, शारीरिक कमजोरी तथा मानसिक दुर्बलता से ग्रसित हो जाते हैं। रोग होने, अशुभ समय आने, कष्ट और विपत्ति के समय विष्णु की पूजा, पूर्णिमा का व्रत कर के, केले का प्रसाद लें।

व्यवसाय

तार और टेलीफोन विभाग, ज्योतिष, सेल्समैन, डाकघर, पोस्टमैन, बीमा विभाग, बैंकिंग, बजट निर्माण, रेलवे इंजीनियरी, संपादक, तंबाकू व्यवसाय, रेडियो व्यवसाय, लेखक, पत्रकार, अनुवादक, राजनीति संबंधी कार्य, मुद्रणालय, संचार व्यवस्था, पुस्तक विक्रेता, पुस्तकालय, लाइब्रेरियन, यातायात संबंधी कार्य, इतिहास, खोज एवं पुरातत्व विभाग, आविष्कारक, मुनीम, पर्यटक एवं बुद्धि बल के समस्त कार्य।

व्रतोपवास

बुधवार को बुध अरिष्ट दोष निवारण हेतु व्रत करें। पैंतालीस या सत्रह बुधवारों को यह व्रत करें। हरे रंग के कपड़े पहनें एवं हरे पदार्थों का दान करें। तुलसी के पत्ते खाना एवं चढ़ाना लाभप्रद रहता है। पन्ना या मरगज की माला पर बुध मंत्र का जप करें।

अनुकूल रत्न या उपरत्न

आपके लिए पन्ना शुभ रत्न है। उसके न मिलने पर उपरत्न मरगज, ओनेक्स, ग्रीन पेरनीडाट धारण करें। इसे आप सोने या चांदी में तीन से छह रत्ती में बनवा कर, बुधवार के दिन, शुक्ल पक्ष में दायें हाथ की कनिष्ठा उंगली में, त्वचा को स्पर्श करता हुआ धारण करें।

अनुकूल देवता

आप बुध ग्रह की उपासना करें भगवान लक्ष्मी नारायण की आराधना करें। भगवान लक्ष्मी नारायण के चतुर्दशाक्षरी मंत्र "ओम् ह्रीं ह्रीं श्री श्रीं लक्ष्मी वासुदेवाय नमः" का नित्य जप करें। प्रतिदिन कम से कम एक सौ आठ मंत्र का जप करें तथा पूर्णिमा के दिन सत्यनारायण कथा का श्रवण करेंगे तो आप विभिन्न रोगों तथा समस्याओं से मुक्त होंगे। यदि यह संभव न हो सके तो भगवान लक्ष्मी नारायण के चित्र का ही नित्य प्रातः दर्शन कर लिया करें।

ग्रह गायत्री मंत्र

आपके लिए बुध के शुभ प्रभावों की वृद्धि हेतु बुध के गायत्री मंत्र का प्रातः स्नान के बाद ग्यारह, इक्कीस या एक सौ आठ बार जप करना लाभप्रद रहेगा।

बुध गायत्री मंत्र - ऊँ सौम्यरूपाय विद्महे बाणेशाय धीमहि तन्नो सौम्यः प्रचोदयात्।।

ग्रह ध्यान मंत्र

प्रातःकाल उठ कर आप बुध का ध्यान करें, मन में बुध की मूर्ति प्रतिष्ठित करें और तत्पश्चात् निम्न मंत्र का पाठ करें।

प्रियंगुकलिकाश्यामं रूपेणाप्रतिमं बुधम्।
सौम्यं सौम्यगुणोपेतं तं बुधं प्रणमाम्यहम्।।

ग्रह जप मंत्र

अशुभ बुध को अनुकूल बनाने हेतु बुध के मंत्र का जप करना चाहिए। नित्य कम से कम एक माला एक सौ आठ जप करने से वांछित लाभ मिल जाते हैं। पूरा अनुष्ठान नब्बे माला का है। मंत्र जप का प्रत्यक्ष फल स्वयं देख सकेंगे।

ऊँ ब्राँ ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।। जप संख्या 9000।।

वनस्पति धारण

आप बुधवार के दिन विधारा की एक इंच लंबी जड़ ला कर, हरे धागे में लपेट कर, दाहिने हाथ में बांधे या सोने या चांदी के ताबीज में भर कर गले में धारण करें। इससे बुधवार के अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

वनस्पति स्नान

आपके लिए प्रत्येक बुधवार को एक बाल्टी या बर्तन में हरड़, बहेड़ा, गोमय, चावल, गोरोचन, स्वर्ण, आंवला और मधु आदि औषधियों का चूर्ण कर, पानी में डाल कर स्नान करना सभी प्रकार के रोगों से मुक्तिदायक रहेगा। हर्बल स्नान से आपकी त्वचा की कांति में वृद्धि होगी। अशुभ बुध के प्रभाव क्षीण हो कर आपके तेज एवं प्रभाव में वांछित लाभ प्राप्त होगा। सभी ग्रहों की शांति के लिए कूठ, खिल्ला, कांगनी, सरसों, देवदारु, हल्दी, सर्वौषधि तथा लोध को मिला कर, चूर्ण कर, किसी तीर्थ के पानी में मिला कर भगवान का स्मरण करते हुए स्नान करें तो ग्रहों की शांति और सुख समृद्धि प्राप्त होगी।

दान पदार्थ

बुध की शांति के लिए योग्य व्यक्ति को बुध के पदार्थ कांसी, हाथी दांत, हरा वस्त्र, मूंगा, पन्ना, सुवर्ण, कपूर, शास्त्रा, पफल, षट्रास भोजन, घृत, सर्व पुष्प आदि का दान करना लाभप्रद रहेगा।

यंत्र

बुध को अनुकूल बनाए रखने हेतु बुध यंत्र को भोज पत्र पर अष्टगंध (केशर, कपूर, अगर, तगर, कस्तूरी, अंबर, गोरोचन एवं रक्त चंदन या श्वेत चंदन) स्याही से लिख कर सोने या तांबे के ताबीज में, धूप-दीप से पूजन कर, सोने की जंजीर या पीले धागे में, बुधवार को शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल धारण करें।

ग्रह फल

ग्रह फल स्पष्ट रूप से आपकी कुंडली में प्रत्येक ग्रह की भूमिका को निर्दिष्ट करता है।

इस खंड में प्रत्येक ग्रह के विभिन्न भावों/राशियों में स्थिति के अनुसार फल दिए गए हैं। यह स्पष्ट रूप से बताता है कि आपकी कुंडली में किस ग्रह का भावानुसार/राश्यानुसार क्या फल होंगे। जब आप हर ग्रह की भूमिका के बारे में जान जाएंगे तो आपको उनके वास्तविक बात को भी अंदाजा हो जाएगा। इसके अलावा आप अपने कमजोर बिंदुओं को भी जानने में सक्षम हो पाएंगे। यह सूचना आपको भविष्य की योजना बनाने में मदद करेगी तथा आप यह निर्धारित कर पाएंगे कि किस दिशा में आपका भविष्य उज्जवल है।

लग्न फल

आपका जन्म उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के द्वितीय चरण में मीन लग्न में हुआ था। आपके जन्मकाल मेदिनीय क्षितिज पर कन्या का नवमांश एवं मीन का द्रेष्काण भी उदित था। इस संबंधित लग्नादिक ज्योतिषीय आकृति आपके जीवन को धन संपत्ति से युक्त आमोद-प्रमोद एवं हर्षोल्लास से परिपूर्ण आनंदमय जीवन बिताने के साधनों से युक्त करता है।

प्रायः हर दशा में ज्योतिषीय प्रभाव आपका पक्षधर है। यदि आप अपने हस्तगत कार्य व्यवसाय को समय पर सुव्यवस्थित ढंग एवं समर्पण की भावना से संपादित कर लिए तो आपका जीवन सफल होने की संभावना है, बर्शते कि आप सकारात्मक ढंग से कार्यो का संपादन करें। फलस्वरूप यह आपके लिए उन्नति कारक होगा। इस दृष्टिकोण से यह आवश्यक है कि आप वासनात्मक प्रवृति को बहुत महत्त्व देकर इन कार्यो से संबंधित रहते है। यदि आप इस प्रवृति हेतु सतर्कता नहीं बरतें तो यह वासना आपको मिट्टी पलीत कर देगा। अर्थात् आपका विनाश कर देगा। आप इनका उन्मूलन करें अन्यथा इस उत्तेजना के कारण आपके जीवन की ललिमा नष्ट हो जाएगी तथा इस प्रवृति के कारण मात्र आपका परिवार ही अस्त-व्यस्त नहीं हो जाएगा। बल्कि यह आपको अकर्मण्य बना कर आपकें कार्य कलाप से भी दिशा हीन बना देगा। परंतु यदि आप इस प्रवृत्ति को समाप्त कर दिए तो आप बहुत अच्छी प्रकार उन्नति कर सकेंगे। आप धन संचय कर सकेंगे। इस प्रकार आप मात्र अपने उपार्जन को ही नहीं बढ़ाएंगे, बल्कि आप धन संपत्ति भी सर्वथा अर्जित करेंगे। आपमें ऐसी क्षमता है कि आप अपने प्रतिपक्षी को परास्त कर देंगे जो कि आपके कार्य-व्यवसाय को नष्ट करने का प्रयास करेगा।

आप मात्र एक सुखद एवं अभिमंत्रित भवन के स्वामी होंगे। बल्कि हर दशा में अपने मित्रों के अपना कर अपनी मित्र मंडली का विस्तार करेंगे। आप समाजिक क्लब के सदस्य होंगे। आप अपनी भद्रता एवं अतिथ्य सत्कार के कारण अपने मित्र मंडली में प्रख्यात भी होंगे। परंतु आपको कुछ समस्याओं से मुठ-भेड़ भी करना पड़ेगा। आप अन्य लोगों के लिए किसी प्रकार का कष्ट नहीं पहुंचाने वाले बल्कि अतिशय विश्वास पात्र हैं। आप किसी के भी साथ सामंजस्य एवं सकारात्मक फल प्राप्ति की उत्कंठा रखते हैं। जब आप किसी भी मित्र के साथ प्रतिज्ञा करते हैं उसे बहुत अच्छी प्रकार निभाते हैं। परंतु क्या वे इस प्रकार पीछें भी लौट सकते है। नहीं। वास्तव में संयोगवश ऐसा कुछ घटित हो जाए उस परिस्थिति में जो आपसे संबंधित है। वे लोग आपकी आवश्यकता के समय अथवा जरूरत पड़ने पर अपने कार्य को त्याग कर आपके पक्ष में अपना योगदान करते हैं। अतएव आप उन पर अत्यंत भरोसा कर के अन्यों को उपेक्षित अथवा वहिष्कृत कर देते हैं।

यदि आप सतर्कता पूर्वक मर्यादित पथ पर चलते हैं तो आपके पारिवारिक सदस्य तथा सामान्य जन आपके गुणों एवं साहसिक प्रवृति तथा दानशीलता हेतु आपकी प्रशंसा करेंगे। आप धार्मिक प्रवृति के प्राणी हैं। आप तीर्थ स्थलों का परिदर्शन करेंगे एवं पौढ़ावस्था में आप भक्ति के प्रदर्शन में अभिरूचि रखेंगे तथा धर्म-दर्शन एवं पराविज्ञान में दक्ष हो जाएंगे। आप इस विषय में बहुत अधिक ज्ञानार्जन कर सकते हैं। यदि आप चयन करेंगे तो कोई छोटा धर्मोपदेशक भी बन सकते हैं।

आपके लिए साप्ताहिक दिनों में अनुकूल दिन गुरुवार, मंगलवार एवं रविवार का दिन

उत्तम हैं। शेष साप्ताहिक तीन दिन यथा बुधवार, शुक्रवार एवं शनिवार का दिन सामान्य फलदायी है।

आपके लिए अंकों में उत्तम एवं विश्वसनीय अंक 1, 3, 4 एवं 9 अंक है। परंतु हर दशा में 8 अंक अनुकूल नहीं है।

आपके लिए रंगों में रंग पीला, लाल, गुलाबी एवं नारंगी रंग आपके लिए अनुकूल हैं। परंतु नीला रंग आपके लिए किसी भी दशा में अनुकूल नहीं है।

ग्रह फल

सूर्य

बारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक वाम नेत्र तथा मस्तक रोगी ,आलसी, उदासीन, परदेशवासी, मित्र-द्वेषी एवं कृश शरीर होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, क्रोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

चन्द्र

द्वितीयभाव में चन्द्रमा हो तो जातक परदेशवासी, भोगी, सुन्दर मधुरभाषी, भाग्यवान्, सहनशील एवं शान्तिप्रिय होता है।

मेष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक स्थिर सम्पत्तिवान्, शूर, दृढ़ शरीरवाला, बन्धुहीन, कामी, उतावला, जलभीरू, यात्रा करने का शौकीन ,आत्माभिमानी एवं साहसी होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रुग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति

करेंगे।

मंगल

द्वितीय भाव में मंगल हो तो जातक कटुभाषी, नेत्रकर्ण रोगी, कटुतिक्त रसप्रिय, धर्मप्रेमी, चोर से भक्ति, कुटुम्ब क्लेश वाला, पशुपालक, निर्बुद्धि एवं निर्धन होता है।

मेष राशि में मंगल हो तो जातक सत्यवक्ता, तेजस्वी, शूरवीर, नेता, साहसी, धनवान्, लोकमान्य, दानी एवं राजमान्य होता है।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

बुध

बारहवें भाव में बुध हो तो जातक अल्पभाषी, विद्वान्, आलसी धर्मात्मा, वकील, सुन्दर, वेदान्ती, लेखक, दानी एवं शास्त्रज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में बुध हो तो जातक कुटुम्बहीन, दुःखी, अल्पधनी, झगड़ालू, प्रसिद्ध निर्बल स्वास्थ्य एवं प्रगति करने वाला होता है।

गुरु

लग्न (प्रथम) में गुरु हो तो जातक विद्वान् दीर्घायु, ज्योतिषी कार्यपरायण, लोकसेवक, तेजस्वी, प्रतिष्ठित, स्पष्टवक्ता, स्वाभिमानी, सुन्दर, सुखी, विनीत, पुत्रवान् धनवान्, राज्यमान, सुन्दर एवं धर्मात्मा होता है।

मीन राशि में गुरु हो तो जातक लेखक, शास्त्रज्ञ, गर्वहीन, राजमान्य, शान्त, व्यवहार कुशल, दयालु, साहित्य प्रेमी, विरासत में धन सम्पत्ति प्राप्त करने वाला, साहसी एवं उच्चपद पर आसीन होता है।

शुक्र

ग्यारहवें भाव में शुक्र हो तो जातक परोपकारी, लोकप्रिय, जौहरी, विलासी, वाहनसुखी, स्थिरलक्ष्मीवान्, धनवान् गुणज्ञ, कामी एवं पुत्रवान् होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, ध्दयरोगी, दुखी, मानी, नीच जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

नवम भाव मे शनि हो तो जातक धर्मात्मा, साहसी, प्रवासी, कृशदेही, भीरु, भ्रातृहीन, शत्रुनाशक रोगी वातरोगी, भ्रमणशील एवं वाचाल होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरध्दय, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

भावफल

पूर्ण कालपुरुष 12 भावों में विभाजित है। ज्योतिष में प्रत्येक भाव जीवन के विशेष पहलू को दर्शाता है।

प्रत्येक जन्मकुंडली 12 भावों में विभाजित है तथा प्रत्येक भाव से जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य, आयुर्दाय, धन, सम्पत्ति, आजीविका, शिक्षा, आय, सामाजिक जीवन, माता-पिता, रिपु, विवाह एवं व्यय आदि के संबंध में विस्तृत जानकारी प्राप्त होती है। भाव फल में तीन महत्वपूर्ण तथ्य निहित हैं यथा- भावस्थिति, भावेश एवं भाव के कारक। इस खंड में आपको प्रत्येक भाव से संबंधित कारकत्व के फल जानने में सहायता मिलेगी। कुंडली के अनुसार निर्दिष्ट शुभ समय में अच्छे फल की प्राप्ति होती है तो दूसरी ओर अशुभ समय में जातक कष्ट, पीड़ा तथा समस्याओं का सामना करता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। सामान्यतया मीन लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं दर्शनीय होते हैं तथा सरलता एवं समानता का इनको प्रतीक माना जाता है। इनके मुख मंडल पर सौम्यता की छाप हमेशा विद्यमान रहती है। ये विद्वान एवं बुद्धिमान होते हैं तथा नवीन विचारों का सृजन करने में समर्थ रहते हैं। इनके विचारों से सामाजिक लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। भौतिक सुख संसाधनों का उपभोग करने की इनकी प्रबल इच्छा रहती है तथा इससे इन्हें प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। इसके अतिरिक्त धनैश्वर्य से ये युक्त रहते हैं एवं विभिन्न स्रोतों से धनार्जन करने आर्थिक रूप से सुदृढ़ रहते हैं। साथ ही चिन्तन एवं मननशीलता का भाव भी इनमें रहता है।

प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन करके इनको शांति एवं सन्तुष्टि की प्राप्ति होती है। प्रेम के क्षेत्र में ये सरल एवं भावुक रहते हैं परन्तु व्यवहार कुशल होते हैं। अतः सांसारिक कार्यों में उचित सफलता अर्जित करके अपने उन्नति मार्ग प्रशस्त करने में सफल रहते हैं। इसके अतिरिक्त नवीन वस्तुओं के उत्पादन आदि में इनकी रूचि रहती है तथा इस क्षेत्र में इनका प्रमुख योगदान रहता है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान रहेंगे तथा व्यक्तित्व भी आकर्षक होगा जिससे अन्य जन आपसे प्रभावित होंगे। आपकी बुद्धि अत्यंत ही तीक्ष्ण रहेगी अतः विभिन्न शास्त्रीय विषयों का ज्ञानार्जन करके आप एक विद्वान के रूप में समाज में अपनी प्रतिष्ठा एवं आदर बढ़ाने में समर्थ होंगे। एक विचारक के रूप में भी आप सम्मानीय होंगे। यद्यपि ब्रहमादि के विषय में चिन्तनशील रहेंगे परन्तु भौतिकता के प्रति भी आकर्षण रहेगा।

लग्न में बृहस्पति के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी शांति तथा सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। आपका स्वरूप दर्शनीय एवं व्यक्तित्व आकर्षक होगा फलतः अन्य लोग आपसे प्रभावित होंगे। लेखन के प्रति आपकी रूचि होगी तथा इस क्षेत्र में आप आदर एवं प्रतिष्ठा भी अर्जित कर सकते हैं। अभिमान के भाव की आप में अल्पता होगी तथा सबके साथ विनम्रता का व्यवहार करेंगे। आप सरकार या समाज में सम्मान प्राप्त करने में सफल होंगे। आप में दयालुता का भाव भी विद्यमान होगा तथा अवसरानुकूल अन्य जनों की सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त साहित्य एवं कला के प्रति भी आपकी अभिरूचि रहेगी।

पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा का भाव होगा तथा उनकी सेवा करने में तत्पर होंगे। बाल्यावस्था में आपको संघर्ष करना पड़ेगा परन्तु युवावस्था के बाद आप सुखैश्वर्य एवं धन वैभव तथा भौतिक सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख एवं शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा होगी तथा समय समय पर धार्मिक कार्य कलापों तथा अनुष्ठानों को सम्पन्न करेंगे। इससे आपको आत्मिक शांति की प्राप्ति होगी। साथ ही बन्धु एवं मित्र वर्ग में भी आप प्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा इनसे आपको इच्छित लाभ एवं सहयोग मिलता रहेगा। इस प्रकार आप धनैश्वर्य से युक्त होकर प्रसन्नता पूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने में सफल होंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आप भावनात्मक रूप से परिवार से जुड़े रहेंगे तथा उनके प्रति पूर्ण चिन्तित रहेंगे। साथ ही उनकी खुशहाली एवं प्रसन्नता के लिए यत्नपूर्वक संसाधनों को अर्जित करेंगे परन्तु यदाकदा अपनी कोई व्यक्तिगत इच्छा को आप पारिवारिक सुख से श्रेष्ठ समझेंगे तथा पहले अपनी ही इच्छा को पूर्ण करेंगे। घर की सुन्दरता एवं आकर्षण के प्रति आप हमेशा सजग रहेंगे तथा यत्न पूर्वक घर का आकर्षक रूप बनाए रखने के लिए तत्पर रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा आपके मित्र भी गुणवान तथा शिक्षित होंगे।

विभिन्न प्रकार के स्वादों का आस्वादन करने के आप इच्छुक रहेंगे। साथ ही मिष्ठान एवं नमकीन के प्रति विशेष रुचि रहेगी। सामान्यतया आप सुन्दर एवं सुस्वादु एवं पौष्टिक भोजन ही करेंगे। धन के प्रति आपके मन में लालसा रहेगी तथा परिश्रम एवं यत्नपूर्वक धनार्जन करते रहेंगे। साथ ही कीमती आभूषणों या धातुओं को भी प्राप्त कर सकते हैं। आपकी वाणी भी ओजास्विता के भाव से युक्त रहेगी लेकिन यदा कदा मधुरता की न्यूनता होगी। आप घर में समय समय पर धार्मिक कार्य कलाप या अन्य प्रकार के उत्सवों का आयोजन करते रहेंगे। साथ ही आप किसी उत्सव के आयोजन को हाथ से नहीं जाने देंगे तथा अवश्य उसमें भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त नीति के आप ज्ञाता होंगे तथा घर वाहन तथा पुत्रों से युक्त होकर अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन एवं लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। इसके प्रभाव से आप सतर्क, सक्रिय तथा बौद्धिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी उत्तम रहेगी एवं आसानी से किसी वस्तु को भूल नहीं पाएंगे। भाई बहिनों के सुख एवं सहयोग को प्राप्त करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही वे भी साहसी एवं परोपकारी होंगे एवं आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। वे महत्वाकांक्षी भी होंगे तथा आपके पूर्ण विश्वास पात्र तथा आज्ञाकारी रहेंगे। पारिवारिक शान्ति एवं परस्पर सौहार्द के भाव को रखने के लिए समय समय पर आप एक दूसरे की गलतियों की उपेक्षा करेंगे जिससे तनाव एवं मतभेदों में न्यूनता रहेगी।

आप नेतृत्व के गुणों से सम्पन्न रहेंगे तथा समाज में सभी लोग आपकी संगठन शक्ति से प्रभावित होंगे तथा आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा दार्शनिक स्वभाव ईमानदार तथा स्पष्टवादिता आपके प्रमुख गुण रहेंगे। अतः इनके प्रभाव से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे तथा समाज में प्रभावशाली पद को अर्जित करेंगे। आधुनिक संचार सुविधाओं का भी आप प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। जैसे टेलीफोन टेलीविजन वाहन या अन्य साधन आपको सर्वदा उपलब्ध रहेंगे। संगीत एवं कला के प्रति आपका विशेष लगाव रहेगा तथा समय समय पर आप इनसे मनोंरजन करके मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। जीवन में दूर समीप की यात्राओं से आप लाभ एवं ख्याति अर्जित करेंगे तथा यात्रा के मध्य आपके कई मित्र भी बनेंगे। ज्ञानवर्द्धक पुस्तकों के अध्ययन में भी आपकी रूचि रहेगी इसके अतिरिक्त आप उच्चाधिकारी वर्ग के मित्र, प्रतापी, आतिथ्य सत्कार करने वाले, दानी यशस्वी विद्धान तथा अच्छे विचारों से सर्वदा युक्त रहेंगे ।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थभाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुखों की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक एवं भौतिक उपकरणों से भी युक्त रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आप एक वैभव तथा ऐश्वर्य शाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका उच्च स्तर बना रहेगा।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति के स्वामित्व को प्राप्त करेंगे। आपको किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति की भी चल अथवा अचल सम्पत्ति मिलेगी। इससे आपके ऐश्वर्य एवं वैभव में वृद्धि होगी तथा सम्पन्नता बनी रहेगी। आप अपनी योग्यता एवं बुद्धिमता से भी धन एवं सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके अतिरिक्त आपको अचल की अपेक्षा चल सम्पत्ति से विशेष लाभ होगा। अतः वांछित लाभ अर्जित करने के लिए आप चल सम्पत्ति पर निवेश कर सकते हैं।

जीवन में आपको उत्तम आवास की प्राप्ति होगी। आपका घर विशाल, सुन्दर एवं आकर्षक होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से परिपूर्ण होगा। यह भौतिक उपकरणों से भी सुसज्जित रहेगा। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से संबंधों में मधुरता रहेगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी सुन्दर, सुशील, बुद्धिमान एवं शिक्षित महिला होंगी तथा उनका स्वभाव भी सरल होगा। कर्तव्यपरायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा अपनी व्यवहार कुशलता से वे परिवार की सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि करेंगी। सभी पारिवारिक जन उनको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा तथा अवसरानुकूल आपको वांछित आर्थिक एवं नैतिक सहयोग प्रदान करेंगी। आपकी चहुंमुखी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान होगा। आप भी उनके प्रति श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रखेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे। इस प्रकार आप एक दूसरे के पूर्ण शुभचिन्तक होंगे तथा आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा स्वपरिश्रम एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंक प्राप्त करके सफलताएं अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा अच्छे अंको से उतीर्ण करेंगे। इससे आपके उज्ज्वल भविष्य के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा मन में आत्मविश्वास के भाव में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी व्यावसायिक पाठ्यक्रम में उच्चशिक्षा या डिग्री भी अर्जित कर सकते है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्म समय में पंचमभाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः इसके शुभ प्रभाव से आप तीव्र एवं निर्मल बुद्धि के स्वामी होंगे तथा आपके कार्य कलापों पर स्पष्ट रूप से बुद्धिमता की छाप विद्यमान होगी जिससे अन्य सभी लोग आपसे प्रसन्न तथा प्रभावित होंगे। आप में शीघ्र एवं सटीक निर्णय लेने की शक्ति भी विद्यमान होगी जिससे आप समय समय पर लाभान्वित होते रहेंगे। आप कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान भी अपनी तीव्र बुद्धि से शीघ्र ही करने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य दर्शन एवं धर्मशास्त्र में आपकी पूर्ण रूचि होगी तथा इनका अध्ययन करके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे। इसके अतिरिक्त आधुनिक विज्ञान राजनीति, गणित एवं ज्योतिष शास्त्र के भी आप ज्ञाता होंगे जिससे समाज में आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचम भाव में कर्क राशि के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में आपकी रूचि होगी परन्तु आपका प्रेम उच्चादर्शो से युक्त होगा तथा उसमें मर्यादा, नैतिकता एवं यर्थाथवादी भाव विद्यमान होगा। इसमें भावनात्मक आकर्षण की भी प्रबलता होगी। अतः आपके प्रेम-प्रसंग की परिणिति विवाह के रूप में भी हो सकती है। इससे आपका दाम्पत्य जीवन सुखमय होगा तथा प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

जीवन में आपको यथोचित समय पर संतति की प्राप्ति होगी तथा पुत्रों की संख्या अधिक होगी। आपकी संतति बुद्धिमान, गुणवान, प्रतिभाशाली एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से जीवन में वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करके सम्मान जनक स्तर प्राप्त करने में समर्थ होंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथा उनकी आज्ञा का पालन करना वे अपना परम कर्तव्य समझेंगे। वे माता-पिता की सलाह एवं सहयोग से ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न करेंगे। इससे परस्पर सदभाव एवं विश्वास की भावना बनी रहेगी। माता की अपेक्षा पिता के प्रति बच्चों के मन में विशिष्ट लगाव होगा तथा उनके माध्यम से ही वे अपनी समस्याओं का समाधान करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में तन-मन-धन से माता-पिता की सेवा करेंगे तथा उन्हें अपनी ओर से किसी भी प्रकार की कमी नहीं होने देंगे इससे आपको बच्चों पर गर्व की अनुभूति होगी।

विद्याध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति बुद्धिमान एवं प्रतिभाशाली होगी तथा प्रारंभ से ही शिक्षा के क्षेत्र में वे विशिष्ट उपलब्धियों को अर्जित करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा-दिक्षा का उच्च स्तर पर प्रबन्ध करेंगे तथा आधुनिक परिवेश में शिक्षा प्रदान करेंगे। फलतः बच्चे योग्य बनकर आपकी महत्वकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे। इसके अतिरिक्त वे सुन्दर, स्वस्थ एवं आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा अपनी व्यवहार कुशलता एवं कार्य-कलापों से अन्य सामाजिक जनो को प्रभावित करके उनसे स्नेह तथा सम्मान अर्जित करेंगे। इस प्रकार आपको जीवन में संतति का वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। अतः इसके प्रभाव से आप रक्त सम्बन्धियों से समय समय पर विरोध का सामना करेंगे साथ ही उनसे आपको अनुकूल सहयोग भी नहीं मिलेगा। आपके उत्कृष्ट कार्य कलापों से उनके मन में ईर्ष्या की भावना उत्पन्न होगी। साथ ही यदा कदा वरिष्ठ अधिकारियों के विरोध के कारण भी आपको कार्य क्षेत्र में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। आपके शत्रु उच्चाधिकार प्राप्त व्यक्ति होंगे जो समाज या सरकार के विभिन्न क्षेत्रों से रहेंगे तथा वे हमेशा आपके मान सम्मान में न्यूनता करने के लिए तत्पर रहेंगे। लेकिन आप अपनी बुद्धिमता, चतुराई शक्ति तथा अन्य गुप्त सूत्रों से उनका सामना तथा पराजित करने में सफल सिद्ध होंगे।

सेवक वर्ग की सेवा प्राप्त करने के लिए आप प्रायः उत्सुक रहेंगे तथा इनके बिना आपके कई कार्य पूर्ण भी नहीं होंगे। आपके नौकर अच्छे होंगे तथा आपकी इच्छा के अनुसार कार्य करने में वे सर्वदा तत्पर रहेंगे लेकिन वे आपके व्यक्तिगत गुप्त रहस्यों को अन्य जनों के समक्ष उजागर करेंगे। साथ ही वे यदा कदा चोरी आदि करने के लिए भी तत्पर हो सकते हैं। अतः कीमती वस्तुओं को उनकी पहुँच से बाहर रखना चाहिए। आप अपने उच्च स्तर को बनाने के लिए अनावश्यक व्यय करेंगे यह व्यय आपकी आय से अधिक होगा। यद्यपि आप सोच समझकर व्यय करेंगे परन्तु यदा कदा व्ययाधिक्य के कारण आपको ऋण भी लेना पड़ सकता है लेकिन समय पर वापस न करने में आपके मान सम्मान में न्यूनता आएगी। अतः ऋण आदि लेने की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

मामा मामियों से आपको समय समय पर इच्छित सहयोग प्राप्त होगा साथ ही आपकी वे पूर्ण रूप से सहायता करते रहेंगे परन्तु कभी कभी वे सवर्थवश आपकी मदद करेंगे जिससे आपके स्वाभिमान को ठेस पहुंचेगी। दीवानी या फौजदारी मुकद्दमों में आप सामान्यतया धन तथा समय की ही बर्बादी करेंगे। लेकिन यदि आप नियमानुसार इन कार्यो को करेंगे तो इनमें आपको इच्छित लाभ तथा विजय प्राप्त हो सकती है । साथ ही उत्तम स्वास्थ्य के खान पान का उचित ध्यान रखना चाहिए तथा गर्म पदार्थो की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए ।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है तथा केतु भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया कन्या राशि की सप्तम भाव में स्थिति से जातक का सहयोगी प्रिय वक्ता स्वच्छता प्रिय सौभाग्यवान एवं विविध कार्यो में चतुर होता है केतु के प्रभाव से उसमें उग्रता तेजस्विता साहस एवं पराक्रम का भाव रहता है लेकिन कर्तव्यों के प्रति उसमें उपेक्षा की भावना रहती है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी। सांसारिक कार्यो को वह परिश्रम एवं पराक्रम से सम्पन्न करेंगी तथा उनके साहसिक कार्यो से अन्य लोग भी प्रभावित होंगे। स्वच्छता के प्रति वे विशेष ध्यान देंगी तथा उज्जवल वस्त्रों को धारण करेंगी। अपनी बोलचाल में यत्नपूर्वक मधुर शब्दों का उपयोग करेंगी। लेकिन केतु के प्रभाव से वह अपने कर्तव्यों की उपेक्षा करेंगी तथा परिवार तथा समाज के प्रति कर्तव्यों का पालन नहीं करेंगी जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में कमी आएगी।

आपकी पत्नी लालिमा युक्त गौरवर्ण की सुंदर महिला होंगी तथा उनका कद भी उन्नत होगा। शारीरिक संरचना उनकी पतली होगी परन्तु अन्य अंगों में पुष्टता तथा सुडौलता विद्यमान होगी जिससे उनके सौन्दर्य में वृद्धि होगी एवं व्यक्तित्व भी आकर्षक लगेगा। इसके अतिरिक्त संगीत एवं कला आदि में भी रूचि होगी तथा पाश्चात्य साहित्य का भी अनुकरण करेंगी।

सप्तम भाव में केतु के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व वार्ताओं में भी गतिरोध उत्पन्न होंगे। आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा तथा प्रेम विवाह की भी संभावना रहेगी। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम एवं आकर्षण बना रहेगा। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यो को आपसी सहयोग एवं सहमति से सम्पन्न करेंगे। लेकिन पत्नी की तेजस्वी प्रवृति से यदा कदा अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होंगी जिससे संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा। अतः ऐसे समय पर संयम से कार्य लेना चाहिए।

आपका विवाह साधारण परिवार में होगा एवं सामाजिक तथा आर्थिक रूप से वे सामान्य रहेंगे। विवाह के बाद सास ससुर से आपके अच्छे संबंध कम ही होंगे तथा एक दूसरे के प्रति सम्मान एवं स्नेह की भाव की उपेक्षा रहेगी। इसके अतिरिक्त महत्वपूर्ण कार्यो एवं अवसरों पर एक दूसरे से सलाह सहमति या आवगमन भी कम ही होगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं होगा तथा उनकी वह यथोचित सेवा नहीं करेंगी। देवर एवं ननद भी उनसे सन्तुष्ट नहीं रहेंगे तथा उन्हें यथोचित सम्मान तथा सहयोग कम ही प्रदान करेंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति प्रतिकूल रहेगी। अतः साझेदारी के कार्यो की जीवन में यत्नपूर्वक उपेक्षा ही करनी चाहिए।

आयु, दुर्घटना एवं बीमा

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आध्यात्म तथा ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में विश्वास करेंगे। साथ ही आपकी पूर्वाभास तथा अन्तर्प्रज्ञा शक्ति भी प्रबल रहेगी जिससे आप सही रूप से भविष्यवाणियां करने में समर्थ हो सकेंगे। इस क्षेत्र में आपकी काफी रूचि रहेगी तथा प्रयत्नपूर्वक इसका ज्ञान अर्जित करेंगे एवं इसमें शोधकार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। इससे आपको धनार्जन भी होगा एवं समाज में आपको प्रसिद्धि भी प्राप्त होगी। साथ ही इससे आपके मित्रों की संख्या में भी वृद्धि होगी तथा कई आध्यात्मिक एवं पराविद्या वेता आपके मित्र होंगे ।

आपको पैतृक सम्पत्ति की भी प्राप्ति होगी तथा इससे आपको काफी लाभ होगा। साथ ही जमीन जायदाद के कार्य से आपको समय समय पर लाभ भी होता रहेगा। आपके कार्य से लोग सामान्यतया प्रसन्न रहेंगे तथा आपको मुंह मांगा दाम देंगे। शादी से भी आपको उचित लाभ होगा तथा किसी प्रकार से जायदाद की प्राप्ति भी हो सकती है। इसमें आपको दहेज के रूप में प्रचुर मात्रा में धन आभूषण एवं अन्य आधुनिक उपकरण उपहार स्वरूप प्राप्त होंगे। इससे आप तथा आपकी पत्नी ससुराल वालों के प्रति कृतज्ञ रहेंगे। बीमे आदि से भी आपको समय समय पर लाभ होता रहेगा अतः न्यूनाधिक रूप से आपको बीमा अवश्य करवाना चाहिए। आपकी कुंडली में चोरी या दुर्घटना के कोई विशेष अवसर नहीं आएंगे। यदि कोई ऐसी घटना घट भी गई भी तो उसका मामूली प्रभाव होगा। आपकी आयु अच्छी रहेगी तथा उत्तम स्वास्थ से युक्त होकर आप अपना सामान्य जीवन व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है अतः इसके प्रभाव से प्रारंभ में धर्म के प्रति आपके मन में कोई विशेष श्रद्धा नहीं रहेगी लेकिन आयु के साथ साथ आप मन्दिर या तीर्थ स्थानों पर जाकर धार्मिक कार्य कलाप सम्पन्न करेंगे तथा दैनिक पूजा को भी आरम्भ करेंगे। भाग्य आपके लिए प्रायः सहायक रहेगा। लम्बी यात्राओं के लिए आप हमेशा रूचिशील रहेंगे तथा अध्यात्म, ज्यौतिष या तंत्र मंत्र संबंधी शास्त्रों में भी आपकी रूचि रहेगी एवं परिश्रम पूर्वक संबधित ग्रंथों का अध्ययन करके इसका ज्ञान प्राप्त करेंगे। आप अपने निवास स्थान में पूजा स्थल का भी निर्माण करवायें। परोपकार संबंधी कार्यो तथा भगवान के प्रति पूर्ण श्रद्धा रहेगी। इसके साथ ही आप कई शुभ कार्य क्रमों को सम्पन्न करेंगे तथा हमेशा प्रसन्नचित रहेंगे।

युवावस्था में आप ध्यान, योगादिक्रियाओं में भी रूचि लेंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनको सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे संबंधित ग्रंथों को पढ़ेंगे। आपकी अन्तर्प्रज्ञा शक्ति प्रबल रहेगी जिससे आपको पूर्वाभास या भविष्य संबंधी जानकारियां हो सकती है। आप अपने जीवन में निश्चय ही कोई धार्मिक एवं पुण्य संबधी कार्य को सम्पन्न करेंगे जैसे मंदिर अस्पताल या तालाब आदि का निर्माण। साथ ही अन्यत्र भी दानादि कार्य करते रहेंगे। प्रारंभिक अवस्था में लम्बी यात्राओं को सम्पन्न कर सकते है । ये यात्राएं शिक्षा संबंधी भी हो सकते है या व्यापारिक एवं धार्मिक कार्य संबंधी भी लेकिन इनसे आपको सम्मान लाभ एवं ख्याति अवश्य प्राप्त होगी तथा समाज में अपने सत्कर्मों के लिए जाने जाएंगे। वृद्धावस्था में पौत्रों से आपको सौभाग्य, सुख एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होगी तथा अपने पूर्व जन्मों के पुण्य के प्रभाव से आपका यह जीवन सुख एवं ऐश्वर्य से युक्त होकर व्यतीत होगा।

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशमभाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है धनु राशि अग्नितत्व राशि है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्य क्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान के साथ साथ श्रमसाध्य भी होगा तथा स्वपरिश्रम एवं पराक्रम से आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। साथ ही परिश्रमी स्वभाव होने के साथ आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय में अच्छी सफलता प्राप्त करने में समर्थ होंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र लिपिकीय कार्य, लेखाकार, लेखन, साहित्य, चित्रकारी, जिल्दसाजी, शिक्षक, ज्योतषी, पुस्तक विक्रेता सम्पादक, संशोधक, अनुवादक, संदेश वाहक तथा टेलिफोन आपरेटर आदि कार्य शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको उन्नति मार्ग सदैव प्रशस्त होंगे तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों का आपको सामना नहीं करना पड़ेगा। अतः आपको अपनी चहुँमुखी उन्नति एवं उज्जवल भविष्य के लिए उपरोक्त विभागों में ही अपनी अजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए एजैंसी, दलाली, पुस्तक विक्रेता या प्रकाशन कार्य, अगरबत्ती, पुष्पमालाएं, कागज के खिलौने,आदि से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा। साथ ही चित्रकारी, कला आदि के स्वतंत्र व्यवसाय से भी आप लाभ एवं उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। अतः आप व्यापार करने के इच्छुक हो तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही आपको अपने कार्य का प्रारम्भ करना चाहिए जिससे बिना किसी बाधा के आप उन्नति कर सकेगे।

जीवन में आपको मानसम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी तथा अपनी बुद्धिमता एवं बिद्वता से आप किसी सामाजिक पद को भी अर्जित करने में समर्थ होंगे। समाज में आप आदरणीय एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। साथ ही दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि होगी। आप किसी सामाजिक, सांस्कृतिक या धार्मिक संस्था में सम्मानित पदाधिकारी या सदस्य भी हो सकते हैं जिससे आपके सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होगी तथा जीवन में अर्जित उपलब्धियों से आप सन्तुष्ट होंगे।

आपके पिता बुद्धिमान विद्वान एवं मृदुस्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा समाज में उनका पूर्ण प्रभाव होगा। आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव होगा तथा उच्चशिक्षा का वे यथोचित प्रबंध करेंगे तथा आपको एक योग्य व्यक्ति के रूप में देखना चाहेंगे। आपको कार्यक्षेत्र की प्रारभिक उन्नति एवं सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा। साथ ही आप भी योग्य एवं परिश्रमी व्यक्ति होंगे तथा अपने पराक्रम से उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे तथा पिता के सम्मान में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधो में भी मधुरता होगी तथाा वैचारिक एवं सैद्धांतिक समानता बनी रहेगी इसके अतिरिक्त आप में आज्ञाकारिकता का भाव भी होगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आपसी सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे।

लाभ, मित्र, समाज एवं ज्येष्ठ भ्राता

आपके जन्म समय में एकादश भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप किसी भी कार्य को सोच समझकर तथा व्यापारिक दृष्टि से सम्पन्न करेंगे। साथ ही मानसिक शक्ति की भी आप में प्रबलता रहेगी। प्रबन्ध एवं संगठन शक्ति भी आप में विद्यमान रहेगी तथा एक पराक्रमी परिश्रमी तथा योग्य व्यक्ति होंगे अतः जीवन में अपनी अधिकांश इच्छाओं तथा आकांक्षाओं को पूर्ण करने में समर्थ रहेंगे। आप एक दूरदर्शी एवं महत्वाकांक्षी पुरूष भी होंगे तथा प्रसिद्ध धन-ऐश्वर्य एवं मान सम्मान अर्जित करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे । जीवन में उन्नति या लाभार्जन का आप कोई भी अवसर नहीं छोड़ेगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी तथा आय स्रोतों में नित्य वृद्धि होगी जिससे प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। आर्थिक क्षेत्र में आप किसी भी प्रकार का खतरा नहीं उठाएंगे। लकड़ी या लोहे से संबंधित व्यापार या कार्य से आप विशिष्ट लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से जीवन में विशिष्ट लाभ सहयोग एवं स्नेह प्राप्त होगा तथा वे आपका पुत्रवत पालन करेंगी तथा समय समय पर मार्ग दर्शन भी करती रहेंगी। आपकी मित्रता स्थाई रहेगी तथा मित्रता का क्षेत्र अधिक विस्तृत नहीं होगा परन्तु मित्रवर्ग के मध्य आदरणीय विश्वसनीय तथा प्रतिष्ठा से युक्त रहेंगे। समाज में आपका स्तर उच्च रहेगा तथा सभी सामाजिक जनों से आपके अच्छे संबंध रहेंगे एवं उनकी सेवा तथा भलाई करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। अतः अपने क्षेत्र या समाज में आपको अच्छी ख्याति प्राप्त होगी लेकिन यदा कदा बाएं कान संबंधी परेशानी से आप कष्ट की अनुभूति कर सकते है परन्तु आपका सामान्य जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा।

विदेश यात्रा, हानि, बन्धन एवं कर्ज

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में कुम्भ राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आपकी अच्छी व्यापारिक क्षमता रहेगी तथा धन एवं शक्ति से हमेशा युक्त रहेंगे। वृद्धावस्था में आप अपने बच्चो या किसी अन्य संबंधी पर आश्रित नहीं रहेंगे क्योंकि पहले से ही इस समय के लिए पूर्ण धन सुरक्षित रखेंगे। अन्य जनों के प्रति आपके मन में सहानुभूति रहेगी तथा यत्नपूर्वक उनकी आर्थिक तथा अन्य रूप से सहायता करते रहेंगे।

आपको मध्यमवस्था में पूर्ण धन मान एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा धन का आप बुद्धिमता एवं सावधानी पूर्वक उपयोग करेंगे। इस प्रकार आपकी आर्थिक स्थिति प्रायः अच्छी रहेगी। परिवार के प्रति आप पूर्ण रूप से समर्पित रहेंगे तथा उनकी सुख सुविधा रहन सहन एवं पठन पाठन का स्तर बढ़ाने के लिए नित्य यत्नशील रहेंगे तथा ऐसे कार्यो पर आपका प्रचुर मात्रा में व्यय होगा। सांसारिक सुख संसाधनों तथा भौतिक उपकरणों के प्रति भी आपके मन में तीव्र लालसा रहेगी तथा इन पर भी आप प्रचुर मात्रा में श्रवयय करेंगे। साथ ही आवास संबंधी साज सज्जा पर भी उपयुक्त व्यय होगा। जिससे आर्थिक स्थिति पर इसका कोई प्रभाव नहीं होगा। इसके अतिरिक्त दान या धार्मिक कार्य कलापों पर भी समय समय पर आपका व्यय होता रहेगा।

यात्राओं के प्रति भी आपकी रूचि बनी रहेगी तथा समय समय पर व्यवसाय या कार्य संबंधी याात्राएं होगी जिससे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। इसके अतिरिक्त व्यापारिक तथा भ्रमण संबधी आपकी जीवन में विदेश यात्रा की भी संभावना रहेगी।

नक्षत्र फल

नक्षत्र, राशि एवं पाया का संबंध चंद्र से है एवं ये आपके स्वभाव, व्यवहार, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के निधारण में महती भूमिका अदा करते हैं।

नक्षत्रफल आपके स्वभाव, व्यक्तित्व, चरित्र, योग्यता, भाग्य एवं भविष्य के संबंध में सटीक फलादेश बताता है। वैदिक अंक ज्योतिष में व्यक्तित्व के बारे में पता करने के लिए जन्म नक्षत्र की सहायता मुख्य रूप से ली जाती है। भारतीय महर्षियों का मानना रहा है कि नक्षत्र में ही हमारे कर्म के फल संचित रहते हैं। नक्षत्र, राशि एवं पाया चंद्र से संबंधित हैं तथा ये हमारे व्यक्तित्व, चरित्र, व्यवहार, योग्यता आदि का चित्रण करते हैं।

नक्षत्रफल

आप भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्म राशि मेष तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्रानुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, गण मनुष्य, नाडी मध्य, योनि गज तथा वर्ग मृग होगा। भरणी नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आपका राशिनाम "ले" से होगा। यथा लेखराज।

भरणी नक्षत्र में जन्म होने के कारण आप मनोरंजन के कार्यक्रमों यथा गीत,संगीत, नाटक तथा खेल कूदों के अधिक शौकीन होंगे तथा इन्हीं कार्यों पर अपना अधिकांश समय व्यतीत करेंगे। जल से आप नैसर्गिक रूप से भयभीत रहेंगे। यहां तक स्नानादि की इच्छा का भी यदा कदा अभाव रहेगा। आप चंचल प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा लोगों से मधुरता का व्यवहार अल्प मात्रा में ही करेंगे।

सदापकीर्ति र्हि महापवादैर्नाना विनोदैश्च विनीतकालः।
जलातिभीरुश्चपलः खलश्च प्राणी प्रणीतोभरणीजातः।।
जातकाभरणम्

अर्थात भरणी में उत्पन्न जातक लोकोपवाद से अपयश पाने वाला, अपने समय को नाना प्रकार के खेल या विनोद द्वारा व्यतीत करता है। यह जल से भीरू, चंचल प्रवृति तथा दुष्ट स्वभाव वाला होता है।

आप अपने संकल्प के पक्के होंगे तथा जो निश्चय एक बार कर लेंगे उसे पूरा करके ही छोडेंगे। सत्य का आप हमेशा पालन करेंगे। शरीर आपका स्वस्थ रहेगा तथा रोगों का अभाव रहेगा तथापि यदा कदा रोग ग्रस्त रहेंगे। कार्य आप जो भी करेंगे चतुराई से सम्पन्न करेंगे तथा सामान्य जीवन आपका समस्त सुखों से पूर्ण होकर व्यतीत होगा।

कृत निश्चयः सत्यारुग्दक्षः सुखितश्च भरणीषु।
बृहज्जातकम्

अर्थात् भरणी नक्षत्र में जन्मा जातक सत्यवक्ता, बात का पक्का, रोगरहित और कार्यकलाप में चतुर होता है।

कभी कभी आपका स्वभाव अनावश्यक रूप से जिददी बन जाता है। जो हठ करते हैं उसे छोडते नही हैं। इससे अन्य जनों को भी परेशानी होगी। सम्पत्ति या धन दौलत तथा वैभव का आपको जीवन भर अभाव नहीं रहेगा। धनार्जन पर्याप्त मात्रा में होगा तथा शरीर की आरोग्यता बनी रहेगी। मुखाकृति भी आपकी निश्चित रूप से दर्शनीय होगी।

अरोगी सत्यवादी च सम्पद्युक्तो दृढब्रतः।
भरण्यां जायते लोकः सुमुखश्च सुनिश्चितम्।।
जातक दीपिका

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न मनुष्य रोग रहित, सत्यवादी, सम्पत्तिशाली और हठव्रती होता है। उसका मुख सुन्दर होता है। यह सुनिश्चयी होते है।

आप समय समय पर मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता का अनुभव करेंगे तथा लोग आपके चरित्र पर भी कभी कभी सन्देह प्रकट करेंगे। आप के हृदय में यदा कदा कठोरता का भाव भी रहेगा। आपके पास धन पर्याप्त मात्रा में रहेगा तथा संसार में धनवान बन कर रहेंगे।

याम्यर्क्षे विकलोळन्यदारनिरतः क्रूरः कृतध्नो धनी।
जातकपरिजातः

अर्थात् भरणी नक्षत्र में उत्पन्न बालक शारीरिक तथा मानसिक रूप से व्याकुल, दूसरे की स्त्री में अनुरक्त, क्रूर तथा कृतध्न एवं धनी होता है।

आप का जन्म रजत पाद में हुआ है। अतः धन सम्पति से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आपके पास इसका अभाव नहीं रहेगा। साथ ही समस्त भौतिक सुखसंसाधनों को आप प्राप्त करेंगे एवं सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा दानशीलता की प्रवृति भी आपके मन में नित्य विद्यमान रहेगी। साथ ही सहनशीलता के भाव से भी आप युक्त रहेंगे। आप अपने सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रायः सफलता ही अर्जित करेंगे। आप की शारीरिक कान्ति दर्शनीय रहेगी तथा मुखाकृति सुन्दर एवं आकर्षक होगी। समाज में आप एक आदरणीय एवं श्रद्धेय पुरूष समझें जाएंगे। आप विस्तृत परिवार के भी स्वामी होंगे। अपने सम्भाषण में आप नित्य प्रिय एवं मधुर वाणी का उपयोग करेंगे तथा सभी प्रकार के सांसारिक सुखों का प्रसन्नता पूर्वक उपभोग करेंगे। विद्याध्ययन में आप रूचिशील रहेंगे तथा एक विद्वान के रूप में भी आप ख्याति प्राप्त करेंगे। इसके साथ ही आप अल्प मात्रा में बोलना पसन्द करेंगे।

मेष राशि में पैदा होने के कारण आप अल्प मात्रा में भोजन करने वाले होंगे। तथा आप अपने अन्य भाई-बहनों में अकेले श्रेष्ठ रहेंगे।

मेषस्थे यदि शीतगौ च लघुभुक् कामी महोत्थाग्रजो।।
जातकपरिजातः

आपका शरीर ताम्रवर्ण के समान गौरवर्ण का होगा तथा आखें लालिमा युक्त गोलाकार होंगी। आपके सिर पर किसी चोट या घाव का निशान हो सकता है।

सिर पर अल्प केश होंगे तथा हाथ पैर कमल की कान्ति के समान सुन्दर होंगे। जल से आप स्वभाविक रूप से भय करेंगे। धन को आप सम्मान समझेंगे तथा उसे इससे भी अधिक महत्व प्रदान करेंगे। साहस एवं बुद्धि का आपके पास अभाव नहीं होगा जो भी कार्य करेंगे साहस तथा बुद्धिबल से उसे पूर्ण करेंगे। पुत्रों, सहयोगियों तथा मित्रों की आपके पास कभी भी कमी नहीं होगी। ये बडी संख्या में आपके साथ हमेशा रहेंगे। स्त्री वर्ग से आप पराजित रहेंगे। आपका व्यवहार अन्य लोगों के प्रति भी स्नेहशील रहेगा। जिससे आप समाज में मान सम्मान तथा आदर प्राप्त करेंगे।

सौववर्णाङ्गः स्थिरस्वः सहजविरहितः साहसी मानभद्रः।

कामार्तः क्षामजानुः कुनखतनुकचश्चञ्चलो मानवित्तः।।
पद्माभैः पाणिपादैर्वितत सुतजनो वर्तुलाकारनेत्रः।
सस्नेहतोयभीरू व्रणविकृतशिराः स्त्रीजितो मेष इन्दौ।।
सारावली

आप शीघ्र ही नाराज हो जाएंगे परन्तु जल्दी प्रसन्न भी हो जाएंगे यह आपकी स्वाभाविक प्रवृति होगी। आप भ्रमण प्रिय होंगे तथा सैर सपाटा करना आपको अच्छा लगेगा। आपकी हथेली में शौर्य सूचक चिन्ह यथा चक्र पताका आदि हो सकते हैं। आप स्त्रियों के अति प्रिय तथा सम्माननीय होंगे। दूसरे लोगों की सेवा करना तथा उन्हे सहयोग प्रदान करना आप अपना विशिष्ट कर्तव्य समझेंगे चाहे आपकी परिस्थितियां कैसी ही हों इसकी आप चिन्ता नहीं करेंगे।

वृतातामृदृगुष्णशाकलघुभुक् क्षिप्रप्रसादोटनः।
कामी दुर्बलजानुरास्थिरधनः शूरोङ्गना बल्लभः।।
कुनखी व्रणाङ्कितशिरा मानी सहोत्थाग्रजः।
शक्त्यापणितलेडतोळति चपलस्तोये च भीरूः क्रिये।।
बृहज्जातकम्

धन को अनावश्यक महत्व प्रदान करना से आपके बुजुर्ग तथा श्रेष्ठ संबंधी असन्तुष्ट होंगे। इसके फलस्वरूप या तो वे आपसे अलग हो सकते हैं या आप खुद उनसे अलग होंगे। आपके घर के सारे कार्य चूंकि अपनी पत्नी के सलाह से ही सम्पन्न होंगे तथा दूसरे लोगो की राय को कोई महत्व नहीं देंगे। अतः यह भी एक अलगाव का मुख्य कारण बनेगा। धन पुत्र तथा वैभव से आप हमेशा युक्त रहेंगे तथा समाज में अपने वैभव से कीर्ति प्राप्त करेंगे।

स्थिरधनोः रहितः सुजनैर्नरः सुतयुतः प्रमदा विजितो भवेत।
अजगतो द्विजराज इतीरितं विभुतयाद्भुतया स्वसुकीर्तिभाक्।।
जातकाभरणम्

भ्रमण के लिए आप ऐसे स्थान पर जाना पसन्द करते हैं जो अगम्य हो अर्थात् जहां आसानी से नहीं पहुँचा जा सकता हो। सामाजिक संबंध भी आपके विस्तृत होंगे। अतः अवसरानुकूल आप अभक्ष्य पदार्थों अर्थात् मांस, मदिरा आदि का भी भक्षण या सेवन कर सकते हैं।

मेषे त्वगम्यागमनप्रियश्च त्वभक्ष्यभक्षयोः।
वृहत्पाराशर होराशास्त्र

आपके स्वभाव में कभी कभी उग्रता की झलक भी देखने को मिलेगी। लेकिन जब कभी आप अनावश्यक उग्रता का प्रर्दशन करेंगे आपके लिए समस्याएं उत्पन्न होंगी। आपकी प्रवृति चंचल होगी तथा मौका पड़ने पर आप मिथ्या भाषण भी करेंगे।

वृतेक्षणो दुर्बलजानुरुग्रो भीरूर्जले स्याल्लघुभुक् सुकामी।
संचारशीलश्चपलोडनृतोक्ति व्रणाङ्किताङ्गः क्रियभे प्रजातः।।
फलदीपिका

यौगिक क्रियाएं आपको रूचिकर लगेगी। आपके सिर में अल्प मात्रा में केश होंगे। पित्त या गरमी प्रदान करने वाले प्रदार्थो का परहेज रखे नहीं तो मस्तिष्क विकार का भी योग बनता है। साथ ही शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

भवति विकलकेशो योगकर्मानुशीलो।
न भवति सुसमृद्धो नैव दारिद्रय युक्तः।।
व्रजति च सविकारं भूतियुक्तः प्रलापी।
संभवति पुरूषोळयं मेष राशौ।।
जातक दीपिका

आपका जन्म मनुष्य गण में हुआ है। अतः आप धार्मिक प्रवृति के व्यक्ति होंगे। ब्राहमणों तथा देवताओं की आप श्रद्धापूर्वक सेवा करेंगे। अभिमान भी आपके स्वभाव में रहेगा। धन की आपके पास कमी नहीं रहेगी। दया का भाव आपके अन्तःकरण में विद्यमान रहेगा तथा दीन दुःखियों के प्रति आप विशेष रूप से दयालु रहेंगे। आप शरीर से वलिष्ठ रहेंगे। आप कई कलाओं या कार्यों में निपुण हो सकते हैं। ज्ञानार्जन में आपकी गहन रूचि होगी। शरीर आपका कान्तियुक्त रहेगा तथा आपके द्वारा कई लोगों को सुख प्राप्त होगा।

लोलनेत्रः सदा रोगी, धर्मार्थकृत निश्चयः।
पृथुजङ्घः कृतघ्नश्च निष्पापो राजपूजितः।।
कामिनीहृदयानन्दो दाता भीतो जलादपि।
चण्ळकर्मा मृदुश्चान्ते मेषराशौ भवेन्नरः।।
मानसागरी

मान सम्मान से आप हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा आजीवन विपुल धन के स्वामी बने रहेंगे। आखें आपकी बडी बडी होंगी तथा निशानेबाजी में सिद्धहस्त होंगे। शरीर का वर्ण गौरवर्ण होगा तथा नगरवासियों को आप वश में करने वाले होंगे। आप नगर के सम्मानीय नेता या अधिकारी भी हो सकते हैं।

देवद्विजार्चाभिरतोभिमानी दयालुर्बलवान कलाज्ञः।
प्राज्ञः सुकान्ति सुखदो बहूनां मर्त्याभवे मर्त्यगणे प्रसूतः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मनुष्य गण में उत्पन्न जातक ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त, अभिमानी, दयालु, बलवान, कला का ज्ञाता, विद्वान, कान्तियुक्त तथा बहुत से मनुष्यों को सुख तथा आश्रय प्रदान करने वाला होता है।

गजयोनि में जन्म लेने के कारण आप राजा के प्रिय होंगे अर्थात् बडे बडे मंत्रियों तथा अधिकारियों से आपके मित्रतापूर्ण संबंध होंगे तथा वे सब आपका सम्मान करेंगे। आप आत्मबल, बाहुबल तथा बुद्धिबल से सुशोभित रहेंगे तथा अपने सारे कार्य आप अपने ही बल पर सुसम्पन्न करेंगे। समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप उपभोग करेंगे। आप किसी मंत्री या उच्चाधिकारी

के सहयोगी या खुद भी उच्चाधिकारी हो सकते हैं। आपकी प्रवृति उत्साही रहेगी तथा इसी प्रवृति से आप उन्नत शिखर पर पहुचेंगे।

राजमान्यो बली भोगी भूपस्थान विभूषणः।
आत्मोत्साही नरो जातः गजयोनौ न संशयः।।
मानसागरी

अर्थात् गजयोनि में उत्पन्न जातक राजमान्य, बली, भोगी, राज्यस्थान को सुशोभित करने वाला तथा उत्साही होता है।

आपके जन्भ काल में चन्द्रमा द्वितीय भाव में स्थित है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं कोई विशेष शारीरिक रूग्णता नहीं रहेगी। वे आपको हमेशा धनार्जन एवं विद्याध्ययन संबंधी कार्यों में पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। साथ ही आपकी पारिवारिक उन्नति एवं पालन करने में भी उनकी मुख्य भूमिका रहेगी यदा कदा वे आपको नैतिक शिक्षा भी देंगी तथा आपके प्रति उनके हृदय में पूर्ण वात्सल्य का भाव रहेगा। इसके साथ ही जीवन में कई महत्वपूर्ण कार्यों की सिद्धि आप उनके सहयोग से ही करेंगे।

आप की भी माता के प्रति हादिक श्रद्धा रहेगी एवं उनकी आज्ञा पालन करने में आप गौरव की अनुभूति करेंगे। साथ ही जीवन में सर्वप्रकार से उनकी सेवा करना आप अपना कर्तव्य समझेंगे तथा समयानुसार उनको आर्थिक सहयोग भी प्रदान करते रहेंगे। अतः आपकी परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं जीवन में एक दूसरें की सहायता एवं सहयोग का आदान प्रदान करके सुखानुभूति करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण

सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

कार्तिक मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां शुक्ल तथा कृष्ण दोनों पक्षों की, मघा नक्षत्र, रविवार, विष्कुम्भ योग, प्रथम प्रहर तथा मेष राशिस्थ चन्द्रमा यह समय आपके लिए अशुभ है अतः आप 15 अक्टूबर से 14 नवम्बर के मध्य, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियों तथा मघा नक्षत्र एवं विष्कुम्भ योग में कोई भी शुभ कार्य न करें। इससे लाभ के स्थान पर हानि ही होगी। साथ ही रविवार प्रथम प्रहर तथा मेषराशिस्थ चन्द्रमा में भी कोई शुभ कार्य न करें अनिष्ट ही होगा तथा इन दिनों शरीर की सुरक्षा का भी पूरा ध्यान रखें।

जब समय आपके लिए अनुकूल न लग रहा हो मानसिक तथा शारीरिक विकलता का अहसास हो रहा हो, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में व्यवधान हो रहा हो तो ऐसे समय में आप को अपने इष्ट श्री हनुमान जी की आराधना करनी चाहिए। साथ ही सोना, तांबा, गेँहू, गुङ, घी, लाल वस्त्र, रक्त वस्त्र आदि पदार्थो का दान करना चाहिए। तथा साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों के प्रभाव में भी न्यूनता आएगी। साथ ही मंगलवार के उपवास करने से भी शुभ फल प्राप्त होंगे।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ शीं भौमाय नमः।

लाल किताब

लाल किताब को इसके सहज, सस्ते एवं विश्वसनीय उपायों के कारण ज्योतिष का वंडर बुक कहा जाता है।

लाल किताब के ज्ञान को व्यावहारिक माना जाता है क्योंकि यह परंपरागत ज्योतिष के ज्ञान से अलग है। वैदिक ज्योतिष की भांति लाल किताब में भी नौ ग्रहों को ही प्रधानता दी गई है। साथ ही 12 भावों की ग्रह स्थिति के अनुसार फलादेश किया जाता है। फिर भी वैदिक ज्योतिष और लाल किताब में कुछ मूलभूत अंतर है। वैदिक ज्योतिष में भाव स्थिर होते हैं किंतु राशियां स्थिर नहीं होतीं किंतु लाल किताब में भाव एवं राशियां दोनों ही स्थिर होते हैं। लाल किताब कुंडली एवं वर्षफल भी उपायों के संदर्भ में विशद सूचना प्रदान करते हैं जिसे बिल्कुल अलग तरह का, विश्वसनीय, सहज एवं सस्ता माना जाता है।

लाल किताब के अनुसार ऋण भार

कुँडली में दूषित ग्रहों के कारण जातक कई प्रकार से ऋणी होता है अर्थात् कई प्रकार के ऋण भार जातक के ऊपर रहते हैं, जिसके कारण जातक के जीवन का विकास अवरुद्ध हो जाता है। क्योंकि दूषित ग्रहों के दोषयुक्त प्रभाव से शुभ ग्रह भी अनुकूल फल देना बंद कर देते हैं। अस्तु ऋण भार से जातक को मुक्त होना चाहिए ताकि शेष जीवन पर शुभ या अच्छे ग्रहों के अच्छे प्रभाव पड़कर कुँडली के अनुसार शुभता प्राप्त हो सके। नीचे ऋण के प्रकार किस परिस्थिति में जातक पर अदृश्य ऋण पर पड़ता है तथा उसके निराकरण उधृत किए जाते हैं।

स्वऋण

ग्रहचाल :

जब जन्मकुंडली में खाना नंबर 5 में शुक्र या शनि या राहु या तीनों में दो या तीनों स्थित हो तो स्वऋण होता है।

निशानिया :

आपको राजभय, निर्दोष होने पर भी मुकदमें में दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। हृदय रोग, बाजुओं में दर्द, शारीरिक कमजोरी, आंखों में कष्ट, जिगर की खराबी होती है।

घटनाएं :

जातक नास्तिक हो जाता है, धर्म की उपेक्षा करता है स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, पूर्वजों के रीति-रिवाज के अनुसार नहीं चलता।

निष्कर्ष

आपकी पत्री स्वऋण से मुक्त है।

मातृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली के चौथे खाने में केतु पड़ा हो तो मातृ ऋण का बोझ होता है।

निशानिया :

जातक का कोई सहायक नहीं होता, उसके सभी प्रयास निष्फल होते है। सरकारी दंड या जुर्माना भुगतना पड़ता है। जीवन अशांत व्यतीत होता है, दूसरों की इज्जत को उछालना खेलवार करना या जूता चुराना, विद्या का लाभ न मिलना। रिश्तेदारों की बिमारियों पर धन का अपव्यय आदि अशुभ फल होते है।

घटनाएं :

मातृ ऋण से प्रभावित जातक माता से दुर्व्यवहार करता है। माता के सुख-दुःख का ख्याल नहीं रखता। माता से दूर रहे या माता को घर से निकाल देता हैं। मातृ ऋण वाले जातक के घर के पास या घर में कुआं होगा। घर के पास जलाशय होगा। उस कुएं में गंदगी डाली जाती होगी या

जलाशय को गंदा करता होगा। हो सकता है कि जातक के घर के पास नदी-नहर बहती हो। जातक उस में गंदगी डालता होगा।

निष्कर्ष

आपकी पत्री मातृऋण से मुक्त है।

पारिवारिक ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली पहले या आठवें खाने में बुध या केतु या दोनों बैठे हो तो रिश्तेदार का ऋण होता है।

निशानिया :

किसी की भैंस बच्चा देने को हो तो उसे मार देना या मरवा देना। किसी का मकान बनने या नीव खोदते समय जादू-टोना कर देना या रिश्तेदारों से मिलने-जुलने बालों से नफरत करना या बच्चों के जन्म दिन और परिवार में त्यौहार या खुशी के समय दूर रहना।

घटनाएं :

जातक मित्रों से धोखा करता है। किसी के बने-बनाए काम को बिगाड़ देता है या किसी की पकी हुई खेती को आग लगा देना।

निष्कर्ष

आपकी पत्री पारिवारिक ऋण से मुक्त है।

कन्या/बहन का ऋण

ग्रहचाल :

जातक की कुंडली में तीसरे या छठे खाने में चंद्रमा पड़ा हो तो बहन/लड़की का ऋण होता है।

निशानिया :

जवानी में धोखा देना, बहन/बेटी की हत्या या उस पर जुल्म करना। मासुम बच्चों को बेचना या लालच से बदल लेना/देना जिसका भेद दुनिया में कभी न खुले ऐसे रहस्मय आदि काम करना।

घटनाएं :

जातक का किसी के साथ अपनी जुबान से बुरा शब्द बोलना तलवार से अधिक गहरा घाव कर सकता है, बेटा पैदा हुआ पिता को उसके धन-दौलत, आयु पर अशुभ फल होगा या माता को पता था कि वह जान से हाथ धो बैठेगी। खुशी के साथ मातम ससुराल-ननिहाल पर अशुभ फल, वर्ष भर की कमाई का वर्षात में घाटा हो जाना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री कन्या बहन के ऋण से मुक्त है।

पितृऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में 2 या 5 या 9 या 12 खानों में शुक्र या बुध या राहु या तीनों में दो या तीनों ही बैठे हो तो जातक पर पितृ ऋण होता है।

निशानिया :

कुल पुरोहित बदलना या कुल पुरोहित से नाता तोड़ लेना, घर के साथ बने मंदिर को तोड़ देना। पीपल का पेड़ काटना। पीपल का पेड़ होना आदि।

घटनाएं :

परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद हो जाए। बाल सफेद होने के बाद बालों में पीलापन होना शुरू हो जाए, काली खांसी की शिकायत, हो अथवा माथे पर दुनिया की गंदी करतुतो का कलंक लगना आदि घटनाएं होती है।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री पितृऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन (एक-एक या पांच-पांच या दस-दस रुपये अधिक से अधिक जितने भी रुपये दे सकें) लेकर उसी दिन मंदिर में दान कर देना आदि।

स्त्री ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में सातवें खाने में सूर्य या चंद्रमा या राहु या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हों तो स्त्री ऋण होता है।

निशानिया :

परिवारिक पेट पर लात मारना, स्त्री को बच्चा पैदा होने या बच्चा जनने की हालत में किसी लालच में आकर मार देना। दाँतो वाले जानवरों की पालने से परिवार में नफरत का उसूल चलता होगा। मकान का गेट दरवाजा दक्षिण दिशा में होना, जीव हत्या करना, मकान या मशीनरी धोखे से ले लेना, किसी की चीज हड़प लेना उसे मुंहताज कर देना आदि।

घटनाएं :

नर संतान का फल मंदा हो जाता है, चमडड़ी में कोढ़, फलवहरी, गुप्तांग में रोग हो जाना, किसी का विवाह होना किसी मुर्दे को जलाना। एक स्त्री के साथ वैवाहिक संबंध टूटने लगे

दूसरी स्त्री के साथ संबंध जुड़ने लगना अर्थात दूसरा विवाह होना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री स्त्री ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे बराबर-बराबर धन लेकर गऊ शाला में 100 गायों को चारा खिलाएं (उसमें कोई भी गाए अंगहीन न हो) आदि।

निर्दयी ऋण

ग्रहचाल :

जन्मकुंडली में खाना नंबर 10 या 11 में सूर्य या चंद्र या मंगल या तीनों में दो या तीनों ही इकट्ठे बैठे हो तो निर्दयी ऋण होता है।

निशानिया :

मशीन या मकान की पेशगी देकर न खरीदना, परीक्षा हाल से अकारण बाहर निकाला जाना, बड़े लोगों से अकारण झगड़े या मुकदमें लड़ना आदि।

घटनाएं :

संतान और ससुराल की असमय मृत्यु, तेल या नारियल या लकड़ी या बारदाना के गोदाम में आग लग जाना। मकान खरीदा उसमें रहना नसीब नहीं, मकान खरीदे तो उसकी सिढ़ियां मुरम्मत करानी पड़े या तोड़ कर दुबारा बनानी पड़े, सांप और जहर पान की घटनाएं, हथियार से मौत होना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री निर्दयी ऋण से मुक्त है।

आजन्मकृत ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में खाना नंबर 12 में सूर्य या शुक्र या दोनों इकट्ठे बैठे हो तो आजन्मकृत ऋण होता है।

निशानिया :

बिजली की तार लीक कर जाना, घर जल जाए, लाखों-करोड़ों पति कुछ ही समय में किसी भी तरह से तबाह हो जाये, सोना गुम या चोरी-ठगी-गबन की घटनाएं, सिर पर जख्म या सिर की बीमारियां, बचपन से बुढ़ापे तक नालायक साबित होना, सोच समझ कर काम करने के बावजूद गरीबी और बेसहारा, दमा-मिरगी, काली खांसी, सांस की तकलीफ, अचानक मौत, मकान की दहलीज के नीचे से गंदा पानी बहना अथवा आवासीय मकान के आगे पीछे कूड़े का ढ़ेर या गन्दगी

हो।

घटनाएं :

मुकदमें में फैसले पर नहक जुर्माना/कैद, ससुराल या दुनिया वालो की ठगी करना, या ऐसी ठगी करना जिससे दूसरे का परिवार या नौकरी-व्यापार नष्ट हो जाना आदि।

निष्कर्ष

उपाय :

आपकी पत्री आजन्मकृत ऋण से युक्त है इसलिए परिवार में जहां तक खून का संबंध (जातक के दादा-दादी, माता-पिता, बहन, बेटी-बुआ, भाई, चाचा-ताया के परिवार के सदस्य आदि) है सबसे एक-एक नारियल उसी दिन जल में प्रवाह करना चाहिए।

ईश्वरीय ऋण

ग्रहचाल :

जातक की जन्मकुंडली में छठे खाने में चंद्रमा हो तो ईश्वरीय ऋण होता है।

निशानिया :

कुत्ते का काटना, छत से बच्चों का गिरना या बच्चा को गाड़ी के नीचे आ जाना, कानों से बहरापन, रीढ़ की हड्डी में कष्ट, संतान पैदा न होना या होकर मर जाना, संतान सुख में बाधा, पेशाब की बिमारियां अधरंग, ननिहाल नष्ट हो जाना, यात्रा में हानि अथवा दुर्घटना हो जाना आदि।

घटनाएं :

किसी पर इतबार किया उसने धोखा दिया, कुत्तों को मारना या मरवाना, गरीब या फकीर की बददुआ लेना, बदचलनी, किसी के लड़कों को गुमराह करके बरबाद करना या करवाना, बुरी नीयत, लालच में आकर किसी का नुकसान करना आदि।

निष्कर्ष

आपकी पत्री ईश्वरीय ऋण से मुक्त है।

लाल किताब ग्रह फल

सूर्य

आपकी जन्मकुंडली में सूर्य बारहवें खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप घर के बाहर जाकर साधू बनना चाहो तो साधू न बन कर जागीरदार बनेंगे। आपको बड़े-बड़े कामों से धन मिलेगा। डाक्टर/कैमिस्ट के कामों से लाभ मिलेगा। सुख की नींद सोएंगे। नौकरी-व्यापार में शुभ फल मिलेगा। आपके ऊपर बुजुर्गों का आशीर्वाद रहेगा। आपके मकान में रौनक रहेगी। आप अंतिम समय में भी सुख से समय बिताएंगे। आध्यात्म और ध्यान मार्ग में सफलता मिलेगी। गुप्त विद्याओं में रुचि रहेगी, विदेश संबंधी कामों से लाभ मिलेगा या विदेश में निवास का योग है। आटा या चक्की के कामों से भी लाभ मिल सकता है।

यदि आपकी बिना आंगन के मकान में रिहाईश होगी, नीच या विधवा स्त्री से संबंध होंगे, अमानत में खयानत की, बिजली का सामान मुफ्त लिया तो आपका सूर्य मंदा हो सकता है या किसी कारण वश सूर्य मंदा हो गया हो तो सूर्य के मंदे असर से आप अधम, नेत्र रोगी, दिमागी खराबी, आग की तरह जलते रहने वाले होंगे। आंखों की रोशनी पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। आप काली चीजों, लकड़ी, बिजली के काम से संबंधित नौकरी-व्यापार में नुकसान उठाएंगे। आपको मैकेनिकल काम से भी नुकसान होगा। मकान बनवाने, लोहे, तेल, राशन, कच्चे कोयले के काम में भारी नुकसान होगा। नीच या विधवा स्त्री से आपका संबंध रहने से आपकी और बुजुर्गों की संपत्ति का नाश होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. बिजली का सामान मुफ्त न लेवें।
2. किसी की अमानत में खयानत न करें।

उपाय :

1. भूरी चीटियों को त्रिचौली डालें।
2. पानी में चीनी डाल कर सूर्य को जल देवें।

चन्द्र

आपकी जन्मकुंडली के दूसरे खाने में चंद्रमा पड़ा है। इसकी वजह से यह आपके भाग्य को जगाता है। धन-संपदा से संपन्न रहेंगे। आपके वंश की वृद्धि होगी। पैतृक सुख और संपत्ति से पूरे रहेंगे। आपके घर में लक्ष्मी की वृद्धि होगी। आपको जद्दी-जायदाद और विरासत का हिस्सा अवश्य मिलेगा। आपको वृद्धावस्था में सभी शुभ फल अवश्य मिलेंगे। बुढ़ापे में सुखकारक समय होगा। आपको भाई का सुख अवश्य मिलेगा। आप सफल प्रेमी होंगे। आप धनवान और उच्चाधिकारी बनेंगे। आपके ससुराल की माली-हालत अच्छी होगी। पिता और ससुराल से धन-संपत्ति का लाभ मिलता है। 48 वर्ष आयु तक माता का सुख मिलता है। परिवार में किसी के जुड़वा बच्चे भी पैदा हो सकते हैं।

सफेद चीजों (चावल-चांदी, दूध आदि) से अधिक लाभ मिल सकता है।

यदि आपने बूढ़ी स्त्री या माता का अपमान किया, ससुराल वालों को तंग करके धन प्राप्त किया, मांस-मदिरा का सेवन किया, घर में मंदिर बना कर पूजा-पाठ किया तो आपका चंद्रमा मंदा हो सकता है या किसी कारण वश चंद्रमा मंदा हो गया हो तो चंद्रमा के मंदे असर से 25 और 34 वर्ष की आयु में गरीबी का सामना करना पड़ सकता है। आप दुनियावी प्रेम संबंधों के कारण बर्बाद हो सकते हैं। आपको संतान में विघ्न या संतान का सुख देर से मिलेगा। आपको बहन का सुख नहीं मिले ऐसा संभव है। बहन-बेटी या परिवार की किसी लड़की को मिरगी का दौरा पड़ सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. घर के मंदिर में शिवलिंग, मूर्तियां, घंटी, शंख आदि न रखें।
2. शराब और मादक वस्तुओं का प्रयोग न करें।

उपाय :

1. माता या बूढ़ी स्त्री के पैर छूकर आशीर्वाद लें।
2. माता से चावल-चांदी, सफेद कपड़े की थैली में लेकर पास रखें।

मंगल

आपकी जन्मकुंडली में मंगल दूसरे खाने में पड़ा है। इसकी वजह से आप दयालु, रक्षक, भाई और मित्रों के पालनहार, आप दूसरों की जरूरत हमेशा पूरी करेंगे। आप किसी संस्था के प्रधान भी हो सकते हैं। आप बहुत लोगों को सहारा देने वाले होंगे। आप दूसरों को खाली हाथ नहीं लौटाएंगे। आपको ससुराल से सहायता मिलेगी। आप छोटे भाई से पुत्र जैसा प्यार करेंगे और उसे सहायता देंगे। छोटे भाई की सहायता से आपके भाग्य में वृद्धि होगी। आप दूसरों की सहायता करते रहेंगे। इस वजह से आप भी भरपूर रहेंगे। आपको दूसरों की भलाई के लिए धन-संपत्ति मिलती रहेगी। आप दूसरों के लिए लंगर लगाएंगे। आप नेक और पक्के इरादे के हैं। आप परिश्रम से धनी होंगे। आपको खुराक, पोशाक तथा अन्य जीवन के सुख प्राप्त होंगे। जरूरत पड़ने पर खुद ब खुद पैसे मिल जाएंगे। आपको भगवान की कृपा से बहुत धन मिलेगा। आप अधिकारी बन कर हुकूमत करेंगे। आप तीर्थ यात्रा करने से शुभ फल को प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी दौलत में बढ़ोत्तरी होगी। ससुराल पक्ष से सुखी रहेंगे।

यदि आपने दूसरों के धन-स्त्री पर बुरी नजर रखी, बुरी आदतों के शिकार हुए या छल-कपट करके भाई-बंधुओं, मित्रों के साथ ठगी की तो आपका मंगल मंदा हो सकता है या किसी कारण वश मंगल मंदा हो गया हो तो मंगल के मंदे असर से अगर विद्या में रुकावट, जरूरत पड़ने पर आपको धन मिलता रहेगा। नौकरी-व्यापार में बार-बार हानि हो सकती है। 28 वर्ष से पहले बड़े भाई को शरीर कष्ट संतान की चिंता, धन हानि होगी। यदि आपका बड़ा भाई है तो उसका सुख आपको नहीं मिलेगा या वह आपसे हालत में कमजोर होगा या आप और आपका भाई निःसंतान भी हो सकते हैं।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. लड़ाई-झगड़े से दूर रहें।
2. मेहमानों की सेवा से मुंह न फेरें।

उपाय :
1. बच्चों को दोपहर के समय गुड़-गेहूं बांटें।
2. नाश्ते में मीठा भोजन करें।

बुध

आपकी जन्मकुंडली में बुध बारहवें खाने में होगा। इसकी वजह से अच्छी स्थिति बन सकती है। वैसे आपको धन-संपत्ति मिलेगी परंतु आकस्मिक खर्च होता रहेगा। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। आपकी बहन-लड़की अपने ससुराल में ही सुखी रहकर बसेगी। मगर अपने पिता के घर में दुःखी रहेगी। आप सोच-विचार कर कार्य करेंगे। बुजुर्गों की संपत्ति का लाभ होगा। ज्योतिष या गुप्त विद्या में रुचि रह सकती है।

यदि आपने किसी से झूठा वायदा किया या जुबान बदलने की आदत हुई, मादक चीजों-द्रव्यों का प्रयोग किया, हर समय लुट गये-लुट गये की बातें की तो आपका बुध मंदा हो सकता है या किसी कारण वश बुध मंदा हो गया हो तो बुध के मंदा असर से आपकी मानसिक स्थिति डांवाडोल करेगा। सिर दर्द बना रहेगा। रात्रि में ठीक ढंग से नींद नहीं आएगी। आपके घर में बहन, लड़की, दुःखी रहेगी। आप धनी होते हुए भी दुःखी रहेंगे। सट्टे-लाटरी का काम या दलाली के कामों से नीच प्रभाव मिलेगा। बुरे कामों में धन की बर्बादी हो सकती है। पिता के धन पर बुरा असर पड़ सकता है। ससुराल में मंदा प्रभाव रहेगा। कभी-कभी भ्रम या अज्ञानता के कारण नुकसान होने की आशंका है। आपके भाई के जीवन पर बुरा असर तथा धन का नाश हो, ऐसी शंका है। 25वें वर्ष में विवाह करना पिता के लिए अशुभ होगा। आपकी पत्नी का भाग्य भी मंदा हो सकता है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. दिया हुआ वचन पूरा करें।
2. क्रोध से दूर रहें।

उपाय :
1. स्टैनलेस स्टील की बेजोड़ अंगूठी बायें हाथ में पहनें।
2. मिट्टी का खाली घड़ा ढक्कन लगा कर जल प्रवाह करें।

गुरु

आपकी कुंडली में वृहस्पति पहले खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप एक पढ़े-लिखे या उपदेशक या गुरु भी हो सकते हैं। आप विद्वान, अच्छी बुद्धि के संतानयुक्त, शासन द्वारा सम्मान पाने वाले बड़प्पन से युक्त होंगे। विद्या के माध्यम से अपनी आजीविका चलाऐंगे। पैतृक धन से भी धनी होंगे। यदि आपकी शिक्षा कम भी हो तो फिर भी धन आपको प्राप्त होता रहेगा। आप पैसे की वजह से नहीं, करामाती गुण से सम्मान पाएंगे। आप ऊंचे लोगों के साथ रह कर अपनी दिमागी शक्ति और राजदरबार से संबंधित रह कर, सम्मान प्राप्त करेंगे। शादी के बाद आपकी अर्थिक स्थिति अच्छी हो जाएगी और भाग्योदय होगा। आप अपनी कमाई से नया मकान बनवाएंगे। आपको बहुत जायदाद का लाभ होगा। आप स्वस्थ और प्रसन्न रहेंगे। उम्र बढ़ने के साथ-साथ सुख में भी वृद्धि होगी। आपकी पत्नी आपकी आज्ञाकारिणी और सेविका रहेगी।

यदि आपने विद्या अधूरी छोड़ दी, लोगों की व्यर्थ निंदा की, मुफ्त माल, दान आदि से जीवन व्यतीत करना शुरु किया, छोटी आयु में शराब-बीयर पीना शुरु कर दिया तो आपका वृहस्पति मंदा हो सकता है या किसी कारण वश वृहस्पति मंदा हो गया हो तो वृहस्पति के मंदे असर से अप्रत्याशित घटनाओं एवं अव्यवस्था से सतर्क रहें। विद्या में रुकावट हो सकती है, आपके पिता की मौत दमा या दिल की बीमारी या मानसिक रोग से हो ऐसी आशंका है। आपको श्वास या दमे की बीमारी होगी। प्रथम पुत्र संतान की प्राप्ति से अशुभ फल प्राप्त होने की आशंका है।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. मुफ्त गिफ्ट या दान न लेवें।
2. किस्मत पर भरोसा रखें।

उपाय :

1. केसर/हल्दी का तिलक करें।
2. बुजुर्गों का आशीर्वाद लेवें।
3. शिक्षा बी.ए. या समकक्ष अवश्य पढ़ें।

शुक्र

आपकी जन्मकुंडली के ग्यारहवें खाने में शुक्र पड़ा है। इसकी वजह से आपको कन्या संतान अधिक होगी। आपकी पत्नी दिखने में भोली-भाली परंतु काम धंधे में स्वभाव से अच्छी होगी। शादी के बाद खूब आमदनी होगी। आपको कन्या सुख अधिक होगा। विलंब से पुत्र की प्राप्ति हो, ऐसी आशंका है। आपके ससुराल पक्ष के लोग सहायक होंगे और उनसे आपको लाभ होगा। आप में और आपकी पत्नी में सामान्य कामवासना रहेगी। आप पैसे के पीछे भागते रहेंगे। आप भोले स्वभाव के प्राणी होंगे। आपमें अच्छे गुण भी रहेंगे आप गुप्त कार्य करने के आदी हो जाएंगे। आप अपनी विचारधारा को शीघ्र बदल देंगे। इसके लिए धन पर कोई बुरा असर नहीं पड़ेगा।

यदि आप परिवार में मुखिया बन कर रहे, चाल-चलन खराब किया, अप्राकृतिक सैक्स किया, कामांध बन कर पाप किया तो आपका शुक्र मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शुक्र मंदा हो गया हो तो शुक्र के मंदे असर से आपकी कामशक्ति कमजोर होगी। (किसी योग्य वैद्य/हकीम से सलाह करके कुश्ता फौलाद या मछली का तेल प्रयोग करें वैसे चांदी का कुश्ता भी लाभदायक रहेगा)। आपकी पत्नी के हाथों धन की बरकत नहीं होगी या स्त्री द्वारा धन हानि या अपव्यय होगा। सरकार द्वारा दंड, जेल यात्रा का भय रहेगा। आपका चाल-चलन शक्की होगा। आप यदा-कदा मूर्खता भी कर बैठेंगे। आपका संतान पक्ष निर्बल रहेगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. पत्नी को घर की खजांची न बनाएं।
2. नौकरी-व्यापार बार-बार न बदलें।

उपाय :

1. स्त्री से सरसों का तेल दान करायें।
2. विवाह समय कपिला गाय का दान करें।

शनि

आपकी जन्मकुंडली में शनि नौवें खाने में पड़ा है। जिसकी वजह से आप लोगों पर परोपकार करेंगे तथा इसके अच्छे लाभ भी आपको मिलेंगे। आप बड़े परिवार के सदस्य होंगे। आप भाई एवं मित्रों से सहयोग प्राप्त कर धनवान बनेंगे। आपको चलते-फिरते कामों से अधिक लाभ मिलेगा। आपको संतान का सुख होगा। परंतु संतान के सुख प्राप्ति में विलंब हो सकता है। आपकी पत्नी धनी परिवार से होगी। आपके पास प्रचुर मात्रा में धन रहेगा। आप धन के विषय में लापरवाह रहेंगे। आप उदार प्रवृत्ति के, जागीरदार, सदा सुखी होंगे। माता-पिता का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आप विद्वान होंगे। आप पर कभी भी कर्ज का बोझ नहीं पड़ेगा। आपका भाग्य अपने माता-पिता के भाग्य से अच्छा होगा। आपकी पत्नी भाग्यवान और अमीर खानदान की होगी। आप पैसे के प्रति बहुत मोह नहीं करेंगे। तीर्थ यात्रा करेंगे भाग्योन्नति होगी उससे अधिक शुभ फल प्राप्त होते रहेंगे। आप धार्मिक विचार वाले होंगे।

यदि आपने दूसरों के माल पर बुरी नजर रखी, जुआ आदि खेला, बुरे काम किये, लोहा/मशीनरी आदि के कार्य किये, घर में शीशम का पेड़ हो, जब आपके नाम 3 मकान बन जायें तो आपका शनि मंदा हो सकता है या किसी कारण वश शनि मंदा हो गया हो तो शनि के मंदे असर से आप ब्याज का धंधा करें तो नुकसान होगा। आपके दिल में दूसरों से बदला लेने की भावना रहती है। अग्निकाण्ड की शंका है। आपको सांस या दमे की बीमारी हो सकती है। संतान सुख में विघ्न या पुत्र-पौत्र संतान की चिंता रहेगी। मंदे कामों से बदनामी भी हो सकती है। आंखों की दृष्टि खराब हो ऐसी आशंका है। अमीरों से धन लूट कर गरीबों में बांटना, ऐसी आपकी सोच रहेगी।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय

करें।

परहेज :
1. दूसरों के माल पर बदनीयत न करें।
2. घर की छत पर ईंधन-चौगाठ आदि न रखें।

उपाय :
1. माथे पर केसर का तिलक करें।
2. घर के अंत में अंधेरा कमरा बनायें।

राहु

आपकी जन्मकुंडली के पहले खाने में राहु पड़ा है। इसकी वजह से आप धनवान तथा श्रेष्ठ शासनाधिकारी होंगे। अगर सरकारी अधिकारी हुए तो राजदरबार में आपका बहुत सम्मान होगा। आपके ननिहाल वाले आपके जन्म के बाद अमीर होंगे। आपका जन्म ननिहाल या अस्पताल में हुआ होगा या जन्म के समय आकाश पर बादल छाये हुए होंगे, ऐसी आशंका है। 42 वर्ष की उम्र तक समय मध्यम है जो कुछ भी बुरा हुआ होगा, इसके बाद बहुत अच्छा और शुभ रहेगा। आपका जन्म जिस घर में होगा उस घर के सामने घर में उजाड़ हो जाएगा। आपकी रोजी-रोटी के लिए दूसरा काम भी चालू रहेगा। यदि एक काम या नौकरी छूटेगी तो दूसरी नौकरी या व्यवसाय चालू हो जाएगा। आप धनी होंगे। आपको संतान सुख अच्छी या बुरी अवश्य मिलेगी। आपके लिए हर समय बोलते रहना अच्छी बात नहीं है। आपमें बेईमानी और धोखेबाजी की आदत भी विद्यमान रहेगी। जीवन में कई परिवर्तन आएंगे। माता और मन की शांति के लिए शुभ रहेगा।

यदि आपने विवाह के बाद ससुराल से लोहा, बिजली का समान, काले-नीले कपड़े मुफ्त या दान में लिये, मकान के आंगन में धुआं किया, बिल्ली की जेर, चमड़े के पर्स में रखी तो आपका राहु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश राहु मंदा हो गया हो तो राहु के मंदे असर से आपके बनते कामों में रुकावट, तरक्की कम मगर बदला-बदली अधिक बार होगी। 11-21-42 वर्ष आयु में पिता के लिए समय अशुभ, परिवार में किसी को दमा-मिरगी का रोग हो सकता है। आप शरारती, आवारा और नास्तिक स्वभाव के होंगे।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :
1. आंगन में धुआं न करें।
2. पेट मोटा न हो, विशेष ध्यान रखें।

उपाय :
1. धर्म स्थान में गुड़-गेहूं दान देवें।
2. दूध से स्नान करें।

केतु

आपकी जन्मकुंडली के सातवें खाने में केतु पड़ा है। इसकी वजह से आप 24 वर्ष की उम्र से ही धन कमाने में जुट जाएंगे। जैसे-जैसे आपकी संतान की उम्र बढ़ती जाएगी वैसे-वैसे धन में बढ़ोत्तरी होती जाएगी। आजीविका का साधन बना रहेगा। रोजगार द्वारा अच्छी कमाई होगी। आपकी संतान बलशाली होगी। आप अपनी बात के पक्के होंगे। आप सब तरह से सुखी और संपन्न रहेंगे फिर भी पश्चात्ताप करते ही रहेंगे। आपकी संतान शेर का मुकाबला करने वाली होगी। आपकी पत्नी के जितनी संख्या में भाई-बहन होंगे उतनी ही संख्या में आपकी संतान होंगी। 34 वर्ष की आयु तक का समय कष्टमय रहेगा। परंतु इसके बाद सब कुछ ठीक हो जाएगा। धनधान्य में बरकत होगी। 24 साल की उम्र में इतना धन आएगा जो कि आने वाले 40 वर्षों तक के लिए काफी होगा। आपके दुश्मन आपका कुछ भी नहीं बिगाड़ेंगे। दुश्मन अपने आप तबाह हो जाएंगे। जीवन में कभी निराशा का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपने हर समय लिखने का काम किया, झूठा वायदा किया, परस्त्री गमन किया। अपनी पत्नी से झगड़ा किया तो आपका केतु मंदा हो सकता है या किसी कारण वश केतु मंदा हो गया हो तो केतु के मंदे असर से 7 वर्ष तक ननिहाल की हालत खराब, 34 वर्ष बाद सुख नष्ट होना शुरु हो जाएगा। झूठ बोलना, झूठा वायदा करना आपको अवनति देगा। शरीर में दर्द या बीमारी होगी। आपकी संतान पर भी विपरीत प्रभाव पड़ सकता है। आपका मन स्त्री और पुत्र के संबंध में अशांत रहेगा। आप अपनी जुबान से गंदी बातें बोलेंगे। आप अभिमान के कारण बर्बाद हो जाएंगे। किसी को दिया गया आश्वासन पूरा न करना आपके लिए हानिकारक होगा।

यदि आपको लगता है कि आपको उपरोक्त कष्ट है तो निम्नलिखित परहेज और उपाय करें।

परहेज :

1. परस्त्री से अनैतिक संबंध न रखें।
2. कलम से लिखने का अधिक काम न करें।

उपाय :

1. 4 केले 4 दिन जल में प्रवाह करें।
2. 4 नीबू 4 दिन जल में प्रवाह करें।

लाल किताब के उपाय

लाल किताब के उपाय कब और कैसे करें !

1. उपाय सूर्य निकलने के बाद सूर्य छिपने तक दिन के समय करें, रात के समय उपाय करना कई बार अशुभ फल दे सकता है। केवल चन्द्र ग्रहण का उपाय रात को किया जा सकता है।

2. उपाय शुरू करने के लिए किसी खास दिन सोमवार या मंगलवार आदि, सक्रांति, अमावस्या या पूर्णिमा आदि का कोई विचार नहीं होगा।

3. आप का कोई खून का संबंधी रिश्तेदार जैसे भाई-बहन, माता-पिता, दादा-दादी, पुत्र-पुत्री आदि में से उपाय कर सकता है जो फलदाई होगा।

4. एक दिन में केवल एक ही उपाय करें, एक दिन में दो उपाय करने से शुभ फल नहीं मिलता या किया हुआ उपाय निष्फल हो सकता है।

5. जो परहेज बताए जाये जैसे मांस-मछली न खावें, मदिरा का सेवन न करें, चाल-चलन ठीक रखें, झूठ न बोलें, जूठन न खावें न खिलावें, नियत में खोट न रखें, परस्त्री-परपुरुष से संबंध न करें, आदि का विशेष ध्यान रखें।

6. जो उपाय जिस समय के लिये लिखा है उसी समय तक करें, आगे यह उपाय बंद कर देवें।

7. यदि किसी कारण उपाय बीच में बंद करना पड़ जाय तो जिस दिन उपाय बन्द करना है उससे एक दिन पहले थोड़े से चावल दूध से धोकर सफेद कपड़े में बांध कर पास रख लें और जब दुवारा उपाय शुरू करना हो वह चावल धर्म स्थान में या चलते पानी में या किसी बाग-बगीचे आदि में गिरा कर उपाय फिर शुरू कर दें। ऐसा करने से उपाय अधूरा नहीं माना जाएगा और पूरा फल मिलेगा।

8. हर उपाय 43 दिन या 43 सप्ताह या 43 मास या 43 वर्ष तक करना होता है, उपाय चलते समय बीच में टूट जाए चाहे 39वां दिन क्यों न हो सब निष्फल हो सकता है या शुभ फल में कमी रह सकती है।

9. जन्म कुण्डली में अशुभ ग्रहों का वर्षफल कुण्डली में उपाय अपने जन्मदिन से लेकर 40-43 दिन के भीतर ही करें ।

10. घर में कोई सूतक (बच्चा जन्म हो) या पातक (कोई मर जाय) हो जाय तो 40 दिन उपाय नहीं करने चाहिये ।

11. बुजुर्गों के रीति -रिवाजों को न तोडें और संस्कार पूरें करें ।

वार्षिक फलादेश

वार्षिक फलादेश गोचर पर आधारित हैं जिसमें शनि, राहु एवं बृहस्पति के गोचर से आपकी जन्मकुंडली का कोई अंश ऊर्जावान होता है जिसके प्रभाव से आपके जीवन में आने वाले वर्ष के घटनाक्रम की जानकारी प्राप्त होती है।

वार्षिक फलादेश से उस वर्ष जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में पड़ने वाले प्रभावों जैसे स्वास्थ्य, परिवार, संपत्ति, धन, आजीविका, व्यवसाय, शिखा, यात्रा एवं स्थानांरण आदि का विवरण विस्तृत रूप में उपाय सहित दिया गया है। वार्षिक फलादेश मुख्य ग्रहों के गोचर पर आधारित है।

इस वर्ष शनि धनु राशि में दशम भाव में रहेंगे। 23 मार्च को राहु मिथुन राशि में चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। 29 मार्च को गुरु धनु राशि में दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 23 अप्रैल को वृश्चिक राशि में नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 05 नवम्बर को धनु राशि में दशम भाव में आजाएंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष स्थिरता, सन्तुलन तथा स्थायित्व लेकर आ रहा है। एक व्यवसायी के रूप में आपकी विश्वसनीयता बढ़ेगी। आप अपने भाग्य एवं कर्म में उन्नति करेंगे।

नौकरी वालों को सम्मान, उन्नति व स्थानान्तरण होगा। जमीन-जायदाद के मामलों में सावधानी से कार्य करें नहीं तो हानि उठानी पड़ सकती है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। व्यवसायिक जीवन की स्थिरता आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करेगी। धनागम का योग बना रहेगा परंतु अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों में मांगलिक कार्यों में धन का खर्च भी होगा।

इस वर्ष अचानक सम्पत्ति जैसे भवन, भूमि, वाहन इत्यादि प्राप्ति के योग हैं। वर्षारम्भ में आप नये कार्यालय के भवन निर्माण हेतु योजना बनाएंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। परिवार में बड़े सदस्यों का सहयोग आपको प्राप्त होगा और परिवार के प्रति आप का भी आकर्षण बढ़ेगा।

संतान का स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको समाजिक पद प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। मां के स्वास्थ्य के प्रति सतर्क रहना होगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में आप संतान के मामले में अधिक चिंतित रहेंगे परंतु 23 मार्च के बाद संतान की तरक्की के योग बनने पर आपको शांति व सुकून की प्राप्ति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बनेंगे।

संतान के विवाह योग्य होने की स्थिति में विवाह के लिए भी श्रेष्ठ समय है। द्वितीय संतान के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष के प्रारम्भ में स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। खाने-पीने की वस्तुओं में परहेज रखें। स्वास्थ्य में छोटी मोटी समस्याएं रहेंगी परंतु कार्य क्षमता बनी रहेगी। मानसिक तनाव से बचें व व्यवहारिक होकर अपनी समस्याओं का निराकरण करें।

मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी। आप योग, ध्यान आदि क्रियाओं में रुचि लेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः प्रतिकूल रहेगा। पढ़ाई में भी अरुचि पैदा होने की संभावना है। प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफल होने की संभावनाएं बहुत कम हैं।

गुरु का गोचर अनुकूल होने से भाग्य साथ देगा, अधिकारियों से सहायता प्राप्त होगी, नौकरी करने वाले के लिए समय सामान्य है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के योग हैं।

यात्रा-तबादला

विदेश यात्रा का प्रबल योग बना रहा है। इन यात्राओं से भाग्योन्नति भी होगी। तीर्थ यात्राएं भी होंगी।

जन्म भूमि से दूर जाना पड़ सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

आप कोई विशेष पूजा अनुष्ठान करेंगे जैसे अखण्ड रामायण का पाठ, माता की चौकी, माता का जागरण या अन्य कोई हवन इत्यादि संपन्न करेंगे। जिससे आपको समाज में ख्याति प्राप्त होगी, और आप मानसिक रूप से संतुष्ठ रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सुबह सूर्य को जल दें। (तांबे के लोटे में चावल, रोली एवं लाल पुष्प डालकर)
- गरीब लोगों को भोजन कराएं या तला हुआ वस्तु भिक्षुओं के मध्य वितरित करें।
- राहु के मन्त्र का पाठ करे। राहु मन्त्र (ओम् भ्रां भ्रीं भ्रौं स राहवे नमः)

मासिक फलादेश

जनवरी 2019 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपके कार्य क्षेत्र में उन्नति होगी तथा समाज में पूर्ण मान तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे। इसके साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग से आप सहयोग तथा सम्मान भी प्राप्त करेंगे तथा ये लोग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। मित्रों एवं बन्धुओं से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे आप पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो को करने में भी तत्पर रहेंगे।आपके कई विलम्बित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सम्मान करेंगे। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण सुखी रहेंगे तथा मित्रों एवं बन्धुओं के मध्य आप की मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।साथ ही आपकी असफल आशाएं भी इस समय सिद्ध होगी जिससे आप मानसिक रूप से प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही इस समय आप स्त्री से पूर्ण सुख तथा सहयोग भी प्राप्त करने में सफल रहेंगे।आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी एवं प्रचुर मात्रा में संपूर्ण मास धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश तथा प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

फरवरी 2019 के लिए फलादेश

इस मास को आप सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आप स्त्री वर्ग से पूर्ण लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही सौभाग्य से भी आप युक्त रहेंगे जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सिद्ध होंगे ।सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से लाभार्जन करने में भी इस मास में सफलता प्राप्त करेंगे ।शारीरिक रूप से आप पूर्ण स्वस्थ रहेंगे तथा मन भी प्रसन्नता से युक्त रहेगा। अध्ययन या ज्ञानार्जन में भी आपकी तीव्र रूचि रहेगी। मित्रों तथा संबधियों से आपके संबध मधुर एवं घनिष्ठ रहेंगे तथा उनसे पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस मास आपको वांछित द्रव्यों की प्राप्ति होगी जिसके उपभोग से आप सुखी तथा निश्चिंत रहेंगे। साथ ही बन्धु वर्ग में प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा असफल आशाओं में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री का पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य महिला सहयोगियों से भी वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे जिससे आपके कई शुभ कार्य सिद्ध होंगे। आपकी बुद्धि में इस समय निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी तथा उचित धन लाभ एवं सुख प्राप्त करने में भी आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा समाज में आप पूर्ण यश अर्जित करने में सफल रहेंगे।

मार्च 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त मध्यम रहेगा। इस समय आपका व्यय

अधिक मात्रा में होगा तथा दुष्ट मनुष्यों के साथ में रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर होगी। जिससे आप मानसिक रूप से अशान्त रहेंगे। साथ ही शारीरिक रूप से भी आप अस्वस्थ तथा दुर्बल रहेंगे। इस मास में अत्यधिक परिश्रम के पश्चात भी आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा देवता एवं ब्राहमणों का आप उचित पूजन तथा सम्मान नहीं करेंगे। साथ ही अन्य प्रकार से भी हानि होती रहेगी तथा मित्रों एवं संबधियो से भी मधुर संबध नहीं रहेंगे।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ आपको शुभ फल भी प्राप्त होंगे। अतः महिला सहयोगियों से आप लाभार्जन करेंगे तथा आपकी बुद्धि में भी निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी फलतः उचित लाभ एवं सुख प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। इसके साथ ही समाज एवं सामाजिक जनों से भी आप यश एवं सम्मान प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

अप्रैल 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत सुख एवं प्रसन्नता प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा मन से भी आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रु वर्ग निर्बल एवं आपसे पराजित रहेगा। इस समय आपके लाभ मार्ग भी उन्नति की ओर अग्रसर रहेंगे फलतः आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी एवं धनाभाव नहीं रहेगा। साथ ही व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य स्त्रोतों से भी लाभार्जन करने में सफल रहेंगे इस मास में आपकी भाग्योन्नति भी होगी तथा तथा कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे तथा काफी समय से रूके हुए कार्य भी सम्पन्न हो जाएंगे। बन्धु एवं मित्रों से आपके घनिष्ठ संबध रहेंगे एवं सम्सत सांसारिक कार्यो को आप अपने बुद्धिचातुर्य से सफल बनाएंगे। इसके अतिरिक्त उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आप उचित सहयोग तथा लाभ भी अर्जित करेंगे।

साथ ही इस मास में आप श्रेष्ठ जनों एवं उच्चाधिकार प्राप्त लोगों से सम्मान अर्जित करेंगे। इस समय आपके आजिविका संबधी कार्य में भी उन्नति एवं दृढ़ता का आभास होगा तथा दूर समीप की कोई लाभदायक यात्रा भी कर सकते है। साथ ही नवीन वस्त्रों या द्रव्यों की भी आप प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। अतः आपके लिए यह मास शुभ रहेगा।

मई 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए शुभ एवं शान्ति प्रदान करने वाला सिद्ध होगा। इस समय आप अपने उत्साह से धनार्जन करेंगे तथा आर्थिक स्थिति को सुधारने में सफल रहेंगे। इस मास आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों से आपके मधुर संबध होंगे। साथ ही इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग की प्राप्ति होगी। उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं उनसे आपको वांछित सहयोग तथा लाभ प्राप्त होगा। इस समय आप मिष्ठान का उपभोग भी अधिक मात्रा में कर सकेंगे। इस मास आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा फलतः शारीरिक बल में पूर्ण वृद्धि होगी। शत्रु वर्ग को पराजित करने में भी आप सफलता प्राप्त करेंगे तथा वे आपसे भयभीत रहेंगे।

इसके अतिरिक्त व्यापार आदि कार्यो से भी आप धन अर्जित करने में सफल रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे एवं अन्य महिला सहयोगियों से भी वांछित सहयोग एवं लाभ प्राप्त होगा। आपकी बुद्धि भी इस समय निर्मल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धनार्जन होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा समाज में आपका यश व्याप्त रहेगा।

जून 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप उत्तम फल प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा विविध प्रकार के सुखों का उपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज से भी आपको यथोचित मान सम्मान एवं यश प्राप्त होगा। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधि पूर्वक आप इनका पूजन तथा सत्कार करेंगे। दूसरे लोगों की भलाई के लिए भी आप इस मास तत्पर रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी उत्तम रहेगा तथा मान प्रतिष्ठा में पूर्ण वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त भाइयों से आपको इस समय पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा तथा आपके मानसिक विचार एवं संकल्प भी पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से सुख प्राप्त करेंगे एवं अपनी बुद्धिमता से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में सफलता भी अर्जित करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा भाव उत्पन्न होता रहेगा। इस प्रकार यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा।

जुलाई 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा अशुभ फल अधिक मात्रा में होंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा तथा कई प्रकार से आपको शारीरिक कष्टानुभूति होगी। साथ ही शत्रु वर्ग से भी आप भयभीत एवं चिन्तित रहेंगे जिससे आप मानसिक रूप से भी अशान्त रहेंगे। पारिवारिक जनों से भी इस समय आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक रूप से संबधों में तनाव विद्यमान रहेगा। आपके व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी हानि या मंदी के योग बनेंगे। साथ ही स्थान या कार्य क्षेत्र में परिर्वतन भी कर सकते है। समाज में भी अधिकाशं लोगों से आपके विवाद होते रहेंगे जिसके कारण उनसे कटुता का व्यवहार रहेगा फलतः आपके समाजिक सम्मान में अल्पता आएगी। इसके अतिरिक्त शरीर में रोग तथा धन हानि भी हो सकती है।

साथ ही इस मास गर्मी या पित्तादि दोषों से भी अस्वस्थ रहेंगे। इस समय किसी कारण से रक्त विकार होने की भी संभावना रहेगी इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी किसी प्रकार से धन हानि हो सकती है। अतः इस समय आप सावधानी एवं बुद्धिमता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

अगस्त 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा। आपकी बुद्धि में इस समय

निर्मलता की वृद्धि होगी तथा अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिबल से ही सम्पन्न करेंगे। इस मास आप संतति पक्ष से पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा अन्य प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करने में भी सफल रहेंगे। इस समय आपके प्रभुत्व में भी वृद्धि होगी तथा अन्य लोग आपके प्रभुत्व को हृदय से स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान भी करेंगे। आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सम्पन्न होंगे तथा किसी शुभ समाचार को भी प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों की भी आप श्रद्धा पूर्वक पूजन एवं सम्मान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य या उच्चाधिकारी वर्ग से लाभार्जन करने में भी आप सफल रहेंगे।साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा आपकी मनोकामनाएं पूर्ण होगी फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप पुत्र तथा स्त्री से भी वांछित सुख एवं सहयोग प्राप्त करने में भी सफल रहेंगे तथा नवीन वस्त्र या द्रव्यों की भी आप प्राप्ति कर सकते है। इस प्रकार आपका यह मास सुख एवं शान्ति पूर्वक व्यतीत होगा।

सितम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह महीना आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा फलतः आप शारीरिक रूप से दुर्बलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही शत्रु पक्ष के प्रबल होने से उनकी तरफ से भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे अतः मन में भी अशान्ति रहेगी। आपके घर में इस मास चोरी भी हो सकती है अतः चोरों से सावधान रहें। साथ ही अपने उच्चाधिकारी वर्ग से पूर्ण सहयोग रखें एवं उनकी आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको दण्डित भी किया जा सकता है। आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास अल्प मात्रा में ही सम्पन्न होंगे तथा धन का व्यय भी अनावश्यक तथा अधिक होगा।साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को भी सम्पन्न करेंगे जिसके लिए आपको बाद में पश्चाताप करना पड़ेगा।संबधियों एवं मित्रों से आपके संबधों में तनाव रहेगा एवं समाज से भी आप अपने को उपेक्षित महसूस करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस समय अल्प मात्रा में ही पूर्ण होंगी ।

साथ ही इस समय आप वातोत्पन्न रोगों से भी पीड़ित रहेंगे। अग्नि के द्वारा भी आप न्यूनाधिक धन हानि प्राप्त करेंगे अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

अक्तूबर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए काफी अशुभ तथा परेशानियां उत्पन्न करने वाला रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु जनों से कष्ट प्राप्त करेंगे एवं शत्रुओं से भी चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप उद्विग्न रहेंगे। इस मास में आपके उत्साह में भी न्यूनता आएगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा फलतः आपकी आर्थिक स्थिति भी कमजोर होगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा नहीं रहेगा एवं मन में लोलुपता के भाव की प्रधानता रहेगी। अपने बन्धु एवं मित्रों से भी आपके मधुर संबध नहीं रहेंगे तथा अनावश्यक तनाव तथा वैमनस्य का भाव बना रहेगा। साथ ही इस समय आपके मित्र भी शत्रु के समान व्यवहार करेंगे इसके अतिरिक्त

समाजिक जनों से भी विवाद होते रहेंगे जिससे आप काफी दुःखी एवं अशान्त रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी समाज में अवमानना होगी एवं बाद में पश्चाताप भी करना पड़ेगा। इसके अतिरिक्त आग के द्वारा भी आपको धन हानि का योग बनता है अतः सोच समझकर अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें।

नवम्बर 2019 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा तथा शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को आप प्राप्त करेंगे। इस समय शत्रु पक्ष प्रबल होने से आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे साथ ही घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी। इस मास में धन का व्यय अधिक मात्रा में होगा फलतः आर्थिक रूप से भी आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इस समय आप शारीरिक रूप से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं अन्य कई प्रकार से शारीरिक एवं मानसिक कष्टों को प्राप्त करेंगे। अतः शारीरिक बल की भी आप में न्यूनता रहेगी। इस मास में आप दूर या समीप की यात्रा भी कर सकते है। आपके सांसारिक कार्यो में कई प्रकार से विध्न बाधाएं आएंगी अतः इन्हें समय पर पूर्ण करने में आप असमर्थ रहेंगे। साथ ही मुकद्दमें आदि कार्य में भी आपके धन का अपव्यय हो सकता है। अतः सोच समझकर बुद्धिमता से अपने कार्यों को सम्पन्न करें।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे।अतः आप स्त्री एवं पुत्र से सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे तथा इस समय आप नवीन वस्त्र या अन्य द्रव्यों को भी अर्जित कर सकेंगे जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

दिसम्बर 2019 के लिए फलादेश

इस मास में आप अधिकांश शुभ फल अर्जित करेंगे परन्तु अल्प मात्रा में अशुभ फल भी घटित होते रहेंगे। इस समय आप प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे तथा उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेगा। साथ ही इस महीने में आप किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकते है। संतति पक्ष से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा उनकी तरफ से आपको कोई चिन्ता नहीं रहेगी साथ ही धार्मिक क्षेत्र में आपकी श्रद्धा में वृद्धि होगी एवं देवता तथा ब्राहमणों का आप श्रद्धा पूर्वक पूजन तथा सेवा करेंगे। समाज में आपकी मान प्रतिष्ठा में इस समय में पूर्ण वृद्धि होगी तथा भाग्योदय संबधी कार्य में भी आपको सफलता प्राप्त होगी।

इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता का भाव रहेगा तथा लाभ दायक यात्रा का भी योग बनेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपको पूर्ण आदर तथा सम्मान प्राप्त होगा ।मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको उचित सहयोग तथा सम्मान प्राप्त होगा। इस समय आप समाज में सम्पन्न एवं प्रतिष्ठित व्यक्ति समझे जाएंगे।

परन्तु इस मास में आप गर्मी या पित्तादि से शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे। साथ ही रक्त विकार का भय भी रहेगा अतः सावधानी तथा सतर्कता पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न

करें।

वार्षिक फलादेश - 2020

इस वर्ष शनि 24 जनवरी को मकर राशि में एकादश भाव में प्रवेश रहेंगे। वर्ष के प्रारम्भ में राहु मिथुन में चतुर्थ भाव में होंगे और 19 सितम्बर के बाद वृष राशि में तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे। 30 मार्च को गुरु मकर राशि में एकादश भाव में प्रवेश करेंगे एवं वक्री होकर 30 जून को धनु राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 20 नवम्बर को मकर राशि में एकादश भाव में आजाएंगे। 31 मई से 8 जुन तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठतम रहेगा। कार्य में सफलता प्राप्ति होगी और आप अपने भाग्य एवं कर्म के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। आप अपने व्यापार का विस्तार करने में सफल होंगे।

आप अपने शत्रुओं तथा प्रतिद्वन्दियों का हनन करने में सफल होंगे। वर्षारम्भ में दशम स्थान का गुरु, नौकरी करने वालों की पदोन्नति करा सकते हैं। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अपेक्षाकृत कम लाभ प्राप्त होगा। जो व्यक्ति अपना काम करते हैं उनको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। सट्टा व शेयर मार्केट से लाभ के योग मार्च से जून के मध्य बनेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से यह वर्ष विशेष लाभ दायक रहेगा। आय स्थान का शनि धनागम में निरन्तरता बनाए रखेंगे। फंसे हुए धन या रुके हुए धन की प्राप्ति होगी। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे उसमें भी आप धन व्यय करेंगे।

उत्साह एवं पराक्रम के साथ अपने आर्थिक स्थिति को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे। इस वर्ष वाहन के क्रय, भवन निर्माण कार्य या घर में विवाह आदि पर धन का व्यय होगा। निवेश के लिए भी यह समय अनुकूल है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के प्रारम्भ में दूसरे भाव पर गुरु की दृष्टि से परिवार में शांतिपूर्ण वातावरण रहेगा। आपको पारिवारिक माहौल से सहारा मिलेगा। 30 जून के बाद परिवार में नये सदस्यों की बढ़ोत्तरी होगी। यह बढोत्तरी विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकता है। परिवार के विरोधी दूर होंगे एवं परिवार के लोगों का व्यवहार आपके प्रति बहुत अच्छा हो जायेगा।

19 सितम्बर को राहु ग्रह का गोचर तृतीय स्थान में होगा। उस समय आप परोपकारी व जन कल्याण तथा सेवा कार्यों में संलग्न रहेंगे। ऐसा करने से आपके मान-सम्मान व पुण्य की वृद्धि होगी।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप के बच्चों की शिक्षा व उन्नति का मार्ग खुला हुआ है।

30 मार्च से जून पर्यंत पंचम स्थान पर शनि एवं गुरू के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान प्राप्ति के सुंदर योग बन रहे हैं। यह समय गर्भाधान के लिए उपयुक्त मुहूर्त है। यदि आपकी प्रथम संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो यह वर्ष अच्छा रहेगा। कभी-कभी मौसम जनित बीमारियों से परेशान हो रहे हैं तो जल्दी ही आप अच्छे हो जाएंगे।

आप स्वास्थ्य लाभ व आरोग्यता के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम आदि सीखने में रुचि लेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर के लिए अच्छा रहेगा, षष्ट स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि से प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता के लिए अच्छा योग बन रहा है। आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की प्रबल संभावना है। 30 मार्च से जून पर्यन्त पंचम स्थान पर शनि एवं गुरू की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थीगण अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। उच्च शिक्षा के लिए मनोनुकूल संस्थान मे प्रवेश मिल जाएगा।

यात्रा-तबादला

इस वर्ष अधिक यात्राएं नहीं होंगी परन्तु व्यावसायिक जीवन में विस्तार व उन्नति के उद्देश्य से की जाने वाली सभी यात्राएं लाभ व आनन्दकारी रहेंगी।

नौकरी करने वालो का स्थानान्तरण होगा। 19 सितम्बर के बाद अधिक यात्राओं के योग बनेंगे व परिवार के साथ किसी पर्यटन स्थल की यात्रा अवश्य होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। आपका मन एकाग्र रहेगा जिससे योग ध्यान इत्यादि क्रिया करते रहेंगे। आप पुण्य के कार्यों से अपनी कीर्ति का विस्तार करेंगे।

- अपने कार्य स्थल पर व्यापार वृद्धि यन्त्र व घर पर गायत्री यन्त्र स्थापित करें एवं नित्य पूजन करें।

• राहु मन्त्र का पाठ करें या शनि वार के दिन नीली वस्तु का दान करें।

मासिक फलादेश

जनवरी 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने कार्य क्षेत्र में विशेष सफलता तथा लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आपके अधिकारी तथा वरिष्ठ सहयोगी भी आपसे पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आप पदोन्नति के अधिक अवसर प्राप्त करेंगे। बन्धु तथा मित्र वर्ग से आप पूर्ण सुख तथा सहयोग अर्जित करेंगे तथा उनकी भलाई के कार्यो के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस मास में सफल होंगे अतः मानसिक रूप से भी आप प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करते रहेंगे। इस समय समाज में आपके प्रभुत्व में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को स्वीकार करेंगे तथा आपकी ख्याति भी दूर दूर तक व्याप्त रहेगी। साथ ही अन्य प्रकार से भी लाभार्जन होता रहेगा। इसके अतिरिक्त इस महीने आप नवीन गृह या स्थान की प्राप्ति भी कर सकते है तथा आपकी मनोकामनाएं भी इस समय पूर्ण होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से भी पूर्ण सुख प्राप्त करेंगे तथा आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से ही सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप अन्य प्रकार से सुख तथा ऐश्वर्य अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा सुख पूर्वक इस मास को व्यतीत करेंगे।

फरवरी 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ फलदायक रहेगा इस समय स्त्री वर्ग से आपको पूर्ण लाभ प्राप्त होगा तथा आपके सौभाग्य में भी वृद्धि होगी। जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथासमय सिद्ध होंगे फलतः मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट तथा शान्त रहेंगे। साथ ही सरकार तथा उच्चाधिकारी वर्ग से भी आप उचित लाभ एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। आपका शारीरिक स्वास्थ्य भी इस समय उत्तम रहेगा एवं ज्ञानार्जन के क्षेत्र में भी आप रूचिशील रहेंगे तथा इसको प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। साथ ही मित्र एवं बन्धु वर्ग से भी आपके मधुर संबध रहेंगे तथा इनसे पूर्ण लाभ तथा सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप इच्छित द्रव्यों की भी प्राप्ति करेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे संतति पक्ष से भी आप सुख तथा सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे। सामाजिक जनों के मध्य आप इस समय मान सम्मान प्राप्त करेंगे तथा आपके विलम्बित कार्य भी इस समय पूर्ण होंगे।

साथ ही इस मास में आप स्त्री तथा महिला सहयोगियों से वांछित सहयोग तथा लाभार्जन करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में भी निर्मलता का भाव विद्यमान रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धन तथा सुख प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस मास में आप धर्मानुपालन में भी प्रवृत रहेंगे एवं समाज में यथोचित प्रतिष्ठा अर्जित करने में सफल रहेंगे।

मार्च 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए मध्यम रहेगा। अतः इस समय आप शुभाशुभ दोनों प्रकार के फलों को प्राप्त करेंगे। आप का इस मास में व्ययाधिक्य रहेगा तथा दुष्ट मनुष्यों की संगति भी प्राप्त होगी। साथ ही स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा। आपके सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य इस समय अपने ही परिश्रम से सिद्ध हो सकेंगे फिर भी आपको पूर्ण सन्तुष्टि नहीं मिलेगी। धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से भी धन हानि के योग बनेंगे। मित्रों एवं संबधियों के मध्य आपके संबधों में तनाव रहेगा तथा इनसे आवश्यक सुख तथा सहयोग भी नहीं मिलेगा। इस मास में आप जो भी कार्य प्रारंभ करेंगे उसमें अनावश्यक विध्न बाधाएं उत्पन्न होगी जिससे मानसिक रूप से भी आप अशान्त रहेंगे। शत्रुओं से भी आपके हृदय में नित्य चिन्ता तथा भय का वातावरण बना रहेगा। साथ ही महत्वपूर्ण कार्यो में भी मनोवांछित सिद्धि नहीं मिलेगी।

परन्तु इस मास में अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फल भी प्राप्त होंगे। इससे आप अपने श्रेष्ठजनों तथा उच्चाधिकारियों से सहयोग अर्जित करेंगे तथा कार्य क्षेत्र में भी उन्नति के अवसर बनेंगे। इस मास में आपकी यात्रा भी हो सकती है। इसके अतिरिक्त नवीन वस्त्रों या वस्तुओं को भी आप अर्जित करने में सफल रहेंगे।

अप्रैल 2020 के लिए फलादेश

इस मास को आप अत्यंत ही सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करेंगे। इस समय आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी आप शान्त तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इस मास में आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा शत्रुओं को पराजित करने में आप सफल रहेंगे साथ ही आपके लाभ मार्ग भी प्रशस्त रहेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या नौकरी के अतिरिक्त अन्य साधनों से भी आप इस मास में धनार्जन करेंगे। इस समय आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न होंगे तथा भाग्य में भी वृद्धि होगी। साथ ही आपके प्रतीक्षित शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य भी सम्पन्न होंगे जिससे आपको हार्दिक प्रसन्नता प्राप्त होगी मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे तथा उनसे आपको पूर्ण सहयोग तथा सुख भी अर्जित होगा। इस समय सासारिक कार्यो को भी पूर्ण करने में आप सफल रहेंगे। इसके अतिरिक्त राज्य के उच्चाधिकारी वर्ग भी आपसे पूर्ण प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे तथा इनसे आपको यथोचित सहयोग तथा आदर प्राप्त होगा।

साथ ही इस मास में आप स्त्री एवं संतति से पूर्ण रूप से सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस समय आपकी बुद्धि निर्मल रहेगी तथा धन लाभ भी प्रचुर मात्रा में होता रहेगा। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा का भाव रहेगा एवं समाज में आपकी प्रतिष्ठा में भी वृद्धि होगी। अतः यह मास आपके लिए शुभ रहेगा।

मई 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आप अपने पराक्रम एवं उत्साह से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करेंगे। साथ ही समाज से भी आप उचित मान सम्मान प्राप्त करने में सफल रहेंगे। इस समय आपके यश में वृद्धि होगी तथा बन्धु एवं मित्रों के मध्य आपकी प्रतिष्ठा बढ़ेगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग तथा सुख भी प्राप्त होगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप आश्रय प्राप्त करेंगे एवं अपने कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो को

सम्पन्न करने में सफल रहेंगे। इस मास में आप मिष्ठान अधिक मात्रा में भक्षण करेंगे।साथ ही आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा फलतः शारीरिक बल में वृद्धि होगी। इस समय आपके शत्रु क्षीण रहेंगे अतः उनका दमन करने में आप को सफलता प्राप्त होगी। स्त्री से आप पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इसके साथ ही व्यापार आदि कार्यो से भी आप अतिरिक्त आय अर्जित होगी जिससे आर्थिक सुदृढ़ता बनी रहेगी।

साथ ही इस मास में आप महिला सहयोगियों से भी लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। इस समय आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी अतः आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य बुद्धिमता से सम्पन्न होंगे। धर्म के प्रति भी आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा इस मास में किसी धार्मिक उत्सव या कार्यक्रम का भी आयोजन कर सकेंगे। इस प्रकार यह मास आपके लिए उत्तम फलदायक रहेगा।

जून 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया शुभ ही रहेगा तथापि अल्प मात्रा में अशुभ फल भी घटित होंगे। इस समय आप अपने पराक्रम से धनार्जन करेंगे तथा विभिन्न प्रकार से सुखोपभोग करने में सफल रहेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा यश में भी वृद्धि होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करने के लिए तत्पर रहेंगे साथ ही अन्य जनों की भलाई के लिए भी आप इस मास में कार्य करते रहेंगे। इस समय स्वास्थ्य भी सामान्य ही रहेगा। उच्चाधिकारी वर्ग से आप पूर्ण सहयोग तथा आश्रय प्राप्त करेंगे जिससे समाज में आपको पूर्ण ख्याति प्राप्त होगी। मित्रों एवं बन्धु वर्ग से आपके मधुर संबध रहेंगे एवं उनसे आपको वांछित सुख तथा सहयोग भी प्राप्त होता रहेगा इसके अतिरिक्त आपकी मनोकामनाएं भी इस मास में पूर्ण होगी। जिससे आप मानसिक सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में अशुभ फल भी होंगे।अतः आप गर्मी या पित्तादि से उत्पन्न दोषों से शारीरिक कष्ट प्राप्त करेंगे साथ ही किसी प्रकार से रूधिर विकार की संभावना भी हो सकती है अतः शारीरिक सुरक्षा का पूर्ण ध्यान रखें तथा सावधानी पूर्वक अपने कार्य कलापों को सम्पन्न करें जिससे कष्ट अल्प मात्रा में हों।

जुलाई 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अच्छा नहीं रहेगा तथापि न्यूनाधिक रूप से आप शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा एवं कई प्रकार से आप शारीरिक कष्टानुभूति करगें। आपके शत्रु भी इस मास प्रबल रहेंगे फलतः उनकी ओर से भी आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप असन्तुष्ट तथा अशान्त रहेंगे। इस समय आपके व्यापार या आजिविका संबधी कार्य में शिथिलता आएगी तथा इनसे आपको पूर्ण लाभ नहीं होगा। साथ ही आपका कोई कार्य बन्द हो सकता है या उसमें किसी प्रकार का परिर्वतन हो सकता है। इसके अतिरिक्त अन्य सामाजिक जनों से आपका परस्पर वाद विवाद भी हो सकता है। जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। इसके अतिरिक्त धन हानि का भी योग बनता है तथा शरीर में

कोई रोग भी उत्पन्न हो सकता है।

परन्तु अशुभ फलों के साथ साथ आप शुभ फल भी अवश्य अर्जित करेंगे। अतः स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करने में सफल रहेंगे तथा इनसे आप सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि की भी प्राप्ति करने में सफल रहेंगे। इस प्रकार आपके लिए यह मास मध्यम रूप से ही व्यतीत होगा।

अगस्त 2020 के लिए फलादेश

इस मास में आपकी बुद्धि में निर्मलता के भाव की वृद्धि होगी। अतः आपके अधिकाशं शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य स्वबुद्धि बल से ही सम्पन्न होंगे। इस समय आप कई प्रकार से द्रव्य लाभ अर्जित करेंगे तथा पुत्र से भी पूर्ण सुख एवं सहयोग अर्जित करेंगे। इस मास में आप ज्ञानार्जन करने में भी सफल रहेंगे। साथ ही प्रभुत्व में भी इस समय वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपकी प्रभुता तथा श्रेष्ठता को हृदय से स्वीकार करेंगे। इस मास में आपके अधिकाशं शुभ कार्य सम्पन्न होंगे तथा कहीं से कोई शुभ समाचार भी प्राप्त होगा जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपके मन में श्रद्धा की भावना उत्पन्न होगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इसके साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से आप यथोचित लाभार्जन करने में सफल रहेंगे एवं समाज से भी आप पूर्ण मान प्रतिष्ठा अर्जित करेंगे। अतः मन से भी सन्तुष्ट तथा प्रसन्न रहेंगे।

साथ ही शुभ फलों के साथ साथ इस मास में आप अशुभ फल भी प्राप्त करेंगे। इससे आप वायु द्वारा उत्पन्न रोगों से कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा जाने अनजाने किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आएगी तथा इसके लिए आप पश्चाताप करेंगे। इसके अतिरिक्त अग्नि के द्वारा भी आप धन हानि को प्राप्त कर सकते है। अतः यह मास आपके लिए शुभाशुभ फलों से युक्त रहेगा।

सितम्बर 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ फलदायक रहेगा। इस समय आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहेगा। फलतः शरीर में कमजोरी रहेगी। इस मास में आपके शत्रु भी बलवान रहेंगे जिससे वे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे। फलतः आप उनसे चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे। आपके घर में इस समय चोरी भी हो सकती है। साथ ही नौकरी या व्यवसाय में उच्चाधिकारी वर्ग की पूर्ण रूप से आज्ञा का पालन करें अन्यथा आपको किसी भी प्रकार से दण्डित भी किया जा सकता है। इस मास में आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य अल्प मात्रा में ही सफल होंगे साथ ही धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर रहेगी। इसके साथ ही आप किसी ऐसे कार्य को सम्पन्न करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में न्यूनता आऐगी। आपके मित्रों एवं संबधियों से भी इस मास तनाव पूर्ण संबध रहेंगे तथा मनोकामनाएं भी अल्प मात्रा में पूर्ण होगी। इस समय मान हानि का भी योग बनता है अतः सावधानी पूर्वक अपने कार्यो को सम्पन्न करें।

इसके साथ ही इस मास में आप वायुजनित रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे तथा आग के द्वारा

भी आपको धन हानि हो सकती है। अतः आपको पूर्ण रूप से सतर्क होकर अपना समय व्यतीत करना चाहिए।

अक्तूबर 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आप स्त्री तथा बन्धु वर्ग से कष्ट प्राप्त करेंगे अथवा इनको किसी प्रकार का कष्ट हो सकता है। साथ ही शत्रु पक्ष भी प्रबल रहेगा जिससे वे आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे अतः उनसे आप भयभीत तथा चिन्तित रहेंगे। इस समय आपमें उत्साह के भाव की अल्पता रहेगी तथा धन का व्यय भी अधिक मात्रा में होगा। जिससे आप आर्थिक संकट भी प्राप्त कर सकते है। आपके मन में इस मास में लोभ के भाव की बहुलता रहेगी तथा शारीरिक स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा मित्रों एवं बन्धु वर्ग से संबधों में इस समय तनाव रहेगा तथा मित्र भी शत्रुओं की तरह व्यवहार करेंगे। अतः हृदय से भी आप अशान्त तथा असन्तुष्ट रहेंगे। साथ ही पारिवारिक तथा अन्य सामाजिक जनों से भी परस्पर वाद विवाद होते रहेंगे अतः संयम पूर्वक समय को व्यतीत करना चाहिए जिससे अनावश्यक कष्ट न हों।

परन्तु इस मास में आप अशुभ फलों के साथ साथ शुभ फलों को भी प्राप्त करेंगे। इससे आप स्त्री एवं पुत्र से पूर्ण सुख तथा सहयोग प्राप्त करेंगे एवं इनसे आप पूर्ण प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे। इसके साथ ही इस समय आप नवीन वस्त्र या द्रव्य आदि भी प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे जिससे मानसिक रूप से आप प्रसन्न रहेंगे।

नवम्बर 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए सामान्यतया अशुभ ही रहेगा अतः इस समय शत्रु पक्ष से आप चिन्तित तथा भयभीत रहेंगे तथा आपके लिए वे अनावश्यक समस्याएं भी उत्पन्न करेंगे। साथ ही इस समय आपके घर में चोरी होने की भी संभावना रहेगी तथा अनावश्यक व्यय भी होगा एवं शुभ कार्यो में विध्न बाधाएं भी उत्पन्न होंगी। आपकी आर्थिक स्थिति भी इस समय अच्छी नहीं रहेगी एवं धर्म के प्रति भी आपके मन में विशेष श्रद्धा का भाव नहीं रहेगा तथा इसके अनुपालन में भी उपेक्षा का भाव रखेंगे। आप इस समय शरीर से भी अस्वस्थ रहेंगे एवं कई प्रकार से कष्ट भी प्राप्त करेंगे जिससे आपकी शारीरिक शक्ति में अल्पता आएगी। इस मास में आप दूर की किसी यात्रा को भी संम्पन्न कर सकते है। सांसारिक कार्यो में भी आप कष्टानुभूति प्राप्त करेंगे तथा मुकद्दमे आदि में भी धन व्यय होगा अतः मानसिक रूप से भी आप असन्तुष्ट रहेंगे।

साथ ही इस मास में आप गर्मी या पित्त दोष से उत्पन्न रोगों से कष्ट प्राप्त करेंगे। इस समय किसी प्रकार का रक्त विकार भी हो सकता है तथा अग्नि आदि से भी आप धन हानि प्राप्त कर सकते है। अतः सतर्कता पूर्वक अपने समय को व्यतीत करें जिससे अनावश्यक कष्ट तथा बाधाएं उत्पन्न न हों।

दिसम्बर 2020 के लिए फलादेश

यह मास आपके लिए अत्यंत ही शुभ तथा सौभाग्यवर्द्धक रहेगा। इस समय आप मात्रा

में लाभार्जन करेंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। साथ ही उच्चाधिकारी वर्ग आपसे प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रहेंगे जिससे आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य समय से सम्पन्न हो जाएंगे। इस मास आपके घर में कोई धार्मिक उत्सव भी सम्पन्न हो सकता है। संतति पक्ष से भी आप सुखी रहेंगे एवं उनसे पूर्ण सहयोग प्राप्त करेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के प्रति आपकी श्रद्धा की भावना रहेगी तथा विधिपूर्वक आप इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। इस समय समाज में आपका यश दूर दूर तक फैलेगा तथा भाग्योदय संबधी कार्य शीघ्र सम्पन्न होते रहेंगे। आपकी बुद्धि भी निर्मल रहेगी तथा इस मास में आप दूर समीप की लाभदायक यात्रा भी करेंगे।साथ ही उच्चाधिकारियों से मान एवं सम्मान अर्जित करेंगे तथा बन्धु एवं मित्रों से अत्यंत ही मधुर संबध रहेंगे एवं एक दूसरे से वांछित सहयोग प्राप्त करेंगे। इस प्रकार समाज में सर्वत्र आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

साथ ही इस मास में आप स्त्री से पूर्ण सहयोग तथा सुख प्राप्त करेंगे तथा अपनी बुद्धिचातुर्य से प्रचुर मात्रा में धनार्जन करने में भी सफल रहेंगे। इस प्रकार सम्पूर्ण मास विविध प्रकार के सुखों को उपभोग करते हुए व्यतीत करेंगे तथा समाज से यश भी अर्जित करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2021

इस वर्ष शनि मकर राशि में एकादश भाव में और राहु वृष राशि में तृतीय भाव में रहेंगे। 6 अप्रैल को गुरू कुम्भ राशि में द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 सितम्बर को मकर राशि में एकादश भाव में गोचर करेंगे और मार्गी होकर फिर से 20 नवम्बर को कुम्भ राशि में द्वादश भाव में आजाएंगे। मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 17 फरवरी से 19 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष पूर्ण फलदायक रहेगा। वर्ष के शुरुआत में सप्तम स्थान पर गुरू की दृष्टि व्यापार में उन्नति के योग बना रही है। यदि आप कुछ नया करने जा रहे हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आपके कार्यों में सफलता की मात्रा और बढ जाएगा। आप अपने व्यापार में अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। व्यापार में आपके बाईयो का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक गुरू ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस समय बाहरी सम्बन्धों से लाभ के योग हैं। इस अवधि में स्थानान्तरण के योग हैं। सितम्बर के बाद और अधिक अनुकूल हो जाएगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। एकादश स्थान में गुरू एवं शनि की युति प्रभाव से धनागम में निरंतरता बना रहेगा। जिससे आप इच्छित बचत करके अपनी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में सफल रहेंगे।

6 अप्रैल के बाद गुरू ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होगा। उस सयम धन का अनावश्यक व्यय होगा।आपपरिवार में मांगलिक कार्य पर धन का व्यय करेंगे। 14 सितम्बर के बाद आपके रूके हुए पैसे मिल सकते हैं और अकस्मात् धन लाभ भी हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। परन्तु आपका पारिवारिक माहौल अनुकूल रहेगा। आपको भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर के मध्य आपका पारिवारिक माहौल थोड़ा प्रभावित हो सकता है। परन्तु सितम्बर के बाद बहुत अच्छा हो जाएगा।

तृतीय स्थान का राहु आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि करेगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बहुत अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरू एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। नव विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति के प्रबल योग बन रहे हैं।

आपके बच्चे की शिक्षा में सुधार होगा। यदि आपकी दूसरी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार हो जाएगा। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक समय थोड़ा प्रतिकूल होगा परन्तु सितम्बर के बाद फिर सेअनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। यदि पहले से कोई बीमारी नहीं है तो वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्यबर्धक रहेगा।

अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पानएवं दिनचर्या भी सही रखेंगे। मौसम जनित कोई बीमारी होती है तो शीघ्र ही स्वस्थ हो जाएंगे। 6 अप्रैल से 14 सितम्बर तक द्वादश स्थान स्थित गुरु आपके स्वास्थ्य को थोड़ा प्रभावित कर सकते हैं। परन्तु सितम्बर के बाद फिर से अनुकूल हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरू की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षण संस्थान में प्रवेश पाना सम्भव है।

जिन जातको की नौकरी अभी नही लगी है उन लोगो को 14 सितम्बर के बाद नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। 6 अप्रैल के बाद द्वादश स्थान का गुरू आप को विदेश यात्रा करा सकते है। मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण के योग भी हैं।

तृतीय स्थान का राहु छोटी यात्रा कराता रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरू ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवमस्थ केतु के प्रभाव से आपका मन तन्त्र-मन्त्र आदि क्रियाओं की ओर आकर्षित होगा।

- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें और वृहस्पतिवार का व्रत रखें।
- विष्णुसहस्त्रनाम का पाठ करें एवं अपने घर में लड्डू गोपाल की मुर्ति स्थापित करें।

इस वर्ष 13 अप्रैल को गुरु मीन राशि में प्रथम भाव में और 17 मार्च को राहु मेष राशि में द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अप्रैल को शनि कुम्भ राशि में द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 12 जुलाई को मकर राशि में एकादश में आजाएंगे। 30 सितम्बर से 21 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यापारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ मिला जुला रहेगा। इस समय के अन्तराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। पहले से चले आ रहे व्यापार को और अच्छे ढंग से चलाएं। नौकरी करने वालों का अस्थायी रूप से स्थानान्तरण हो सकता है।

13 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप अपने व्यापार में कुछ विशेष करेंगे जिससे आपको अच्छा लाभ होगा। लग्न स्थान स्थित गुरु से आप नये-नये विचारों के बल पर व्यापारिक उन्नति प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतः अनुकूल रहेगा। केवल वर्षारम्भ में द्वादशस्थ गुरु के चलते धन का व्यय़ अधिक होगा परन्तु 13 अप्रैल के समय अच्छा हो रहा है। एकादशस्थ शनि धनागम में निरंतरता बनाए रखेंगे। जिससे आपके पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

आपका रुका हुआ धन मिल सकता है। आपके बड़े भाई या मित्रों से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। निवेश के लिए यह समय विशेष अनुकूल है। यदि इस आपने निवेश किया तो आपको इच्छित बचत हो सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। जिसके कारण किसी के साथ आपका वैचारिक मतभेद हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय कुछ अनुकूल होगा परन्तु परिवार में फिर कुछ तनाव की स्थिति रह सकती है अतः धैर्य से काम लें। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल है। नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती हैं। 13 अप्रैल को गुरु ग्रह का गोचर लग्न स्थान में होगा। उस समय आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा है। यदि वह विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान में गुरु का गोचर आपके स्वास्थ्य के लिए अच्छा नहीं है। यदि पहले से किसी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह समय अधिक कष्ट कारक हो सकता है।

13 अप्रैल के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। लग्न स्थान के गुरु के प्रभाव से मन में अच्छे विचार आएंगे। आप शाकाहारी भोजन, सुचारु दिनचर्या, योग व ध्यान आदि क्रियाओं के महत्व को समझते हुए इन्हें अपने जीवन में अपनाकर मन की शुद्धि व शारीरिक आरोग्यता प्राप्त करेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा, षष्ट स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप सफलता प्राप्त रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में अधिक सुधार लाएंगे ।

वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, आपके कार्यों में लाभ प्राप्त होगा। बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय और अनुकूल हो रहा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छा योग बना रहे हैं। इस समय के अंतराल में आप विदेश यात्रा करेंगे।

13 अप्रैल के बाद लम्बी व छोटी यात्रा के योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवम एवं पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान व पूजा पाठ के प्रति आपका आकर्षण बढ़ेगा। आप अपने गुरुजनों का सम्मान करेंगे। उनके दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे और गरीबों की सहायता करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू-सन्तों, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- दुर्गा बीसा यन्त्र अपने गले में धारण करें तथा दुर्गा कवच का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्य को अर्घ्य दें।

इस वर्ष 22 अप्रैल को गुरु मेष राशि में द्वितीय भाव में 17 जनवरी को शनि कुम्भ राशि में द्वादश भाव में और 22 नवम्बर को राहु मीन राशि में प्रथम भाव में प्रवेश करेंगे। वक्री मंगल 13 जनवरी को मार्गी हो जाएंगे और पूरे वर्ष सरल गति से गोचर करेंगे। 4 अगस्त से 18 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। सप्तम भाव पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप व्यवसाय व कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे।आपकी आय में वृद्धि होगी। आमदनी के नये स्रोत मिलने की उम्मीद है।

अप्रैल के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। परन्तु आप अपने विवेक से उसे भी अनुकूल बना लेंगे। फिर भी आपको किसी पर विश्वास किये बिना अपना कार्य करते रहना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने कार्यस्थल पर ही मान सम्मान प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिसे वर्ष का प्रारम्भसामान्य रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम तो होगा परन्तु बचत नहीं कर पाएंगे। द्वितीय स्थान का राहु आर्थिक स्थिति में उतार चढ़ाव की संभावना बनाए रखेगा। 22 अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु शनि एवं राहु के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको रत्न आभूशण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी।

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप निवेश के मामले में सावधान रहें यदि निवेश करना बहुत आवश्यक हो तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 22 अप्रैल के बाद द्वितीय स्थान के गुरु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनाएंगे। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बना रहेगा।

इस वर्ष परिवार में किसी सदस्य की बढ़ोत्तरी हो सकती है। यह वृद्धि विवाह या जन्म से हो सकती है। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। अष्टम स्थान का केतु आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका सम्बन्ध खराब करा सकता है अतः वाणी पर नियंत्रण लाभप्रद रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। गर्भाधान के लिए उपयुक्त समय है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। वह अपने भाग्य के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

यदि आपकी सन्तान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह संस्कार भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय अनुकूल है। उसको अपने कार्य क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी।22 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो जाएगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यहवर्ष अनुकूल नहीं रहेगा परन्तु वर्षारम्भ में लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपको अधिक परेशानी नहीं होगी। वर्ष के उत्तरार्द्ध में कुछ स्वास्थ्य सम्बन्धी परेशानियां बढ़ सकती हैं।

लग्न का पाप कर्तरी योग में होने के कारण स्वास्थ्य चिन्ताजनक बना रहेगा। सिर या वायु संबंधित समस्या हो सकती है। अतः उस समय अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना बहुत जरूरी होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष आपके लिए प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता की दृष्टि से सामान्य ही रहेगा। यदि उच्च शिक्षा हेतु उच्च शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश पाना चाहते हैं तो आपके लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। पंचम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद छठे स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से प्रतियोगितापरीक्षार्थियों को कुछ रुकावटों व संघर्ष के बाद सफलता प्राप्त होगी। रोजगार प्राप्ति के लिए अधिक शुभ अवसर नहीं हैं।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से वर्षारम्भ में आपकी लम्बी यात्रा के योग बन रहे हैं। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से विदेश यात्रा भी हो सकती है।

22 अप्रैल के बाद अष्टम स्थान पर गुरु एवं राहु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समुद्र यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत ज्यादा जरूरी है क्योकि राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। जिसके प्रभाव से आपकी पूजा-पाठ मेंरुचि बढ़ेगी। ईश्वर केप्रति आप का अटूट विश्वास होगा। दान पुण्य करने में आप सबसे आगे रहेंगे। 22 अप्रैल के बाद समय और अनुकूल हो रहा है।

- शनिवार के दिन लोहे का तवा दान करें एवं शनि मन्त्र का जप करें।
- मंगलवार के दिन हनुमानजी को चोला चढ़ाएं एवं नित्यप्रति हनुमान चालीसा का पाठ करें।

• दुर्गा बीसा कवच अपने गले के धारण करें।
• स्फटिक श्रीयन्त्र अपने घर में स्थापित कर उसके समने नित्य घी का दीपक जलाएं।

वार्षिक फलादेश - 2024

इस वर्ष शनि कुम्भ राशि में द्वादश भाव में और राहु मीन राशि में लग्न में रहेंगे। वर्षारम्भ में गुरु मेष राशि में द्वितीय भाव में रहेंगे और 1 मई को वृष राशि में तृतीय भाव में गोचर करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 29 अप्रैल से 28 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य फलदायक रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वालों को अपने कार्यस्थल पर मान सम्मान प्राप्त होगा।

अप्रैल के बाद कार्य व्यवसाय के लिए समय अनुकूल हो रहा है। सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि व्यापारिक व्यक्तियों के लिए शुभ है। जो व्यक्ति साझेदारी में कार्य कर रहे हैं उनको लाभ प्राप्त होगा। आपको साझेदार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। कार्य व्यवसाय में आपको जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी।

अष्टम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का योग बन रही है। अप्रैल के बाद धार्मिक व सामाजिक कार्यो में भी आप धन व्यय करेंगे, जिससे आपको आत्मिक प्रसन्नता का अनुभव होगा।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना होने के कारण परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

अप्रैल के बाद भाइयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, जिससे समाज में आपका पराक्रम बना रहेगा। सामाजिक गतिविधियों में भाग लेंगे। समाजिक उत्थान के लिए आप किसी संस्था का संचालन भी कर सकते हैं।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगी। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। अप्रैल के बाद आपकी दूसरी संतान के लिए समय बहुत शुभ है।

गर्भाधान हेतु समय शुभ है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में आपके बच्चों के साथ आपका भावानात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं। यदि पहले से कोई रोग है तो सावधानी बरतें। संतुलित खान-पान के साथ साथ दिनचर्या भी अनुशासित रखें।

सुबह सुबह व्यायाम व योगाभ्यास करें। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। षष्ठ स्थान पर शनि एवं गुरू के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार लाएंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

बेरोजगार लोगों को नौकरी मिलने की संभावना है। अप्रैल के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो सकता है। उस समय आपको सफलता प्राप्ति के लिए अधिक मेहनत करनी पड़ सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान के शनि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। अप्रैल के बाद तृतीय स्थान पर गुरू ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि इस वर्ष राहु एवं शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। परन्तु लग्नस्थ राहु के प्रभाव से आप आलसी हो सकते है, जिससे दैनिक पूजा-पाठ प्रभावित हो सकता है।

- शनिवार के दिन सुबह सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।

• अपने गले में दुर्गा बीसा यन्त्र कवच धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु लग्न स्थान में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि लग्न स्थान में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि चतुर्थ भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि पंचम सप्तम भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि चतुर्थ भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए।

14 मई के बाद दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समय अनुकूल हो रहा है। अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। जिससे आप अपने कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे। भूमि से संबंधित काम करने वाले व्यक्तियों के लिए समय अच्छा है। उनको इच्छित लाभ प्राप्त हो सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी परन्तु शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे।

14 मई के बाद गुरु ग्रह का गोचर चतुर्थ स्थान में होगा। उस समय आपको भुमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु की दृष्टि के कारण पैतृक संपत्ति, गढ़ा हुआ धन या ससुराल पक्ष से धन प्राप्त हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

सामाजिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। सामाजिक गतिबिधियों में आप बढ़ चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा।

14 मई से चतुर्थ स्थान पर गुरुग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिससे आपके परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। माता पिता व पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्षारम्भ में आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपने बौद्धिक बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा है। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए भी समय शुभ है। यदि वे विवाह योग्य हैं तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अच्छा नहीं है। लग्न स्थान का राहु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। 29 मार्च के बाद आपका स्वास्थ्य अचानक प्रभावित हो सकता है। लग्न स्थान पर एक साथ राहु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आप समय पर खान-पान नहीं कर पाएंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है।

मई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है, उस समय स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का निवारण होना शुरु होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रूचि बढ़ेगी। बेरोजगार जातकों को रोजगार के लिए अभी कुछ और इंतजार करना पड़ेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी।

14 मई के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादश स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि आपको विदेश यात्रा भी करा सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में नवम स्थान पर गुरुकी दृष्टि प्रभाव से आप पूजा पाठ में विशेष रूचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा करते रहेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।

• राहु मन्त्र का पाठ करें एवं दुर्गा यन्त्र अपने गले में धारण करें।

इस वर्ष मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु द्वादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु चतुर्थ भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहींरहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से आप आलसी हो सकते हैं। जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। यदि आप साझेदारी में कार्य कर रहे हैं, तो आप को इच्छित लाभ प्राप्त नहीं होगा परन्तु दशम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले जातकोंका पदोन्नति के साथ साथ अनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जूनके बाद आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते है। यदिआप शेयर बजार से जुड़े हैं तो आप को लाभप्राप्त होगा। परन्तु राहु शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आपके कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न करने की कोशिश करेंगे।

धन संपत्ति

द्वादश स्थान के राहु आर्थिक मामलों में उतार चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे, जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें।

02 जून के बाद एकादश पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन सकता है। जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। उस समय छोटे मोटे कर्जो से मुक्ति मिल सकती है। 31 अक्टूबर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें नहीं तो इसका परिणाम प्रतिकूल होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा जिससे सभी लोगों के अंदर साहनुभूति की भावना बनी रहेगी। आपको माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा परन्तु आपकेजीवनसाथी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। भाईयोंका सहयोग प्राप्त होगा। समाज मेंपद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 31 अक्टूबर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनो पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।शिक्षा के प्रति उनकी रूचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

02 जूनसे गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा।गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा समय है। आपके बच्चेआसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। पहले बच्चे का विवाह भी हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

लग्नस्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें नहीं तो शरीर पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आप अचानक बीमार हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

02 जून के बाद रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा। जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ्य रहेंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अंततः आपको सफलता मिलेगी परन्तु संघर्षात्मक परिस्थितियों में मिलेगी। अध्ययन के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

विद्यार्थियों के लिए 02 जून के बाद समय बहुत अच्छा हो रहा है। उस समय आपको सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। जो लोग नौकरी की तालाश में है उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ राहु के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं। वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे।

छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जूनबाद लम्बी यात्रा के भी योग बन रहे हैं। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। 02 जूनके बाद नवम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रूचि बढ़ेगी और आप अपनी अध्यात्मिक शक्ति बढ़ाने के लिए मन्त्र पाठ यज्ञ, अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं और हनुमान चालिसा का पाठ करें।
- राहु मन्त्र का पाठ करें या शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी में गुड़ डालकर खिलाएं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं लग्न स्थान में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष एकादश भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं छठे भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य से अच्छा रहेगा। कार्य, व्यापार में सफलता तो मिलेगी परन्तु इसके लिए आपको अधिक परिश्रम करना पड़ेगा। लग्नस्थ शनि के कारण आलस्य की भावना बनी रहेगा। जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके व्यापार पर भी पड़ सकता है। गुरु एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण उन्नति के अवसर मिलेंगे परन्तु आलस्य के कारण उसका भी लाभ नहीं ले पाएंगे।

जून के बाद समय और प्रभावित हो रहा है। षष्ठस्थ गुरु एवं द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव सेआप के व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा हैं। उस समय आपको अपने आत्मविश्वास को बढ़ाना पड़ेगा। कार्यस्थल पर परिवार के लोगों को सम्मिलित न करें। साझेदारी में व्यापार करना अच्छा नहीं रहेगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग नहीं मिलेगा, जिसके कारण आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। राहु एवं गुरु का गोचर अनुकूल होने के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। एकादशस्थ राहु के प्रभाव से अचानक धन लाभ होता रहेगा परन्तु लग्नस्थ शनि के प्रभाव से बीमारी में भी आप का पैसा खर्च हो सकता है।

जून के बाद कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीकों पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। पारिवारिक सदस्यों की बीमारी दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है। आप किसी को उधार पैसा न दें नही तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे लेकिन परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से गर्भाधान का शुभ समय चल रहा है। आपको बड़े भाइयों का

सहयोग प्राप्त हो सकता है।

जून के बाद द्वितीय स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता में कुछ सुधार होगा। आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लिए ये समय ज्यादा खराब है। 26 नवम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर सप्तम स्थान में होगा। उस समय इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

संतान

संतान के लिए वर्ष के पूर्वार्द्ध में पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। यदि उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो जाएगा।

जून के बाद समय प्रभावित हो रहा है। अतः उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देना जरूरी होगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत उत्तम रहेगा। लग्न स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में अनुकूल बनी रहेगी। आपके अंदर सकारात्मक उर्जा की वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी।

जून के बाद गुरु का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। छठे स्थान का गुरु पेट संबंधित रोग दे सकता है अतः उस समय अधिक तला व मसालेदार भोजन न करें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत बढ़िया है। व्यावसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय बहुत अच्छा नहीं रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के पूर्वार्द्ध में नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। धार्मिक यात्रा का भी योग बन रहा है।

26 जून के बाद द्वादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप विदेश यात्रा भी करेंगे। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अनुकूल है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। लग्नस्थ शनि के प्रभाव से मानसिक द्वंदता के कारण आपका मन पूजा पाठ में नहीं लगेगा परन्तु पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से आपको आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति होगी। आप अपने गुरु का सम्मान करेंगे। मन्त्र जाप व दान पुण्य आदि क्रियाओं के प्रति आपकी विशेष रूचि बनी रहेगी।

- प्रत्येक दिन दुर्गा सप्तसती का पाठ करें एवं नीली वस्तु का दान करें।
- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरण करें।
- शनिवार के दिन काला कंबल गरीबों को दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं एकादश भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बढ़िया रहेगा। इस अवधि में आपके आत्मविश्सास में वृद्धि होगी। फरवरी के बाद समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको किसी पर बहुत ज्यादा विश्वास नहीं करना चाहिए। नौकरी करने वाले व्यक्तियों को अपने अधिकारियों का सहयोग प्राप्त नहीं होगा।

24 जुलाई से गुरु ग्रह फिर से अनुकूल हो रहा है। किसी के साथ मिलकर कोई कार्य कर सकते हैं जिसमें आपको लाभ मिल सकता है। आपको कार्यों में पत्नी का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। व्यापारिक अनुकूलता के कारण इच्छित बचत करने सफल रहेंगे। एकादश के राहु अचानक धन लाभ करायेंगे। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय शीघ्र पैसा कमाने वाले तरीको पर अंकुश लगाना होगा। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा आपको हानि हो सकती है। आपका अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आपके रुके हुए या फंसे हुए पैसे वापस मिल सकते हैं। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार के सदस्यों पर भी आपका अधिक खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ परिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर-परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह हाने की सम्भावना है। परिवार में विवाह आदि शुभ कार्य होने से खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद-प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम

भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण संतान के लिए अच्छा नहीं है। संतान का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है जिसका नकारात्मक प्रभाव उसकी शिक्षा पर भी पड़ सकता है।

24 जुलाई के बाद समय फिर से अच्छा हो रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति करेंगे। यदि आप बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भाधान के लिए उत्तम समय है। यदि आपका दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह हो सकता है।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है परन्तु फरवरी के बाद मौसामजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते है। उस समय अपने स्वास्थ्य पर ज्यादा ध्यान दें। नहीं तो शरीरिक परेशानी बढ़ सकती है।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से शुभ हो रहा है। आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। शारीरिक आरोग्यता अनुकूल बनी रहेगी। अच्छे स्वास्थ्य के लिए अपने खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। फरवरी के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें। मानसिक रूप से दृढ़ रहें।

गुरु ग्रह का गोचर 24 जुलाई को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष का प्रारम्भ यात्रा के लिए सामान्य रहेगा। छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 28 फरवरी के बाद आपकी विदेश यात्राएं भी होंगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अनुकूल है। आपकी अपने घर से दूर की यात्रा हो सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में मानसिक द्वंदता के कारण पूजा-पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 24 जुलाई से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे जिससे आपके परिवार में सुख, समृद्धि आएगी एवं आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें और प्रत्येक दिन शनि मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु अष्टम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए अच्छा नहीं रहेगा। दूसरे स्थान के शनि कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। मार्च के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। आपको इष्ट मित्रों का सहयोग मिलने के कारण कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में कठिनाईयों के बावजूद भी विस्तार की संभावनाएं बन रही हैं। साझेदारी के लिए उपयुक्त समय है।

अपना आत्मविश्वास बनाए रखें क्योंकि शनि ग्रह के गोचर के बाद आपको अच्छा लाभ मिलेगा। यदि आप कोई नया कार्य शुरु करना चाहते हैं तो उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति हो सकती है। बड़े अधिकारियों का भी सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से वर्ष की शुरुआत अच्छी नहीं रहेगी। मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से आय के स्रोतों में बढ़ोत्तरी होगी। आपकी आर्थिक स्थिति में सुधार होना शुरु होगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन-देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। सन्तान या परिवार के किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर आपका पैसा खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं। परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे।

मार्च के बाद परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बनेगा। पत्नी के साथ समन्वय मधुर होंगे। 08 अगस्त के बाद तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से आपका मान-सम्मान बढ़ेगा।

संतान

वर्ष के प्रारम्भ में संतान संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। अष्टम स्थान के गुरु बच्चे के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है।

29 मार्च से आपके बच्चों के स्वास्थ्य में सुधार होगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल व परिश्रम से आगे बढ़ेंगे। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता बनी रहेगी। दुर्घटना या किसी प्रकार के शरीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। मोटापा एवं लीबरजनित बीमारियों से परेशान रहे सकते हैं।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होनी शुरु हो जाएगी। सुबह सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। 25 अगस्त के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगा। सफलता प्राप्त करने हेतु आपको अथक परिश्रम की आवश्यकता है इसलिए अपने मनोबल को बनाए रखें एवं कार्यशील रहें। मार्च के बाद तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

08 अगस्त के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल होने के कारण प्रतियोगिता परिक्षार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा में व्यवधान आ सकता है।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में ही आपकी विदेश यात्रा होंगी। मार्च के बाद छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी व्यावसायिक यात्राएं भी होंगी।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है। 25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आपकी जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। भण्डारा, गरीबों को दान और दूसरे की मदद करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। सप्तमस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आप अपनी धर्मपत्नी के

साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे या धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीब लोगों को बेसन के लड्डू दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2030

वर्षारम्भ में मेष राशि के शनि द्वितीय भाव में रहेंगे और 17 अप्रैल को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे धनु राशि के राहु दशम भाव में रहेंगे और 04 फरवरी को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। 25 जनवरी को गुरु वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 01 मई को तुला राशि एवं अष्टम भाव में गोचर करेंगे और फिर से मार्गी होकर 23 सितम्बर को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में आ जाएंगे। इस वर्ष मंगल अपने सरल गति से गोचर करेंगे 27 सितम्बर से 18 नवम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। शनि का गोचरीय प्रभाव आपके व्यावसायिक जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लेकर आएगा। आपका कठिन परिश्रम, कर्तव्यपरायणता एवं ईमानदारी आपके वरिष्ठ अधिकारियों को प्रभावित करेगी। आपके काम करने का तरीका भी आपको दूसरों से अलग बनाता है।

मई से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। इस दौर में गलत फहमियों के कारण आप व्याकुल होंगे और चिड़चिड़ा महसूस करेंगे। अथक प्रयास करने के बाद भी परिणाम आपके अनुसार नहीं होंगे। अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रूकावटें डाली जा सकती हैं। ऐसे में आपको बड़ी सावधानी से काम लेना चाहिए। हालांकि 23 सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। उस समय आपकी मेहनत आपके अधिकारियों की नजर में आएगी और वेतन वृद्धि व पदोन्नति के रूप में आपको पुरुस्कृत किया जा सकता है।

धन संपत्ति

आर्थिक रूप से यह वर्ष आपके लिए मिला-जुला रहेगा। यह साल जितना लाभकारी होगा उतना ही चुनौतीपूर्ण भी होगा। साल की शुरुआत में निवेश से सम्बन्धित योजनाओं पर ध्यान न दें और अपने दस्तावेज भी संभाल कर रखें। शनि ग्रह के गोचर के बाद आप निवेश करना शुरू कर सकते हैं। इस समय आप नयी सौदेबाजी भी कर सकते हैं।

मई से गुरु ग्रह का गोचर अष्टम स्थान में हो रहा है। उस समय के अंतराल में आपको आर्थिक निर्णय लेते समय सतर्क रहना चाहिए और जल्दबाजी में कोई निर्णय नहीं लेना चाहिए। 23 सितम्बर के बाद आप जो योजना बनाएंगे, कार्य वैसे ही संपन्न होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। द्वितीय स्थान के शनि पारिवारिक अनुकूलता भंग कर सकते हैं साथ ही परिवार में किसी व्यक्ति के साथ आपके वैचारिक मतभेद उत्पन्न होंगे, परन्तु शनि ग्रह के गोचर के बाद समय आपके लिए बहुत अच्छा हो रहा है। तृतीयस्थ शनि के प्रभाव से सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। आपको बच्चों का भी अच्छा सहयोग मिलेगा।

मई से गुरु का गोचर ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके संबंध खराब कर सकता है। अतः अच्छा यही होगा की आप अपनी सहनशक्ति को बढ़ाएं नही तो उन लोगों के साथ आपके संबंध खराब हो सकते हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चों को लिए अच्छा रहेगा। आपके बच्चे अपने बौद्धिक बल से आगे बढ़ेंगे। संतान के साथ संबंधों में मधुरता आएगी जिससे घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहें तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

17 अप्रैल के बाद पांचवे भाव पर शनि की दृष्टि के कारण संतान को लेकर चिन्ताएं बढ़ सकती है। उनके अध्ययन कार्य में एकाग्रता नही रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित समस्याए भी बनी रहेगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। द्वितीयस्थ शनि के कारण स्वास्थ्य संबंधित चिंताएं बनी रहेंगी। मौसमजनित बीमारियों से आप परेशान होते रहेंगे। दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। 1 मई के बाद अष्टमस्थ गुरु के प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है।

23 सितम्बर से शारीरिक आरोग्यता अनुकूल होना शुरू हो जाएगी। अपना स्वास्थ्य अनुकूल रखने के लिए खान-पान एवं दिनचर्या भी सही रखेंगे जिससे आपके स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी। सुबह-सुबह व्यायाम या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यह वर्ष प्रतियोगिता परीक्षा के लिए सामान्य रहेगी। विद्यार्थियों को वर्ष के प्रारम्भ में योग्यतानुसार सफलता मिलेगी। शिक्षा के क्षेत्र में कोई विशेष अड़चनें नहीं आएंगी।

अध्ययन कार्य में आपकी रुचि बनी रहेगी। अपने लक्ष्य के प्रति आपका उत्साह व साहस बना रहेगा। अप्रैल के बाद आप गुप्त विद्याओं के प्रति आकर्षित होंगे।

यात्रा-तबादला

यात्रा के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी यात्राओं के साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। नवमस्थ राहु के कारण आपकी सारी यात्राएं अचानक होंगी। जल्दी-जल्दी यात्रा की संभावना बन रही है।

आध्यात्मिक सुख प्राप्ति के लिए आप तीर्थस्थल की यात्रा करेंगे। कुछ समय के लिए प्रवास भी कर सकते हैं। मई के बाद देश विदेश घूमने का योग बन रहा है। इस समय के अंतराल में अवांछित यात्रा भी करनी पड़ सकती है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

नवम स्थान में राहु गुरु की युति धार्मिक कार्यों में व्यवधान डाल सकती है। आपका मन एकाग्र नहीं रहेगा जिससे आप पूजा, यज्ञ, अनुष्ठान आदि क्रिया कम ही कर पाएंगे। आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन गरीबों को बेसन के लड्डू दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2031

इस वर्ष वृष राशि के शनि तृतीय भाव में रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में वृश्चिक राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे और 9 अगस्त को तुला राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में वृश्चिक राशि के गुरु नवम भाव में रहेंगे और 17 फरवरी को धनु राशि एवं दशम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 14 जून को वृश्चिक राशि एवं नवम भाव में गोचर करेंगे और फिर मार्गी होकर 15 अक्टूबर को धनु राशि एवं दशम भाव में आ जाएंगे। 4 जनवरी से 15 अगस्त तक मंगल वक्री होकर तुला राशि एवं अष्टम भाव में रहेंगे। 2 अगस्त से 15 अगस्त तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

यह वर्ष आपके करियर में एक नया मुकाम लेकर आने वाला है। आपको कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी और यह आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। भले ही इस वर्ष कुछ ऐसे महीने भी होंगे जब आपको मामूली परेशानी का सामना करना होगा। लेकिन आप उन परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। इस साल की शुरुआत से ही आप अपनी काबिलियत को साबित कर सकने में कामयाब होंगे। राहु के गोचर के बाद समय किंचित प्रतिकूल होगा किन्तु आप अपनी लगन और कार्यकुशलता से सब मुश्किलों का हल सकारात्मक रूप से निकाल लेंगे।

15 अक्टूबर के बाद आप के अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम होगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण भी हो सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

यह साल आर्थिक रूप से अच्छा रहेगा। व्यावसायिक स्तर पर जोखिम उठाने में कोई नुकसान नहीं होगा। आपको अपने जरूरी दस्तावेजों की ओर विशेष ध्यान देना होगा। ऋण के लिए आवेदन डाला हो तो 18 फरवरी के बाद लोन मिल जाएगा। जमीन-जायदाद से संबंधित कई लाभकारी अवसर आएंगे। परन्तु बहुत सोच विचार कर उसमें निवेश करना चाहिए। क्योंकि चतुर्थ स्थान में शनि ग्रह का गोचर जमीन-जायदाद के लिए अच्छा नहीं होगा। धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। लेकिन पारिवारिक खर्च अधिक होने के कारण बचत नहीं कर पाएंगे। आप अपनी भौतिक सुख-सुबिधा पर अधिक खर्च करेंगे।

15 अक्टूबर के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। इस समय के अंतराल में आप इच्छित बचत करने में भी सफल होंगे। घर परिवार में मांगलिक कार्य होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च होंगे।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ पारिवारिक रूप से अच्छा रहेगा। आपके भाई-बहनों के लिए यह समय बहुत शुभ है। पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सभी सदस्यों का अच्छा सहयोग मिलेगा। 18

फरवरी के बाद द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी।

14 जून के बाद चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थितियां उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक वातावरण प्रतिकूल हो सकता है। 15 अक्टूबर के बाद समय फिर से बढ़िया हो जाएगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। आपके बच्चे कुछ ऐसे काम करेंगे जिससे आप उन पर गर्व करेंग। 8 अगस्त के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी।

यदि आपके बच्चे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। जीवन के प्रति आपके सक्रिय और अति उत्साहित रवैये के सहारे आप पूरे साल एकदम स्वस्थ रहेंगे। सुबह-शाम टहलना, नियमित व्यायाम व अभ्यास आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। अभ्यास से आपके भीतर की ऊर्जा का प्रवाह होगा और दूसरें कार्यों में पूरी तरह से ध्यान केन्द्रित करने में सहज महसूस करेंगे।

8 अगस्त के बाद मामूली से संक्रमण की चपेट में आप जरूर आ सकते हैं। चिंता करने से जीवन के दूसरे क्षेत्रों में आपका ही प्रदर्शन कमजोर साबित होगा। 15 अक्टूबर के बाद आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। प्रतियोगिता परीक्षा में आपके सफलता के प्रबल संकेत दिख रहे हैं। मनोनुकूल नौकरी की प्राप्ति हो सकती है। 14 जून के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। विद्यार्थियों को अपने करियर में उचित सफलता मिलेगी।

आपको प्रतियोगिता परीक्षाओं एवं अपने करियर के प्रति सजग रहने की आवश्यकता है। इस समय किया गया परिश्रम आने वाले समय में आपको लाभ देने वाला होगा। अतः आप अपने पूर्ण मन से प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी करें और करियर के प्रति सजग रहें।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ से ही आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं होती रहेंगी। 18 फरवरी के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मनोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। इस परिवर्तन से आप संतुष्ट रहेंगे।

व्यावसायिक व्यक्तियों की व्यवसाय से संबंधित यात्राएं होंगी और ये यात्राएं आप के लिए

अनुकूल या उन्नति कारक भी सिद्ध हो सकती हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

18 फरवरी के बाद घरेलू सुख शान्ति के लिए कोई विशेष पूजा पाठ संपन्न करेंगे जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं समाज में ख्याति प्राप्त होगी। गरीबों को दान देना, साधू संन्यासियों की सेवा करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। 1 जून के बाद आप योग, ध्यान, एवं साधना अधिक करेंगे जिससे आपका आध्यात्मिक ज्ञान बढ़ेगा। आध्यात्मिक ज्ञान का प्राप्त कर आप अलौकिक आनन्द की अनुभूति करेंगे।

- शनिवार के दिन काले कुत्ते को रोटी खिलाएं।
- प्रत्येक दिन सुबह स्नान के बाद सूर्य को जल दें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।

वार्षिक फलादेश - 2032

वर्षारम्भ में शनि वृष राशि एवं तृतीय भाव में होंगे और 31 मई को मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। तुला राशि के राहु अष्टम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में धनु राशि केगुरुदशम भाव में रहेंगे और 5 मार्च को मकर राशि एवं एकादश भाव में गोचर करेंगे और वक्री होकर 12 अगस्त को धनु राशि एवं दशम भाव में आजाएंगे और पुनः मार्गी होकर 23 अक्तूबर को मकर राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। जो कार्य आप करना चाहते हो उसे पूरा करके ही आगे बढ़ते हो। यही बात आपको सफल बनाएगी। कठिन परिश्रम और बुद्धिमत्ता आपकी खास ताकत है और इस साल आपको अपनी ताकत का प्रयोग करने के कई अवसर मिलेंगे जिनके सफल परिणामों का आप आनंद भी लेंगे।

12 अगस्त के बाद आपको वेतन वृद्धि या पदोन्नति के रूप में आर्थिक लाभ भी होगा। आपको अनेक लाभकारी अवसर मिलेंगे। जो व्यक्ति नौकरी बदलना चाहते हैंउनके लिए यह समय बहुत अच्छा रहेगा। 23 अक्तूबर से आपके कार्य व्यवसाय में चौमुखी विकास होगा। कोई नया कार्य भी प्रारम्भ करेंगे जिसमें आपको अत्यधिक लाभ प्राप्त होगा। वरिष्ठ लोगों या अधिकारियों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके व्यवसाय को एक नया मोड़ मिलेगा।

धन संपत्ति

पूरे साल आपकी आर्थिक स्थिति बेहतर रहेगी। आप कुछ बेहतरीन व्यावसायिक संबंध भी कायम करेंगे और लाभकारी निवेशकों के साथ भी निवेश करेंगे। इस निवेश से आपको बहुत अच्छा लाभ होगा। रत्न आभूषण, भूमि, वाहन, भवन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति हो सकती है। आप पहले कागजी कार्यवाही या फिर किसी वित्तीय लेन-देन की योजना भी बना सकते हैं। योजना बनाने के लिए समय बहुत उत्तम है। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से धोखा मिल सकता है। अतः आर्थिक मामलों में किसी पर ज्यादा विश्वास करना आपके लिए अच्छा नहीं होगा।

12 अगस्त के बाद समय और भी उत्तम हो रहा है। यदि आप निष्ठा के साथ प्रयास करते हैं तो आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी रहेगी। धनागम के योग और प्रबल होंगे तथा आपको आय का नया साधन मिलेगा। मातुल पक्ष के लोगों से आपको अच्छा लाभ होगा।

घर-परिवार, समाज

घरेलू वातावरण के लिए वर्ष का प्रारम्भ काफी अच्छा रहेगा। आप अपनी पारिवारिक जिम्मेदारियों को पूरी कुशलता से निभाते नजर आएंगे। आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा।5 मार्च से सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि अविवाहित व्यक्तियों का विवाह भी करा सकती है। विवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है जिससे आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। समाज में भी आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी।

12 अगस्त के बाद आपके माता पिता के लिए समय बहुत शुभ है। परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। मातुल पक्ष के लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा परन्तु अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। इस समय के अंतराल में आपके परिवार में मांगलिक कार्य भी संपन्न होते रहेंगे।

संतान

यह वर्ष संतान के लिए उत्तम रहेगा। आपके बच्चे की शिक्षा-दीक्षा में सुधार होगा। आप अपने बच्चों पर जो आशा रखते हैं वे उससे बढ़कर ही करेंगे। 5 मार्च के बाद आपकीसंतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। दूसरी संतान विवाह के योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है।

12 अगस्त के बाद बच्चों के साथ प्रेम व मधुर संबंधों में वृद्धि होगी परन्तु आपकी प्रथम संतान का स्वाथ्य प्रभवित हो सकता है अतः उसके खान-पान एवं दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

इस वर्ष आपका स्वास्थ्य बेहतर होगा। आप सेहतमंद और सक्रिय बने रहेंगे। आपके दृढ़ निश्चयी और सशक्त इच्छाशक्ति के कारण हीएकदम दुरुस्त रहेंगे। आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य संबंधी परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा। अष्टमस्थ राहु के कारण आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान होंगे परन्तु जल्दी ही अच्छे हो जाएंगे।

मई के बाद लग्न स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि आपको आलसी बना सकती हैपरन्तु 12 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर समस्त मानसिकपरेशानियों को दूर कर शारीरिक आरोग्यता व स्फुर्तिप्रदान करेगा। आप अपने दैनिक कार्यों में ऊर्जावान बने रहेंगे। 23 अक्तूबर के बाद आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करेंगे एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ विद्यार्थियों के लिए उत्तम रहेगा। शिक्षा के क्षेत्र में आप कुछ विशेष करेंगे। 5 मार्च के बाद सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से आप कोई व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त कर सकते हैं। साथ ही आय के लिए नयेस्रोतों का सृजन करेंगे।

मई के बाद शनि एवं राहु ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा। गुप्त विद्या या तन्त्र-मन्त्र के लिए भी आपका आकर्षणबढ़ेगा।विदेशी भाषा सीखने के लिए यह समय बहुत उत्तम है।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में कोईविशेष यात्रा के योग नहींहै। मार्च के बाद आपकी छोटी-छोटी यात्राएं होंगीपरन्तु मई के बाद आपकीविदेश यात्रा के योग बन रह हैं। सप्तम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यावसायिक यात्रा भी होंगी।यात्राओं से अच्छा लाभ मिलेगा।

अष्टमस्थ राहु के कारण समुद्र के माध्यम से विदेश यात्रा का योग बन रहा है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत अच्छा नहीं रहेगा। नवम स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण धार्मिक कार्यों में आपका मन नहीं लगेगा परन्तु मई के बाद आप अच्छे कर्म अधिक करेंगे।

- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- काली वस्तु का दान करें या शनि मन्त्र का जप आपके लिए लाभप्रद रहेगा।
- प्रत्येक दिन दुर्गासप्तसती का पाठ करें या दुर्गा बीसा यन्त्र का पूजन करें।

वार्षिक फलादेश - 2033

इस वर्ष शनि मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 30 जनवरी तक राहु तुला राशि एवं अष्टम भाव रहेंगे उसके बाद कन्या राशि एवं सप्तम भाव में प्रवेश करेंगे। 18 मार्च तक गुरु मकर राशि एवं एकादश में रहेंगे उसके बाद कुम्भ राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे। 24 मार्च से 8 अक्टूबर तक मंगल वक्री होकर धनु राशि एवं दशम भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ आपके लिए लाभकारी रहेगा। आप अपने व्यावसायिक जीवन में अपने सहयोगियों के साथ अपने अधिकारियों को भी प्रभावित करेंगे। अपने दायित्वों को आप जिस तरह से पूरा करने के लिए लालायित रहते हैं, वह काबिलेगौर है। 18 मार्च से द्वादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से व्यावसायिक जीवन में थोड़े बहुत झटके आएंगे। इस दौरान आपके कार्यों में देरी भी हो सकती है, जिसके चलते तनावपूर्ण स्थिति बन सकती है।

शनि एवं राहु ग्रह भी प्रतिकूल होने से आपके समक्ष कुछ चुनौतियां खड़ी होंगी। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं का समाधान निकालते हुए अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे। इस दौरान आपको अपने भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी योजना निर्धारित करनी होगी। बेरोजगार जातको को अधिक अड़चनों के बावजूद सफलता कम ही प्राप्त होगी।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। परन्तु 18 मार्च के बाद गुरु ग्रह गोचर प्रतिकूल होने से निवेश व लेन-देन के मामले में आप सावधान रहें। किसी पर बहुत जल्दी विश्वास न करें। आपके अनावश्यक खर्चे बढ़ सकते हैं। अतः उस पर अंकुश लगाएं। जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें और शीघ्र पैसा कमाने वाले उपायों से दूर रहें।

आपको पत्नी और मित्रों का अच्छा सहयोग मिलने के कारण आप फिर से धन संचय की ओर बढ़ेंगे। परन्तु पारिवारिक विषमता के कारण आर्थिक उन्नति नहीं कर पाएंगे। इस समय के अंतराल में कोई भी आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें, नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक रूप से यह वर्ष अच्छा नहीं रहेगा। चतुर्थस्थ शनि के प्रभाव से आपके घरेलू माहौल में कुछ विषम परिस्थिति उत्पन्न होंगी जिससे आपका पारिवारिक माहौल खराब हो सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ वैचारिक मतभेद होता रहेगा। कुछ लोगों का बर्ताव अच्छा नहीं रहने से आप मानसिक रूप से अशान्त रह सकते हैं। ऐसी विपरीत परिस्थितियों से निपटने के लिए अपने अन्दर प्रतिरोधात्मक शक्ति विकसित करनी होगी।

18 मार्च से सप्तम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के चलते आपके दाम्पत्य जीवन में

खुशहाली आएगी। पारिवारिक प्रतिकूलता भी काफी हद तक ठीक होगी। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आपके व्यक्तित्व में निखार व चमक पैदा होगी। बातचीत का ढंग व व्यवहर दोनों में बदलाव आएगा।

संतान

वर्ष के प्रथम तीन माह आपके बच्चों के लिए श्रेष्ठ रहेंगे। उसके बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके बच्चों का समय प्रभावित हो रहा है। ऐसे में अपने बच्चों के साथ मधुर संबंध बनाना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

आपके बच्चों की शिक्षा-दीक्षा व उन्नति में रुकावटें आ सकती हैं। गर्भवती स्त्रियां साबधानी बरतें। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय अच्छा है। उसकी उन्नति के अवसर हैं। यदि आप दूसरी संतान की इच्छा रखते हैं तो यह समय आपके लिए अनुकूल है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। आप मौसमजनित बीमारियों से परेशान हो सकते हैं। 18 मार्च से द्वादश स्थान पर गुरु के गोचरीय प्रभाव से मोटापा एवं लीबर जनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरुरी होगा। सुबह सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। नहीं तो आपका स्वास्थ्य ज्यादा प्रतिकूल हो सकता है।

आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध शाकाहारी भोजन ही करें। संतुलित आहार के साथ-साथ आप नियमित व्यायाम भी करते रहें, जिससे आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का विकास होगा। यही आपकी शारीरिक आरोग्यता को अनुकूल बनाए रखेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का प्रारम्भ प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए अच्छा नहीं रहेगा। लग्न स्थान पर शनि की दृष्टि के कारण आपके अंदर आलस्य की भावना उत्पन्न होगी। जो कि आपकी उच्च शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। 18 मार्च से विदेशी भाषा सीखने के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है।

यदि आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति केन्द्रित कर परिश्रम करते रहे तो वर्षान्त में अवश्य सफलता आपके कदम चूमेगी। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में अवश्य सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से बहुत दूर भी हो सकता है। 18 मार्च के बाद आपकी विदेश यात्रा होगी।

आप अपने पूरे परिवार सहित किसी दार्शनिय स्थल या ऐतिहासिक स्थल की यात्रा कर आनन्द प्राप्त करेंगे। इस यात्रा के अंतराल में आपकी पत्नी या परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य

खराब हो सकता है। अतः यात्रा के अंतराल में सावधानी बहुत जरूरी है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में आप धार्मिक कार्य कम ही कर पाएंगे। कोई भी अच्छे काम को लेकर मानसिक द्वंदता बनी रहेगी। आलस्य व लापरवाही के कारण आपकी दैनिक पूजा भी प्रभावित हो सकती है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में आप दान पुण्य अधिक करेंगे।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पुजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व हनुमान चालीसा का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2034

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे और 13 जुलाई को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 12 अगस्त से पहले राहु कन्या राशि एवं सप्तम भाव में रहेंगे और उसके बाद सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कुम्भ राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे और 28 मार्च को मीन राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक उन्नति के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। जिससे आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाईओं का अनुभव करेंगे। विश्वासपात्र लोगों के साथ बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके घर से दूर हो सकता है। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्ति अपने कार्य से संतुष्ट नही रहेंगे। 28 मार्च से समय कुछ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपके व्यक्तिगत संबंधों में सुधार होगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि के कारण आप अपने व्यवसाय में अच्छा लाभ प्राप्त करेंगे। आमदनी के नये-नये स्रोत मिलने की उम्मीद है। इस अवधि में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे, तो उसमें सफलता मिलने की उम्मीद ज्यादा है। आपको अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा जिससे आपके कार्यों में लाभ की उम्मीद बढ़ जाएगी। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं तो आपको इच्छित लाभ प्राप्त होगा और आप अपने साझेदारों से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

प्रारम्भ के तीन माह छोड़ दिए जाएं तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल रहेगा। धनागम में निरन्तरता होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति में वृद्धि होगी, जिससे आपके पुराने चले आ रहे ऋण से मुक्ति मिल सकती है। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण कुछ चुनौतियां आपके सामने आ सकती हैं। परन्तु आप जिस तरह के चौकस और विश्लेषिक व्यक्ति हैं, इन चुनौतियों को लाभकारी अवसर में बदलना आपके लिए बड़ी बात नहीं होगी।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में लॉटरी, सट्टा व शेयर बजार से जुड़े व्यक्तियों को अच्छा लाभ होगा। धन संचय करने में आपके जीवनसाथी का मुख्य सहयोग होगा। यदि ऋण के लिए आवेदन किया है तो स्वीकृती मिल जाएगी। पैतृक संपत्ति या भूमि इत्यादि पर केस मुकद्दमा चल रहा हो तो उसमें अनुकूलता प्राप्त नहीं होगी। क्योंकि अष्टम स्थान का राहु पैतृक सम्पत्ति के लिए अच्छा नहीं है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक जीवन के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। चतुर्थ स्थान के शनि पारिवारिक वातावरण में विषमता की स्थिति उत्पन्न करेंगे। माता पिता के लिए समय शुभ नहीं है।

सप्तम स्थान का राहु अचानक आपके जीवनसाथी को बीमार कर सकता है, जिससे आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते है। 28 मार्च के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने से घरेलू परेशानियां दूर होंगी। परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी। आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

वर्ष के उत्तरार्द्ध में जीवनसाथी के साथ मधुरता बढ़ेगी। भाई बहनों के साथ आपका संबंध अच्छा रहेगा। आपके बच्चों की उन्नति होगी। परिवार में मांगलिक कार्य होते रहेंगे। इस समय के अंतराल में किसी से मित्रता हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए लाभप्रद रहेगी। अष्टमस्थ राहु के कारण आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। द्वादश स्थान का गुरु आपकी संतान की उन्नति में बाधा डाल सकता है। आपको अपने बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना होगा नहीं तो वह गलत संगत में पड़ सकते हैं। जो कि उनकी उन्नति में बाधक बन सकती है। परन्तु 28 मार्च से आपके बच्चों के लिए समय शुभ हो रहा है। यदि आपकी संतान विवाह योग्य है तो उसके विवाह का प्रबल योग बन रहा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं, तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उनका प्रवेश हो जाएगा।

वर्ष का उत्तरार्द्ध संतान के लिए बहुत ही शुभ रहने वाला है। पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगा। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। आपके बच्चे कुछ ऐसे कार्य करेंगे, जिससे समाज में आपकी ख्याति और बढ़ेगी। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए समय बहुत ही शुभ है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्षारम्भ सामान्य रहेगा। द्वादश स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य में उतार-चढाव की स्थिति बनाए रखेंगे। मधुमेह रोगियों को ज्यादा परहेज की आवश्यकता है। गैस, अपच व पेट संबंधित परेशानियों का भी सामना करना पड़ सकता है। परन्तु 28 मार्च से लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से स्वास्थ्य में सुधार होगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आप का खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह का प्रभाव होने से आप शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे जिससे आप का स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

12 अगस्त के बाद अष्टम स्थान में राहु ग्रह का गोचर अचानक आपको बीमार कर सकता है। परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे। वाहन चलाते समय व यात्रा करते समय सावधान रहें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर व प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। परन्तु 28 मार्च से व्यावसायिक व्यक्तियों को अच्छा लाभ मिलेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने

वाले विद्यार्थियों के लिए समय शुभ है।

छोटे दुकानदान, व फुटकर विक्रेताओं के लिए यह समय काफी शुभ है। वर्ष के उत्तरार्द्ध में अष्टम स्थान का राहु आपके कार्यों में व्यवधान डाल सकता है। परन्तु आप अपने मन को लक्ष्य के प्रति एकाग्र कर परिश्रम करते रहें तो अन्त में सफलता अवश्य मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्षारम्भ में आपकी विदेश यात्रा के अच्छे योग बन रहे हैं। 28 मार्च के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। आपकी यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक रहेगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। चतुर्थ स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण यह तबादला घर से दूर भी हो सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में आप दान पुण्य अधिक करेंगे। गरीबों को खाना खिलाना, दान देना, धार्मिक स्थान पर भण्डारा आदि करना आपका नैसर्गिक गुण होगा। वर्ष का उत्तरार्द्ध धार्मिक कार्यों के लिए बहुत ही शुभ हो रहा है। आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन, गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि शुभ कर्म अधिक करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग स्थापित कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं और ऊँ नमः शिवाय मन्त्र का पाठ करें।
- राहु ग्रह का अशुभ प्रभाव शान्त करने के लिए आठ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

वार्षिक फलादेश - 2035

इस वर्ष कर्क राशि का शनि पंचम भाव में और सिंह राशि का राहु छठे भाव में रहेंगे। 5 अप्रैल तक गुरु मीन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे और उसके बाद मेष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे। 21 जुलाई से 9 सितम्बर तक वक्री मंगल मीन राशि एवं लग्न स्थान में रहेंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक रूप से वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही हितकारी रहने वाला है। आप अपने व्यावसायिक जीवन में सफलता प्राप्ति के लिए अथक परिश्रम करेंगे और अपने सपनों को साकार करने में सफल होंगे। मुख्यतः ग्रहों का गोचर अनुकूल होने के कारण ऑफिस में आयी किसी भी समस्या का समाधान निकालना आपके लिए बच्चों का खेल होगा। शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण व्यावसायिक जीवन में कुछ परेशानी आ सकती है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं समाधान निकाल लेंगे।

नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है। आपको अपने कार्यस्थल पर ही मान-सम्मान मिलेगा। वरिष्ठ अधिकारी आपसे खुश रहेंगे और उन सब का भरपूर सहयोग मिलेगा। छोटे दुकानदान व फुटकर विक्रेताओं के लिए समय बहुत ही अनुकूल है।

धन संपत्ति

यह वर्ष आर्थिक उन्नति के लिए श्रेष्ठ रहेगा। सारे बन्द आय के स्रोत खुलेंगे। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। निवेश करने के लिए वर्ष का प्रारम्भ बहुत ही शुभ है। 6 अप्रैल से द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी। धन संचित करने में आपके परिवार वालों का मुख्य सहयोग होगा। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिलेगी। सप्तम स्थान पर शनि की दृष्टि आपकी धर्मपत्नी के स्वास्थ्य पर धन व्यय करा सकती है। धार्मिक व मांगलिक कार्यों में आप खुले हाथों से व्यय करेंगे।

घर-परिवार, समाज

यह वर्ष पारिवारिक वातावरण के लिए उत्तम रहेगा। 6 अप्रैल के बाद आपके परिवार में किसी सदस्य की वद्धि होगी। यह वृद्धि परिवार में किसी के विवाह या संतान जन्म से होगी। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी, जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

आपके छोटे भाई-बहनों के लिए समय सामान्य रहेगा। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप सामाजिक गतिविधियों में कम ही भाग लेंगे।

संतान

पंचमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि संतान के लिए श्रेष्ठ रहेगी। आपके बच्चों की उन्नति होगी। आप अपने बच्चों से जितनी अपेक्षा रखते हैं वे उससे भी अच्छा करेंगे। आपकी बच्चों के प्रति प्रेम व लगाव में वृद्धि होगी जिससे आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा। आपके दूसरी संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ श्रेष्ठ रहेगा। संतान इच्छित व्यक्तियों के लिए यह उत्तम समय चल रहा है।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपकी प्रथम संतान के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। पंचमस्थ शनि स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न कर सकते हैं, जिससे उनकी शिक्षा दीक्षा में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष श्रेष्ठ रहने वाला है। पूरा साल आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहने वाले है। क्योंकि लग्नस्थ गुरु के प्रभाव से आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि होगी। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि व्यायाम व सुबह-सुबह टहलना आदि।

व्यापारिक व्यस्तता के कारण अपनी सेहत पर ध्यान नही देंगे, जिसके परिणामस्वरूप स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। अतः बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए यह वर्ष उत्तम रहने वाला है। व्यावसायिक शिक्षा व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वालों के लिए यह समय काफी श्रेष्ठ है। 6 अप्रैल के बाद ज्योतिष व गुप्त विद्याओं के प्रति भी आपकी रुचि बढ़ सकती है।

जो व्यक्ति नये व्यापार से अपना करियर बनाना चाहते हैं। षष्ठस्थ राहु के प्रभाव से अचानक आपको अपना ब्राण्ड नेम मिल सकता है। जिसमें आपको अच्छा उन्नति मिलेगी।

यात्रा-तबादला

द्वादश स्थान पर राहु ग्रह की दृष्टि आपके विदेश यात्रा के योग बना रही है। नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी लम्बी यात्रा होगी। कार्य व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगीं

6 अप्रैल के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ स्थानान्तरण होगा। समुद्री मार्ग से यात्रा का प्रबल योग बन रहा है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी, जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि ईश्वर के प्रति अटूट विश्वास उत्पन्न करेगी। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। दान पुण्य करने मे आप सबसे आगे रहेंगे।

- स्फटिक श्रीयन्त्र घर में रखें एवं उसके सामने नित्य देशी घी का दीपक जलाएं।
- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- अपने घर में पारद शिवलिंग की स्थापना कर उसका पूजन करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।

वार्षिक फलादेश - 2036

वर्ष के पूर्वार्द्ध में शनि कर्क राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 27 अगस्त को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। 13 अप्रैल तक राहु सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे और उसके बाद कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में मेषस्थ गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 15 अप्रैल को वृष राशि एवं तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 9 सितम्बर को मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और पुनः वक्री होकर 17 नवम्बर को वृष राशि एवं तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यावसायिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में पदोन्नति की भी संभावना बन रही है। 15 अप्रैल के बाद सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ कर सकते हैं। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बावजूद भी आपको मुनाफा प्राप्त होगा। साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे।

27 अगस्त के बाद आप के अन्दर एक गजब का आत्मविश्वास उत्पन्न होगा जिससे आप अपने क्लाइंट्स को प्रभावित करने में सक्षम रहेंगे। 9 सितम्बर के बाद गुरु ग्रह का गोचर नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नती के साथ स्थानान्तरण भी करा सकता है। अपने से बड़े अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। आपके अधीनस्थ कर्मचारी भी आपका सहयोग करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। पैतृक सम्पत्ति या ससुराल पक्ष से धन लाभ होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

15 अप्रैल के बाद आपको भाईयों से लाभ मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे उसमें भी आपके पैसे खर्च हो सकते हैं। धार्मिक कार्य या सामाजिक कार्यों में भी धन व्यय होगा, जिससे आपको आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होगी। 9 सितम्बर के बाद भूमि, भवन, वाहन इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में किसी सदस्य की वृद्धि होगी। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना बनने के कारण परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। 15 अप्रैल के बाद आपको भाईयों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ के भाग लेंगे। सामाजिक उत्थान के लिए आप कोई संस्था का संचालन भी कर सकते हैं, जिससे समाज में आपका एक अलग व्यक्तित्व होगा।

संतान

वर्ष का पूर्वार्द्ध संतान के लिए अच्छा नहीं है। लग्न स्थान का शनि संतान संबंधित चिंताएं दे सकता है। गर्भवती स्त्रियों को बड़े सावधानी से रहना चाहिए नहीं तो गर्भपात हो सकता है।

15 अप्रैल के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत ही उत्तम हो रहा है। उसके साथ संबंधों में मधुरता आएगी। घरेलु वातावरण में भी सुधार होगा। यदि आप अपने बच्चों को प्रोत्साहित करते रहे तो वे अपने लक्ष्य को अवश्य प्राप्त कर लेंगे। अतः आप उनकी सकारात्मक सोच में वृद्धि करते रहें।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। छोटी-मोटी बीमारियों को छोड़ दिया जाए तो पूरा वर्ष आपके लिए अनुकूल बना रहेगा। आपके अंदर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होगा। आप अपने आपको पूर्ण रूप से स्वस्थ्य महसूस करेंगे। फिर भी आपको अपने खान-पान पर संयम रखना चहिए। सूर्योदय से पहले उठकर पार्क जाना और व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

अप्रैल के बाद आपका स्वास्थ्य किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको अपने खान-पान के साथ साथ दिनचर्या पर विशेष ध्यान देना होगा। समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इस सबका आपकी सेहत पर विशेष प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

करियर एवं प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष अच्छा रहेगा। आप अपने लक्ष्य में सफल होंगे। व्यापारिक व्यक्ति इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ करेंगे। उसमें अच्छी सफलता मिलेगा। विदेश जाकर उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले व्यक्तियों के लिए यह समय बहुत ही शुभ है।

अप्रैल के बाद उच्च शिक्षाभिलाषी जातकों को मनोनुकूल शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश मिल सकता है। जिन जातकों की अभी तक नौकरी नहीं लगी है उनको अगस्त के बाद अवश्य नौकरी मिल सकती है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्षारम्भ में छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। परन्तु अप्रैल के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपकी व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होती रहेंगी। इन यात्राओं से आपको विशेष लाभ प्राप्त होगा।

9 सितम्बर के बाद आप अपने परिवार सहित किसी दर्शनीय स्थल की यात्रा करेंगे। यह यात्रा अधिक सुखद व मनोरंजनात्मक होगी। इस यात्रा के अंतराल में आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है। यह मित्रता आपके लिए अत्यधिक लाभप्रद रहेगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। परन्तु पंचमस्थ शनि के कारण आपके पूजा पाठ में किंचित व्यवधान आ सकता है। 15 अप्रैल के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धार्मिक कार्य अधिक करेंगे। पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान में आप विशेष रुचि लेंगे। गरीबों को दान एवं तीर्थ यात्रा कर अत्यधिक पुण्यार्जन भी करेंगे, जिससे आपको मानसिक शान्ति एवं आत्मिक सुख की अनुभूति होगी।

- शनिवार के दिन सुबह-सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- प्रत्येक मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- अपने घर में स्फटिक श्रीयन्त्र की स्थापना कर उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं एवं ऊँ ह्रीं लक्ष्म्यै नम मन्त्र का पाठ करें।

वार्षिक फलादेश - 2037

इस वर्ष शनि सिंह राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 19 अक्टूबर तक राहु कर्क राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और उसके बाद मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु वृष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे। 26 अप्रैल को मिथुन एवं चतर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी होकर 16 सितम्बर को कर्क राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे। 29 अगस्त से 28 नवम्बर तक वक्री मंगल वृष राशि एवं तृतीय भाव में रहेंगे।

व्यवसाय

इस साल आपको बड़े अधिकारी, वरिष्ठ जन या अनुभवी लोगों का अच्छा सहयोग प्राप्त होगा, जिससे कार्य व्यवसाय में अच्छी सफलता मिलेगी। व्यापार में हजारों व्यवधान आने के बाद ही आपको मुनाफा प्राप्त होगा। साथ ही कारोबार का भी विस्तार होगा। सरकारी सौदे और समझौतों से आपका लाभ दोगुना होने वाला है। आपको कुछ नए निवेशक भी मिलेंगे। अप्रैल के बाद समय और भी अच्छा हो रहा है।

आप कोई नया व्यापार प्रारम्भ करेंगे, जिसमें आपको अच्छी सफलता भी मिलेगा। रचनात्मक कार्यों के प्रति आपका रुझान बढ़ेगा। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति व आर्थिक लाभ होंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए यह बहुत ही शुभ है। कार्यस्थल पर मान-सम्मान प्राप्त होगा व अपने से बड़े अधिकारियों का सहयोग मिलता रहेगा।

धन संपत्ति

वर्षारंभ में एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम में निरन्तरता बनी रहेगी, जिससे पुराने चले आ रहे कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें आप अच्छा खर्च होगा। 26 अप्रैल के बाद आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से भी आपको लाभ मिलेगा।

व्यापारिक अनुकूलता के कारण संचित धन में वृद्धि होगी। रुके हुए व फंसे हुए धन की प्राप्ति होगी। यदि आप धन निवेश करना चाह रहे हैं तो यह समय आपके लिए शुभ है। फिर भी निवेश करने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी व्यक्तियों की सलाह अवश्य लें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा। समाज मे आपका मान सम्मान बढ़ेगा। सामाजिक उन्नति या समाज कल्याण के लिए आप कोई विशेष कार्य संपन्न करेंगे। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं सम्मान प्रदान करेंगे, जिससे आपको मानसिक प्रसन्नता प्राप्त होगी।

26 अप्रैल के बाद आपका घरेलू वातावरण बहुत ही बढ़िया रहने वाला है। माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। मातुल एवं ससुराल पक्ष के लोगों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परन्तु बड़े भाई एवं

संतान के लिए यह समय अच्छा नहीं रहेगा। अक्टूबर के बाद आपका पारिवारिक माहौल भी प्रभावित होगा।

संतान

इस साल आप संतान के मामले में अत्यधिक चिंतित रहेंगे। पंचम का राहु संतान की तरक्की में बाधक है। आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधी परेशानी भी हो सकती है। अतः उनके स्वास्थ पर विशेष ध्यान देना होगा। इनकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित होगी। गर्भवती स्त्रियों को बहुत ही सावधान रहना होगा नहीं तो आपका गर्भपात हो सकता है।

अक्टूबर के बाद समय अच्छा हो रहा है। उस समय आपके बच्चों के आय में वृद्धि होगी। यदि आपकी संतान विवाह के योग्य है तो उसके विवाह का प्रबल योग बन रहा है। आपकी दूसरी संतान के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण यह साल उत्तम रहेगा। आप तंदरुस्त व सेहतमंद रहेंगे। क्योंकि छठे स्थान का शनि आपके अन्दर उत्साहवर्धक ऊर्जाओं की वृद्धि कर रहा है, जिससे आप स्फुर्तिवान बने रहेंगे। आप अपनी दिनचर्या में नयी गतिविधियों को शामिल करेंगे जैसे कि जिम जाना या सुबह-सुबह टहलने जाना आदि। परन्तु लग्न स्थान पर राहु की दृष्टि किंचित मानसिक चिंता दे सकती है। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है। नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में भोजन का अनुशासन बनाये रखें व लापरवाही ना करें।

किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से ज्यादा चिंता न करें। नहीं तो इससे भी आपकी मानसिक अशान्ति बनी रहेगी। सुबह जल्दी उठ कर पार्क में घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा। सितम्बर के बाद स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर हो जाएंगी। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि होने के कारण आप प्रसन्न रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष श्रेष्ठतम रहने वाला है। समस्त प्रतियोगियों को परास्त कर आप अपने लक्ष्य में सबसे आगे रहेंगे। अप्रैल के बाद विद्यार्थियों का नये-नये तकनीकी विषय की ओर रुझान होगा। रोजगार के नये नये अवसर भी मिलेंगे, जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थी अपने लक्ष्य में सफल रहेंगे। राहु ग्रह की दृष्टि लग्न स्थान पर होने के कारण आलस्य की भावना आपके सफलता में बाधक साबित हो सकती है। अतः आलस्यता को त्याग कर सकारात्मक सोच के साथ आगे बढ़े, सफलता अवश्य मिलेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी। 26 अप्रैल के बाद अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

द्वादश स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से विदेश यात्रा का प्रबल योग बन रहा है। तीर्थ यात्रा व व्यवसाय से संबंधित यात्राएं भी होंगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। वर्षारम्भ में आप पूजा पाठ में विशेष रुचि लेंगे। नियमित रूप से दैनिक पूजा-पाठ करते रहेंगे। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ेगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- पारद शिव लिंग अपने पूजा स्थान में रखें और नित्य उसका दर्शन करें।
- आठ मुखी रुद्राक्ष काले धागे में धारण करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- गणेश जी के मन्त्र का पाठ करें - ऊँ गं गणपतये नमः।

वार्षिक फलादेश - 2038

इस वर्ष राहु मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में रहेंगे। 22 अक्टूबर तक शनि सिंह राशि एवं छठे भाव मे रहेंगे और उसके बाद कन्या राशि एवं सप्तम भाव में गोचर करेंगे। वर्षारम्भ में गुरु कर्क राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 17 जनवरी को मिथुन राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और पुनः मार्गी होकर 11 मई को कर्क राशि एवं पंचम भाव में आ जाएंगे और अतिचारी होकर 7 अक्टूबर को सिंह राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में व्यापार में बदलाव या फिर नौकरी में स्थानान्तरण की भी संभावना बन रही है। षष्ठस्थ शनि के प्रभाव से आप कुछ नया करेंगे, जिसमें आपको कुछ अनुभवी और वरिष्ठ लोगों का सहयोग मिलेगा। साथ ही किसी कंपनी के साथ मिलना या उसके साथ कार्य करने का अवसर प्राप्त होगा। कार्यस्थल में प्रशंसा और पहचान मिलेगी। यह सब आपकी आशावादी विचारधारा के कारण ही होगा। 11 मई से समय और भी बढ़िया हो रहा है। उस समय आपके सारे प्रतिद्वंदी शान्त होंगे तथा आप सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। राहु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से अचानक कुछ पारिवारिक समस्या आ सकती है। परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा सभी समस्याओं समाधान निकाल लेंगे। सामान्य काम काज पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अक्टूबर के बाद समय किंचित प्रभावित हो रहा है। प्रत्यक्ष व गुप्त शत्रुओं द्वारा आपके कार्यों में रुकावटें डाली जा सकती हैं। फुटकर विक्रेता व भूमि से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए समय ज्यादा प्रभावित रहेगा। राजनीति व शेयर बजार से जुड़े लोगों को भी अचानक हानि हो सकती है। साझेदारी में कार्य करने वाले व्यक्तियों के लिए भी साल का अंत अच्छा नहीं रहेगा तथा मित्र से अनवन हो सकती है।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के लिए सामान्य रहेगा। परन्तु 11 मई के बाद समय बहुत ही श्रेष्ठ हो रहा है। गुरु ग्रह का गोचर शुभ होने से आपके आय के स्रोत बढ़ेंगे। शिक्षा, शेयर व बैंक से संबंधित कार्य करने वाले व्यक्तियों को अच्छा लाभ प्राप्त होगा। आर्थिक उन्नति करने में आपको भाईयों का अच्छा सहयोग मिलेगा। परिवार में मांगलिक कार्य होंगे, जिसमें आप खुले हाथों से व्यय करेंगे। रुके हुए व फंसे हुए पैसे मिल सकते हैं।

7 अक्टूबर के बाद लेन-देन व निवेश के मामले में सावधान रहें। यह समय आर्थिक उन्नति के लिए अच्छा नहीं है। किसी को उधार पैसे न दें नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है तथा लेन देन के मामले में सावधान रहें।

घर-परिवार, समाज

यह साल पारिवारिक वातावरण के लिए अनुकूल नहीं है। चतुर्थ स्थान में राहु एवं गुरु की युति चण्डाल योग बना रही है। जो आपके घरेलु माहौल को प्रभावित कर सकती है। आपके माता

पिता के लिए यह समय शुभ नहीं है। उनको स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां हो सकती हैं, जिसके कारण आप मानसिक रूप से परेशान हो सकते हैं। आप पारिवारिक माहौल को अनुकूल बनाने का पूर्ण प्रयास करें, क्योंकि 11 मई के बाद नैसर्गिक रूप से समय अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे, जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। संतान व भाईयों की उन्नति होगी।

अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। शनि ग्रह का गोचर आपके पत्नी के साथ संबंध खराब कर सकता है, जिससे परिवार में किंचित नकारात्मक परिस्थिति उत्पन्न होंगी। परन्तु आप नकारात्मक परिस्थितियों में भी अच्छा प्रदर्शन करेंगे। सामाजिक रूप से यह साल अच्छा रहेगा। समाज में सभी लोग आपको यथोचित आदर एवं संमान प्रदान करेंगे तथा आपका समाजिक स्तर बढ़ेगा।

संतान

साल के प्रारम्भ में आपके बच्चे परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। 11 मई से बच्चों के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। परिवार की उन्नति के लिए आपके बच्चे नवीन योजनाएं बनाएंगे। माता पिता के प्रति उनके मन में पूर्ण आदर एवं सम्मान का भाव होगा तथा आज्ञा पालन में समान्यतः तत्पर रहेंगे।

7 अक्टूबर से गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है, जिसके प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति में व्यवधान आ सकता है। उनका आलस्य बढ़ेगा एवं इच्छाशक्ति कमजोर होगी। ऐसे में उनकी दिनचर्या पर आपको विशेष ध्यान देना चाहिए।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह साल अनुकूल रहेगा। प्रत्येक कार्य को आप अपनी बौद्धिक क्षमता के आधार पर पूर्ण करेंगे। छठे स्थान का शनि आरोग्यता प्रदान करता है एवं शत्रुओं का दमन भी करता है। आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा आप खूब परिश्रम भी करेंगे। आपकी कार्य क्षमताएं निश्चित रूप से बढ़ेंगी। 11 मई से समय और भी बढ़िया हो रहा है। लग्न स्थान पर शुभ ग्रह की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ्य रहेंगे। किसी भी कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे।

22 अक्टूबर से आपका समय प्रभावित हो रहा है। गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों से भी आप प्रभावित रहेंगे। पत्नी का स्वास्थ्य अच्छा नहीं होने के कारण भी आप मानसिक रूप से परेशान रह सकते हैं। कमर के निचले हिस्से में कोई रोग बढ़ सकता है अतः किसी भी छोटी समस्या को छोटी ना समझते हुए तुरंत चिकित्सक से परामर्श लें।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

छठे स्थान का शनि प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए श्रेष्ठ है। रोजगार के नये अवसर पैदा

होंगे, जिससे आप व्यापार में सफलता और समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त करेंगे। 11 मई के बाद विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में विशेष उपलब्धी प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए यह समय उत्तम है। श्रेष्ठ शैक्षणिक संस्थान में नामंकन मिलेगा।

नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा, जिससे आपको करियर में अच्छी सफलता मिलेगी। अक्टूबर के बाद समय थोड़ा प्रभावित हो रहा है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष उत्तम रहेगा। वर्षारम्भ में द्वादश पर गुरु एवं शनि की संयुक्त दृष्टि विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रही है। इस वर्ष आप परिवार सहित अपने जन्म भूमि की यात्रा करेंगे। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानांतरण आपके लिए अनुकूल रहेगा।

11 मई के बाद आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। इस समय के अंतराल में आपकी व्यावसायिक यात्रा भी अधिक होंगी। धार्मिक यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए साल का प्राम्भ अच्छा नहीं रहेगा। राहु एवं गुरु की युति धार्मिक कार्यों को प्रभावित कर सकती है। मई के बाद धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी। साधना, योग व ध्यान आप अधिक करेंगे। अपने गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे। गरीबों की सहायता एवं बुजुर्गों की सेवा करेंगे। परन्तु अक्टूबर के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है।

- अपने पूजा घर में श्वेतार्क गणपति की स्थापना कर नित्य उनका पूजन करें तथा प्रत्येक बुधवार के दिन दुर्वा (घास) चढ़ाएं और लड्डू का भोग लगाएं।
- काली वस्तु का दान करें तथा राहु मन्त्र का पाठ करें।
- सूर्य को जल दें।
- वीरवार के दिन पुखराज रत्न धारण करें।

दशा विश्लेषण

दशा विश्लेषण घटना के समय निर्धारण में दशा स्वामी की भूमिका के विषय में बताता है। कुंडली में दशा स्वामी की स्थिति के अनुसार फलादेश से अवगत कराता है। साथ ही दशाकाल में किस से सतर्क रहें व क्या उपाय करें इसका ज्ञान कराता है।

अच्छे या बुरे दशा के प्रभाव स्वरूप प्रत्येक व्यक्ति को जीवन में समय-समय पर खट्टा-मीठा अनुभव होता रहता है क्योंकि प्रत्येक व्यक्ति की जन्मकुंडली में शुभ एवं अशुभ योग होते हैं। यदि अच्छे ग्रह की दशा चलती है तो जीवन में शुभ घटनाएं घटित होती हैं तथा आप सफलता के चरमोत्कर्ष पर पहुंचते हैं। दूसरी ओर यदि बुरे ग्रह की दशा चलती है तो आपके समक्ष समस्याएं, बाधा, कष्ट, पीड़ा आदि उपस्थित होते हैं।

दशा विश्लेषण

महादशा :- राहु
(18/07/2015 - 17/07/2033)

राहु की महादशा 18/07/2015 को आरम्भ और 17/07/2033 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 18 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में राहु प्रथम भाव में स्थित है। इस स्थान से राहु की दृष्टि सातवें भाव पर है। इसके पूर्व आपकी 7 वर्ष की मंगल दशा चल रही थी। मंगल के कारण आपको सफलता, ख्याति, सम्पत्ति तथा उत्तम स्वास्थ्य की प्राप्ति हुई होगी। राहु की वर्तमान दशा में आपको धन की प्राप्ति और शत्रुओं पर विजय मिलेगी तथा स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके शरीर के ऊपरी भाग तथा सिर में कष्ट हो सकता है। आप सरदर्द तथा पित्तदोष से ग्रसित हो सकते हैं और मौसम में परिवर्तन के कारण संक्रामक बीमारी, चर्मरोग, चेहरे पर तथा माथे में फोड़ा आदि हो सकते हैं। इन मामूली शिकायतों को छोड़ आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अत्यन्त अच्छी रहेगी। आपको लाभ और समृद्धि की प्राप्ति होगी। आपकी धार्मिक, शैक्षिक और वैज्ञानिक उपलब्धियों के कारण आपको सम्पत्ति और प्रतिष्ठा मिलेगी। आपको सट्टे में अच्छा लाभ मिलेगा। राहु की दशा में आपको धन का अचानक लाभ होगा। आपको मित्रों से लाभ हो सकता है। जीविका या व्यवसाय के लिए वायुयान चालन, दवा, कम्प्यूटर, मशीनरी, समुद्री सेवा, वायु-सेना आदि के क्षेत्र का चयन कर सकते हैं। दवा, रसायन, औजार, ड्रग, मशीनरी आदि का व्यापार लाभदायक हो सकता है। नौकरीपेशा लोगों का स्थानान्तरण हो सकता है जो अन्त में लाभदायक होगा और अचानक लाभ तथा कार्य स्थान में अप्रत्याशित पदोन्नति होगी। व्यापार व्यवसाय से जुड़े लोगों को उच्चाधिकारियों से अच्छा लाभ, कार्य में सफलता तथा आय में वृद्धि होगी। व्यवसाय में उन्नति तथा आर्थिक खुशहाली के लिए यह दशा अत्यन्त उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको वाहन का सुख मिलेगा। आपको जीवन का हर सुख मिलेगा। आप अचल तथा भूसम्पत्ति के स्वामी होंगे। इस दशा के दौरान आपकी अनेक यात्राएं होंगी। बुध की अन्तर्दशा में आपकी छोटी जबकि गुरु की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी। विदेश यात्रा हो सकती है।

शिक्षा :

इस दशा के दौरान आपकी शिक्षा उत्तम होगी। इन्जीनियरिंग, गणित, विज्ञान, अन्तरिक्ष अनुसन्धान तथा कम्प्यूटर विज्ञान में आपकी रुचि होगी। आपको आपके प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय मिलेगी और परीक्षा तथा प्रतियोगिता में अच्छा करेंगे। आप में नेतृत्व-गुण और साहस है और आप स्वभाव से स्वतन्त्र हैं। आप चतुर और कूटनीतिज्ञ हैं।

परिवार :

परिवार के साथ आपका सम्बन्ध मधुर रहेगा। आपके बच्चे भाग्यवान और खुशहाल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध अच्छा रहेगा। आपके जीवनसाथी की यात्रा, विदेशियों से सम्पर्क और भौतिक लाभ होगा। आपके जीवन साथी के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपकी माता यात्रा और तीर्थाटन पर जाएंगी और दान-पुण्य का कार्य करेंगी और आपके पिता को सट्टे में लाभ तथा धन में अचानक वृद्धि होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को हर प्रकार का लाभ तथा सम्पत्ति मिलेगी। बड़े भाई-बहन साहसी और कठिन परिश्रमी होंगे, उनकी छोटी यात्रा होगी और वे संचार-व्यवस्था के क्षेत्र में सफल होंगे। आपका उनके साथ सम्बन्ध मधुर रहेगा। इस दशा के दौरान आपको अच्छा सम्मान, भौतिक समृद्धि और सम्पत्ति की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

राहु की महादशा में राहु की अन्तर्दशा के दौरान आपको सम्पत्ति और लाभ, कार्य में सफलता और खुशहाली मिलेगी। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी यात्रा होगी और समृद्धि तथा उच्च शिक्षा की प्राप्ति होगी जबकि शनि की अन्तर्दशा में व्यवसाय में प्रगति और उपार्जन अच्छा होगा। बुध की अन्तर्दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य कुछ खराब होगा, किन्तु ननिहाल से लाभ और छोटी यात्रा होगी। केतु कुछ समस्या दे सकता है। शुक्र की अन्तर्दशा में साझेदारों से लाभ मिलेगा और विवाह होगा जबकि सूर्य की अन्तर्दशा के दौरान बच्चों से सुख और सट्टे में सफलता मिलेगी। चन्द्र की अन्तर्दशा में आपको माता से लाभ और जीवन का सुख मिलेगा जबकि लग्न स्वामी मंगल की अन्तर्दशा के दौरान यश, ख्याति, उत्तम स्वास्थ्य तथा सफलता मिलेगी।

अंर्तदशा :- राहु - गुरु
(30/03/2018 - 23/08/2020)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/07/2015 को प्रारंभ होकर 17/07/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 4 मास 24 दिन रहेगी जो आपके लिए 30/03/2018 को प्रारंभ होकर 23/08/2020 को समाप्त होगी।

बृहस्पति आपकी जन्मपत्री में लग्न में स्थित है। लग्न शारीरिक बनावट, आकृति, स्वास्थ्य, जन्मजात स्वभाव और आदतें, सम्मान, गरिमा, सामान्य शुभत्व, चेहरे का ऊपरी भाग, आयु और जीवन की रुपरेखा आदि का परिचायक है।

बृहस्पति शुभ ग्रह है। लग्न में स्थित होकर बृहस्पति आपकी कुंडली के 5, 7, 9 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप सुख-सुविधासंपन्न होंगे। व्यायाम करेंगे, जिससे शरीर हष्ट-पुष्ट रहेगा। उत्तम वस्त्र धारण करेंगे, प्रसन्नचित्त रहेंगे। यह अंतर्दशा आपके और आपके परिवार के लिए बहुत शुभ रहेगी।

शुभत्व में वृद्धि के लिए विशेषतया बृहस्पतिवार, या सप्ताह में किसी भी दिन बृहस्पति के मंत्र का जाप करते हुए पीपल की जड़ में जल अर्पित करें।

अंर्तदशा :- राहु - शनि
(23/08/2020 - 30/06/2023)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है जो आपके लिए 18/07/2015 को प्रारंभ होकर 17/07/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में शनि अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 10 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 23/08/2020 को प्रारंभ होकर 30/06/2023 को समाप्त होगी।

शनि आपकी जन्मपत्री में नवम भाव में स्थित है। नवम भाव श्रद्धा, भाग्य, धार्मिक और आध्यात्मिक विचार, अंतर्ज्ञान, भविष्यज्ञान, उपासनास्थल, पिता, धर्मगुरु, लंबी यात्राएं, हवाई यात्रा, उच्च शिक्षा और घुटनों का प्रतिनिधि है। नवम भाव में स्थित होकर शनि आपकी कुंडली के 11, 3, 6 भावों पर दृष्टि डाल रहा है और उनके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके पेट में फोड़ा हो सकता है। आप साहसी होंगे, एकाकी जीवन व्यतीत कर सकते हैं। धर्म में रुचि कम होगी, घरेलू जीवन में मितव्ययी हो सकते हैं। दान-धर्म की संस्था के व्यवस्थापक बन सकते हैं। शनि आपको धैर्यवान बनाएगा।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए नीलम चांदी या सोने की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार के दिन पूजा के बाद दायें हाथ की मध्यमा अंगुली में, अंगूठी को कच्चे दूध और गंगाजल में धोकर शनि के वैदिक मंत्र का उच्चारण करते हुए धारण करें।

अंर्तदशा :- राहु - बुध
(30/06/2023 - 16/01/2026)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/07/2015 को प्रारंभ होकर 17/07/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में बुध अंतर्दशा की अवधि 2 वर्ष 6 मास 18 दिन रहेगी जो आपके लिए 30/06/2023 को प्रारंभ होकर 16/01/2026 को समाप्त होगी।

बुध आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। द्वादश भाव में स्थित होकर बुध कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसे अपने कारकत्व से प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आप दर्शनिक प्रवृत्ति के हो सकते हैं, बुद्धि भ्रष्ट हो सकती है। चिंतित और भ्रमित रह सकते हैं। विवाहेतर यौन संबंध हो सकते हैं। मष्तिष्क का सकारात्मक उपयोग करना उचित रहेगा।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए बुध के तांत्रिक मंत्र के 36000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - केतु
(16/01/2026 - 03/02/2027)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/07/2015 को प्रारंभ होकर 17/07/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में केतु अंतर्दशा की अवधि 1 वर्ष 18 दिन होगी जो आपके लिए 16/01/2026 को प्रारंभ होकर 03/02/2027 को समाप्त होगी।

केतु आपकी जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में स्थित है। सप्तम भाव लौकिक संबंध, जीवनसाथी, व्यापार में साझेदार, मुकदमे, विदेश में प्रभाव और जीवन में खतरों का परिचायक है। सप्तम भाव में स्थित होकर केतु आपकी कुंडली के लग्न पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपका विवाहित जीवन विचलित हो सकता है। विषय-वासनाओं में आपकी रुचि आवश्यकता से अधिक हो सकती है। आपको और आपके जीवनसाथी को कोई बीमारी हो सकती है।

अरिष्ट से बचाव के लिए :

- गरीबों में और मंदिर में कंबल बांटें
- कुत्तों को भोजन दें
- भूरा कुत्ता पालें और उसे नियमित रूप से भोजन दें

अंर्तदशा :- राहु - शुक्र
(03/02/2027 - 03/02/2030)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/07/2015 को प्रारंभ होकर 17/07/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में शुक्र अंतर्दशा की अवधि 3 वर्ष होगी जो आपके लिए 03/02/2027 को प्रारंभ होकर 03/02/2030 को समाप्त होगी।

शुक्र आपकी जन्मपत्री में एकादश भाव में स्थित है। एकादश भाव मित्रगण, समाज, महत्वाकांक्षा, इच्छाएं और उनकी पूर्ति, उद्यम में सफलता, धनलाभ, बड़े भाई, भाग्योदय और टखनों का परिचायक है। शुक्र शुभ ग्रह है। एकादश भाव में स्थित होकर शुक्र आपकी कुंडली के पंचम भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

इस अवधि में आपके उत्तम मित्र होंगे, सामाजिक जीवन सफल रहेगा, उच्चपद पर आसीन होंगे, धनी बनेंगे। सब सुख-साधन उपलब्ध होंगे। बहुत सी यात्राएं करेंगे, लोकप्रिय बनेंगे। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से मित्रता होगी।

शुभत्व में वृद्धि और अरिष्ट से बचाव के लिए शुक्र के तांत्रिक मंत्र के 60000 जाप करें।

अंर्तदशा :- राहु - सूर्य
(03/02/2030 - 29/12/2030)

राहु महादशा की अवधि 18 वर्ष होती है। आपके लिए यह 18/07/2015 को प्रारंभ होकर 17/07/2033 को समाप्त होगी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा 10 मास 24 दिन की होगी जो आपके लिए 03/02/2030 को प्रारंभ होकर 29/12/2030 को समाप्त होगी।

सूर्य आपकी जन्मपत्री में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। सूर्य आत्मा और पिता का कारक है। सूर्य शक्तिशाली ग्रह है। द्वादश भाव में स्थित होकर सूर्य आपकी कुंडली के छठे भाव पर दृष्टि डाल रहा है और उसके कारकत्व को प्रभावित कर रहा है।

यह अंतर्दशा अशुभ हो सकती है। कार्यों में असफलता मिल सकती है। पापकर्म में रुचि हो सकती है। नेत्ररोगों और चोट से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। कार्यक्षमता और ऊर्जा उत्तम रहेंगी।

अरिष्ट से बचाव और शुभत्व में वृद्धि के लिए :

- दूध और शहद का सेवन करें; अग्नि को दूध अर्पित करें।
- आटा, गुड़ और तांबे के सिक्के दान करें।
- बहते पानी (नदी आदि) में तांबे के सिक्के डालें।

महादशा :- गुरु
(17/07/2033 - 17/07/2049)

गुरु की महादशा की अवधि सोलह वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 17/07/2033 को आरम्भ और 17/07/2049 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में गुरु लग्न में स्थित है। यह शरीर रचना, रूपकार, स्वास्थ्य, स्वभाव, प्रवृत्ति, प्रतिष्ठा, सामान्य रहन-सहन, चेहरे के ऊपरी भाग, दीर्घ आयु और सामान्य जीवन की संरचना के प्रति विचार का द्योतक है। गुरु स्वभाव से एक शुभ ग्रह है जो आपकी जन्मकुण्डली में प्रथम भाव में स्थित होकर पंचम, सप्तम तथा नवम भावों को देखता हुआ उनपर अपना शुभ प्रभाव डाल रहा है। सोलह वर्ष की यह दशा शान्ति, समृद्धि और उत्तम स्वास्थ्य की दशा होगी।

स्वास्थ्य :

महादशा का स्वामी अपने ही भाव में स्थित होकर भाव को शक्ति दे रहा है। फलतः इस दशा के दौरान आपको कोई बड़ी स्वास्थ्य समस्या नहीं होगी और आप अपने सामान्य कार्यों का सम्पादन करने की स्थिति में होंगे।

अर्थ-सम्पत्ति :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति और पंचम तथा नवम (सप्तम के अतिरिक्त) भाव अर्थात् दो त्रिकोणों पर उसकी दृष्टि के कारण इस दशा के दौरान आप भाग्यशाली होंगे। आप अपनी आय के स्रोतों और चल-अचल सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आप भोग-विलास की वस्तुओं पर व्यय भी करेंगे।

व्यवसाय :

प्रथम भाव में स्थित गुरु के कारण आप अपने ही प्रयास से अपना जीविकोपार्जन करेंगे। आप जिस किसी भी व्यवसाय में हों, उन्नति करेंगे। आप नौकरीपेशा हों अथवा व्यवसायी, जीवन में उन्नति करेंगे और मकान, वाहन आदि सम्पत्ति में वृद्धि करेंगे। आपकी शिक्षा तथा ज्ञान में भी वृद्धि होगी।

पारिवारिक जीवन :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति तथा पंचम, सप्तम तथा नवम भावों अर्थात् भूत-कर्म भाव, जीवन संगी भाव और सुख कर्म पर उसकी दृष्टि के कारण आपका पारिवारिक जीवन अत्यन्त सुव्यवस्थित तथा सौहर्दपूर्ण होगा। आपके जीवनसाथी आपके सहयोगी और आपके बच्चे आज्ञाकारी होंगे और आपके माता-पिता आपके जीवन को सुखमय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे।

शिक्षा/प्रशिक्षण :

गुरु की प्रथम भाव में स्थिति के कारण इस दशा के दौरान आपको शिक्षा के उत्तम अवसर मिलेंगे और आपकी प्रशिक्षण-वृत्ति सफल होगी।

अंर्तदशा :- गुरु - गुरु
(17/07/2033 - 04/09/2035)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 17/07/2033 को प्रारंभ हो रही है। इस महादशा में पहली अंतर्दशा बृहस्पति की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 1 मास 18 दिन रहेगी। आपके लिए यह 17/07/2033 को प्रारंभ होकर 04/09/2035 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति बुद्धि, उच्चज्ञान, जीवन और धन का कारक है।

इस अवधि में आप सौभाग्यशाली रहेंगे, सम्मानित होंगे, धनी बनेंगे। कार्यों में सफलता मिलेगी। आत्म-विश्वास में वृद्धि होगी; योग्यता विकसित होगी। पारिवारिक जीवन सुखी रहेगा, संतान सुखकारी होगी। अगर अविवाहित हैं तो विवाह हो सकता है। व्यापार से लाभ में वृद्धि होगी। चुनाव में जीत होगी; हर काम में सफल रहेंगे। पुत्र का जन्म हो सकता है। घर में मांगलिक उत्सव हो सकता है। पिता से संबंध उत्तम रहेंगे। विद्वानों, संतों से संपर्क बढ़ेगा।

आपके जीवनसाथी को व्यापार में लाभ होगा, उच्चपद प्राप्त होगा, धनी बनेंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ हो सकता है। माता की किस्मत चमकेगी; आपके भाई-बहनों के लिए परीक्षा में सफलता, संचार माध्यम में कुशलता, लघु यात्राओं का संकेत है।

आपकी संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्राएं होंगी, धनी बनेंगे, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकता है; अप्रत्याशित प्रगति या धनलाभ संभव है। परामर्शदाता धनी बनेंगे; अचल संपत्ति क्रय कर सकते हैं। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए बृहस्पति के मंत्र का जाप करें।

ऊँ बृं वृहस्पतये नमः

अंर्तदशा :- गुरु - शनि
(04/09/2035 - 18/03/2038)

आपकी बृहस्पति की महादशा 17/07/2033 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में दूसरी अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 2 वर्ष 6 मास 12 दिन रहेगी। आपके लिए यह 04/09/2035 को प्रारंभ होकर 18/03/2038 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आप भाग्यशाली और धनी बनेंगे। दूरस्थ स्थान की यात्रा हो सकती है। संन्यास में रुचि हो सकती है। धर्म और दर्शनशास्त्र में मन लग सकता है। पिता से संबंध मधुर होंगे। शिक्षा उत्तम होगी। संतान से सुख मिलेगा। पारिवारिक जीवन उत्तम होगा। दान-धर्म की संस्थाओं से जुड़ सकते हैं।

आपके जीवनसाथी सब कार्यों को उत्साह और साहस से पूर्ण करेंगे। आपके पिता के

आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। माता को स्पर्धियों पर सफलता मिलेगी। आपके भाई-बहनों के लिए साझेदारी से लाभ, व्यापार में लाभ, अचल संपत्ति और वाहनसुख, निवेश से लाभ का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा पूर्ण हो सकती है, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो निवेश से लाभ होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो कार्यालय उत्तम होगा, प्रोन्नति होगी। परामर्शदाताओं के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी। व्यापारियों को जनसंपर्क से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए शनि मंत्र का जाप करें।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः

अंर्तदशा :- गुरु - बुध
(18/03/2038 - 23/06/2040)

आपके लिए बृहस्पति की महादशा 17/07/2033 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में तृतीय अंतर्दशा बुध की होगी, जिसकी अवधि 2 वर्ष 3 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 18/03/2038 को प्रारंभ होकर 23/06/2040 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धि, स्मृति और हाज़िरजवाबी का कारक है।

इस अवधि में आपके शुभ कार्यों पर खर्चे बढ़ेंगे। अध्यात्म और ध्यान में रुचि होगी। अंतर्ज्ञान शक्ति और कल्पनाशीलता उत्तम रहेंगी। शिक्षा पूर्ण होगी। कुछ परिवर्तन हो सकते हैं। सफलता के कई अवसर मिलेंगे। अध्यात्म और दर्शन में रुचि बढ़ेगी। मुकदमे में जीत होगी। मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को मानसिक शांति और घरेलू सुख मिलेंगे। आपके पिता को अचल संपत्ति और वाहन का सुख मिलेगा। माता की यात्राएं हो सकती हैं; सम्मान और उच्च पद प्राप्त करेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए धनार्जन, लाभ, सुख-सुविधाएं, भरोसेमंद मित्र, महत्वपूर्ण दस्तावेजों पर हस्ताक्षर का संकेत है।

आपकी संतान परीक्षा में सफल रहेगी, ज्ञान-विज्ञान में रुचि होगी। अगर वे कार्यरत हैं तो कार्यों में सफलता मिलेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो सहकर्मियों से लाभ होगा, धनार्जन उत्तम होगा, कार्यों में सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं की आय अच्छी होगी, कुछ परिवर्तन हो सकता है, सफल रहेंगे। व्यापारियों को स्पर्धा में सफलता मिलेगी।

स्वास्थ्य का, विशेषकर स्नायुतंत्र और नेत्रों का ध्यान रखें। शुभत्व में वृद्धि के लिए बुध मंत्र का जाप करें।

ऊँ बुं बुधाय नमः

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ के द्वारा ज्योतिषीय घटनाओं का ग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है तथा ग्राफ के रूप में ही फलादेश दिया गया है।

जीवन में आने वाले समय का उतार-चढ़ाव का एस्ट्रोग्राफ के रूप में चित्रण किया गया है जिसे समझना सहज और आसान होता है। यह एक खास समय में आपकी उन्नति अथवा अवनति की मात्रा को दर्शाता है। इस एस्ट्रोग्राफ पर सरसरी दृष्टिपात कर आप पता कर सकते हैं कि आनेवाला कौन सा समय आपके लिए उपयुक्त है अथवा नहीं।

एस्ट्रोग्राफ

एस्ट्रोग्राफ, जीवन के किसी भी पहलू की ग्राफ द्वारा प्रस्तुति है। इससे स्वास्थ्य, आर्थिक, बुद्धि, प्रेम या अन्य किसी भी क्षेत्र में, एक समय के दौरान, होने वाली घटनाओं में रूचि रखने वालों को जानकारी मिलती है। एस्ट्रोग्राफ हमें सही रूप जानने और उन्हें आसानी से समझने में सहायक होते है।

अगले पृष्ठों में आपके जीवन के तीन महत्वपूर्ण पहलू - स्वास्थ्य, धन तथा मानसिक स्तर एस्ट्रोग्राफ द्वारा दिखाये गये हैं। ये एस्ट्रोग्राफ 100 मापक्रम के अनुसार हैं।। यदि आपका एस्ट्रोग्राफ 50 से अधिक अंक दिखाता है तो वह शुभ है। 65 से ऊपर बहुत अच्छा होता है और 80 से ऊपर अति उत्तम होता है। 50 से नीचे सामान्य होता है, 35 से नीचे बुरा तथा 20 से नीचे बहुत बुरा माना जाना चाहिए।

0-20	**निकृष्ट**	50-65	**श्रेष्ठ**
20-35	**नेष्ट**	65-80	**उत्तम**
35-50	**सामान्य**	80-100	**अत्युत्तम**

एस्ट्रोग्राफ - 2019

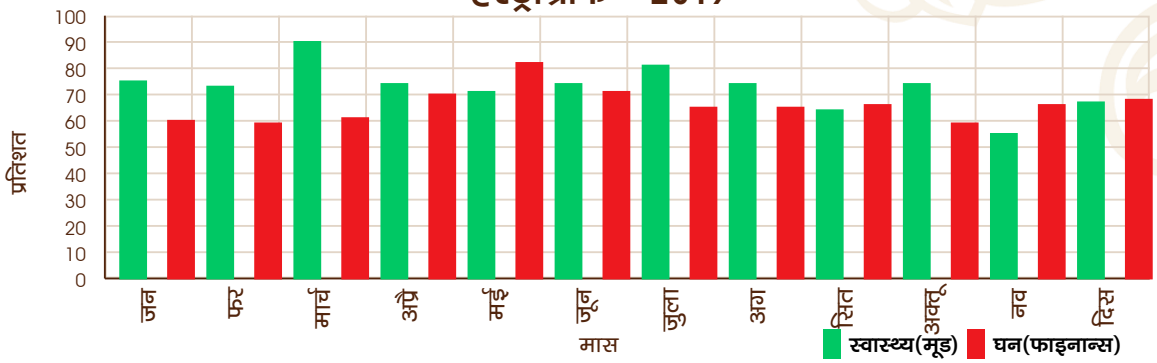

एस्ट्रोग्राफ - 2020

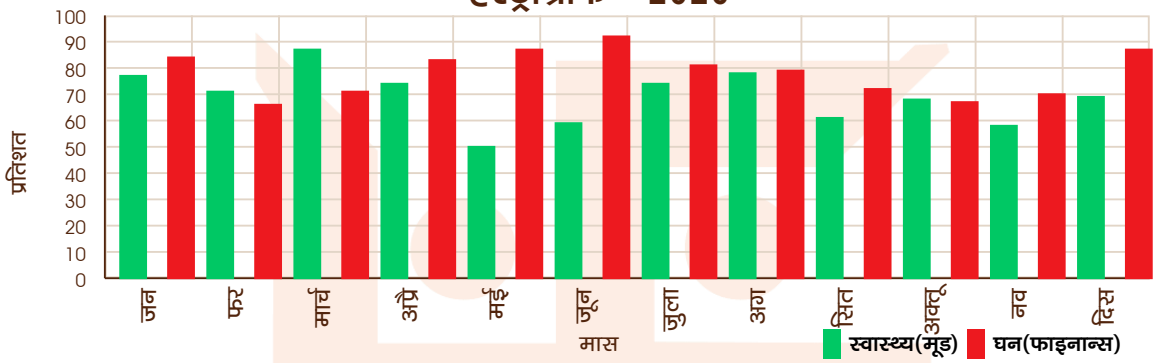

एस्ट्रोग्राफ - 2021

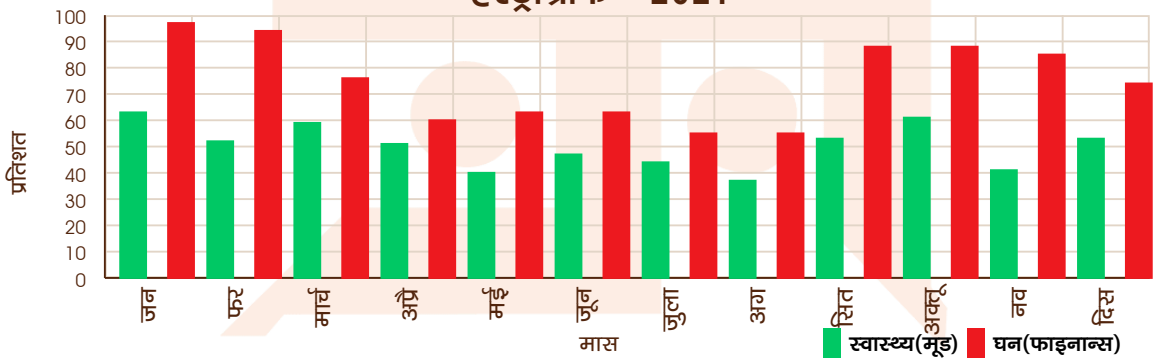

एस्ट्रोग्राफ - 2022

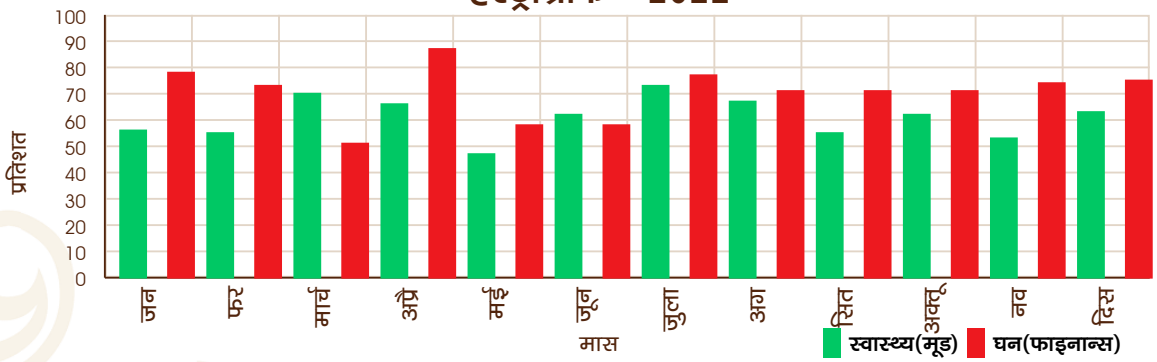

एस्ट्रोग्राफ - 2023

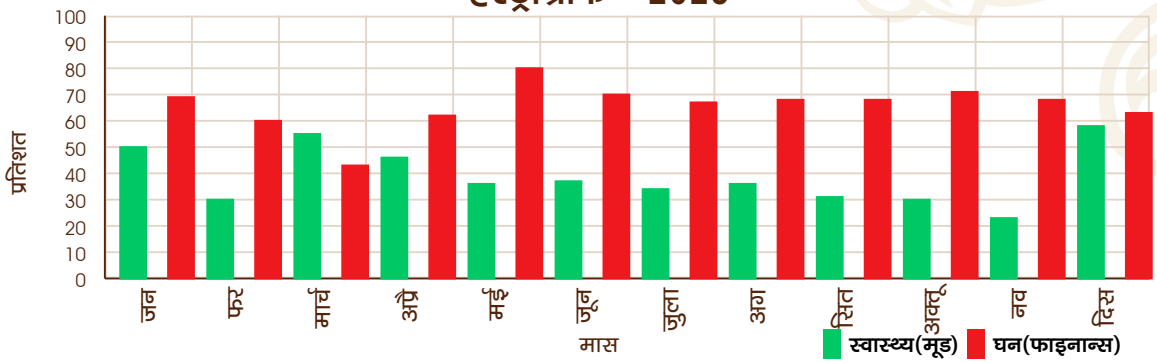

एस्ट्रोग्राफ - 2024

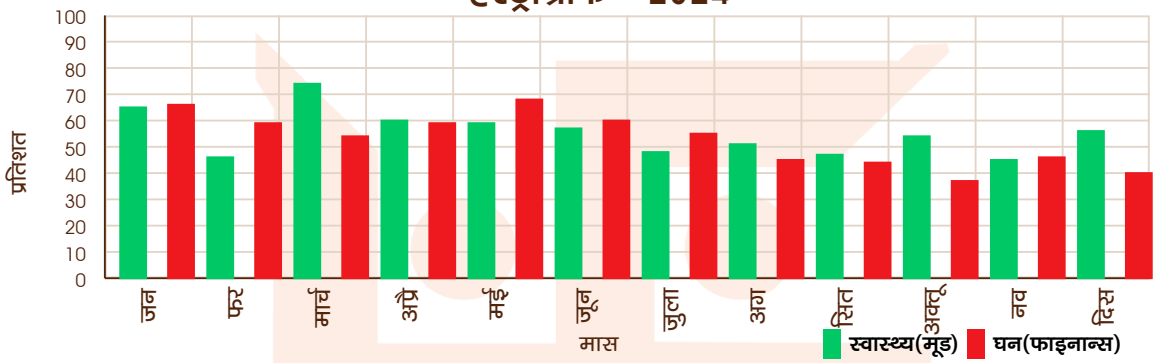

एस्ट्रोग्राफ - 2025

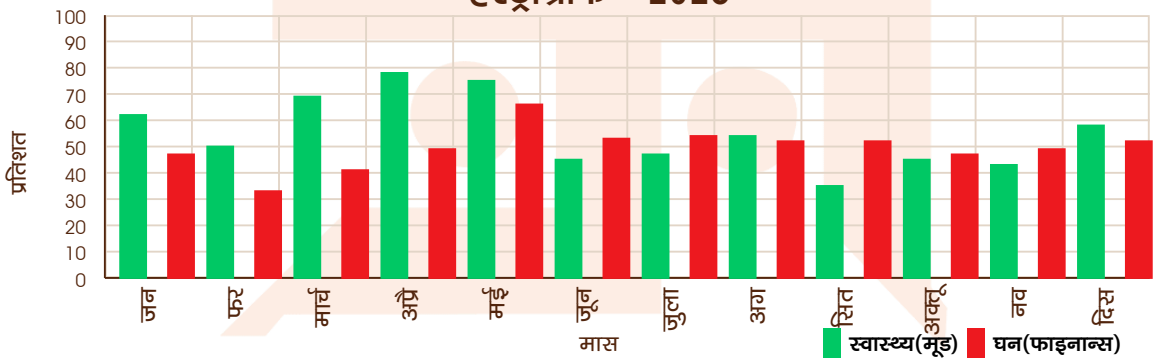

एस्ट्रोग्राफ - 2026

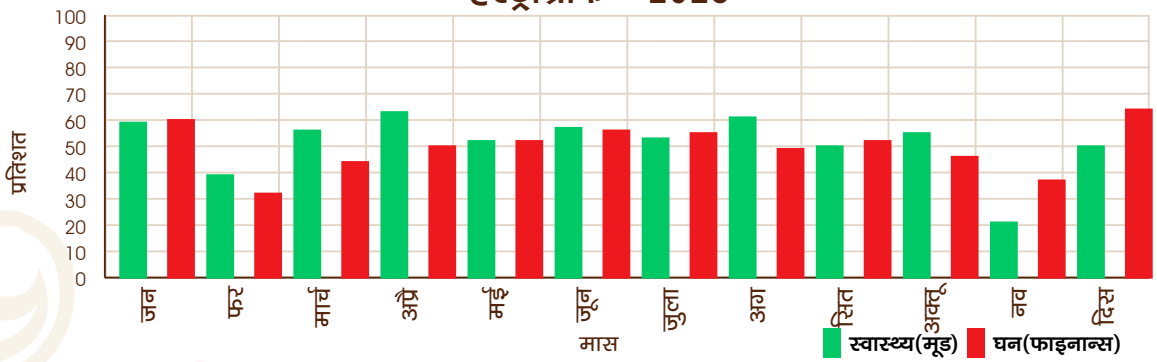

एस्ट्रोग्राफ - 2027

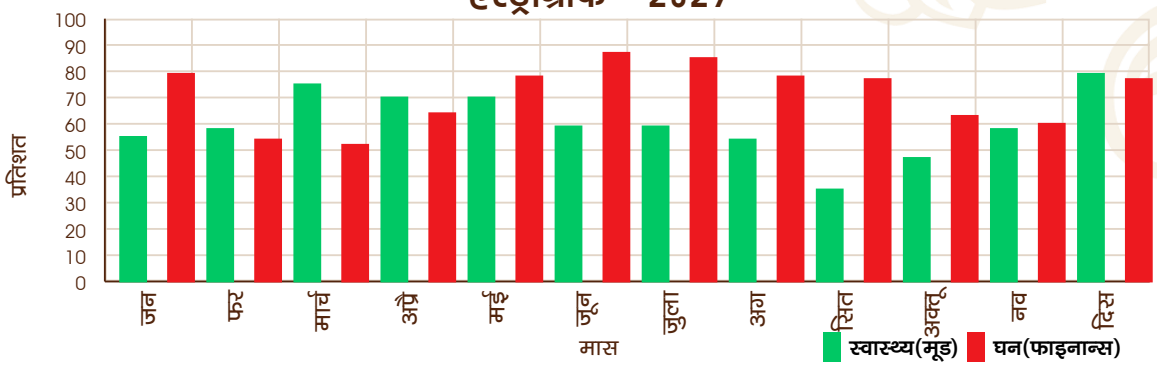

एस्ट्रोग्राफ - 2028

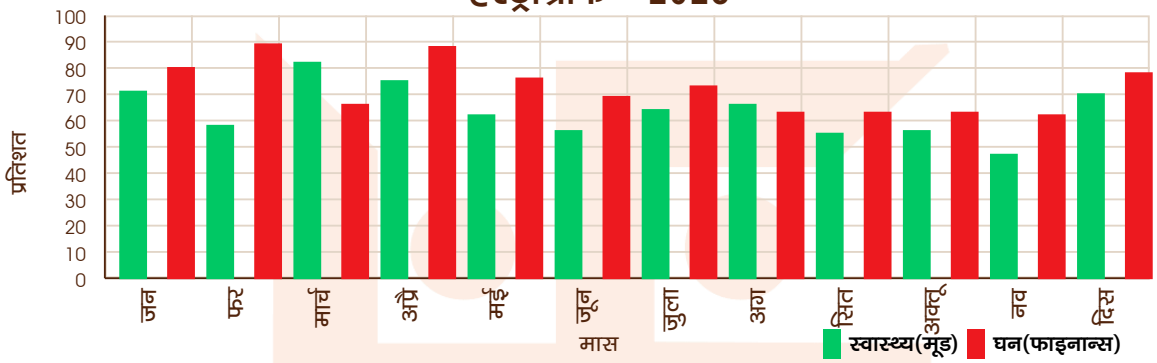

एस्ट्रोग्राफ - 2029

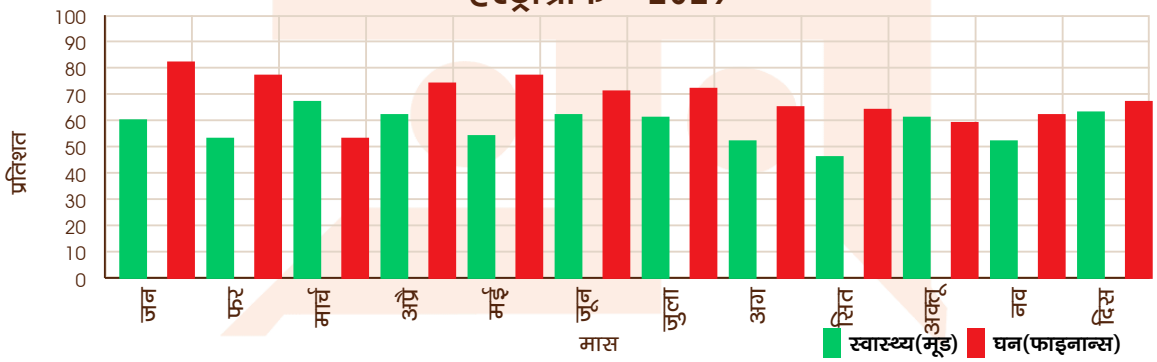

एस्ट्रोग्राफ - 2030

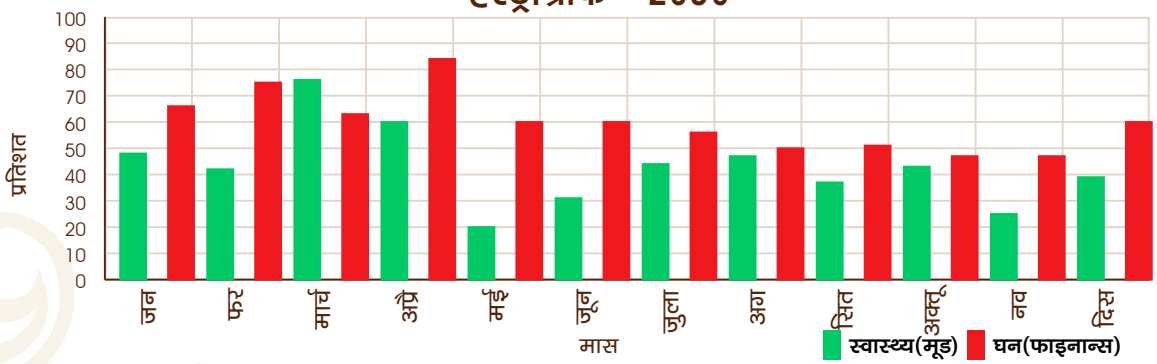

एस्ट्रोग्राफ - 2031

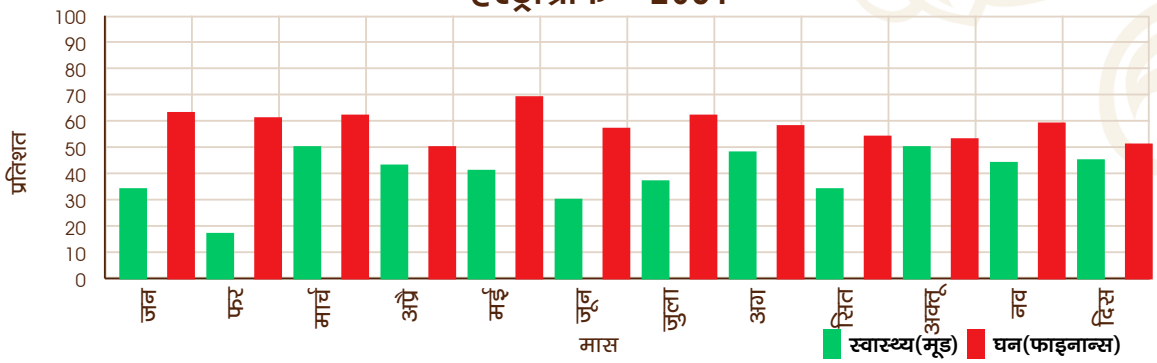

एस्ट्रोग्राफ - 2032

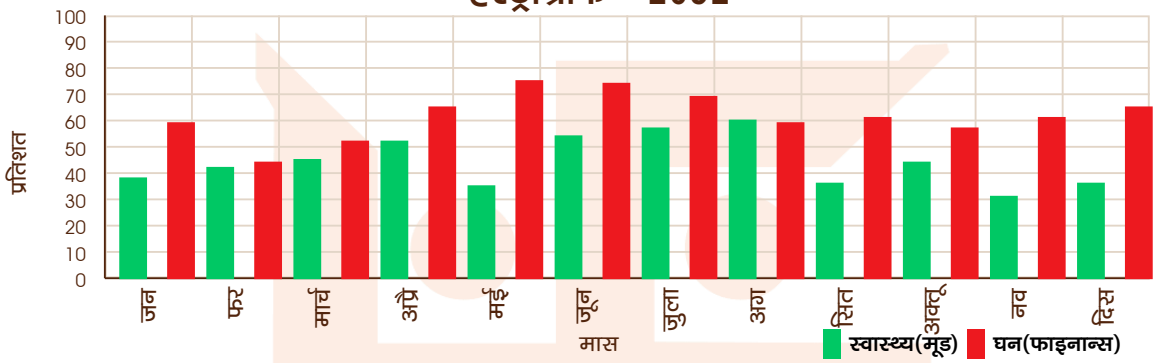

एस्ट्रोग्राफ - 2033

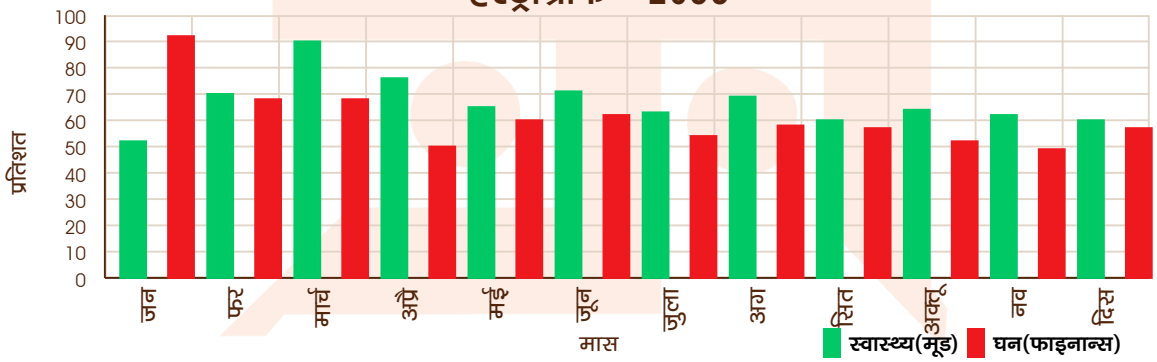

एस्ट्रोग्राफ - 2034

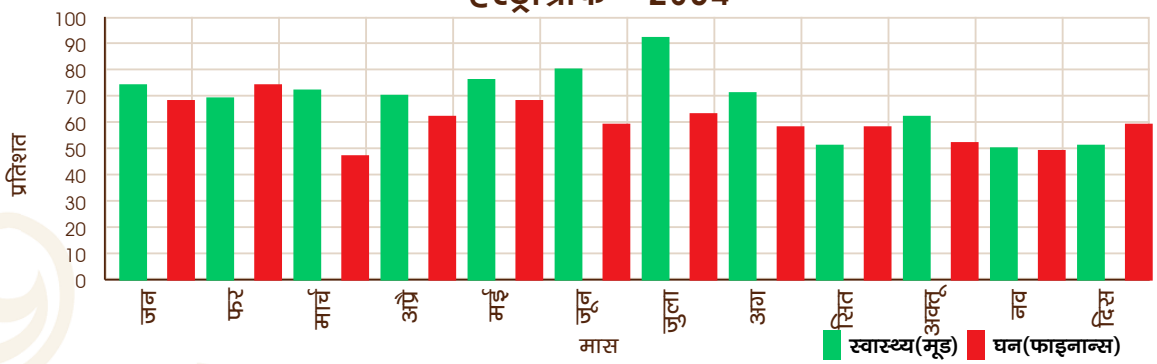

एस्ट्रोग्राफ - 2035

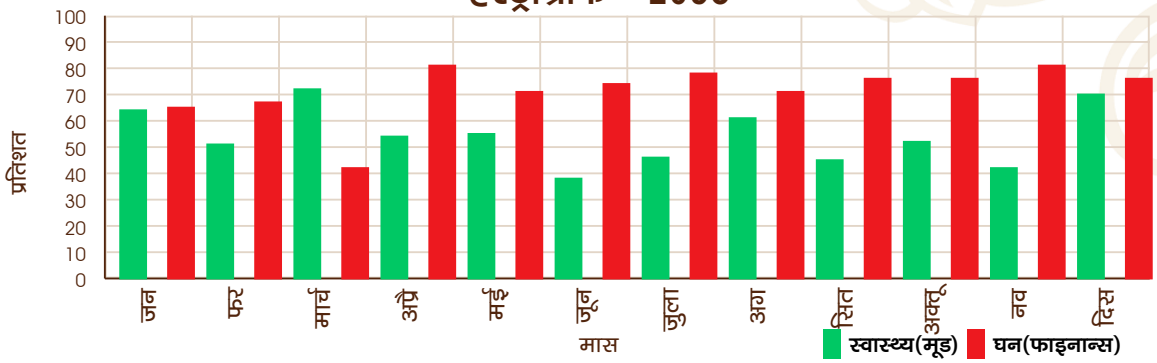

एस्ट्रोग्राफ - 2036

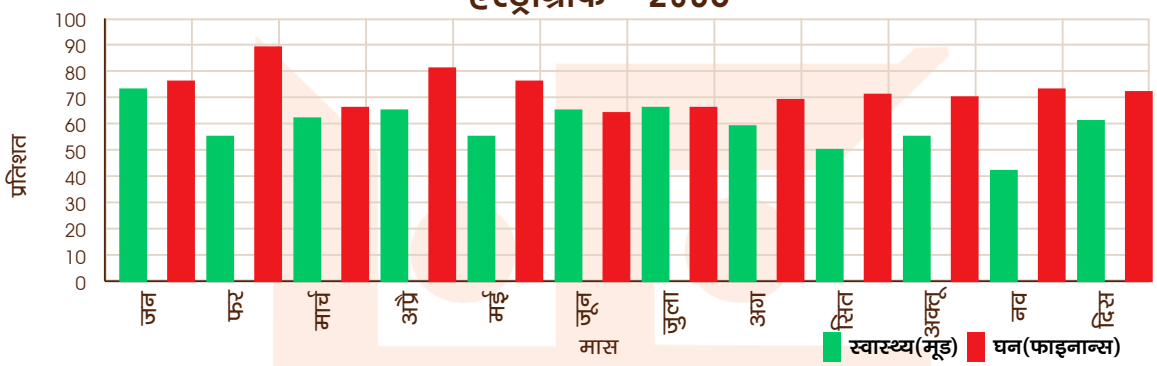

एस्ट्रोग्राफ - 2037

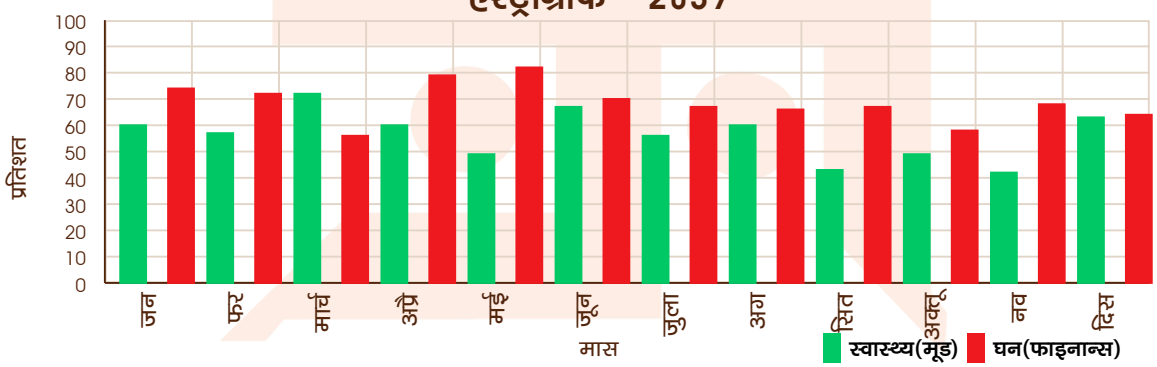

एस्ट्रोग्राफ - 2038

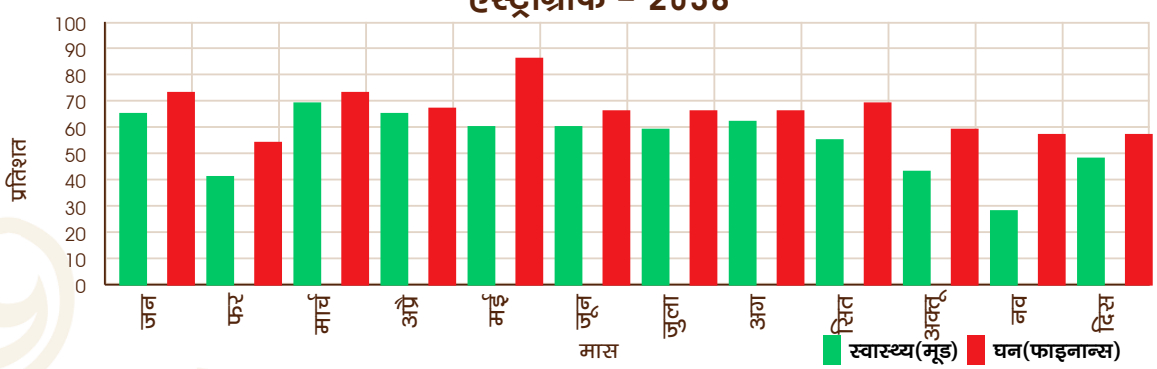

योग

जन्मकुंडली में मौजूद शुभ अथवा अशुभ योग किसी भी व्यक्ति के भाग्य निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

जन्मकुंडली में योग का निर्माण उस परिस्थिति में होता है जब किसी ग्रह, राशि अथवा भाव का संबंध किसी अन्य ग्रह, राशि अथवा भाव से खास रूप में स्थिति, दृष्टि अथवा युति के रूप में बनता है। इन योगों के शुभत्व अथवा अशुभत्व के कारण विभिन्न प्रकार की शुभाशुभ घटनाएं हमारे जीवन में घटित होती हैं। प्रत्येक कुंडली में योग का बनना 9 ग्रहों, 12 भावों, 12 राशियों एवं 27 नक्षत्रों के कारण अवश्यंभावी होता है। इन योगों का प्रभाव हर कुंडली में अलग-अलग उनकी उपलब्धता के अनुसार होता है। दुर्लभ योगों का जीवन में विशेष प्रभाव होता है।

योग

हंस योग

स्वगेहतुङ्गाश्रयकेन्द्रसंस्थैरुच्चोपगैर्वाचनसूनुमुख्यैः।
क्रमेण योगा रुचकाख्यभद्रहंसाख्यमालव्यशशाभिधानाः।।
रक्तास्योन्नतनासिकासुचरणो हंसप्रसन्नेन्द्रियो
गौरः पीनकपालरक्तकरजो हंसस्वनः श्लैष्मिकः।
शङ्खाब्जाङ्कुशमत्स्यदामयुगकैः खट्वाङ्गमालाघटै-
श्चंचत्पादकरस्थलो मधुनिभे नेत्रे सुवृत्तं शिरः।।
जलाशयप्रीतिरतीव कामी न याति तृप्तिं वानितासुनूनम्।
ओच्चः रसाष्टाङ्गुलसम्मितं तत्तनोस्तथायुरिहास्ति षष्टिः।।
वाह्लीकदेशादरशूरसेनगन्धर्वगङ्गायमुनान्तरालान्।
भुक्त्वा वनान्ते निधनं प्रयाति हंसोऽयमुक्तो मुनिभिः प्रमाणैः।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 2, 9 1-3।।

यदि जन्मपत्रिका में स्वराशि अथवा उच्चहोकर गुरु केन्द्र में हो तो हंसयोग बनता है।

इस योग वाला जातक ऊंची नासिका (नाक), सुन्दरचरण (पाँव), हंससदृश प्रसन्न इन्द्रिय वाला (जिसकी अच्ग प्रत्यच्ग हंस की तरह सुन्दर हों), गौरवर्ण, मधुरवाणी वाला, कफ प्रकृतिवाला, मछली, कमल, अच्कुश, शङ्ख, दाम, खट्वाङ्ग, माला, जुआ, घड़ा इन चिह्नों से सुशोभित हाथ पांव वाला, मधु के समान नेत्रवाला और सुन्दर गोलाकार शिर वाला होता है। जलाशय में स्नेह रखने वाला, अत्यन्त कामी, स्त्रियों से तृप्ति न पाने वाला, 86 अङ्गुल ऊँचा शरीर वाला तथा 60 वर्ष तक जीने वाला होता है। वाह्लीक सुरसेन, गन्धर्वादिदेशों में तथा गङ्गा यमुना के मध्य देशों में भोग करके वन में मृत्यु प्राप्त करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप- आप उच्चकोटि के विद्वान, राजनेता, मंत्री, शैक्षणिक क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त, धार्मिक संस्था के अध्यक्ष, ज्योतिष के विद्वान या ज्योतिष विषय से सम्बंध रखने वाला, आध्यात्मिक गुरु, प्रवक्ता, संस्था के संस्थापक, शेयरब्रोकर, राजदूत, वित्तीय संस्था के स्वामी तथा विविध-क्षेत्र में ख्यातिप्राप्त करेंगे।

सेवा की दृष्टि से आप शैक्षणिक संस्थाओं के प्राचार्य, धर्मगुरु, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट, प्रशासनिक सेवा आइ. ए. एस. में विशेष ख्याति एवं सफलता प्राप्त करने में अग्रणी होंगे। आप राज्य में मंत्री, कूटनीतिज्ञ, उच्च शास्त्रकार, तथा विधिविशेषज्ञ के रूप में विश्वविख्यात होंगे।

व्यवसाय के दृष्टिकोण आप शैक्षणिक संस्था संचालक, कम्पनी स्वामी, पीले रंग की वस्तुएं, धातुओं के उच्च व्यवसायी, चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट कन्सलटेंसी, वित्तीय संस्था के माध्यम से धन के लेन-देन से बहुत लाभ अर्जित करके धनी, ऐश्वर्यशाली, सम्मानित व्यक्ति के रूप में अपना जीवन व्यतीत करेगें।

वाशि योग

सूर्याद्व्ययगैर्वाशिर्द्वितीयगैश्चन्द्रवर्जितैर्वेशि।
उत्कृष्टवचाः स्मृतिमानुद्योगयुतो निरीक्षते तिर्यक्।
सर्वशरीरे पृथुलो नृपतिसमः सात्त्विको वाशौ।।
।। सारावली ।। अ.14/श्लोक 1, 6।।

यदि जन्मकुंडली में सूर्य से द्वादश स्थान में चंद्रमा को छोड़कर अन्य ग्रह विद्यमान हो तो वाशि नामक योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप उत्कृष्ट वाणी वाले, स्मरण शक्ति वाले, उद्यमी, तिरछी दृष्टि वाले, स्थूल शरीर वाले, राजा के समान व्यक्तित्व वाले तथा सात्विक प्रवृत्ति वाले होंगे।

शकट योग

जीवान्त्याष्टारिसंस्थे शशिनि तु शकटः।।
क्वचित्क्वचिद्भाग्यपरिच्युतः सन् पुनः पुनः सर्वमुपैति भाग्यम्।
लोकेऽप्रसिद्धोऽपरिहार्यमन्तः शल्यं प्रपन्नः शकटेऽतिःदुखी।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 14, 17 ।।

यदि पत्रिका में चंद्रमा से 6, 8 या 12 वें स्थान में बृहस्पति हो तो शकट योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप जन्मभर दुःखी रहना, जीवन व्यथित रहना, प्रसिद्धि प्राप्त करना, सामान्य जीवन व्यतीत करना, भाग्यहीनता तथा पुनः भाग्य प्राप्ति के योग बनेंगे।

अमलयोग

चन्द्राद्योम्न्यमलाह्वयः शुभखगैर्योगो विलग्नादपि।
क्ष्मेशः स्यादमले धनी सुतयशः संपद्युतो नीतिमान्।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 19-20 ।।

यदि पत्रिका में लग्न या चंद्रमा से दशम स्थान में शुभ ग्रह हो तो अमला योग होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भूमि के स्वामी, धनी, नीतिवान् पुत्र एवं संपत्ति से युक्त यशस्वी व्यक्ति होंगे।

हर्ष योग

दुःस्थैर्भावगृहेश्वरैरशुभसंयुक्तेक्षितैर्वाक्रमाद्भावैः हर्षयोगः।
सुखभोगभाग्यदृढगात्रसंयुतो
निहताहितो भवति पापभीरुकः ।
प्रथितप्रधानजनवल्लभो धन-
द्युतिमित्रकीर्तिसुतवांश्च हर्षजः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/ श्लोक 57, 63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में छठा भाव या षष्ठेश अशुभ ग्रहों से युत या निरीक्षित हो तथा षष्ठेश दुःस्थान में निवास करता हो तो हर्षयोग होता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,शनि योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण स्थापित हो रहा है। फलस्वरूप आप भाग्यवान्, दृढ़ शरीर वाले व सुखी, भोगी, शत्रुजीत, पापकर्म में लिप्त एवं भयातुर होंगे परंतु आप प्रसिद्ध, प्रधानप्रिय, धन, पुत्र, मित्र से सुखी एवं यशस्वी होंगे।

पर्वत योग

लग्नाधिप्राप्तभूपतिस्थितराशिनाथः
स्वोच्चस्वभेषु यदि कोणचतुष्टयस्थः।
योगः स पर्वताख्यः।
स्थिरार्थसौख्यः स्थिरकार्यकर्त्ता क्षितीश्वरः पर्वतयोगजातः।।
।। फलदीपिका ।। अ. 6/श्लोक 35, 36।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश जिस राशि में है, उस राशि का स्वामी अपनी उच्च राशि या स्वराशि में स्थित होकर केंद्र या त्रिकोण में स्थित हो तो पर्वत योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 8 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका सुख और धन दोनों स्थिर रहेगा। आप स्थिर कर्म करेंगे। मकान बनवाना, बाग लगाना, कल-कारखाने की स्थापना आदि आपके स्थिर कार्य होंगी,

चामर योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
प्रत्यहं व्रजति वृद्धिमुदग्रां शूक्लचन्द्रइवशोभनशीलः।
कीर्तिमान् जनपतिश्चिरजीवी श्रीनिधिर्भवति चामरजातः।।
।। फलदीपिका।। अ.6/ श्लोक 44-45।।

यदि जन्मकुण्डली में लग्न में शुभ ग्रह हों या लग्न को शुभ ग्रह देखते हों तथा लग्नाधिपति अस्त न होकर उत्तम स्थान में अपनी राशि का या स्वस्थानीय होकर बैठा हो तो चामर योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,बुध,गुरु योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप शुक्ल प क्ष की चन्द्रमा की तरह वृद्धि को प्राप्त करेंगे। उसी तरह सुशील और सुन्दर भी होंगे। आप लक्ष्मीवान्, कीर्तिवान, दीर्घायु और लोकपति होंगे।

धेनु योग :

भावैः सौम्ययुतेक्षितैस्तदधिपैः सुस्थानगैर्भास्वरैः
स्वोच्चस्वर्क्षगतैर्विलग्नभवनाद्योगाः क्रमाद्द्वादश।
सान्नपान्नविभवोऽखिलविद्यापुष्कलोऽधिककुटुम्बविभूतिः।
हेमरत्नधनधान्यसमृद्धो राजराज इवराजति धेनौ।।
।। फलदीपिका।। अ.6/श्लोक 44, 46।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों या दूसरे भाव को शुभ ग्रह देखते हों और दूसरे भाव का स्वामी उदित होकर स्वराशि या उच्च राशि में स्थित होता हुआ सुस्थान में बैठा हो तो धेनु योग बनता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,गुरु,मंगल योग की संभावना : 96 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप सुवर्ण, धन, धान्य और रत्न से समृद्ध, राजराज के समान होंगे। यहां पर राजराज के दो अर्थ हैं। 1. राजओं का राजा, 2. कुबेर के समान भाव यह है कि आप धनवान होंगे। आप विद्या, कुटुम्ब, उत्तम भोजन आदि से युक्त होंगे।

अनफा योग

अनफा रविरहितैः।
अन्त्ये कैरववनबान्धवाद्विहगैः।।
वाग्मीप्रभुर्द्रविणवानगदः सुशीलो
भोक्तान्नपानकुसुमाम्बरकामिनीनाम्।
ख्यातः समाहितगुणः सुखशस्तचित्तो
योगे निशाकरकृते त्वनफे सुवेषः।।
।। सारावली ।। अ. 13/श्लोक 1, 5।।

यदि जन्मकुंडली में चंद्रमा से द्वादश भाव में सूर्य रहित कोई ग्रह हो तो अनफा योग बनता है।

योग कारक ग्रह : गुरु,चंद्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप कुशलवक्ता, सामर्थ्यवान्, धनवान्, नीरोग, सुन्दर शीलवान् अन्नपानपुष्पवस्त्र व स्त्री का सुख भोगने वाले, गुणी, सुखी तथा सुन्दर वेशभूषा वाले होंगे।

अचल लक्ष्मी योग

चन्द्रेण मङ्गलो युक्तो जन्मकाले यदा भवेत्।
तस्य जातस्य गेहं तु लक्ष्मीर्नैव विमुंचति।।
।। मानसागरी।। अ. 4/श्लोक 8।।

यदि जन्मकुंडली में मंगल के साथ चंद्रमा चाहे जिस भाव में हो जातक के पास सदैव ल क्ष्मी निवास करती है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 144 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके पास सदैव धन रहेगा। आपके घर में स्थिर लक्ष्मी निवास करेगी।

कर्णरोग योग

तृतीयनाथे पापान्विते पापनिरीक्षिते वा वदन्ति कर्णोद्भवरोगमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-49 ।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश पाप युक्त या दृष्ट हो तो कर्णरोग होता है।

योग कारक ग्रह : शनि,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूप से घटित हो रहा है फलस्वरूप आपको कर्णरोग होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

सर्प भय योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.-285।।

यदि जन्मपत्रिका में तृतीयेश राहु स्थित राशि पद से युक्त हो अथवा लग्न राहु युक्त हो तो जातक को सर्प का भय होता है।

योग कारक ग्रह : राहु,गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको सर्प का भय होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

भवन नाश योग

गेहाधिपे नाशगते यदि स्यात्पापेक्षिते तद्गृहनाशमत्र ।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.4/श्लो.-63 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सुखभाव का स्वामी द्वादश भाव में पाप ग्रह से युत हो तो भवन नष्ट हो जाता है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,बुध योग की संभावना : 48 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको भवन सुख से वंचित होना पड़े ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रनाश योग

पापमध्ये तु यद्भावे तदीशेऽपि तथा स्थिते ।
कारके पापसंयुक्ते पुत्रनाशं वदेत्तदा ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचम भाव या पंचमेश पाप ग्रहों के बीच हो, तथा संतान कारक ग्रह भी पाप युक्त हो तो पुत्रनाश योग बनता है।

योग कारक ग्रह : राहु,मंगल,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको संतान सुख में बाधा हो ऐसा प्रतीत होता है।

तीव्रबुद्धि योग

बुद्धिस्थानाधिपस्यांशराशीशे शुभवीक्षिते ।
वैशेषिकांशके वापि तीव्रबुद्धिं समादिशेत् ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ. 5/श्लो.-35 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश जिसके नवांशक में हो वह शुभ ग्रह से दृष्ट अथवा वैशेषिकांश में हो तो तीव्र बुद्धि योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप तीव्र बुद्धि के होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

पुत्रस्थानपतौ तु वा नवमपे पुंवर्गे पुरुषग्रहेक्षितयुते जातस्तु पुत्राधिकः।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-9 ।।

यदि जन्मपत्रिका में पंचमेश अथवा नवमेश पुरुष ग्रह के वर्ग में हो तथा पुरुष ग्रह से दृष्टिगत या युत हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपको अनेक पुत्रों का सुख प्राप्त हागा। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

शुक्रेन्दुवर्गे सुतभे विलग्नाच्छुक्रेण चन्द्रेण युतेऽथ दृष्टे ।
शन्यारदृष्टे सति पुत्रहीनः ।।
।। जातकपारिजात ।। अ. 13/श्लो.-10 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्न से पंचम भाव शुक्र या चंद्रमा से दृष्ट, युक्त और वर्ग में हो और उसपर शनि एवं मंगल की दृष्टि हो तो पुत्रहीन योग बनता है।

योग कारक ग्रह : मंगल,चंद्र,बुध,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप पुत्रहीन होंगे, ऐसा प्रतीत होता है।

बहुपुत्र योग

।। भारतीय ज्योतिष ।। पृ.- 293 ।।

यदि जन्मपत्रिका में संतान भाव में वृष, कर्क और तुला में से कोई राशि हो, पंचम भाव में शुक्र या चंद्रमा स्थित हों अथवा इनकी दृष्टि पंचम भाव पर हो तो बहुपुत्र योग बनता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप अनेक पुत्रों के सुख प्राप्त करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

विना पीड़ा मृत्यु योग

सौम्यांशके सौम्यगृहेऽथ सौम्य सम्बन्धगे वा क्षयेशे।
अक्लेशजातं मरणं नराणाम्।।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-21।।

यदि जन्मकुंडली में द्वादशेश सौम्यग्रह की राशि या सौम्य ग्रह के नवांश या सौम्य ग्रह के साथ स्थित हो तो विना पीड़ा की मृत्यु होती है।

योग कारक ग्रह : शनि योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपका मरण बिना क्लेश का होगा। ऐसा प्रतीत होता है।

वैकुण्ठवास योग

वैकुण्ठं शशिजो सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनाकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका के द्वादश भाव में बुध स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में बुध हो अथवा द्वादश भाव के स्वामी बुध से कोई संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत वैकुंठवासी होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत वैकुंठवासी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

मरणोपरांत ब्रह्मलोकवासी योग

सद्ब्रह्मलोकं गुरुः सम्प्रापयेत्प्राणिनः
सम्बन्धाद्व्ययनायकस्य कथयेत्तत्रान्त्यराश्यंशतः।
।। फलदीपिका-अ.14/श्लो.-23।।

यदि जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में गुरु स्थित हो या द्वादश भाव जिस ग्रह की नवांश में हो यदि उस नवांश में गुरु हो या द्वादशेश गुरु से संबंध स्थापित करता हो तो मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 2 में 1

आपकी जन्मकुंडली में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आप मरणोपरांत ब्रह्मलोक में निवास करेंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

पुत्रहीन योग

पुत्रेश्वरे दारपतौ बलाढ्ये दृष्टे युते वा त्वरिनायकेन जातोऽनपत्यः।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ-6/श्लो.-7।।

यदि जन्मकुण्डली में पंचमेश एवं सप्तमेश बलिष्ठ होकर षष्ठेश से युक्त या दृष्ट हो तो जातक को पुत्र नहीं होता है।

योग कारक ग्रह : चंद्र,बुध,सूर्य योग की संभावना : 288 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। अतः आप पुत्रहीन होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्या योग

कुटुम्बकलत्रनाथाभ्यां समेतैर्ग्रहनायकैर्वा कलत्रसंख्यां प्रवदन्ति सन्तः ।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-14 ।।

यदि जन्मकुण्डली में द्वितीयेश या सप्तमेश के साथ जितने ग्रह हों उतनी पत्नी होती हैं।

योग कारक ग्रह : चंद्र,मंगल योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मकुण्डली में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो या दो से अधिक जीवनसाथी हो सकते हैं। ऐसा प्रतीत होता है।

बहुभार्यायोग

कलत्रेशे बहुगुणे तुङ्गवक्रादिहेतुभिः ।
बहुभार्यं नरं विद्यादुदयर्क्षगतेऽपि वा।।
।। सर्वार्थचिन्तामणि ।। अ.-6/श्लो.-15 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तमेश उच्च वक्र आदि बहुत गुणों से युक्त हो अथवा लग्नस्थ हो तो मनुष्य बहुत स्त्रियों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : बुध योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्णरूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके अधिक जीवनसाथी होंगे। ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

लग्नेशेंगे द्विभार्यो जारो वा ।।
।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में लग्नेश लग्नस्थ हो तो द्वि भार्या योग होकर जार (व्यभिचारी) रहता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 12 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

द्विभार्या योग

पापाः सप्तमे द्विभार्यः।

।। बृहद्योग रत्नाकर ।। पृ. 303 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सप्तम भाव में पाप ग्रह हो तो द्विभार्या योग बनता है।

योग कारक ग्रह : केतु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी जन्मपत्रिका में यह योग पूर्ण रूपेण घटित हो रहा है। फलस्वरूप आपके जीवन में दो जीवनसाथी आएगें, अर्थात आपके दो विवाह हो, ऐसा प्रतीत होता है।

शुभकर्त्तरी योग

व्ययस्वगैः शुभैर्विलग्नात्सौम्यग्रहकर्त्तरी च ।।

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 5 ।।

यदि लग्न से द्वादश एवं द्वितीय भाव में शुभ ग्रह हों तो शुभकर्त्तरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में शुभकर्त्तरी योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप बुद्धिमान, रूप, शील और गुण से सम्पन्न व्यक्ति होंगे।

पाप कर्त्तरी योग

''पापयोगोद्भवः कामी पापकर्मपरार्थयुक्।।
व्ययस्वगैः पापैर्विलग्नात्पापाख्यः।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 5 ।।

यदि लग्न से द्वादश एवं द्वितीय भाव में पापग्रह हों तो पापकर्त्तरी योग होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,गुरु योग की संभावना : 6 में 1

पारिजात योग

''सपारिजातद्युचरः सुखानि ।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिसकी पत्रिका के "पारिजात" भाग में ग्रह हों तो उसे सभी प्रकार के उत्तम सुख की

प्राप्ति होती है।

योग कारक ग्रह : सूर्य,मंगल,शुक्र योग की संभावना : 2 में 1

आपकी पत्रिका में ग्रह "पारिजात" वर्ग में स्थित है। फलस्वरूप आपको सभी प्रकार का उत्तम सुख प्राप्त होगा।

गोपुरांश योग

''सगोपुरांशो यदि गोधनानि ''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 34 ।।

जिस जातक की पत्रिका में "गोपुरांश" भाग में ग्रह स्थित हो, वह मनुष्य गौ और धन दोनों से युक्त होता है।

योग कारक ग्रह : गुरु योग की संभावना : 4 में 1

आपकी पत्रिका में "गोपुरांश" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप गो धन अर्थात् पशुओं और धन से पूर्ण रहेंगे।

वासि योग

''व्ययखेटैर्वाशि दिनेशात्।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्मपत्रिका में सूर्य से बारहवें भाव में कोई ग्रह हो तो "वासि" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : शुक्र,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वासि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आपकी दृष्टि मन्द अर्थात् आपमें दृष्टिदोष रहेगा। आप परिश्रमी, नीचेदेखनेवाला एवं असत्यवादी होंगे।

वेशि योग

''धनखेटैर्वेशी दिनेशात्''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जातक के जन्मकाल पत्रिका में सूर्य से द्वितीय भाव में कोई ग्रह स्थित हो, तो जातक पर वेशि योग का सृजन होगा।

योग कारक ग्रह : गुरु,राहु,सूर्य योग की संभावना : 3 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "वेशि" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप

दयावान, स्थूल शरीर वाले, चतुरवक्ता, आलस्य से युक्त एवं वक्र दृष्टि वाले प्राणी होंगे।

उभयचारिक योग

''व्ययधनयुतखेटै दिनेशादुभयचारिकयोगः।''

।। बृ. पा. होरा. -योगाध्याय-श्लो. 51 ।।

यदि जन्म काल सूर्य से द्वादश और द्वितीय भाव में ग्रह स्थित हो तो "उभयचारिक" योग का निरूपण होता है।

योग कारक ग्रह : बुध,चंद्र,मंगल योग की संभावना : 6 में 1

आपकी पत्रिका में पूर्णरूपेण "उभयचारिक" योग का सृजन हो रहा है। फलस्वरूप आप सहनशील, स्थिर बुद्धिवाले, समृद्धिशाली, बलशाली, एकहरा शरीरवाले, मध्यमकद के सीधी दृष्टिवाले, धन-धान्य एवं लक्ष्मी से युक्त होंगे।